सभा के संरक्षक

[चुनाव के क्रम से]

१—श्रीमान् महाराज मेजर जनरल सर गंगासिंह बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, के० सी० बी० ए० डी० सी० एल०, एल एल० डी०, बीकानेर नरेश।

२—श्रीमान् महाराज लेफ्टिनेंट कर्नल उम्मेदसिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई० जी० बी० ई०, एल-एल० डी०, कोटा नरेश।

३—श्रीमान् महाराज गुलाबसिंह जू देव बहादुर, रीवाँ नरेश।

४—श्रीमान् सवाई महेंद्र महाराजाधिराज सर वीरसिंह जू देव बहादुर, के० सी० एस० आई०, ओड़छा नरेश।

५—श्रीमान् महाराजा साहब सर भूपालसिंह बहादुर, के० सी० आई० ई०, जी० सी० एस० आई०, उदयपुर नरेश।

सभा के संस्थापक

सभा के संस्थापकों में से इस समय भी सभा को सदैव की भाँति सभालने में तत्पर सभासद—

श्रीयुत रायबहादुर साहित्य-वाचस्पति बा० श्यामसुंदर दास, बी० ए०

श्रीयुत पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०, पी० ई० एस० (अवसरप्राप्त)

श्रीयुत रायसाहब ठाकुर शिवकुमार सिंह (अवसरप्राप्त डिप्टी इंस्पेक्टर अव स्कूल्स)

प्रांतक्रम से सभा के सभासदों की संख्या

आसाम	२	मध्यप्रदेश बरार	२३
काश्मीर	२	मध्य भारत	५०
दिल्ली	१९	मैसूर	३
पंजाब	२८	राजपूताना	८४
बंगाल	६०	संयुक्त प्रांत	४२७
बंबई	४७	सिंध	२
बिहार	४३	हैदराबाद	४
मद्रास	३	विदेशों में	९
			८०६

इनमें महिला सभासदों की संख्या कुल ३२ है।

विषय-सूची



पृष्ठ

वार्षिक विवरण— .. १–६८

परिशिष्ट १—पुस्तकें प्रदान करनेवाले सज्जनों की नामावली ६९–७२

२— पुस्तकालय में आने वाली पत्र पत्रिकाओं की सूची ७३–७६

३—खोज द्वारा प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों की सूची ७७–८०

४—सभासदों की सूची ८१–१३९

५—संबद्ध सभाएं .. १४०

६—धनदाताओं की नामावली .. . १४१–४४

७—सं० १९९६ के आयव्यय का लेखा १४५–४७

८—स्थायी निधियों का विवरण १४८–५१

९—स्थायी निधियों के संबंध में सरकारी विज्ञप्ति . १५२–६२

(युक्तप्रांतीय सरकारी गजट में उद्धृत)

१०—सभा का ४७ वर्षों का आयव्यय १६३–२१

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

स्थायी कोश

काशी नागरीप्रचारिणी सभा का एक स्थायी कोश है। नियमानुसार इसका मूलधन व्यय नहीं किया जाता, इसका व्याज ही खर्च किया जाता है। स्थायी कोश को बढ़ाने और उसको सुव्यवस्थित करने का प्रयत्न इधर दो तीन वरसों से हो रहा है। इसके फलस्वरूप कुछ धन सरकार के ट्रेजरर, चैरिटेव्ल एंडाउमेंट्स के पास जमा हो गया है और भविष्य में इस मद की सारी आय उक्त ट्रेजरर के पास जमा होती रहेगी। इस प्रकार दस हजार के तो सरकारी नोट हैं।

३५ सज्जन ऐसे हैं जो पाँच या दस रुपया महीना देते जा रहे हैं और नियमानुसार दो वरस के अंदर अपने दान का एक सौ रुपया पूरा कर देंगे।

२२ सज्जन ऐसे हैं जिन्होंने एक सौ चंदा देने का वचन तो दे दिया है परंतु अभी रुपया नहीं दिया है।

इस प्रकार अनुमान किया जा सकता है कि कम से कम पंद्रह हजार रुपया स्थायी कोश की निधि में शीघ्र जमा हो जायगा।

नागरीप्रचारिणी सभा को स्थापित हुए ४७ वरस हो गए। इसने हिंदी साहित्य और भारतीय कला को अलंकृत करने और हिंदी के लिये ऊँचा स्थान प्राप्त कराने में पूरा प्रयत्न किया है, तिसपर भी इसकी आर्थिक दशा कभी कभी ऐसी शोचनीय हो जाती है कि उसका उल्लेख करना लज्जा की बात होगी।

सभा के साधारण सदस्य ३ रु० वार्षिक देते हैं। परंतु हमें विश्वास है कि उनमें से कुछ सज्जन एक सौ रुपया या उससे अधिक देकर सभा के स्थायी सभासद बन सकते हैं। यह सौ रुपया किश्त से भी दिया जा सकता है। ऐसी कृपा करनेवाले प्रति वर्ष चंदा देने की झंझट से बच जाते हैं और सभा के स्थायी कोश की वृद्धि में सहायक होते हैं। जिन्होंने इस वर्ष अपना ३ रु० अग्रिम भेज दिया हो वे उक्त ३ रु० स्थायी कोश के चंदे में कटवा सकते हैं।

कई मान्य, विशिष्ट और स्थायी सभासदों ने स्थायी कोश की वृद्धि के निमित्त अपनी कन्या, अपने पुत्र अथवा अन्य मित्रों को स्थायी सभासद बना दिया है।

आशा है कि हिंदी प्रेमी सज्जन सभा के कल्याण के साधक होंगे और इसके स्थायी सभासद बन जायँगे।

रामबहोरी शुक्ल
प्रधान मंत्री

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

का

सैंतालीसवाँ वार्षिक विवरण

सभा के अधिवेशन

इस वर्ष साधारण सभा के कुल १२ अधिवेशन और प्रबंध समिति के कुल ११ अधिवेशन हुए। साधारण सभा की औसत उपस्थिति १० तथा प्रबंध समिति की ९ रही।

सभासद्

गत वर्ष के अंत में सभासदों की संख्या ६६५ थी। इस वर्ष ८ सभासदों का देहांत हुआ और ६ सभासदों ने त्यागपत्र दिया। २०४ नए सभासद बनाए गए। इस प्रकार वर्ष के अंत में सभासदों की संख्या ८५२ होनी चाहिए। किंतु नियम ३१ के अनुसार चंदा बाकी पड़ जाने के कारण ४६ सभासदों का नाम अलग कर देना पड़ा जिससे वर्ष के अंत में कुल संख्या ८०६ रही। इनमें १४ विशिष्ट, ११० स्थायी, ४० मान्य, ६१६ साधारण और २६ निःशुल्क रहे। इनमें महिला सभासदों की कुल संख्या केवल ३२ है।

यह संतोष की बात है कि हिंदी प्रेमियों ने सभा की प्रार्थना पर ध्यान दिया है और धीरे धीरे सभासदों की संख्या में वृद्धि हो रही है। गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष के अंत में सभासदों की संख्या कुल १४१ बढ़ी। सभा को विश्वास है कि इस संख्या में दिनोंदिन वृद्धि होती जायगी।

इस वर्ष ८ सभासदों की मृत्यु हुई जिसका सभा को हार्दिक शोक है। इनमें मान्य सभासद श्री विनायक नंदशंकर मेहता, विशिष्ट

सभासद श्री कुँवर राजेंद्र सिंह (टिकरा) और स्थायी सभासद कुँअर रविप्रताप नारायण सिंह सभा के विशेष सहायक थे। हास्य रस के प्रसिद्ध लेखक पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी की मृत्यु से हिंदी साहित्य की बड़ी क्षति हुई है। अजमेर के राय साहब चंद्रिका प्रसाद सभा के बहुत पुराने सभासद थे और सभा के कार्यों में बड़ी दिलचस्पी लेते रहते थे।

पदाधिकारी तथा प्रबंध समिति के सदस्य

१७ वैशाख १९९६ (३०अप्रेल १९३९) को सभा के वार्षिक अधिवेशन में निम्नलिखित सज्जन सभा के पदाधिकारी चुने गए थे—

सभापति — श्री पं० रामनारायण मिश्र
उपसभापति— श्री पं० रामचंद्र शुक्ल
,, ,, — श्री पं० रमेशदत्त पांडे
प्रधानमंत्री — श्री पं० रामबहोरी शुक्ल
साहित्यमंत्री— श्री बा० रामचंद्र वर्मा
अर्थमंत्री — श्री बा० ब्रजरत्नदास

उक्त वार्षिक अधिवेशन के चुनाव के अनुसार निम्नलिखित सज्जन सभा की प्रबंध समिति के सदस्य चुने गए —

सं० १९९६ से ९८ तक:
- श्री मुरारीलाल केडिया
- श्री ठाकुरदास
- श्री गोपाल लाल खन्ना
- श्री शिवकुमार सिंह
- श्री दत्तो वामन पोद्दार
- श्री ब्योहार राजेंद्र सिंह
- श्री सरदार माधवराव विनायकराव किबे

स्थानीय सदस्य श्री गोपाललाल खन्ना के काशी से बाहर चले जाने के कारण ३१ आषाढ़ १९९६ को उनके स्थान पर श्री जयकृष्णदास प्रबंध समिति के सदस्य चुने गए।

सभा की नियमावली के नियम ४९ तथा ५१ के अनुसार जो स्थान रिक्त हुए उनकी पूर्ति होने पर निम्न लिखित सज्जन प्रबंध समिति के सदस्य हुए—

सं० १९८६ से ८७ तक:

श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़
श्री रायकृष्ण दास
श्री सीताराम चतुर्वेदी
श्री विद्याभूषण मिश्र
श्री हरिहरनाथ टंडन
श्री अयोध्यानाथ शर्मा
श्री रामेश्वर गौरी शंकर ओझा

सं० १९८६ के लिए:

श्री राधेकृष्ण दास
श्री सहदेव सिंह
श्री केशव प्रसाद मिश्र
श्री कृष्णानंद
श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्री
श्री सूर्यप्रसाद महाजन
श्री जगद्धर शर्मा गुलेरी

इस वर्ष सभा के आयव्यय-निरीक्षक श्री वैजनाथ केडिया चुने गए। किंतु अवकाश न होने के कारण उन्होंने यह कार्य अस्वीकार किया, अतः उनके स्थान पर श्री जीवनदास चुने गए। उन्होंने बड़े परिश्रम और तत्परता के साथ हिसाब की जाँच की जिसके लिये सभा उनकी हृदय से कृतज्ञ है।

आर्यभाषा-पुस्तकालय

गत वर्ष पुस्तकालय की आय २०३३)४ और व्यय २५७७=) हुआ था। इस वर्ष २४६१।।।=)३½ आय हुई जिसमें १०००) प्रांतीय सरकार से, ३६०) म्युनिसिपल बोर्ड से और ११०१।।।=)३½ सहायकों के वार्षिक चंदे तथा फुटकर दान से प्राप्त हुआ। इस वर्ष व्यय ३३८४।)७½ हुआ जिसमें १३६७।।=)।। पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में व्यय हुआ, १६२६।।=)। वेतन दिया गया और १७०।)।। रोशनी आदि में व्यय हुआ। १६७)१½ जिल्दबंदी के सामान में लगा। जिल्दबंदी के लिये दफ्तरियों को जो वेतन दिया गया वह ऊपर वेतन की रकम में सम्मिलित है। ५२।।=)। फुटकर व्यय हुआ।

गत वर्ष सहायकों की संख्या १३३ थी, इस वर्ष वह ८२ है। इस वर्ष भी पुस्तकालय के नियमानुसार अनेक सहायकों के नाम, उनकी अमानत की रकम से पुस्तकों का मूल्य तथा चंदा लेकर, सहायक श्रेणी से पृथक करने पड़े जिसका सभा को दुःख है। यह पूरा वर्ष पुस्तकों को विषय के अनुसार रखने में लग गया, इससे कई महीनों तक पुस्तकें सहायकों को न दी जा सकीं। इस कारण बहुत से विद्यार्थियों को अमानत का रुपया उनके शेष चंदे के साथ लौटा दिया गया। इसलिये भी सहायकों की संख्या में विशेष कमी हो गई।

गत वर्ष १३६ पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं। इस वर्ष ८ पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का आना बंद हो गया तथा ७५ नई पत्र-पत्रिकाएँ आने लगीं। इस प्रकार इस वर्ष पुस्तकालय में कुल २०३ पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं।

गतवर्ष हिंदी विभाग में १४६९८ मुद्रित पुस्तकें थीं। इस वर्ष ५८४ नई पुस्तकें आई हैं। अब पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों की संख्या १५२८२ है।

गत वर्ष ८२७ हस्तलिखित पुस्तकें थीं। इस वर्ष ४ पुस्तकें आईं। अब ८३१ हस्तलिखित पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में हस्तलिखित पुस्तकों का अलग विभाग है।

द्विवेदी-संग्रह तथा रत्नाकर-संग्रह में पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त क्रमशः २७७३ तथा १५२४ पुस्तकें हैं।

गत वर्ष अंग्रेजी विभाग में २३१५ पुस्तकें थीं। इस वर्ष ५१ नवीन पुस्तकें आईं। अब २३६६ पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती आदि की भी कुछ पुस्तकें हैं।

इस वर्ष पुस्तकालय २७१ दिन तथा वाचनालय ३३६ दिन खुला रहा और नित्य के पढ़नेवालों की संख्या का औसत १२० रहा। पुस्तकों पर नवीन रीति से विषय के अनुसार संख्या लगाने तथा उनको निर्धारित विषयों में विभक्त करने का काम चालू रहने से पुस्तकालय कुछ दिनों तक बंद रखना पड़ा, परंतु वाचनालय नियमित रूप से खुलता रहा। इस कारण पुस्तकालय में पाठकों की संख्या में विशेष कमी हुई है। परंतु वाचनालय में पाठकों की संख्या लगभग ४०००० रही। इस वर्ष, पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त, सहायकों को ३०००

पुस्तकें पढ़ने को दी गई। वाचनालय में बैठकर पुस्तक पढ़नेवालों की संख्या लगभग २००० थी।

आधुनिक रीति से पुस्तकों के वर्गीकरण के लिये धन जन दोनों की विशेष आवश्यकता पड़ती है। सभा धनाभाव के कारण इसका समुचित प्रबंध न कर सकी। यदि कोई महानुभाव इस कार्य में आर्थिक सहायता देने की कृपा करें तो सभा इसे शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करने का प्रयत्न करेगी।

पुस्तकों का विषयानुसार वर्गीकरण हो चुका है। सभी पुस्तकें अपने निर्दिष्ट स्थान पर रख दी गई हैं। अब तक काव्य, उपाख्यान, विभिन्न प्रकार के उपन्यास, नाटक आदि की पुस्तकों पर संख्याएँ लिखी जा चुकी हैं जिन्हें सहायकों तथा पाठकों को देना प्रारंभ कर दिया गया है। शेष पुस्तकों पर संख्या देने का कार्य हो रहा है।

इस कार्य के लिये तीन अतिरिक्त दफ्तरी पुस्तकों की मरम्मत तथा कार्ड आदि लगाने का काम कर रहे हैं। इस वर्ष लगभग ५००० पुस्तकों की जिल्दें बनीं और उनकी मरम्मत हुई। आशा है यह कार्य अगले वर्ष संपन्न हो जायगा।

इस नवीन व्यवस्था के अनुसार पुस्तकों को रखने के लिये अंग्रेजी विभाग की ६ अलमारियाँ ले लेनी पड़ी हैं। अंग्रेजी पुस्तकों को विवश होकर अन्यत्र रख देना पड़ा है। इस प्रकार अलमारियों की बड़ी कमी पड़ गई है। ४०००० पुस्तकों के कार्ड रखने के लिये कैबिनेटों और ८ अलमारियों आदि के लिये कम से कम एक हजार रुपए की बड़ी आवश्यकता है।

सभा निरन्तर उद्योग करती रहती है कि हिंदी की सभी प्रकाशित पुस्तकें तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ पुस्तकालय में आती रहें जिससे सभा का यह सार्वजनिक निःशुल्क पुस्तकालय और वाचनालय सभी दृष्टियों से पूर्ण हो। परंतु उसकी आर्थिक अवस्था ऐसी नहीं है कि वह सभी प्रकाशित पुस्तकों तथा सामयिक पत्रों का मूल्य देकर उन्हें मँगा सके। इसके लिये सभा को कम से कम ढाई हजार वार्षिक की आवश्यकता है।

लेखकों तथा प्रकाशकों से सभा का साग्रह अनुरोध है कि अपनी लिखित तथा प्रकाशित पुस्तकों की एक प्रति पुस्तकालय को भेंट देते रहें। उनकी इस सहायता से पुस्तकालय सहज ही पूर्ण बन सकता है।

युक्तप्रांतीय सरकार से सभा का अनुरोध है कि वह वर्तमान सहायता में कम से कम एक हजार वार्षिक वृद्धि करे। ऐसा होने से सभा का पुस्तकालय हिंदी का सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय बना रह सकेगा और उसका उपयोग खोज करनेवाले विद्वान एवं सर्व-साधारण हिंदी प्रेमी कर सकेंगे।

जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने इस वर्ष पुस्तकालय के लिये पुस्तकें दान में दी हैं उन्हें सभा हृदय से धन्यवाद देती है और आशा करती है कि इस पुस्तकालय को सब प्रकार से पूर्ण बनाने में प्रत्येक हिंदी प्रेमी सभा की समुचित सहायता करेगा। पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के दाताओं में सभा, श्रीकाश्मीर दरबार, श्रीउदयपुर दरबार श्री पी. एन. जोशी (काशी), श्री पंडित रामनारायण मिश्र (काशी), सस्ता साहित्य मंडल (दिल्ली), हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय (बंबई) और डाक्टर ओंकार प्रसाद जी (आगरा) की विशेष आभारी है। इस वर्ष दान में प्राप्त पुस्तकों और पुस्तकालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की सूची क्रमशः परिशिष्ट १ और परिशिष्ट २ में दी गई है।

इस वर्ष युक्त प्रांतीय सरकार ने प्रांतीय गवर्नमेंट गजट भेजकर पुस्तकालय की एक विशेष कमी पूरी की है। अतः सभा इसके लिये विशेष अनुगृहीत है।

पुस्तकालय में स्थान का नितान्त अभाव है। पुस्तकों के रखने के लिये न तो अलमारियाँ हैं और न अलमारियों के रखने के लिये स्थान। सभा इस कमी की ओर उदार सज्जनों का ध्यान दिलाती है।

इस वर्ष पुस्तकालय निरीक्षक श्रीमान् बाबू कृष्णदेव प्रसाद गौड़ रहे। उनकी सहायता के लिये सभा उनकी अनुगृहीत है।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज

इस वर्ष खोज का काम इटावा और मथुरा जिलों में होता रहा। इटावा में श्री० बाबूराम बित्थरिया ने और मथुरा में श्री० दौलतराम

जुयाल ने काम किया। दोनों अन्वेषकों ने लगभग चार मास तक सभा के प्रधान कार्यालय में और खोज विभाग के निरीक्षक के पास त्रैवार्षिक विवरण का काम किया।

इस वर्ष इटावा जिले में १२० और मथुरा जिले में ७२ हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरण लिए गए। समस्त १९२ ग्रन्थों में से ८३ ग्रंथों के रचयिताओं के नाम अज्ञात हैं और शेष १०९ ग्रंथ ९० ग्रंथकारो के लिखे हुए हैं। ग्रंथकारों और ग्रंथों का शताब्दी विभाग इस प्रकार है—

ग्रंथकारों और ग्रंथों का शताब्दी विभाग

शताब्दी	१५ वीं	१६ वीं	१७ वीं	१८ वी	१९ वीं	अज्ञात	योग
ग्रंथकार	२	८	१४	१७	५	४४	९०
ग्रंथ	३	९	१७	२९	६	१२८	१९२

ये ग्रंथ निम्नलिखित विषयों में इस प्रकार विभक्त हैं—

(१) सामान्य काव्य—२६, (२) श्रृंगार काव्य—२३, (३) धर्म और दर्शन—३१, (४) कथा-कहानी—६, (५) संगीत तथा गीत काव्य—७, (६) नाटक—१, (७) रीति और पिंगल—७, (८) इतिहास और पुराण—११, (९) भक्ति काव्य—२९, (१०) नीति—२, (११) उपदेश—५, (१२) ज्योतिष और शकुन—२५, (१३) इंद्रजाल आदि—४, (१४) औषधि—१, (१५) कामशास्त्र—१, (१६) विविध—९।

इस वर्ष इटावा जिले मे जिन ग्रथों के विवरण लिए गए उनमें से निम्नलिखित महत्वपूर्ण हैं.—

(१) मूलस्तभ, (२) गरुड़ पुराण, (३) ख्याल सग्रह, (४) सत्यनारायण कथा, (५) श्रृंगार काव्य संग्रह, (६) राशि श्रृंगार (गिरिधरनाथ कृत)।

इनमे से भी मूलस्तंभ अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह योगशास्त्र संबंधी एक पौराणिक ग्रथ है जिसमे विश्व की उत्पत्ति, मनुष्य-शरीर और सृष्टि के संबध तथा भैरव, चक्र और योग की अन्य बातों का विवेचन किया गया है।

इस वर्ष मथुरा में अनेक उत्तमोत्तम ग्रथ मिले हैं जिनमें से निम्न-लिखित उल्लेखनीय हैं:—

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	निर्माणकाल संवत्	लिपिकाल संवत्
उरदाम	उरदाम प्रकाश	×	१९४७
चतुर शिरोमणि	भावना सागर	१६८१	१९६४
व्यास	रास पचाध्यायी	×	१९६९
वुद्धसिंह	स्नेह तरंग	१७८४	१९९४
हरिवंश टंडन	रास मंजरी	×	१७०९
जयगोविंद वाजपे.	कवि सर्वस्व	×	१७६५
राघवदास	भक्तमाल	१७१७	१९९३
मिरजा ईसख	ईसख प्रकाश	१८१२	१८५९
चोखन	प्रह्लाद चरित्र	×	×
मोहनदास	वुद्धिविलास	×	×
वल्लभ रसिक	बारह बाट अठारह पैंड़े	×	१९६८
,,	सुरतोल्लास	×	१९६८
चंदलाल	अभिलाष बत्तीसी	×	१९६८
,,	भावना पचीसी	×	१९६९
,,	समय पचीसी	×	१९६९
,,	भागवत पचीसी	१८५४	×
पं० रामसिंह	पिंगल मंजरी	×	×

नौसेर पातसाह की दस ताज को वात, मोहन देव की वार्ता और दामोदर हरसानी की वार्ता, ये तीन ग्रंथ गद्य मे हैं।

इस वर्ष सभा के लिये ९९ हस्तलिखित ग्रथ श्री० वावूराम वित्थ-रिया द्वारा प्राप्त किए गए—जिनकी सूची परिशिष्ट ३ मे दी हुई है।

मथुरा से श्री० दौलतराम जुयाल ने १३ हस्तलिखित ग्रंथ सभा के लिये प्राप्त किए हैं। इनकी सूची भी परिशिष्ट ३ मे दी हुई है।

यह संतोष का विषय है कि अन्वेषकों ने इस वर्ष सभा के लिये उपर्युक्त ग्रंथ प्राप्त किए। अधिकांश ग्रंथस्वामी अपने ग्रंथों को देना नहीं चाहते अथवा उनके लिये अत्यधिक मूल्य चाहते हैं। इसलिये सभा केवल उन्हीं ग्रंथों का प्राप्त करना अच्छा समझती है जिनके लिये उसे कुछ व्यय न करना पड़े।

इस वर्ष श्री० डा० पीतांबर दत्त बड़थ्वाल, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, डी० लिट्० खोज विभाग के निरीक्षक तथा श्री० पं० विद्याभूषण मिश्र, एम्० ए०, एल्-एल्० बी, सहायक निरीक्षक रहे। उन्होंने जिस तत्परता और परिश्रम से खोज विभाग के निरीक्षण का कार्य किया है उसके लिये सभा उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती है।

निम्नलिखित सज्जनों को भी सभा धन्यवाद देती है जिन्होंने खोज के अन्वेषकों को अन्वेषण-कार्य में काफी सहायता दी है—

श्री० सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, श्री० पं० रेवतीनंदन जी और श्री० पं० प्रभुदयाल जी शर्मा।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

नागरीप्रचारिणी पत्रिका का यह ४४ वाँ महत्वपूर्ण वर्ष समाप्त हुआ। इस वर्ष संपादक मंडल का चुनाव निम्नलिखित प्रकार से हुआ था—

श्री रामचंद्र शुक्ल — डा० मंगलदेव शास्त्री

श्री केशवप्रसाद मिश्र — श्री वासुदेव शरण

श्रीकृष्णानंद (संपादक)

इस वर्ष भी पत्रिका में उच्चकोटि के लेख निकलते रहे और उसके गौरव और ख्याति में वृद्धि हुई। ४४ वे वर्ष के दूसरे अंक की सभी प्रतियाँ समाप्त हो जाने के कारण उसका दूसरा संस्करण निकालना पड़ा।

सभा संपादक-मंडल को, विशेष कर श्री कृष्णानंद को तथा पत्रिका के विद्वान लेखकों को उनके परिश्रम और सहयोग के लिये हृदय से धन्यवाद देती है।

इस वर्ष पत्रिका में प्रकाशित लेखों की सूची नीचे दी जाती है—

विपय लेखक

मध्यप्रदेश का इतिहास [लेखक—स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल, बी० ए०, एम्० आर्० ए० एस्०]
प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का चौदहवाँ त्रैवार्षिक विवरण [लेखक—डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, एम्० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०]
सिकंदर का भारत पर आक्रमण [लेखक—श्री शालिग्राम श्रीवास्तव]
काश्मीर का मार्तंड-मंदिर [लेखक—श्री व्योहार राजेंद्रसिंह, एम्० एल्० ए०]
एक प्राचीन हिंदी समाचार-पत्र [लेखक—श्री कालिदास मुकर्जी, बी० ए०, एम्० आर० ए० एस्०]
पतंजलि और वाहीक ग्राम [लेखक–श्री वासुदेवशरण, एम्० ए०]
महाकवि कल्हण कृत राजतरंगिणी [लेखक—श्री विजयबहादुर श्रीवास्तव, बी० एस्० सी०, एल्-एल्० बी०]
क्या मगध के गुप्त सम्राट् मूल रूप मे चीन-निवासी थे ? [लेखक—श्री परमेश्वरीलाल गुप्त]
पृथ्वीराज रासो की एक पुरानी प्रति और उसकी प्रामाणिकता [लेखक—श्री दशरथ शर्मा]
विक्रम संवत् १३३१ का एक दानपत्र [लेखक—श्री चिंतामणि बलवंत लेले, बी० ए० और श्री पुरुपोत्तम त्रिंबक कापशे] ...
प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का पंद्रहवाँ त्रवार्पिक विवरण [लेखक—डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, डी० लिट्०]
खुमाणरासो का रचनाकाल और रचयिता [लेखक—श्री अगरचंद नाहटा]
नंददास [लेखक--श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा]
चयन—
अफगानिस्तान की प्राचीन संस्कृति ['सोवियत् भूमि' से]
क्या प्रस्तावों द्वारा हिंदी का कायाकल्प हो सकता है ? [लेखक—डाक्टर धीरेंद्र वर्मा]

विषय लेख

पहाड़पुर (बंगाल) में महत्त्वपूर्ण शोध [लेखक—श्री कृ]
साहित्य-सम्मेलन के सभापति का भाषण [लेखक—पंडित अंबिकाप्रसाद वाजपेयी]
राष्ट्रभाषा-परिषद् के सभापति का भाषण [लेखक—डाक्टर राजेंद्रप्रसाद]
२८ वें हिंदी साहित्य सम्मेलन के स्वीकृत कुछ विशेष महत्त्वपूर्ण निश्चय [संकलयिता—श्री कृ]
साहित्य-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष का भाषण [लेखक—महामना पं० मदनमोहन मालवीय]
'कुछ विचारणीय शब्द' [लेखक—श्री काका कालेलकर]

समीक्षा—

हिंदी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास [समीक्षक-श्री "श"]
त्रिपुरी का इतिहास [स०—श्री रमाशंकर त्रिपाठी, एम्० ए०. पी० एच्० डी०]
जैबुन्निसा के आँसू [स०-श्री व्रजरत्नदास, बी०ए० एल्-एल्०बी०]
'विज्ञान' का रजत जयंती अंक [स०—श्री अ० गो० झि०]
दादा श्री जिनकुशल सूरि [स०—श्री कैलाशचद्र शास्त्री]
ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह [स०—श्री कैलाशचंद्र शास्त्री]
कवितावली [स०—श्री चंद्रमणि]
पार्वती-मंगल [स०— श्री चंद्रमणि]
प्रताप-समीक्षा [स०— जगन्नाथप्रसाद शर्मा]
लोक-सेवक महेंद्रप्रसाद [स०—श्री फतहसिंह]
मालती माला [स०—श्री रा० प्र० त्रिपाठी]
युवक-साहित्य [स०—श्री राजाराम]
विचार-विनिमय [स०श्री पद्म]
सर्वोदय [स०—श्री कृ]
मंदार [स०—श्री चित्रगुप्त]

विविध—

नागरीप्रचारिणी सभा और हिंदी साहित्य-सम्मेलन [लेखक—श्री

विषय लेख

'एक लिपि की आवश्यकता' [लेखक—श्री गांधी जी]

अष्टाध्यायी में वर्णित प्राचीन मुद्राएँ [लेखक—श्री वासुदेवशरण]

स्वर्गीय द्विवेदीजी का लिफाफा [लेखक—श्री रामबहोरी शुक्ल]

" " " [लेखक—श्री श्यामसुंदरदास]

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का अट्ठाइसवाँ अधिवेशन [लेखक०श्री कृ]

पंजाब में हिंदी की दशा ... ... [" "]

'भूषण' का असली नाम [लेखक—डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल]

असम प्रांत में हिंदी [लेखक—श्री पु०]

सभा की प्रगति [लेखक—श्री मंत्री, सभा]

हिंदी-संस्थाओं की सूची [लेखक—श्री मंत्री, सभा]

हमारी परिवर्तन-सूची [लेखक—संपादक]

नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला

इस ग्रंथमाला में सभा हिंदी के प्राचीन कवियों और लेखकों की रचनाएँ संपादित कराके प्रकाशित कराती है। पृथ्वीराज रासो तथा तुलसी, जायसी और कबीर की ग्रंथावलियाँ इसी माला में प्रकाशित हुई हैं। इस वर्ष इस माला में भूषण ग्रथावली का दूसरा संस्करण हुआ है।

हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज विभाग के द्वारा जिन महत्त्व-पूर्ण प्राचीन ग्रंथों का पता चलता है उन्हें प्राप्त कर इस माला में प्रकाशित करने के लिये लगभग ५०००) प्रति वर्ष की आवश्यकता है।

सूरसागर—उक्त माला का ३४ वाँ ग्रंथ सूरसागर है। सूरसागर के सात अंक छप जाने के बाद सभा ने इसका प्रकाशन बंद कर दिया था और इसका एक सस्ता संस्करण निकालने का निश्चय किया था। इस निश्चय को कार्यान्वित करने के लिये सूरसागर की संपादित प्रति प्रेस में भेज दी गई है और आशा है कि शीघ्र ही संपूर्ण सूरसागर प्रकाशित होकर हिंदी जनता के हाथों मे पहुँच सकेगा।

मनोरंजन पुस्तकमाला

इस वर्ष इस माला में कबीर वचनावली, नेपोलियन बोनापार्ट,

सिक्खों का उत्थान पतन और मानस सरोवर और कैलास इन चार पुस्तकों का प्रतिमुद्रण हुआ और बालमनोविज्ञान नाम की एक नई पुस्तक प्रकाशित हुई जो इस माला की ५३ वीं पुस्तक है। यह पुस्तक अत्यंत सुगमता से अपने विषय का बोध कराती है और इसके प्रकाशन से हिंदी साहित्य की एक बड़ी कमी पूरी हुई है।

सभा ने अब इस माला का प्रकाशन जारी रखने का निश्चय कर लिया है और 'बालमनोविकास' नामकी ५४ वीं पुस्तक प्रेस में भेज दी गई है।

सूर्यकुमारी पुस्तकमाला

श्रीमान् शाहपुराधीश महाराज उम्मेदसिंह जी ने अपनी स्वर्गवासिनी धर्मपत्नी श्रीमती सूर्यकुमारी देवी जी की स्मृति मे सभा को धन देकर इस पुस्तकमाला को प्रकाशित कराने की व्यवस्था की थी और शाहपुरा दरबार से सभा को कुल १९९८४) रुपए प्राप्त हुए थे। इस माला की आय इसी माला मे लगाई जाती है पर इसकी कोई स्थायी निधि नहीं स्थापित की गई है।

इस माला में 'हिंदी साहित्य का इतिहास' का संशोधित और परिवधित संस्करण प्रकाशित किया गया है। गुलेरी ग्रंथ छप रहा है। इसमे स्व० पं० चद्रधर शर्मा गुलेरी के लेखों का संग्रह है। शशांक का पुनर्मुद्रण हुआ है। इसके बाद अकबरी दरबार भाग ४ तथा हिंदू राज्यतंत्र भाग २ के छापने तथा 'हिंदी की गद्य शैली का विकास' को पुनर्मुद्रित करने का निश्चय हो चुका है।

इस वर्ष इस माला मे जो आय-व्यय हुआ उसका ब्योरा इस प्रकार है—

आय		व्यय	
४६५५॥)१	गत वर्ष की बचत	२७०॥=)॥	हिंदी रस-गंगाधर भाग २ के पुरस्कार मद्धे चुकता
२३१०॥=)॥	पुस्तकों की बिक्री तथा रायल्टी	१००)	अकबरी दरबार भाग ४ के पुरस्कार मद्धे
६९६६।=)७			

व्यय

५२४।)	बुद्धचरित की छपाई
६–)॥	बुद्धचरित के लिये घटा कागज
३९॥≡)।	रस-गंगाधर भाग २ की जिल्दबंदी मद्धे
२४=)	ब्लाकों की बनवाई
२८८॥–)॥।	कार्यालय खर्च में गया
१८॥≡)।	फुटकर व्यय
१२७५॥=)।	
५६९०॥।)४	बचत
६९६६।=)७	

देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला

जोधपुर निवासी स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ की प्रदान की हुई निधि से इस माला में ऐतिहासिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। इस माला में इस वर्ष कोई नई पुस्तक नहीं प्रकाशित हुई। श्री सतीशचंद्र काला लिखित 'मोहनजोदड़ो' नाम की पुस्तक को प्रकाशित करने का निश्चय हो चुका है और शीघ्र ही उसका छपना आरंभ होगा। स्व० मुंशी देवीप्रसाद रचित इतिहास की पुस्तकों को इस माला में प्रकाशित करने पर सभा विचार कर रही है।

इस वर्ष इस माला में जो आय-व्यय हुआ वह इस प्रकार है—

आय		व्यय	
६६४०।≡)॥।	बचत	१।।)	डिविडेंड का बट्टा
६३०)	इंपीरियल बंक के शेयरों का व्याज	१७४।)	मआसिरुल उम्रा भाग २ के पुरस्कार तथा प्रूफ जँचाई मद्धे चुकता
६८५॥।–)	पुस्तकों की बिक्री और रायल्टी	१३९।।)।	कागज
७९५६।)॥।		१३९॥।–)॥।	अंधकार युगीन भारत की जिल्द

७९५६।)॥।	१७९) मआसिरुल उम्रा भाग २ की छपाई चुकता
	१५४।=)॥। ,, ,, की जिल्द मढ़ाई
	१५) मध्य प्रदेश के इतिहास का नकशा बना
	४२=)॥ ब्लाकों की बनवाई
	१६४।≡)॥= कार्यालय खर्च में गया
	७॥।-)॥। फुटकर व्यय
	१०१९)॥=
	६९३७।)= बचत
	७९५६।)॥।

वारहट बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला

जयपुर के ग्राम हणूतिया निवासी स्वर्गीय वारहट बालाबख्श जी की दी हुई निधि से इस माला में राजपूतों और चारणों की रची हुई डिंगल और पिंगल भाषा की पुस्तके प्रकाशित की जाती हैं। इस वर्ष इसकी ८ वीं पुस्तक 'रघुनाथ रूपक' प्रकाशित हुई है। इसके बाद श्री रामकर्ण जी द्वारा संपादित 'राज रूपक' को प्रकाशित करने का निश्चय हुआ है। जयपुर निवासी श्रद्धेय पुरोहित हरिनारायण जी जिस परिश्रम और तत्परता के साथ इस माला के लिये पुस्तकें जुटाते और इसकी उन्नति के लिये सत्परामर्श देते रहते हैं उसके लिये सभा उनकी हृदय से कृतज्ञ है।

माला के इस वर्ष के आय-व्यय का हिसाब निम्नलिखित है—

आय	व्यय
१२८२॥≡) ४ बचत	९२॥≡)॥। कागज
३५४।=) सरकारी कागज़ों का व्याज	१५०) रैकों की बनवाई
८६॥)॥। पुस्तकों की बिक्री और रायल्टी	५५-)॥। कार्यालय व्यय में गया
	१॥-) फुटकर
१८२३॥=) १	२९९।=)॥
	१५२४≡) ७ बचत
	१८२३॥=) १

देव पुरस्कार ग्रंथावली

श्री वीरेंद्र केशव साहित्य परिषद् ओड़छा ने उक्त ग्रंथावली के नाम से उच्च कोटि की साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित करने के लिये गत वर्ष सभा को १००० रुपया दिया था। इस ग्रंथावली मे श्री राय कृष्ण दास लिखित दो बहुत महत्वपूर्ण पुस्तकें भारतीय मूर्तिकला और भारत की चित्रकला प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस वर्ष इस माला में जो आय व्यय हुआ उसका ब्योरा निम्नलिखित है—

आय	व्यय
१०००) ओड़छा राज्य से दान मिला	१।।।=) बंक बट्टा
१३०)।।। पुस्तकों की बिक्री	१६३=)।।। ब्लाक बनवाई
११३०)।।।	
९०।।।≡)।। अधिक व्यय	२८०।=)।।। कागज़
१२२१)।	५२२।।≡) छपाई
	८२—)। जिल्द बंदी का सामान
	१४१।) कार्यालय खर्च
	२९।।)।। फुटकर व्यय
	१२२१)।

विज्ञान ग्रंथावली

सभा ने विज्ञान, उद्योग और शिल्प संबंधी पुस्तकें सरल हिंदी भाषा में निकालने का निश्चय किया था और उसके लिये एक उपसमिति बना दी थी जिसके संयोजक श्री प्रो० फूलदेव सहाय वर्मा थे। उक्त उपसमिति ने अपनी योजना और सम्मिति दे दी है। पर अभी तक सभा को कहीं से धन नही मिल सका है। प्रयत्न किया जा रहा है और धन प्राप्त होते ही इस कार्य का भी आरंभ कर दिया जायगा।

पुरस्कार और पदक

उत्तम और मौलिक ग्रंथकर्ताओ को नियमानुसार जो पदक तथा पुरस्कार सभा दिया करती है उनकी निधियों का विवरण परिशिष्ट ८ मे दिया गया है। इस वर्ष ये निधियाँ ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट फंड्स, सयुक्तप्रात के पास जमा कर दी गई हैं जिससे ये सदा के लिये सुरक्षित हो गई है। इसकी सरकारी विज्ञप्ति इस विवरण-पत्र के परिशिष्ट ९ मे प्रकाशित की गई है।

जिस प्रकार ये पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं उसका विवरण निम्नलिखित है—

बिड़ला पुरस्कार—श्रीमान् राजा बलदेवदास बिड़ला की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार **संवत् १९९७ से प्रति चौथे वर्ष** दिया जायगा। इस बार यह पुरस्कार १ माघ १९९३ से २९ पौप १९९७ तक प्रकाशित अध्यात्म, योग, सदाचार, नीति, मनोविज्ञान आदि विषयों के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिये संवत् १९९७ में दिया जायगा।

बटुकप्रसाद पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार स्वर्गवासी राय बहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री की दी हुई निधि से सर्वोत्तम मौलिक उपन्यास या नाटक के लिये **संवत् १९९८ से प्रति चौथे वर्ष** दिया जायगा। इस बार १ माघ १९९४ से २९ पौप १९९८ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक के लिये यह पुरस्कार संवत् १९९८ मे दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (१)—स्वर्गवासी श्रीजगन्नाथदास 'रत्नाकर' की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार व्रजभापा के सर्वोत्तम ग्रथ के लिये **प्रति चौथे वर्ष** दिया जायगा। अगला पुरस्कार १ माघ १९९४ से २९ पौप १९९८ तक प्रकाशित सर्वोत्तम ग्रंथ पर सं० १९९८ मे दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (२)—यह दूसरा रत्नाकर पुरस्कार भी २००) का है। यह पुरस्कार व्रजभापा के सदृश हिंदी की अन्य भापाओं (यथा डिंगल, राजस्थानी, अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, छत्तीस गढ़ी, आदि) की सर्वोत्तम रचना अथवा सुसंपादित ग्रंथ के लिये

प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ १९९५ से २९ पौष १९९९ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० १९९९ मे दिया जायगा।

डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार—श्रीयुत प० रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह २००) का पुरस्कार विज्ञान विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ पर **प्रति चौथे वर्ष** दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ १९९६ से २९ पौष सं० २००० तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००० मे दिया जायगा।

जोधसिंह पुरस्कार—उदयपुर के स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह की दी हुई निधि से यह २००) का पुरस्कार सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के लिये **प्रति चौथे वर्ष** दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १माघ सं० २००१ से २९ पौष सं० २००५ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००५ में दिया जायगा।

डा० हीरालाल स्वर्ण पदक—स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल की दी हुई निधि से एक स्वर्ण पदक सभा द्वारा पुरातत्व, मुद्राशास्त्र, इंडोलाजी, भाषाविज्ञान, तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी मे लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध पर **प्रति दूसरे वर्ष** दिया जायगा। पिछली बार यह पदक १ वैशाख सं० ९४ से ३० चैत्र सं० ९५ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक वा निबंध पर दिया जाने को था, पर खेद है कि पदक के योग्य कोई मौलिक कृति प्राप्त न होने के कारण इस वर्ष यह किसी को नहीं दिया गया।

द्विवेदी स्वर्ण पदक—स्वर्गीय आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रदान की हुई निधि से यह स्वर्ण पदक हिंदी में सर्वोत्तम पुस्तक के रचयिता को दिया जाता है। यह पदक संवत् **१९९६ से प्रति वर्ष** दिया जायगा। इस वर्ष यह पदक १ वैशाख १९९५ से ३० चैत्र १९९६ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० १९९७ में दिया जायगा।

सुधाकर पदक—स्वर्गीय बाबू गौरीशंकर प्रसाद ऐडवोकेट की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक बटुकप्रसाद पुरस्कार पाने वाले सज्जन को दिया जायगा।

ग्रीव्ज पदक—श्रीयुत पं० रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक डा० छन्नूलाल पुरस्कार पाने वाले सज्जन को दिया जायगा।

राधाकृष्णदास पदक—श्रीयुत बाबू शिवप्रसाद गुप्त को दी हुई निधि से यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० १ पाने वाले सज्जन को दिया जायगा।

बलदेवदास पदक—श्रीयुत बाबू ब्रजरत्न दास वकील की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० २ प्राप्त करने वाले सज्जन को दिया जायगा।

गुलेरी पदक—स्वर्गीय श्रीयुत पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी की स्मृति में श्रीयुत प० जगद्धर शर्मा गुलेरी की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक जोधसिंह पुरस्कार पाने वाले सज्जन को दिया जायगा।

रेडिचे पदक—यह रौप्य पदक बिड़ला पुरस्कार पाने वाले सज्जन को दिया जायगा। इसके लिये सभा को ३७) चंदे से प्राप्त हुए थे। सभा ने शेष रुपए पूरे करके इसकी भी निधि स्थापित कर दी है।

भारत-कलाभवन

आगत वस्तुएँ—इस वर्ष भी कलाभवन में आगत वस्तुओं की संख्या अच्छी रही। इनमें कुछ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। श्रीशिवलाल शाह स्मारक संग्रह के लिये पहली वस्तु, हम्जानामा चित्रपट का एक मूल चित्र, शाह-स्मारक कोष द्वारा दो हजार रुपए में खरीदी गई।

अमीर हम्जा दास्तान ईरानी भाषा की एक बड़ी कहानी है जिसमें हम्जा का अद्भुत वीर चरित्र वर्णित है। अकबर को इस कहानी से बहुत प्रेम था। उसने १५६०–७५ ई० में इसके चौदह सौ चित्रपट (कपड़े पर चित्र) बनवाए थे, जिनका माप लगभग २८×२४ इंच था। अब इस बृहत् चित्रावली के एक सौ से कुछ अधिक मूल चित्रों का पता है, जिनमे से केवल यही एक भारत में है, शेष विदेशों में। इसकी शैली आरंभिक मुगल, मुख्यतः कश्मीरी है। इस दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करा देने का श्रेय प्रिंस आव वेल्स संग्रहालय, बंबई के कलाविभाग के अध्यक्ष डा० मोतीचंद्रजी को है।

गत जाड़े के आरंभ से ईस्ट इंडियन रेलवे की ओर से राजघाट किले और काशी स्टेशन के बीच की भूमि खोदी जा रही है। आरंभ में इस स्थान से कुछ मृण्मूर्त्तियाँ तथा पात्र कुछ लोगों को मिले। इसकी सूचना मिलने पर आगे मिलने वाली वस्तुओं की प्राप्ति का प्रयत्न किया गया। कुछ वस्तुएँ भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा कलाभवन के लिये प्राप्त की गई हैं तथा उक्त विभाग की कृपा से इनमें की और वस्तुओं के भी प्राप्त होने की आशा है। अब कलाभवन वहाँ से प्राप्त वस्तुओं का सुंदर संग्रह बन गया है। इनमें गुप्तकालीन मृण्मूर्त्तियाँ अधिक हैं। उक्त स्थान पर नगर वा बस्ती का तो कोई चिह्न नहीं मिला और मिट्टी की तह देखने से मालूम होता है कि वह स्थान कई शताब्दियों तक केवल कूड़ा फेंकने की जगह थी, पर स्टेशन के निकट एक मध्यकालीन शिव मंदिर के कुछ अवशेष अवश्य मिले हैं जो बहुत ही सुंदर हैं। इनमें की बहुत सी वस्तुओं को लोगों ने बहुत कुछ नष्ट कर दिया है।

भारतीय पुरातत्व विभाग ने सारनाथ से ब्राह्मण धर्म की अनेक उत्तमोत्तम मूर्त्तियाँ भी प्रदान करने की कृपा की है। आशा है वे शीघ्र ही कलाभवन में आ जायँगी।

इस वर्ष कलाभवन में आई विशिष्ट वस्तुओं में से कुछ ये हैं—

वस्तु	दाता
श्रीनाथ जी की दो छवि	श्रीमती चंपादेवी जी, काशी
हस्तलिखित सचित्र पंचरत्न (पाँच चित्र)	श्रीयुत भवानी प्रसाद जी रईस, बड़हलगंज, गोरखपुर
पत्थर का एक मध्यकालीन अलंकृत खंभा	श्रीयुत रामनाथ पांडे, ग्राम खजुहनी, सारनाथ, बनारस
बारहट नरहर दास विरचित अवतार गीता तथा श्रीमद्भागवत की ह० लि० सचित्र खंडित प्रति	श्रीयुत काका कालेलकर, वरधा मध्यप्रांत
मृण्मूर्त्तियां तथा ईंटें आदि	श्रीयुत कुमार सुरेशसिंह जी, काला काँकर, अवध
मिट्टी के २५ पात्र (राजघाट से प्राप्त)	श्रीगरीबदास ठेकेदार, राजघाट, काशी

रामगढ़ राष्ट्र महासभा में दिए गए स्वागत भाषण की पांडुलिपि	श्रीयुत डा० राजेंद्र प्रसाद, पटना
अखिल भारतीय विज्ञान परिषद् के सभापति पद से डा० बीरबल साहनी द्वारा दिए गए भाषण की पांडुलिपि	श्रीयुत डा० बीरबल साहनी, लखनऊ

इनके अतिरिक्त संवत् १७६२ वि० की एक प्रामाणिक हस्तलिखित रामचरितमानस की प्रति श्रीशंभुनारायण चतुर्वेदी, बी० ए०, एल०एल०, बी० ने कलाभवन में प्रदर्शन के लिये भेजी है। आशा है कि उनकी कृपा से शीघ्र ही यह कलाभवन की संपत्ति हो जायगी।

कलाभवन में हिंदी में प्रकाशित सभी प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं की प्रथम संख्या रखने की व्यवस्था है। इस योजना में हिंदी साहित्यिकों तथा प्रकाशकों की सहायता तथा सहयोग से ही विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है। कलाभवन के पुस्तकालय में गतवर्ष को भाँति इस वर्ष भी पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं।

साहित्यिकों की हस्तलिपियों के नमूने एकत्र करने में इस वर्ष बाबू बालकृष्ण दास, श्रीवाचस्पति पाठक तथा श्रीलल्लीप्रसाद पांडेय से विशेष सहायता मिली है। सभा इन सज्जनों को धन्यवाद देती है।

संगृहीत वस्तुओं की रक्षा आदि—पुरानी वस्तुओं मे प्रायः सदा किसी न किसी प्रकार से नष्ट वा विकृत होने के चिह्न प्रकट होते रहते हैं। उनको देखते ही रक्षा का उचित उपाय करना अत्यंत आवश्यक होता है। इसके लिये आवश्यक वस्तुओं का सदा आयोजन रखना पड़ता है। कलाभवन में अर्थाभाव के कारण परिमित सामग्रियों तथा सुविधाओं के द्वारा ही उक्त प्रकार की वस्तुओं की केवल पूरी तरह से रक्षा ही नहीं की जाती किंतु यह प्रयत्न भी किया जाता है कि वे शताब्दी बाद तक भी अपनी वर्तमान दशा मे ही बनी रहें। इस विषय के विशेषज्ञों ने हमारे प्रयोगों तथा क्रियाओं की बराबर प्रशंसा की है। इस वर्ष इस विषय पर कई संग्रहालयों ने पूछताछ भी की थी। प्रयाग संग्रहालय से कई चित्र तथा संगृहीत पत्र आदि मरम्मत और सुरक्षित करा देने के लिये आए थे। अगले वर्ष अन्य स्थानों से भी एवं अधिक संख्या में मरम्मत के लिये चित्रों आदि के आने की संभावना है। कलाभवन में इस विषय की एक संपन्न प्रयोगशाला होने की अत्यंत आवश्यकता है।

मृण्मूर्त्तियाँ बैठकियों में लगाकर अस्थायी रूप से सजा दी गई हैं। इनको स्थायी रूप से प्रदर्शित करने के लिये लगभग सवा सौ रुपए की लागत के आधुनिक ढंग के दो 'शो-केस' तैयार कराए गए हैं। इनके यथास्थान लग जाने पर स्थायी सजावट कर दी जायगी।

सूची—आवश्यक साधन तथा सामग्री न होने पर भी चित्रों एवं पत्थर तथा मिट्टी की मूर्त्तियों आदि की विवरणात्मक सूची पूरी हो चुकी है।

परिचय-पत्र—चित्र-मंदिर में सब चित्रों पर परिचय पत्र लगा दिए गए हैं। मूर्त्तियों के परिचय-पट्ट अभी तैयार नहीं हुए हैं। मृण्मूर्त्तियों तथा पाषाण-मूर्त्तियों के परिचय-पट्ट तैयार कराने में लगभग एक सहस्र रुपया व्यय होने का अनुमान है। यह कार्य अत्यंत आवश्यक होते हुए भी अर्थाभाव के कारण नहीं कराया जा सका है। सारनाथ जैसे सरकारी संग्रहालय में भी अभी तक यह कार्य प्रायः अधूरा ही था, किंतु अब वहाँ परिचय-पट्ट पर लिखने के लिये एक कारीगर की अस्थायी नियुक्ति कर ली गई है और उक्त कार्य अब कम व्यय में शीघ्रता से हो रहा है। कलाभवन के लिये भी ऐसा ही आयोजन उपयुक्त होगा।

पाश्चात्य संग्रहालयों की सचित्र 'गाइड बुक' की श्रेणी की इस संग्रहालय की 'गाइड बुक' तथा चित्रों के रंगीन छपे हुए 'एलबम' की माँग पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष अधिक रही। 'गाइड बुक' की सभी सामग्री तैयार है, किंतु धनाभाव के कारण इसका प्रकाशन रुका है। इससे कलाभवन तथा सभा की ख्याति फैलने में रुकावट हो रही है।

कलाभवन में संगृहीत वस्तुओं के फोटोग्राफ की माँग इस वर्ष अच्छी रही। भारतीय इतिहास कांग्रेस प्रदर्शनी, इलाहाबाद की सचित्र विवरण पुस्तक प्रकाशित होने से यह माँग बढ़ी। कलाभवन की 'गाइड बुक' प्रकाशित होने पर यह माँग बहुत अधिक बढ़ जायगी। कलाभवन का जो सोलह कार्डों का 'सेट' बनवाया गया था वह भी समाप्त हो गया है।

हिंदी साहित्य सम्मेलन के विगत अधिवेशन के अवसर पर कलाभवन ने अपने साहित्यिक संग्रह का प्रदर्शन किया था जिसमें हिंदी के

पुराने लेखकों, कवियों तथा साहित्यिकों की लिपियों, मुख्यतः पत्रों एवं हिंदी की पूर्व प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की प्रथम संख्याएँ थीं। लोगों ने इन्हें देखकर बहुत हर्ष तथा गर्व प्रगट किया।

श्रीकाशीदेई चंडीप्रसाद मूर्त्ति-मंदिर—कलाभवन के मूर्त्ति-विभाग में स्थान की संकीर्णता का उल्लेख गत वर्ष किया गया था। सभा के उत्साही हितैषी श्रीमुरारीलाल केडिया ने अपनी स्वर्गीया बहन तथा बहनोई के स्मारक-स्वरूप मूर्त्तिमंदिर के आँगन को 'गैलरी' के रूप में परिणत करा देने के लिये कुल १००१) रुपया दिया। इससे अब आधुनिक ढंग की प्राकृतिक तथा कृत्रिम प्रकाश से युक्त बहुत ही सुंदर गैलरी बन गई है। इस नए हॉल का नाम 'श्री काशीदेई चंडीप्रसाद मूर्त्तिमंदिर' रखा गया है। इसका उद्घाटन प्रयाग संग्रहालय के प्राण रायबहादुर श्रीब्रजमोहन व्यास के द्वारा ता० ३१-६-९६ को संपन्न हुआ। इस नए हॉल से अभी तो काम चल रहा है किंतु नए भवन की जो कमी बहुत दिनों से है वह ज्यों की त्यों बनी हुई है।

इस वर्ष उप संग्रहाध्यक्ष पर्यटन के लिये भेजे गए। उन्होंने जयपुर के राजकीय पोथीखाने, शस्त्रागार तथा संग्रहालय का अध्ययन किया।

कलाभवन को इस वर्ष जो विशेष आर्थिक सहायता प्राप्त हुई उसका ब्योरा परिशिष्ट ६ में अन्यत्र प्रकाशित किया गया है।

कलाभवन के संस्थापक तथा संग्रहाध्यक्ष श्रीराय कृष्णदास ने कलाभवन की उन्नति के लिये जिस तत्परता के साथ उद्योग किया उसके लिये सभा उनकी कृतज्ञ है।

संबद्ध संस्थाएँ

जो संस्थाएँ सभा से संबद्ध हैं उनकी सूची परिशिष्ट ५ में दी गई है। उनमें से जिनका प्राप्त हुआ है उनके कार्यों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

नागरीप्रचारिणी सभा, भगवानपुर रत्ती, मुजफ्फरपुर—इस सभा का यह तेरहवाँ वर्ष समाप्त हुआ है। इस वर्ष भी सभा ने हिंदी प्रचार के लिये यथासाध्य प्रयत्न किया। सभा के पुस्त-

कालय में इस वर्ष ३१२ नई पुस्तकें खरीदी गईं और कुल दस पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं। वाचनालय में पाठकों की संख्या ३६३२ रही और ८८४ पुस्तकें घर ले जाकर पढ़ने को दी गईं। पुस्तकालय सर्व साधारण के लिये ४ वजे संध्या से नौ बजे रात्रि तक खुला रहता है।

खोज-विभाग ने इस वर्ष तीन हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त किए। शिक्षण-विभाग के द्वारा ३० अपढ़ व्यक्ति साक्षर किए गए। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं मे बैठने वाले छात्रों को पुस्तकें देने का समुचित प्रबंध किया गया। इससे अधिक संख्या में विद्यार्थी उन परीक्षाओं में सम्मिलित हुए।

यहाँ की कचहरियों में नागरी लिपि के व्यवहार के लिये सभा ने आन्दोलन किया है पर अभी पूरी सफलता नहीं हुई। सभा ने इस वर्ष हिंदुस्तानी नाम से प्रचलित होने वाली भ्रष्ट हिंदी का पूरा विरोध किया। सभा की ओर से यथासमय तुलसी-दिवस और हरिश्चंद्र जयंती आदि उत्सव मनाए गए।

कई प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने सभा का निरीक्षण करके बहुत संतोप प्रकट किया। उनमें निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं:—

श्री श्रीकृष्ण सिंह, श्रीअनुग्रह नारायण सिंह, श्रीजगलाल चौधरी (उस समय बिहार सरकार के क्रमशः प्रधान मंत्री, अर्थ मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री), सर्च लाइट के संपादक श्रीमुरलीमनोहर प्रसाद।

हिंदी-साहित्य-भवन, धरफरी, मुजफ्फरपुर—यह भवन बिहार की पुरानी साहित्यिक संस्थाओं में से है और अपना उन्नीसवाँ वर्ष समाप्त कर बीसवें में प्रवेश कर रहा है। सुदूर गाँव मे स्थित होने पर भी अच्छा काम कर रहा है।

भवन का कार्य मुख्यतः पुस्तकालय और वाचनालय द्वारा ही होता है। पुस्तकालय मे ग्रामोपयोगी पुस्तकें अधिक हैं। इस वर्ष छूत की बीमारियों के कारण पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या मे गत वर्ष की अपेक्षा कमी रही।

आसपास के देहाती मेलों मे, जिनमें लाखो लोग आते हैं, भवन की ओर से जुलूस और सभाओं के द्वारा भी साहित्यिक प्रचार किया जाता है। इससे देहातो मे बहुत से पुस्तकालय स्थापित हो गए हैं।

गत वर्ष यहाँ रामायण-प्रचार-समिति (बरहज, गोरखपुर) की परीक्षाओं का केंद्र खोला गया। भिन्न भिन्न परीक्षाओं में ६२ परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। इनमें कई महिलाएँ भी हैं।

प्रांत में हिंदुस्तानी के विरोधी आंदोलन में इस संस्था ने बराबर योग दिया है। गत वर्ष 'ज्योति' नाम की एक हस्तलिखित पत्रिका निकलती थी; इस वर्ष वह बंद होगई, किंतु उसे छपवाकर प्रकाशित करने का प्रयत्न हो रहा है। इस वर्ष भवन के सदस्यों की संख्या ९८ रही।

हिंदी-साहित्य-समिति, सहसराम—सहसराम की यह एक मात्र साहित्यिक संस्था है और अच्छा काम कर रही है। इसी वर्ष यह काशी नागरीप्रचारिणी सभा से सबद्ध हुई है।

इसका 'सहसराम साहित्य-सदन' नाम का एक वाचनालय भी है। इस वर्ष १३६२ व्यक्तियों ने वाचनालय में आकर पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ीं। १२५ पत्र-पत्रिकाएँ बाहर ले जाकर पढ़ी गईं।

सहसराम में इसी समिति के उद्योग से देवघर हिंदी विद्यापीठ की परीक्षाओं का केंद्र भी खोल दिया गया है।

हिंदी-प्रचार-मंडल, बदायूँ—इस मंडल की स्थापना सन् १९३७ में शिवरात्रि के दिन हुई थी। यह मंडल पुस्तकालय, वाचनालय, पुस्तक-प्रकाशन, विद्यालय और व्याख्यानों के द्वारा हिंदी-प्रचार का कार्य करता है। मंडल के अधीन एक शारदा पुस्तकालय है। इसमें लगभग ५०० पुस्तकें हैं। हिंदी की परीक्षाएँ देने वालों की सुविधा के लिये विशारद, साहित्यरत्न, विशेष-योग्यता और विदुषी परीक्षा की पुस्तकें भी रखी गई हैं। शुल्क केवल २॥) वार्षिक है।

मंडल के अधीन हिंदी-विद्यालय में तीन अवैतनिक शिक्षक हैं। विद्यालय सायंकाल ४ बजे से ६ बजे तक खुलता है। मंडल का एक हरिजन-विद्यालय भी है। इसमें ३० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इसके लिये कहीं से आर्थिक सहायता नहीं मिलती। आशा है म्युनिसिपल बोर्ड इस कार्य के महत्व को समझकर कुछ सहायता देने की उदारता दिखलाएगा।

प्रसाद-परिषद्, काशी—इस परिषद् का यह द्वितीय वर्ष समाप्त होकर तृतीय वर्ष का आरंभ हो रहा है। काशी में यह परिषद्

हिंदी-प्रचार का संतोषजनक कार्य कर रही है। इस वर्ष इसके सदस्यो की संख्या लगभग ५० रही। काशी के सभी प्रतिष्ठित कवि और लेखकों की सहानुभूति इसे प्राप्त है। इस वर्ष परिषद् के प्रयत्न से बनारस-जिला साहित्य-सम्मेलन की स्थापना का बहुत महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। इसका प्रथम अधिवेशन गत सितंबर मास मे चंदौली ग्राम मे श्रीवेंकटेश नारायण तिवारी की अध्यक्षता मे हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन श्री सम्पूर्णानन्दजी ने किया था। इसमें कवि-सम्मेलन भी हुआ था।

परिषद् के दो विशेष अधिवेशन गंगाजी में नौका पर क्रमशः शरद्-पूर्णिमा को तथा होली के दूसरे दिन साहित्य-गोष्ठी के रूप मे हुए। ये आयोजन बहुत ही सफल रहे।

इस वर्ष परिषद् की कुल २० बैठकें हुईं। अगले वर्ष से कुछ प्रकाशन कार्य भी करने का विचार हो रहा है। गत दिसंबर में एक पुस्तकालय और वाचनालय खोला गया। पुस्तकालय में ३०० साहित्यिक पुस्तकें हैं। वाचनालय में इस वर्ष ७० पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं। आशा है उदार हिंदी प्रेमी इस संस्था की सहायता करेंगे।

मस्कत और मत्रा नागरीप्रचारिणी सभा, अरब—अरब मे इस संस्था की स्थापना ज्येष्ठ बदी नवमी संवत् १९९६ को काशी की आर्य-विद्या सभा के उपदेशक पं० कन्हैया लाल मिश्र की उपस्थिति में हुई। पहले यहाँ हिंदी का प्रचार बिल्कुल न था, परंतु इस संस्था के द्वारा अब अच्छा कार्य हो रहा है। इस सभा के वाचनालय में भारत से कई मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र मँगाए जाते हैं।

यहाँ के आर्य-केलवणी-मडल द्वारा संचालित पाठशालाओ में भी हिंदी का प्रचार आरंभ कर दिया गया है। पर यहाँ के विद्यार्थियों के लिये हिंदी की बड़े अक्षरों मे छपी हुई आरंभिक पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है जिसके लिये सभा भारत के हिंदी-प्रचार के प्रेमी व्यक्तियों से आशा करती है।

संकेतलिपि विद्यालय

इस विद्यालय में इसके अध्यक्ष पं० निष्कामेश्वर मिश्र की प्रणाली से शिक्षा दी जाती है। कांग्रेस के अधिवेशनों में त्रिपुरी कांग्रेस को छोड़कर सन् १९२१ के अधिवेशन से लेकर अब तक बराबर इसी प्रणाली

से उत्कांत्त होता रहा है। इस दृष्टि से इस प्रणाली तथा इस विद्यालय की सफलता प्रत्यक्ष है।

इस वर्ष के अंत तक इस विद्यालय में ४३ विद्यार्थियों ने निःशुल्क शिक्षा प्राप्त की। भिन्न भिन्न संस्थाओं के भेजे हुए तथा दूर दूर से आए हुए विद्यार्थी इस विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। एक सज्जन रियासत मडी की ओर से आए है। दो विद्यार्थी बरहज आश्रम के, दो बलिया जिला कांग्रेस कमेटी के और दो स्याद्वाद जैन महाविद्यालय, काशी के भेजे हुए हैं। इनके अतिरिक्त अलवर राज्य, जबलपुर, गढ़वाल, आजमगढ़, प्रयाग आदि के भी विद्यार्थी हैं।

अट्ठाइसवें हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर विद्यालय की वार्षिक परीक्षा तथा अखिल-भारतीय-हिंदी-संकेतलिपि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इसमें यहाँ के विद्यार्थियो ने सफलता पूर्वक प्रमाणपत्र और पुरस्कार प्राप्त किए। प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार १७५ शब्द प्रति मिनट की गति से लिखने वाले को प्रदान किया गया था, जिसमें प्रमाणपत्र के साथ एक स्थायी चपक और कुछ चुनी हुई पुस्तके थीं। निम्नलिखित परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियो को पुरस्कार और उपाधियाँ प्राप्त हुई—

श्रीबालकृष्ण शर्मा—१७५ शब्द की गति से-प्रथम पुरस्कार और हिंदी-सकेतलिपि-रत्न की उपाधि।

श्रीमहावीरप्रसाद—१७५ शब्दकी गति से–द्वितीय पुरस्कार और हिंदी-संकेतलिपि रत्न की उपाधि।

श्रीरामदुलारे सिंह—१७५ शब्द की गति से–द्वितीय पुरस्कार और हिंदी-सकेतलिपि-रत्न की उपाधि।

श्रीदूधनाथ सिंह—१७५ शब्द की गति से–द्वितीय पुरस्कार और हिंदी-संकेतलिपि-रत्न की उपाधि।

श्रीगिरिजाशंकर बरनवाल—१३० शब्द की गति से–प्रथम पुरस्कार तथा हिंदी-सकेतलिपि-कोविद की उपाधि।

श्रीबालकृष्णदवे—१३० शब्द की गति से–प्रथम पुरस्कार तथा हिंदी-संकेतलिपि-कोविद की उपाधि।

श्रीरामअधार सिंह—१३० शब्द की गति से—प्रथम पुरस्कार तथा हिंदी-संकेतलिपि-कोविद की उपाधि।

सभी प्रमाण-पत्र सम्मेलन के सभापति पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी के हस्ताक्षर से प्रदान किए गए थे।

सरकारी गुप्तचर-विभाग में अब तक उर्दू संकेतलिपि जाननेवाले ही संवाददाता का काम करते थे, पर सन् १९३९ से हिंदी संकेतलिपि जाननेवालों को भी स्थान मिलने लगा है। पहले खुफिया इंस्पेक्टर ही उर्दू संकेतलिपि की योग्यता प्राप्त करने के लिये भेजे जाते थे और वही संवाददाता भी हुआ करते थे। किंतु सन् १९३९ से युक्त प्रांत में पहले से संकेतलिपि जानने वालों को भी स्थान दिया जाने लगा है। इस विभाग में इस विद्यालय के भी एक विद्यार्थी नियुक्त किए गए हैं।

पिछले वर्ष इस विद्यालय के कई विद्यार्थी रियासतों मे लिए गए थे। इस वर्ष भी श्रीहरिश्चन्द्र शर्मा को रामपुर रियासत ने नियुक्त किया है। इन संवाददाताओं द्वारा रियासतों मे हिंदी प्रचार बढ़ सकता है। सभा इसके लिये बराबर प्रयत्न करती रहती है। परंतु विद्यालय में स्थानाभाव के कारण बहुत से विद्यार्थियों को निराश लौटाना पड़ता है।

विद्यालय के सहायक अध्यापक श्रीकेदारनाथ अष्ठाना भी एक व्यापारिक कंपनी मे नियुक्त किए गए हैं। देश के कितने ही व्यापारी हिंदी में पत्र-व्यवहार आदि करना चाहते हैं, किंतु हिंदी के योग्य संवाददाता न मिलने के कारण वे अंग्रेजी की शरण लेते हैं। विद्यालय अब इस कमी को दूर कर रहा है। अभी तक विद्यालय मे व्यवस्थापिका सभाओं और समाचारपत्रों में काम करने वाले संवाददाता ही तैयार होते रहे हैं, परंतु अब व्यापारिक पत्र-व्यवहार आदि की शिक्षा देने का विशेष प्रबंध किया जा रहा है। व्यापारिक कार्यालयों के काम का पूरा ज्ञान करानेवाली पुस्तकों का हिंदी में नितांत अभाव है, यद्यपि अंग्रेजी में ऐसी पुस्तकें बहुत हैं। व्यापारियों की सुविधा के लिये हिंदी में एक संक्षिप्त कोष (कोड) का होना भी बहुत आवश्यक है। सभा ऐसी पुस्तकें तैयार करा सकती है, पर धनाभाव के कारण यह काम रुका है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्रीगोवर्धनदास गुप्त हिंदी में तार-प्रणाली तैयार करने का यत्न कर रहे हैं। सभा ने इसके लिये उन्हें कुछ आर्थिक सहायता भी दी है।

इस विद्यालय के द्वारा सभी ऐसे क्षेत्रों में हिंदी का प्रवेश कराया

जा सकता है जहाँ अभी तक वह उपेक्षित है। धनाभाव के कारण विद्यालय आगे नहीं बढ़ रहा है।

सभा विद्यालय के अवैतनिक प्रधानाध्यापक श्रीगोवर्धन दास गुप्त तथा अवैतनिक सहायक अध्यापक श्रीरामप्रताप गुप्त को उनके परिश्रम और तत्परता के लिये हार्दिक धन्यवाद देती है।

साहित्य गोष्ठी

स्वर्गीय बा० जयशंकर प्रसादजी ने ९००) रुपयों की जो निधि साहित्य परिषद् के लिये सभा को दान दी थी उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह साहित्य गोष्ठी स्थापित की गई थी। यह इसका नवाँ वर्ष है। इस गोष्ठी के द्वारा हिंदी-प्रेमियों को समय समय पर स्थानीय तथा बाहर के अनेक विद्वानों और कवियों के व्याख्यानों और रचनाओं को सुनने के अवसर मिलते रहते हैं। गोष्ठी को अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाने के लिये स० १९९४ से इसीके अंतर्गत 'प्रसाद'-व्याख्यान माला की आयोजना की गई है, जिसमें समय समय पर विद्वानों द्वारा सुबोध व्याख्यान हुआ करते हैं।

१८-४-९६ को सभा की ओर से स्वामी श्रीसत्यदेव परिव्राजक का स्वागत किया गया और उनका 'जर्मनी में आर्य-संस्कृति का प्रचार' पर भाषण हुआ।

इस वर्ष गोष्ठी की ओर से २-५-९६ को श्री पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के सभापतित्व में तुलसी-जयंती मनाई गई। आरंभ में महंत पं० रामजी व्यास गौड़ कथावाचक द्वारा रामायण की कथा हुई। फिर पं० केशव प्रसाद मिश्र का 'तुलसी के दार्शनिक विचार' पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुआ। इसके पश्चात् मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी श्रीभगवानदास हालना का व्याख्यान हुआ।

१६ माघ ९६ को चीनी सद्भाव-संदेश-मंडल के नायक चीन की राष्ट्रीय सरकार के धर्माध्यक्ष ताई सू महोदय का काशी आने पर सभा की ओर से विशेष रूप से स्वागत किया गया और उनके सम्मान में साहित्य गोष्ठी ने जलपान का आयोजन किया। महामान्य ताई सू ने चीनी भाषा में दिए गए अपने वक्तव्य में सभा के कार्यों पर बड़ा संतोष प्रकट किया जिसका भाव श्री भदंत आनंद कौसल्यायन ने हिंदी भाषा में समझाया। उन्होंने कहा कि महात्मा बुद्ध ने भी लोक-

भाषा को प्रधानता देकर उसकी उन्नति की थी। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि सभा उसी पवित्र कार्य को कर रही है। भारत की राष्ट्रभाषा की उन्नति के लिये सभा का प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य है।

इस वर्ष प्रसाद-व्याख्यान-माला में व्याख्यान देने वाले सज्जनों के नाम और उनके विषय नीचे दिए जाते हैं—

डाक्टर भीखनलाल आत्रेय, एम. ए., डी. लिट्,—मनोविश्लेषण
पं० माखन लाल चतुर्वेदी— साहित्य
वेदवाचस्पति पं० मोतीलाल शास्त्री—(१) ऋषि संदेश
(२) वैदिक साहित्य की उपयोगिता
प्रो० यू. ए. असरानी— रेडियो (सचित्र)
डा० अमूल्य कुमार बनर्जी— आँखों की रक्षा (सचित्र)
माननीय बा० घनश्यामसिंह गुप्त— हिंदी की वर्त्तमान अवस्था

इस वर्ष प्रसाद-व्याख्यान-माला के संयोजक पं० विद्याभूषण मिश्र जी रहे। उन्होंने जिस परिश्रम और उत्साह के साथ कार्य किया उसके लिये सभा उन्हे धन्यवाद देती है।

हिंदी प्रचार

पंजाब, कश्मीर और असम प्रांतों से सभा को इस वर्ष बहुत से पत्र मिले जिनमें उन प्रांतो में हिंदी की अवस्था का उल्लेख है। वहाँ प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप मे हिंदी पर जो आक्रमण हो रहे हैं तथा हिंदी को जो अघात पहुँच रहा है उससे वहाँ के हिंदी प्रेमी क्षुब्ध हो उठे हैं और वे सभा की सहायता चाहते हैं। धनाभाव के कारण सभा उन प्रांतों में प्रचार-कार्य का भार उठाने में समर्थ नहीं रही, फिर भी अपने सामर्थ्य भर उसने प्रयत्न किया और कर रही है। जनवरी १९४० के आरंभ में सभा के सभापति पं० रामनारायण मिश्र ने पंजाब जाकर वहाँ की अवस्था का निरीक्षण किया। वहाँ एक प्रतिनिधिदल भेजने का सभा निश्चय कर चुकी है और पंजाब तथा कश्मीर में प्रचार के खर्च के लिये सभा ने उदार महानुभवों से ३०००) की सहायता का अनुरोध किया।

सभा से प्रकाशित 'बिहार में हिंदुस्तानी' नाम की पुस्तक को लेकर बिहार में कुछ लोगों ने यह भ्रम फैलाना आरंभ किया कि युक्त

प्रांत के साहित्यिक बिहार के साहित्यिकों को अवज्ञा की दृष्टि से देखते हैं। सभा ने इस भ्रम को दूर करने का यत्न किया और इस संबंध में दो वक्तव्य निकाले जो युक्तप्रांत, बिहार और कलकत्ते के प्रमुख पत्रों में छपे। इस वर्ष भभुआ (शाहाबाद) में नवजीवन साहित्य परिषद् श्रीयुत् पं० रामनारायण मिश्र के सभापतित्व मे हुई। सुहृद् संघ, मुजफ्फरपुर की ओर से भी पं० रामनारायण मिश्र के मुजफ्फरपुर जाने पर एक विराट् सभा हुई थी। इन दोनों सभाओं में भी सभा का वक्तव्य देकर स्थिति को स्पष्ट किया गया। सभा की हिंदी-प्रचार-उपसमिति के संयोजक पं० चंद्रबली पांडेय, एम. ए. उक्त दोनों सभाओं में पंडितजी के साथ गए थे और उन्होंने भाषण भी दिया था।

हिंदी प्रचार की दृष्टि से सभा ने इस वर्ष कुछ संस्थाओं को नागरी प्रचारिणी पत्रिका नि.शुल्क दी तथा हिंदी-प्रचार-सभा, जम्मू और हिंदी-भवन, शांति निकेतन को कुछ पुस्तकें विना मूल्य देने का निश्चय किया।

प्रतिनिधि दल

वर्ष के आरंभ में सभा के सभापति श्रीयुत पं० रामनारायण मिश्र ने बनारस ट्रेनिंग कालेज के प्रोफेसर पं० लालजी राम शुक्ल के साथ सभा के निमित्त धनसंग्रह के लिये मध्य भारत की यात्रा की। पहले वे उज्जैन गए। वहाँ पं० सूर्यनारायण व्यास, प० गोपाल कृष्ण शास्त्री तथा डाक्टर दुर्गा शंकर नगर से जो सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिये सभा उनकी ऋणी है।

उज्जैन से प्रतिनिधि दल इंदौर गया। वहाँ 'वीणा' संपादक पं०कालिका प्रसाद दीक्षित, राव बहादुर सरदार माधवराव विनायकराव किबे, पं० रामभरोसे तिवारी तथा प्रो० ज्वाला प्रसाद सिंहल से बड़ी सहायता मिली। पर रियासत मे प्रजामंडल के आंदोलन के कारण राज्य से कुछ सहायता न मिल सकी। इंदौर से प्रतिनिधिदल देवास, सीतामऊ, प्रतापगढ़, सैलाना, रतलाम, धार और फिर उज्जैन होकर भूपाल, छिंदवाड़ा, नृसिंहपुर और सतना होते हुए बनारस लौटा। इस यात्रा में महाराजकुमार डा० रघुबीर सिंह (सीतामऊ), महाराजा महारावत सर प्रताप सिंह (प्रतापगढ़) (जिनकी माता स्वर्गीया श्रीमती सूर्यकुमारीजी

की बहिन हैं) तथा महाराज भरतसिंह (मुलथान) और दीवान बहादुर के. नादकार (धार) ने सभा तथा प्रतिनिधिदल पर बड़ी कृपा दिखलाई।

इस यात्रा में हिंदी-प्रचार का बड़ा काम हुआ। साथ ही कुछ साधारण सभासद, एक विशिष्ट सभासद और तेरह स्थायी सभासद बने। जिन महानुभावों ने प्रतिनिधिदल की सहायता की उन सब की सभा हृदय से अनुगृहीत है।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

इस वर्ष सभा के आमंत्रण पर अखिलभारतीय हिंदी-'साहित्य'-सम्मेलन का अट्ठाइसवाँ अधिवेशन सभा मे ही २९ आश्विन से १ कार्तिक तक श्रीअंबिकाप्रसाद वाजपेयी के सभापतित्व मे सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। स्वागताध्यक्ष महामना पंडित मदनमोहन मालवीय थे।

सम्मेलन के अंतर्गत साहित्य-परिषद् श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', राष्ट्रभाषा-परिषद् डाक्टर राजेंद्र प्रसाद, दर्शन-परिषद् डाक्टर भगवानदास, समाजशास्त्र-परिषद् आचार्य नरेंद्रदेव, विज्ञान-परिषद् डा० गोरख प्रसाद, पत्रकार-सम्मेलन श्रीमाखनलाल चतुर्वेदी, कवि-सम्मेलन श्रीदेवीदत्त शुक्ल, कहानी-सम्मेलन श्रीसुदर्शन, महिला-सम्मेलन श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान और नवयुवक-सम्मेलन श्रीभगवतीचरण वर्मा के सभापतित्व में हुए। सभा के अंतर्गत कलाभवन की ओर से एक साहित्यकला–प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। दो दिन 'प्रसाद' जी के स्कंदगुप्त तथा विविध नाटकों के कुछ चुने हुए दृश्यों का अभिनय भी प्रस्तुत किया गया था।

१ कार्तिक को सभा की ओर से सम्मेलन के प्रतिनिधियों को जलपान कराया गया।

सम्मेलन का समस्त प्रबंध सभा ने अपने हाथों में ले लिया था और सभा के सभापति पं० रामनारायण मिश्र ने अकेले तथा अन्य सदस्यों के साथ काशी में तथा बाहर जाकर भी चंदा एकत्र किया। सभा के सभासदों ने भी पर्याप्त सहयोग दिया। तिस पर भी अंत में सभा को १८४।=)॥ घाटा देना पड़ा।

'हरिऔध' अभिनंदन

सम्मेलन के अवसर पर २९ आश्विन को सायंकाल सम्मेलन-मंडप मे विराट जनसमूह की उपस्थिति मे साहित्य-वाचस्पति पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का उनकी ७५ वी वर्षगाँठ के शुभावसर पर सभा की ओर से अभिनंदन किया गया।

विशिष्ट दर्शक।

इस वर्ष जो सज्जन सभा के कलाभवन तथा अन्य विभाग देखने के लिये आए उनमे निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय है—

मेजर डा० रणजीत सिंह ओ० बी० सी०, डा० सच्चिदानंद सिन्हा (वाइस चांसलर, पटना विश्वविद्यालय), श्री अब्दुलगनी अंसारी (कमिश्नर इंकमटैक्स, युक्तप्रांत); डाक्टर राजेंद्रप्रसाद; माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन; श्रीकाका कालेलकर; डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या; श्री अर्धेंदुकुमार गांगुली; भारतीय पुरातत्व विभाग के डाइरेक्टर जनरल राव बहादुर काशीनाथ दीक्षित, श्री एन सी. मेहता, आई. सी. एस. (लखनऊ), श्री परमानंद कुंवरजी कापड़िया (बंबई); सर चुन्नीलाल मेहता बैरोनेट, रावराजा रायबहादुर डाक्टर श्यामबिहारी मिश्र; श्रीजवाहरलाल नेहरू; श्रीरणजित सीताराम पंडित; श्रीगोस्वामी प० गणेशदत्तजी (सनातनधर्म सभा, पंजाब) तथा चीनी सद्भाव-संदेश-मंडल के नायक और चीन की राष्ट्रीय सरकार के धर्माध्यक्ष महामान्य ताई सू।

स्थायी कोश।

इस वर्ष सभा के स्थायी कोश मे जो रुपया जमा हुआ उसका ब्योरा इस प्रकार है—

९७६—)११	२९८६—) गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट ३२००) अंकित मूल्य के खरीदे
८२॥) साधारण सभासदों के चंदे का बीसवाँ अंश	२२६७=)११ बचत जिसका स्टाक सर्टिफिकेट खरीदा जायगा
३६६६।—)॥। स्थायी सभासदों का चंदा	
१९८॥)॥ स्टाक सर्टिफिकेट और पो० सेविंग बंक का ब्याज	
५२५३≡)११	५२५३≡)११

इस समय स्थायी कोश में ८२००) के ३॥ प्रतिशत ब्याज वाले सरकारी कागज हैं और २२६७=)११ बंकों में जमा हैं। ८२००) में ४८००) के कागज ट्रेजरर चैरिटेबल एंडाउमेंट फंडस् (युक्त प्रांत) के पास जमाकर दिए गए हैं (देखिए परिशिष्ट ९)। शेष ३४००) के कागज तथा वे कागज भी जो बंक में जमा रुपयों से खरीदे जायँगे, उक्त ट्रेजरर के पास भेज दिए जायँगे।

आय व्यय

इस वर्ष के आय व्यय का लेखा इस विवरण-पत्र मे अन्यत्र दिया गया है। उससे पता चलता है कि इस वर्ष के अंत मे कुल आय ३६२०२॥।)६½ हुई। इसमें ४६७०।=)५ गत वर्ष की बचत है और ३१२३२।=)१½ इस वर्ष की आय है। इस वर्ष कुल व्यय ३०४५४॥=)४½ हुआ।

इस वर्ष आय का अनुमान १७२८८) किया गया था और व्यय का १७२७८)। किंतु आय और व्यय दोनों ही अनुमान से लगभग दूने हुए। इस वर्ष कलाभवन में प्रांतीय सरकार से १०००) की अस्थायी सहायता मिली और अनुमान से अधिक स्थायी सभासद बने जिससे स्थायी कोश में भी वृद्धि हुई। फुटकर मे कुछ विशेष चंदा मिला। प्रायः सभी मदों में साधारण आय भी अधिक हुई। स्थायी कोश में स्टाक सर्टिफिकेट खरीदे गए और कलाभवन मे २०००) का हमजानामा का चित्र खरीदा गया। इसके अतिरिक्त पुस्तकें अधिक प्रकाशित होने से सब मालाओं तथा सभा की पुस्तकों की छपाई में भी अधिक व्यय हुआ। इन कारणों से व्यय भी अनुमान से अधिक हुआ जो अत्यंत अवश्यक था। इस बात का ध्यान रखा गया कि आय से अधिक व्यय न हो।

इस वर्ष लगभग ३५००) ऋण चुकाने में व्यय हुआ। अंत में ५७४७॥-)२ की बचत रही।

आर्थिक स्थिति

आर्थिक दृष्टि से सभा के निम्नलिखित विभाग किए जा सकते हैं—

खर्च के खाते—	वार्षिक आय के द्वार—
—(क) देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तक माला	इंपीरियल बंक के हिस्सों का ब्याज
(ख) बालाबख्श रा. चा. पुस्तकमाला	स्टाक सर्टिफिकेट का ब्याज
(ग) पदक और पुरस्कार	,, ,, ,,
(घ) साहित्य परिषद	,, ,, ,,
—(क) सूर्यकुमारी पुस्तकमाला	पुस्तकों की बिक्री
(ख) देवपुरस्कार ग्रंथावली	,, ,, ,,
(ग) हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज	सरकारी वार्षिक सहायता
—(क) संकेत लिपि	टाइपराइटिंग का मासिक शुल्क
(ख) नागरीप्रचारिणी पत्रिका	सभासदों का चंदा, ग्राहक शुल्क
—(क) हिंदी-प्रचार	अदालती फार्मों की बिक्री
(ख) पुस्तकालय	सरकारी सहायता, म्यु० बोर्ड की सहायता, चंदा, पुस्तकें
(ग) कलाभवन	शिवलाल मेहरोत्रा निधि का ब्याज और पुस्तकों की बिक्री
—(क) पुस्तक प्रकाशन (ख) कार्यालय वेतन (ग) डाकव्यय (घ) फुटकर (च) भवन निर्माण (छ) यात्रा व्यय (ज) ऋण भुगतान	पुस्तकों की बिक्री, स्थायी कोप का ब्याज, पुस्तकमालाओं की निधियों से कार्यालय खर्च

इन विभागों में पहले विभाग की आय दाताओं की दी हुई निधियों के ब्याज से आती है इसलिये इनमें सभा को अपने पास से

कुछ नहीं लगाना पड़ता। दूसरे विभाग की मदों की कोई स्थायी निधि नहीं है, पर उनमें जो वार्षिक आय होती है उसी में से खर्च किया जाता है, सभा अपने पास से प्रायः कुछ नहीं खर्च करती। तीसरे विभाग की मदों मे भी सभा को प्राय: अपने पास से खर्च नहीं करना पड़ता। यद्यपि इन मदों में आय से अधिक खर्च की आवश्यकता होती है, पर सभा उसे रोक कर आय के अनुसार ही व्यय करती है।

चौथे विभाग की मदों में कम से कम खर्च करने पर भी पर्याप्त आय न होने के कारण या तो सभा को अपनी साधारण आय से खर्च करना पड़ता है अथवा विशेष रूप से चंदा एकत्र किया जाता है। पुस्तकालय का अनिवार्य चलता खर्च इस समय लगभग २९००) और कलाभवन का ७००) है। पर इसमे आय क्रमश: लगभग १९००) और २५) होती है। हिंदी-प्रचार में यदि अनिवार्य आकस्मिक व्यय न आ पड़े तो साधारण चलता खर्च लगभग १५०) ही होता है और अदालती फार्मों की बिक्री से लगभग ५०) आय होती है। इस प्रकार इन मदो में साधारणत: १७७५) प्रतिवर्ष सभा को अपनी साधारण आय मे से खर्च करना पड़ता है।

पाँचवें विभाग के सब खर्चों के लिये सभा की साधारण आय पर ही निर्भर रहना पड़ता है। साधारण आय मे इस समय पुस्तकों की बिक्री से लगभग ५०००), स्थायी कोश के व्याज से ३१५) औरपुस्तक-मालाओं से कार्यालय खर्च के लिये ६२५) अर्थात् कुल ५६४०) आ जाते हैं। किंतु खर्च इससे बहुत अधिक है। यदि भवननिर्माण, यात्राव्यय और ऋण भुगतान को बिल्कुल छोड़ दिया जाय तो कार्यालय खर्च और पुस्तक प्रकाशन में ही लगभग ८६००) देना पड़ता है। इस प्रकार इस विभाग में २६६०) और विभाग (४) की कमी १७७५) मिलाकर मोटे तौर पर ४५००) का घाटा प्रति वर्ष सभा को आवश्यक रूप से होता है।

ऋण भुगतान के लिये भी लगभग ३०००) प्रतिवर्ष देना पड़ता है। ऐसी अवस्था मे या तो विशेष चंदा किया जाता है, यो दूसरी मदो के आवश्यक खर्च में से काटना पड़ता है या नया ऋण बढ़ता है।

इस समय सभा के ऊपर लगभग १७५००) रु० ऋण है। गत वर्ष यह ऋण २१०००) के लगभग था। किंतु सभा के सभापति पं० राम-

नारायण मिश्र के सतत प्रयत्न से इस वर्ष लगभग ३५००) ऋण चुकाया गया। आर्थिक सुव्यवस्था की दृष्टि से बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला, साहित्यपरिषद, स्थायीकोश तथा पदक पुरस्कारों की निधियाँ युक्त प्रांतीय ट्रेजरर चौरिटेबल एंडाउमेंट फंडस् के पास जमा कर दी गई हैं। इस संबध की सरकारी विज्ञप्ति इस विवरणपत्र के परिशिष्ट ६ में दी गई है।

स्थायी कोश के लिये सभा ने गतवर्ष १०००००) की अपील की थी। सौ सौ रुपया एक बार देकर १००० सभासद बन जाने से यह कोश पूरा हो जाता है। अब तक लगभग १००००) इस कोश में आ चुका है और यदि जिनके यहाँ चंदा बाकी है वह सब प्राप्त हो जाय तो यह रकम १५०००) तक पहुँच जाय। स्थायी कोश के पूरा हो जाने पर उसके ब्याज से ३५००) की निश्चित वार्षिक आय होगी और कार्यालय के चलते खर्च के लिये सभा की बहुत बड़ी चिंता दूर हो जायगी।

सभा की आवश्यकताएँ

सभा की आर्थिक अवस्था को सुदृढ़ करने और उसके कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिये उसे निम्नलिखित धन की आवश्यकता है —

(१) सभा का कलाभवन भारतीय संस्कृति तथा कला संबंधी वस्तुओं की रक्षा करने वाली अपने ढग की एक ही संस्था है। इसके संचालन और सुव्यवस्था के निमित्त चलते खर्च के लिये २५००) वार्षिक की आवश्यकता है।

(२) आर्यभाषा-पुस्तकालय में सभा हिंदी की सभी प्रकाशित पुस्तकें और समाचारपत्र रखना चाहती है, पर उनमें प्रतिवर्ष बहुत ही थोड़ी पुस्तकें संग्रह की जा सकती हैं। पुस्तकें खरीदने और आलमारियाँ बनवाने के लिये प्रतिवर्ष २५००) की आवश्यकता है। यदि प्रांतीय सरकार कृपाकर अपनी वर्तमान सहायता में १०००) प्रतिवर्ष वृद्धि कर दे और हिंदी पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशक अपने प्रकाशनों की एक एक प्रति उदारतापूर्वक सभा को भेंट किया करें तो पुस्तकालय की यह आवश्यकता पूरी हो सकती है।

(३) नागरी-प्रचारिणी-ग्रंथमाला में सभा प्राचीन कवियों और लेखकों की रचनाएँ योग्य विद्वानों से संपादित करा के प्रकाशित करती है। इधर यह काम अर्थसंकट के कारण बिल्कुल रुका हुआ है। खोज-विभाग के द्वारा प्रतिवर्ष जिन महत्वपूर्ण ग्रंथों का पता लगता है, उनका केवल विवरण लिया जाता है जिसके लिये प्रांतीय सरकार कृपाकर २०००) वार्षिक देती है। किंतु उन ग्रथों को प्राप्त कर सुरक्षित रखना तथा उन्हें संपादित कराके प्रकाशित करना बहुत बड़ा आवश्यक कार्य है। अन्यथा वे सभी ग्रंथ धीरे धीरे सदा के लिये नष्ट हो जायँगे और जनता को उनसे कोई लाभ न हो सकेगा। इसके लिये ५०००) प्रतिवर्ष की आवश्यकता है। सभा इसके लिये प्रांतीय सरकार से प्रार्थना करती है।

(४) देश विदेश में हिंदी का प्रचार करना सभा के मुख्य उद्देश्यों में से है। इसके लिये ३०००) प्रति वर्ष चाहिए।

(५) सकेतलिपि कक्षा के लिये दो हिंदी टाइपराइटरों की आवश्यकता है। इसके लिये ८००) की आवश्यकता है।

(६) कलाभवन, पुस्तकालय, सकेतलिपि-विद्यालय तथा पुस्तकों के स्टाक के लिये स्थान की बहुत कमी है। सभा को श्रीरायकृष्णजी की कृपा से भूमि प्राप्त हो गई है और महामना प० मदनमोहन मालवीयजी के हाथो नए भवन की नींव भी पड़ चुकी है। कम से कम २५०००) प्राप्त होने पर ही भवन मे हाथ लगाया जा सकता है।

(७) गत वर्ष स्थायी कोश के लिये सभा ने १०००००) की अपील की थी। उदार हिंदी प्रेमियो की कृपा से लगभग १००००) अब तक प्राप्त हो चुके हैं। इतनी बड़ी सस्था के लिये सौ रुपए देनेवाले नौ सौ स्थायी सभासद हो जाना कोई कठिन बात नहीं है। जो स्थायी सभासद किश्त से चंदा देते हैं उनका पूरा चंदा प्राप्त हो जाने पर कुल लगभग १५०००) हो जायँगे और तब केवल ८५०००) की कमी रह जायगी।

(८) सभा पर इस समय लगभग १७५००) ऋण है जो हिंदी संसार के लिये लज्जा की बात है। देश में हिंदी प्रेमी अनेक ऐसे धन-कुबेर हैं जो इच्छा करते ही एक बार मे यह ऋण चुका दे सकते हैं।

स्वर्णजयंती

संवत् २००० वि० अब निकट आ गया है। इसी संवत् में सभा का पचासवाँ वर्ष पूरा होगा और उसकी स्वर्णजयंती मनाई जायगी। संयोग की बात है कि महाराजा विक्रमादित्य की दूसरी सहस्राब्दि के शुभ अवसर पर ही सभा की स्वर्णजयंती पड़ रही है। इस आने वाले अपूर्व समारोह के लिये सभा अभी से तैयारी कर रही है। किंतु इस बीच सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि सभा का संपूर्ण ऋण चुका दिया जाय और उसका स्थायी कोश पूरा करके उसकी आर्थिक अवस्था सुदृढ कर दी जाय। ऐसा हुए बिना स्वर्णजयंती मनाने का प्रयत्न शोभा नहीं देगा। इसलिये समस्त हिंदी प्रेमियों और अपने हितैषियों से सभा का अनुरोध है कि वे प्रयत्न करके इस भारी अर्थ संकट से अपनी प्यारी संस्था की रक्षा करें। तीन वर्ष का समय है, हिंदी प्रेमियों की संख्या और सामर्थ्य अनंत है और यह सब देखते हुए सभा की आवश्यकताएँ बहुत थोड़ी हैं।

प्रांतों और रियासतों में हिंदी प्रचार

असम—हिंदी प्रेमियों को यह जानकर संतोष होगा कि राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति, वर्धा के प्रबंध में असम प्रांत में हिंदी का प्रचार निर्विरोध रूप से बड़ी सफलता के साथ हो रहा है। अभी सन १९३८ से ही यहाँ इस उद्योग का आरंभ व्यवस्थित रूप में हुआ है, जब महात्मा गांधी ने जाकर वहाँ के लोगों को राष्ट्रभाषा सीखने का महत्व समझाया था। उसके बाद श्रीयुत काका कालेलकर, बाबा राघवदास और श्रीयुत श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने भी वहाँ दौरा करके संघटित रूप से कार्य की व्यवस्था की।

सन १९३९ में यहाँ प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना श्रीयुत गोपीनाथ बरदलै की अध्यक्षता में हुई। गुवाहाटी में एक राष्ट्र-भाषा-अध्यापन-मंदिर भी खोला गया। भिन्न-भिन्न स्थानों में प्रचार-केंद्र खोले गए और हाईस्कूलों में हिंदी पढ़ाने का कार्य आरंभ किया गया। थोड़े ही दिनों में प्रचार में इतनी सफलता हुई है कि इस समय वहाँ राष्ट्रभाषा सीखनेवालों की संख्या ५५०० है जिनमें ६०० स्त्रियाँ या कन्याएँ हैं। प्रांतीय समिति का कार्य श्रीयुत जमुनाप्रसाद श्रीवास्तव

के सचालन में होता है। मणिपुर रियासत में भी प्रचार समिति का संघटन हुआ है और २०० मणिपुरी विद्यार्थी हिंदी सीख रहे हैं।

असमी बंधुओं की सुगमता के लिये राष्ट्रभाषा-असमी-कोश, हिंदी-खासिया रीडर तथा प्रारंभिक व्याकरण आदि पुस्तकें तैयार कराई जा रही हैं। हिंदी परीक्षाओं के केंद्र भी खोले गए हैं जिनमे उत्साहपूर्वक अच्छी संख्या मे विद्यार्थी बैठते हैं।

प्रांत के अन्य मुख्य केंद्रों में नौगाँव का राष्ट्रभाषा-विद्यालय अच्छा काम कर रहा है।

पंजाब—पजाब प्रात मे इस समय हिंदी की अवस्था शोचनीय है। वहाँ एक तो यों ही उर्दू का बोलबाला है, दूसरे सरकार की हिंदी-घातिनी नीति रही सही हिंदी को भी दूर कर देना चाहती है। पजाब में प्रांतीय-हिंदी-साहित्य सम्मेलन का कार्य नहीं के बराबर होता है, उसके संघटन की बड़ी आवश्यकता है। राष्ट्रभाषा-प्रचारक संघ, लाहोर, जो सन् १९३७ मे स्थापित हुआ था, इस समय हिंदी प्रचार के कार्य मे सचेष्ट है। उसके प्रचार विभाग ने, थोड़े दिन हुए, 'शिक्षा विभाग और हिंदी' शीर्षक एक लेख अंग्रेजी और हिंदी में पुस्तिकाकार प्रकाशित किया है जिसमे हिंदी के प्रति प्रांतीय सरकार की नीति की आलोचना की गई है। उससे पता चलता है कि वहाँ हिंदी की स्थिति क्या है।

प्रारंभिक शिक्षा मे लड़कों में हिंदी का स्थान है ही नहीं, लड़कियों में जो कुछ है उसे दूर करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। माध्यमिक शिक्षा में लड़कों में भी थोडी बहुत हिंदी है, उसे भी हटाने का प्रयत्न हो रहा है। वयस्क शिक्षा मे हिंदी का कोई स्थान ही नहीं है। ऐसी स्थिति मे पंजाब मे खूब संघटित रूप में आंदोलन करने की आवश्यकता है। सभा के सभापति प० रामनाराय मिश्र के पंजाब के दौरे मे यह अनुभव हुआ है कि वहाँ इस समय हिंदी प्रचार का सबसे उपयुक्त अवसर है। लोकमत हिंदी के पक्ष में है। आर्यसमाज और सनातनधर्म सभाओं का भी सहयोग प्राप्त होगा। केवल कुछ ऐसे कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है जो बिखरी हुई शक्तियों को संघटित कर सकें। सभा इसके लिये प्रयत्नशील है और हिंदी-साहित्य सम्मेलन ने भी इस ओर ध्यान दिया है।

बंगाल—बंगाल प्रांत में यों हिंदी जानने और पढ़नेवालों की सख्या कम नहीं है, जिसका प्रमाण यह है कि प्रांत की राजधानी से विश्वमित्र (दैनिक, साप्ताहिक, मासिक), विशाल भारत, (मासिक) और लोकमान्य (दैनिक) जैसे सफल पत्र निकल रहे हैं, पर प्रांत में सार्वजनिक रूप से हिंदी का प्रचार करने वाली कोई संघटित संस्था नहीं है। राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्यान राष्ट्रभाषा प्रचार की ओर रहता है, पर वह इसके लिये प्रयत्न नहीं कर रही है।

बड़े हर्ष की बात है कि शांति-निकेतन के नव-स्थापित हिंदी-भवन मे हिंदी-साहित्य के अध्ययन की व्यवस्था की जा रही है। पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी इसकी उन्नति के लिये प्रयत्न कर रहे हैं। बंगाल में हिंदी के कम प्रचार का एक कारण यह है कि बंगालियों में हिंदी के प्रति कुछ विद्रोह की सी भावना पाई जाती है। इसका कारण यह भ्रांत धारणा है कि हिंदीवाले बलपूर्वक प्रांतीय भाषाओं को हटाकर हिंदी का साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इसका बहुत कुछ निराकरण उस समय हुआ जब डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या गत कार्तिक मे काशी नागरीप्रचारिणी सभा मे पधारे थे। यह विश्वास करना सर्वथा उचित है कि हिंदी भवन के द्वारा इस भ्रम को दूर करने मे सहायता मिलेगी।

बंबई—बंबई प्रात मे हिंदी प्रचार करनेवाली मुख्य संस्थाएँ हैं महाराष्ट्र-हिंदी-प्रचार-समिति, हिंदी-प्रचारक-मंडल (सूरत), बंबई हिंदी विद्यापीठ, राष्ट्रभाषा-प्रचार-कार्यालय (अहमदाबाद)। इनके अतिरिक्त राष्ट्रभाषा-अध्यापन-मदिर (सूरत) और राष्ट्रभाषा-शिक्षक विद्यालय (पूना) जैसी प्रातीय सरकार द्वारा मान्य संस्थाएँ भी हैं।

हिंदी-प्रचारक-मडल (सूरत) बड़ी सचेष्टता से कार्य कर रहा है और थोड़े ही दिनों मे उसने पर्याप्त उन्नति की है। इसके अंतर्गत हिंदी विद्यामदिर और उसकी शाखाओं के द्वारा हिंदी शिक्षण का बहुत अच्छा कार्य हो रहा है। राष्ट्रभाषा-अध्यापन-मदिर मे हिंदी के शिक्षकों को अध्यापन की शिक्षा दी जाती है जो हिंदी सीखकर अध्यापन का कार्य करते हैं। मडल का एक पुस्तकालय और वाचनालय भी है और समय समय पर इसके द्वारा सभाएँ भी हुआ करती हैं।

बंबई-हिंदी-विद्यापीठ भी हिंदी शिक्षण का बहुत संतोषजनक कार्य कर रहा है। बंबई नगर मे इसके अनेक केंद्र हैं जहाँ हिंदी की शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। इसका एक पुस्तकालय भी है।

अहमदाबाद के राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यालय के द्वारा तीन वर्षों से हिंदी-प्रचार का कार्य हो रहा है। अबतक इसके द्वारा १०००–११०० व्यक्तियों को हिंदी सिखाई गई है।

मारवाड़ी-सम्मेलन का मारवाड़ी-हिंदी-पुस्तकालय हिंदी की अच्छी सेवा कर रहा है। कार्तिक १९९६ को अंत होनेवाले वर्ष मे इसके वाचकों की संख्या १६८७० तथा बाहर जानेवाली पुस्तकों की संख्या ९७०० रही। ३०००) रु० प्रतिवर्ष का घाटा सहकर यह पुस्तकालय चलाया जा रहा है। बबई के मारवाडी भाइयों के लिये यह कुछ भी कठिन नहीं है कि वे इसकी एक स्थायी निधि स्थापित कर दें जिसकी आय से इसका खर्च चले। वहाँ के अन्य उदार हिंदी-प्रेमियों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए।

बिहार—बिहार प्रांत मे बिहार प्रादेशिक हिंदी–साहित्य-सम्मेलन के अतिरिक्त जिलों और तहसीलो मे कई हिंदी की संस्थाएं हैं जिनमें आरा नागरीप्रचारिणी सभा, आरा जिला-साहित्य-सम्मेलन, छपरा की लोकमान्य समिति, सहसराम की हिंदी साहित्य समिति, हिंदी साहित्य भवन (धरफरी), नागरीप्रचारिणी सभा (भगवानपुर रत्ती), सुहृद सघ (मुजफ्फरपुर) के नाम उल्लेखनीय हैं। धनबाद में भी, थोड़े दिन हुए, हिंदी साहित्य परिषद् की तथा भभुआ मे नवजीवन-साहित्य-परिषद् की स्थापना हुई है।

इस वर्ष बिहार की संस्थाओं का ध्यान अधिकतर हिंदुस्तानी के विरोध में ही लगा रहा। हिंदुस्तानी के प्रकाशको और समर्थकों ने भरसक हिंदुस्तानी के प्रचार मे कोई उपाय उठा नहीं रखा, पर बिहार ने सघटित रूप में उसका विरोध किया। आरा जिला-साहित्य-सम्मेलन के सभापति के पद से श्रीयुत राहुल सस्कृत्यायन ने अपने भाषण मे तथा पं० छविनाथ पाडे और सुहृद संघ के मत्री श्रीयुत नीतीश्वर-प्रसाद सिंह आदि सज्जनों ने अपने लेखों द्वारा हिंदुस्तानी का प्रबल विरोध किया। लोकमान्य समिति के मंत्री श्रीसतीशचंद्र शर्मा ने भी इस प्रयत्न में अच्छा योग दिया।

ब्रह्मदेश—ब्रह्मदेश में हिंदी की चार मुख्य संस्थाएँ हैं जो भिन्न भिन्न क्षेत्रों में काम कर रही हैं। बर्मा हिंदी-प्रचार-सभा बौद्धो और ब्रह्मदेशीय भिक्षुओं में हिंदी का प्रचार करती है। ब्रह्म-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ब्रह्मदेशीय सरकार से हिंदी को उचित अधिकार दिलाने का प्रबंध करता है। हिंदी-प्रेमी-मंडल रंगून के शिक्षित मद्रासी भाइयों को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार-सभा की परीक्षाओ मे बैठने की तैयारी कराता है।

हिंदी-साहित्य-मंडल मुख्यत. साहित्यिक संस्था है। इसका एक पुस्तकालय भी है। इसके द्वारा हिंदी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के लिये परीक्षार्थियों को सुविधा दी जाती है। साप्ताहिक साहित्य-गोष्ठी तथा समय समय पर लेख-प्रतियोगिता भी होती है। इस वर्ष मंडल के सभासदों की सख्या में वृद्धि हुई है।

मद्रास—मद्रास प्रांत मे दक्षिण-भारत-हिंदी-प्रचार-सभा द्वारा व्यवस्थित रूप में कार्य हो रहा है। प्रचार के लिये भिन्न भिन्न स्थानों में इस वर्ष लगभग १००० सभाएँ हुईं। मद्रास नगर मे भी हिंदी सिखाने का कार्य सफलतापूर्वक हुआ, जिसके फलस्वरूप वहाँ से इस वर्ष ६७० परीक्षार्थी हिंदी परीक्षाओं मे बैठे।

सभा के परीक्षा विभाग, पुस्तकालय तथा वाचनालय और प्रकाशन विभाग के कार्यों मे भी उन्नति हुई। इस वर्ष 'हिंदी प्रचार समाचार' नाम की पत्रिका निकाली गई और 'दक्षिण भारत' त्रैमासिक बनाया गया। इस वर्ष एक हिंदुस्तानी संगीतशाला भी खोली गई।

आंध्र, केरल, तमिल, और कर्नाटक प्रांतो मे पूर्ववत् काम होता रहा। मैसूर मे 'मैसूर रियासत हिंदी-प्रचार-समिति' की स्थापना हुई जो कर्नाटक प्रांतीय सभा के अधीन रियासत मे प्रचार कार्य करती है।

कर्नाटक-प्रांतीय-प्रचार-सभा अच्छा कार्य कर रही है। इस प्रांत मे इसके अतिरिक्त लगभग ५० संस्थाएँ प्रांतीय सभा के अंतर्गत अथवा स्वतंत्र रूप से काम कर रही हैं।

मध्यप्रांत—रायपुर मे हिंदी-साहित्य-मंडल और उसकी शाखाओ के द्वारा कार्य होता है। इस हिंदी-साहित्य-मंडल की ओर से इस वर्ष प्रांतीय-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन २६, २७, २८

दिसंबर १९३९ को रायगढ़-नरेश श्रीमान् राजा चक्रधर सिंह के सभापतित्व में संपन्न हुआ।

बेतूल की हिंदी-साहित्य-समिति का कार्य मुख्यतः हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं का प्रचार करना है। परीक्षार्थियों को अधिक से अधिक सुविधा देने का प्रयत्न किया जाता है। साहित्यिक उत्सवों और कविसम्मेलनों के द्वारा भी प्रचार किया जाता है।

श्रीशारदा-शांति-साहित्य-सदन (केवलारी) ग्रामों मे हिंदी प्रचार की ओर अधिक ध्यान देता है। सन् १६२० से यह संस्था काम कर रही है। इसकी हिंदी शाला, पुस्तकालय तथा वाचनालय एवं चलित पुस्तकालय तथा वाचनालय हिंदी प्रचार के मुख्य साधन हैं। इसका एक साहित्यिक और सार्वजनिक सेवा-विभाग भी है।

युक्तप्रांत—युक्तप्रांत में स्थित दोनो अखिल भारतीय संस्थाएँ—हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (प्रयाग) और काशी नागरीप्रचारिणी सभा पूर्ववत् तत्परता से कार्य करती रहीं। काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने इस वर्ष हिंदी साहित्य सम्मेलन के २८ वें अधिवेशन को काशी में आमंत्रित किया और २९ आश्विन से १ कार्तिक १९९६ तक यह अधिवेशन नागरी प्रचारिणी सभा, काशी मे ही पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के सभापतित्व मे हुआ। इस प्रकार दोनों संस्थाओं में सहयोग की भावना को दृढ़ करने मे बड़ी सहायता मिली।

इनके अतिरिक्त युक्तप्रांत मे हिंदी की अनेक संस्थाएँ हैं जिनमें आगरा नागरीप्रचारिणी सभा का काम सबसे अच्छा हो रहा है। बाँदा की हिंदी-साहित्य-सभा और जौनपुर के हिंदी-साहित्य-सम्मेलन भी तत्परता से काम कर रहे हैं। अलीगढ़ हिंदी-साहित्य-परिषद और बनारस जिला-हिंदी-साहित्य सम्मेलन की स्थापना अभी सन् १९३९ में ही हुई है और आशा है इनके द्वारा अच्छा कार्य होगा। बनारस जिला सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन पं० वेंकटेश नारायण तिवारी के सभापतित्व मे देहात (चदौली) में हुआ। अब हिंदी की संस्थाएँ यह अनुभव करने लगी हैं कि उनका कार्यक्षेत्र गाँवो की ओर बढ़ाने की आवश्यकता है। टाँडा मे हिंदी-प्रचार समिति, हापुड़ मे हिंदी-साहित्य-समिति और मथुरा में नवीन-साहित्य-मंडल द्वारा कार्य होता है।

कानपुर का मारवाड़ी पुस्तकालय और हरद्वार का श्रवणनाथ ज्ञान मंदिर भी हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं।

गुरुकुल विश्वविद्यालय (काँगड़ी) और महाविद्यालय (ज्वालापुर) के द्वारा हिंदी का बहुत प्रचार हो रहा है। प्रायः सभी कालेजों और विश्वविद्यालयों में हिंदी की साहित्य सभाएँ हैं। इनके द्वारा हिंदी की बड़ी सेवा हो सकती है। इन्हें इस ओर ध्यान देने और गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। यदि इन सभाओं के सदस्य थोड़ा सा भी ध्यान दें तो छुट्टियों में हजारों निरक्षरों को हिंदी सिखा सकते हैं।

कश्मीर—जम्मू की हिंदी-प्रचारिणी-सभा कश्मीर राज्य में हिंदी प्रचार के लिये संतोषजनक प्रयत्न कर रही है। इसमें उसे सफलता भी मिल रही है। पहले राज्य में अदालती सम्मन आदि उर्दू ही में निकलते थे। इस सभा के प्रयत्नों से वहाँ की सरकार ने उर्दू के साथ साथ हिंदी में भी सम्मन आदि निकालने की स्वीकृति दे दी। राज्य के धर्मार्थ ट्रस्ट का सब दफ्तरी काम अब तक उर्दू ही में होता था, पर अब हिंदी का भी प्रवेश हो गया है और धीरे धीरे उर्दू का बहिष्कार हो रहा है। महिला अध्यापिकाओं के नाम चीफ इंस्पेक्ट्रेस ने यह आज्ञा निकाली थी कि वे अपने दफ्तर का सब काम उर्दू में करें तथा जो अध्यापिकाएँ केवल हिंदी मिडिल पास हैं वे उर्दू मिडिल भी पास करें। ये दोनों अनुचित आज्ञाएँ अब वापस ले ली गई हैं। यह उक्त सभा के ही प्रयत्नों का सुफल है। उक्त सभा ने राज्य के भिन्न भिन्न स्थानों में अपनी चार शाखाएँ खोल दी हैं।

राज्य ने, थोड़े दिन हुए, एक शिक्षा संघटन समिति नियुक्त की थी जिसने सिफारिश की है कि शिक्षा का माध्यम उर्दू हो। उक्त सभा ने इसके विरोध का पूरा प्रयत्न किया और १२००० से अधिक संख्या में इसके विरोध में सरकार के पास प्रार्थना पत्र भेजवाए हैं। प्रजा सभा में भी इसके डिप्टी प्रेसिडेंट श्रीअमरनाथ काक ऐडवोकेट ने शक्तिशाली ढंग से लोकमत को प्रकट किया है।

इस समय यह सभा निम्नलिखित योजनाओं को शीघ्र पूरा करने में प्रयत्नशील है:—

(१) अखिल जम्मू-कश्मीर हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना।

(२) एक हिंदी पुस्तकालय और वाचनालय खोलना।
(३) हिंदी को राज्य की दफ्तरी भाषा नियत कराने का आंदोलन।
(४) हिंदी अध्यापक संघ की स्थापना।
(५) हिंदी हितैषी महिला सभा स्थापित करना।

बड़ोदा—बड़ोदा में हिंदी प्रचार का कार्य करने वाली निम्न-लिखित संस्थाएँ हैं:—

(१) नागरीप्रचारिणी सभा, करेली बाग।
(२) आर्य कन्या महाविद्यालय।
(३) जुम्मा दादा व्यायाम मंदिर।
(४) जयदेव ब्रदर्स कार्यालय।
(५) न्यू एरा स्कूल।

बड़ोदा उन रियासतों में से है जिन्होंने सबसे पहले हिंदी को अपनाया और उसे हर प्रकार से प्रोत्साहन दिया।

मध्य भारत—इंदौर की मध्यभारत हिंदी-प्रचार-समिति मध्य भारत की प्रधान साहित्यिक संस्था है। इस समिति का एक पुस्तकालय है और इसकी ओर से 'वीणा' नाम की एक साहित्यिक पत्रिका निकलती है। यह समिति पुस्तक प्रकाशन का कार्य भी करती है। अच्छे लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिये पदक और पुरस्कार दिए जाते हैं। प्रचार के लिये समय समय पर व्याख्यान और कविसम्मेलन कराए जाते हैं। समिति का अपना प्रेस भी है और इसकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। मध्य भारत में प्रचार का कार्य बढ़ाने की ओर इस समिति को ध्यान देना चाहिए।

सतना में एक मानस संघ है जो जो रामचरित मानस का प्रचार करता है।

सैलाना का साहित्य सदन पुस्तकालय, वाचनालय, हिंदी परीक्षाओं के प्रचार तथा वाग्वर्धिनी सभाओं द्वारा हिंदी का प्रचार करता है।

रियासतों में हिंदी के प्रचार में जो सबसे बड़ी बाधा है वह है हिंदी को राजभाषा का स्थान न मिलना। पर अब देशी रियासतें इस ओर कुछ ध्यान दे रही हैं। श्रीमान् ग्वालियर नरेश ने इस वर्ष हिंदी के संबंध में निम्नलिखित आज्ञा प्रकाशित करके भाषा के प्रति अपनी

परम न्यायनिष्ठा का परिचय दिया है जो अन्य रियासतों के लिये अनुकरणीय है—

"राज्य की भीतरी व्यवस्था से संबंध रखने वाली बातों का नोटीफिकेशन हिंदी भाषा में किया जाया करे। इसका ध्यान रखा जावे कि केवल ऐसे शब्दों का प्रयोग हो जिन्हें जनसाधारण सहज ही समझ सकें।"

राजपूताना—कोटा में भारतेंदु-साहित्य-समिति अच्छा काम कर रही है। इसका एक पुस्तकालय है तथा प्रचार विभाग द्वारा भी लोगों को हिंदी की ओर आकृष्ट किया जाता है। झालरापाटन मे राजपूताना हिंदी-साहित्य-सभा, नवरत्न-सरस्वती-भवन तथा प्रोग्रेसिव अओरा एकेडेमी के द्वारा हिंदी का प्रचार होता है। यहाँ के काम करने वाले व्यक्तियों में वयोवृद्ध साहित्यसेवी पं० गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' की सुपुत्री श्रीमती शकुंतला कुमारी विशारद का उत्साह प्रशंसनीय है। खेतड़ी मे हिंदी-मंडल नाम की नई संस्था स्थापित हुई है और इसके द्वारा अच्छा काम होने की आशा की जाती है। जयपुर मे मासिक 'प्रकाश' के निर्देशक श्री जगदीश प्रसाद माथुर 'दीपक' बड़े उत्साही कार्यकर्ता हैं। शोक है कि उक्त पत्र की संस्थापिका श्रीमती कमलादेवी माथुर का इस वर्ष देहांत हो गया। इससे राजपूताना में और विशेष कर जयपुर में हिंदी-प्रचार को बड़ी क्षति पहुँची है।

देशी राज्यों मे जितनी मुसलमानी रियासतें हैं उनमे हिंदुओं और हिंदी भाषियों की संख्या कितनी ही अधिक हो पर उनकी राजभाषा उर्दू है। हिंदू राज्यों की राजभाषा हिंदी है, किंतु बनारस और जयपुर दो ऐसी रियासतें हैं जिनमे हिंदी भाषियों की संख्या बहुत अधिक होने पर भी राजभाषा उर्दू है। इस संबंध में सचेत होने की आवश्यकता है।

हिंदी की प्रगति

भाषा

हिंदी का प्रचार देश मे जितने ही अधिक वेग से बढ़ रहा है उतनी ही इसके विरोधियों की बेचैनी आजकल बढ़ती जा रही है। किंतु

इस वर्ष उर्दू की अपेक्षा अन्य (प्रांतीय) भाषाओं का विरोध कम रहा। मद्रास में कांगरेसी सरकार ने हिंदुस्तानी को पहली तीन कक्षाओं के लिये अनिवार्य विषय बनाया था। अब कांगरेसी सरकार के हट जाने पर यद्यपि वह व्यवस्था बदल दी गई फिर भी हिंदुस्तानी की बिल्कुल उपेक्षा नहीं की जा सकी। वह छठीं कक्षा तक वैकल्पिक विषय बना दी गई। इससे बहुत संभव है कि हिंदी का प्रचार उतना नहीं हो सकेगा, पर इस संबंध में ध्यान देने की यह है कि उक्त नई व्यवस्था करते समय गवर्नर ने यह स्वीकार किया कि दूसरे प्रांतों से व्यवहार करने के लिये हिंदुस्तानी का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रांतीय भाषाओं को हिंदी के प्रचार से यह भय होरहा था कि कहीं उनका स्थान और अधिकार हिंदी न ले ले। किंतु हिंदी को राष्ट्रभाषा का पद दिलाने वाले सभी नेताओं ने यह अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया कि अन्य प्रांतों में हिंदी का प्रचार केवल राष्ट्र की व्यावहारिक सुविधा के लिये किया जा रहा है, वह अन्य भाषाओं पर अपना साम्राज्य नहीं स्थापित करना चाहती। बंगाल में यद्यपि कुछ लोग हिंदी का विरोध करनेवाले अब भी हैं फिर भी गत कार्तिक मे जब प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, श्रीअर्धेंदुकुमार गांगुली और 'शनिवारेर चीठी' के सहायक संपादक श्री सुबलचंद्र 'बंद्योपाध्याय सभा मे पधारे थे तब सभा द्वारा हिंदी का पक्ष स्पष्ट रूप से जान लेने पर उन लोगों को बहुत संतोष हुआ। डाक्टर चाटुर्ज्या यह मानते हैं कि संस्कृत-बहुल हिंदी ही भारत के अंतर-प्रांतीय व्यवहार की भाषा हो सकती है।

हिंदी का विरोध करने में उर्दू के समर्थक इस वर्ष भी जी जान से लगे रहे। यह बिल्कुल स्पष्ट बात है कि हिंदी ने कभी इस बात की चेष्टा नहीं की कि वह अन्य भाषाओं को हानि पहुँचाकर अपनी उन्नति करे। उसने उर्दू को मिटाने का कभी यत्न नहीं किया। हिंदी के कितने ही विद्वान् सहृदयता के साथ उर्दू साहित्य का अध्ययन करते हैं। हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ प्रायः उर्दू की कविताएँ, कहानियाँ आदि छापा करती हैं। हिंदी को अन्य प्रांतों में पहुँचाने का श्रेय भी अधिकतर अहिंदी भाषा-भाषी सज्जनों को है। यह हिंदी में राष्ट्रभाषा होने की योग्यता का सबसे बड़ा प्रमाण है। फिर भी उर्दू के विद्वानों की आँखें नहीं खुलती। वे

अब उर्दू को राष्ट्रभाषा के पद पर बैठाने के लिये कोई उपाय उठा नहीं रख रहे हैं। उनके कुछ कार्यों का दिग्दर्शन नीचे लिखे विवरण से हो सकेगा।

बंगाल तथा दक्षिण के प्रांतों में जहाँ मुसलमान लोग उर्दू जानते तक नहीं, यह प्रचार किया जाता है कि उर्दू 'नबी जी की जबान' है। पंजाब और कश्मीर में यह दावा किया जाता है कि स्कूल-कालेजों, अदालतों और सब कामधंधों में उर्दू का ही व्यवहार होना चाहिए क्योंकि उर्दू ही राष्ट्रभाषा होने के योग्य है। दूसरी ओर वहाँ से हिंदी को निकालने के लिये भी अनोखे गुप्त और प्रकट प्रयत्न हो रहे हैं। राष्ट्रभाषा-प्रचारसंघ, लाहोर ने 'पंजाब में शिक्षा विभाग और हिंदी' नाम की एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की है जिसमें इसपर भलीभाँति सप्रमाण प्रकाश डाला गया है। वहाँ शिक्षाविभाग के डाइरेक्टर ने यह आज्ञा निकाली है कि "परीक्षा विद्यार्थी के इच्छानुसार उर्दू, हिंदी और पंजाबी माध्यम से ली जा सकती है पर माध्यम की भाषा निश्चित रूप से वही होगी जो विद्यार्थी ने ली है।" यों देखने में यह आज्ञा बड़ी भोली है, पर इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ है कि एक ही वर्ष में हिंदी लेने वालों की संख्या घट गई है। कारण यह है कि पंजाब में सरकारी स्कूलों में आरंभ की कक्षाओं में हिंदी पढ़ाने की सुविधा नहीं है। विद्यार्थी प्रायः पाँचवीं या सातवीं कक्षा से हिंदी लेते हैं। उनमें भी अन्य विषयों की शिक्षा हिंदी में देने का प्रबंध नहीं है। इस कारण परीक्षा देने के लिये विद्यार्थियों को उर्दू में ही सुविधा होती है। अब यदि वे हिंदी लेंगे तो उन्हें हिंदी में ही परीक्षा देनी पड़ेगी। पाँचवीं या सातवीं कक्षा में हिंदी लेकर वे हिंदी माध्यम से परीक्षा नहीं दे सकेंगे, इसलिये अब उन्हें विवश होकर हिंदी छोड़नी पड़ेगी। यदि इसपर भी विद्यार्थी हिंदी लेना न छोड़े तो उसके लिये दूसरी आज्ञा विद्यमान है। वह यह कि यदि जिला बोर्ड के स्कूलों में उर्दू छोड़कर कोई हिंदी लेना चाहे तो उसे डाइरेक्टर की आज्ञा लेनी पड़ेगी। जानकारों से यह छिपा नहीं है कि न यह आज्ञा मिलेगी न कोई उर्दू छोड़ेगा। पंजाब में वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा में बैठनेवाली ५० प्रति शत लड़कियाँ हिंदी लेती हैं। पंजाब के अनिवार्य शिक्षा बिल से भय है कि लड़कियों को भी हिंदी छोड़नी पड़े। पंजाब में यद्यपि हिंदी माध्यम से मैट्रिक परीक्षा में बैठने-

वालों की संख्या में बराबर वृद्धि हो रही है, फिर भी वहाँ के शिक्षा मंत्री ने एसेंबली में कहा था कि पंजाब मे उर्दू ही शिक्षा का माध्यम है। देखना है इन चालों को हिंदी कहाँ तक सहन कर सकती है।

दक्षिण हैदराबाद में वहाँ की हिंदी-प्रचार-सभा ने दरबार को एक प्रार्थनापत्र दिया था कि शिक्षाक्रम में हिंदी को भी स्थान दिया जाय। यह प्रार्थना यह कहकर ठुकरा दी गई कि 'हिंदी मुल्की जबान' नहीं है, इस लिये इसे शिक्षाक्रम मे स्थान देने का प्रश्न ही नहीं उठता। कैसा सुंदर न्याय है? पंजाब में उर्दू जानने वालों की सख्या अधिक है इसलिये वहाँ शिक्षा का माध्यम उर्दू है, पर हैदराबाद मे जहाँ तिलगू, मराठी कन्नड आदि जानने वालो की तुलना मे उर्दू जानने वालों की संख्या बहुत ही थोड़ी है (इस थोड़ी सख्या मे बहुत से ऐसे लोग भी गिन लिए गए हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी है) वहाँ भी शिक्षा का माध्यम उर्दू है! वहाँ शासन के जोर से उर्दू 'मुल्की जबान' बन सकती है, पर हिंदी को कौन पूछता है?

कश्मीर में फिर वही उर्दूवालों की सख्या अधिक होने का सिद्धांत लागू हो जाता है। वहाँ थोड़े दिन हुए, रियासत की ओर से जो शिक्षा-संघटन समिति नियुक्त हुई थी उसकी जोरदार सिफारिश है कि उर्दू ही कश्मीर मे शिक्षा का माध्यम बनाई जाय, क्योंकि देश के अन्य प्रांतों से व्यवहार करने मे उर्दू के द्वारा ही सुविधा होगी। इस समिति मे डा० जाकिर हुसेन भी हैं जिनका नाम उर्दू के धुरंधरों के साथ बिहार की हिंदुस्तानी कमिटी में जुड़ा हुआ है और जो युक्तप्रांतीय शिक्षा-संघटन समिति के सदस्य के रूप में हिंदी-उर्दू दोनों के साथ साथ पढ़ाए जाने के समर्थक हैं तथा जिन्होंने वर्धा शिक्षा-योजना के अध्यक्ष के रूप में हिंदी-उर्दू के स्थान पर 'हिंदुस्तानी' को ही सर्वमान्य माना है। हिंदी प्रांतों में उतर कर उर्दू को हिंदुस्तानी नाम का बाना पहनना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि अपने नग्न रूप में उसका राष्ट्रभाषा होने का दावा यहाँ एक दिन भी नहीं ठहर सकता।

यह अनेक बार कहा जा चुका है कि हिंदुस्तानी के नाम से उर्दू के प्रचार का प्रयत्न उर्दू के विद्वानों और समर्थकों के लिये अत्यंत निंदनीय और जनता को धोखा देने वाला है। हिंदुस्तानी की जैसी परि-भाषा की जाती है उसके चक्कर में बहुत से लोग आसानी से आ जाते

है। इस वर्ष 'महमूद सीरीज' की पुस्तकों के द्वारा बिहार की जनता में जिस भाषा के प्रचार का यत्न किया गया था उसकी सभा ने भी तीव्र आलोचना की और अ० भा० हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अट्ठाइसवें अधिवेशन में भी उसकी बड़ी निंदा हुई। बिहार के हिंदी-प्रेमी व्यक्तियों और हिंदी-संस्थाओं ने भी हिंदुस्तानी-प्रचार का डटकर विरोध किया और अब वे कदापि वहाँ हिंदुस्तानी के नाम से उर्दू या भ्रष्ट की गई हिंदी का प्रचार न होने देंगे।

हिंदुस्तानी के समर्थकों ने अधिक से अधिक स्पष्ट रूप में उसकी परिभाषा करने का यत्न किया है, पर वह तो लोगों की समझ में तभी आ सकती है जब उसकी परिभाषा और उसके प्रचलित रूप में कुछ सामंजस्य हो। दिल्ली के रेडियो स्टेशन से गतवर्ष हिंदुस्तानी पर छ विद्वानों के जो भाषण हुए थे वे इस वर्ष पुस्तकाकार प्रकाशित हुए हैं। इन व्याख्याताओं को हिंदुस्तानी की दृष्टि से दो वाक्यों की आलोचना करने को दी गयी थी। उनके संबंध में डाक्टर अब्दुल हक की सम्मति मनोरंजक है। वाक्य ये हैं—

(१) फेडरल लेजिस्लेचर के लिये फेहरिस्ते राय देहन्दगान तैयार करने के सिलसिले में जो इब्तिदाई कार्रवाई की जायगी उसके बारे में सर एन. एन. सरकार, ला मेम्बर ने आज रोशनी डाली।

(२) संयुक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका परिषद् के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए न्याय-मंत्री डा० काटजू ने उन उद्योग-धंधों की सूची दी जिनकी उन्नति के लिये सरकार ने सहायता देना स्वीकार किया है।

पहले वाक्य के संबंध में उक्त डाक्टर साहब की राय है कि "जुम्ले का मतलब साफ समझ में आता है" इसलिये यह हिंदुस्तानी है। दूसरे वाक्य के विषय में आप कहते हैं कि "इस जुम्ले में संस्कृत लफ्जों की भरमार है और मतलब समझ में नहीं आता। यह हमारी जबान नहीं, यह सरासर बनावटी जबान है"। इस कथन के मूल में जो प्रवृत्ति है उसे स्पष्ट करने के लिये इसकी व्याख्या तथा प्रमाणों की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

हिंदुस्तानी के 'नाम कुछ और करनी कुछ' के कारण ही बंबई-विश्वविद्यालय की सिनेट की बैठक में श्रीमती लीलावती मुंशी का वह प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ जिसमें उन्होंने एक अतिरिक्त अनिवार्य

विषय के रूप मे हिंदुस्तानी को मैट्रिक की परीक्षा में और संभव हो तो ग्रेजुएट श्रेणी तक रखने की आवश्यकता पर विचार करने की प्रार्थना की थी। वाइस चांसलर ने यह कहकर आपत्ति की कि हिंदुस्तानी शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है, इससे उर्दू का भी बोध होता है।

अट्ठाइसवे हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की राष्ट्रभाषा-परिषद् के सभापति डाक्टर राजेंद्रप्रसाद ने अपने भाषण मे कहा था—

"अगर राष्ट्रभाषा सारे देश के लिये चाहिए तो हमको इसपर विचार करना होगा कि अन्य भाषाभाषियों के लिये कौनसी सुविधा हम दे सकते हैं और उनकी कठिनाइयो को हम किस तरह कम से कम कर सकते हैं। बँगला, गुजराती, मराठी, असमी और उडिया में, जो आर्य-भाषाएँ हैं, संस्कृत के बहुत से शब्द आते है। इसलिये उनको और हिंदी की शब्दावली बहुत अंशों में एक है और हो सकती है। इसी प्रकार दक्षिण की भाषाओं पर भी संस्कृत का प्रभाव तो पड़ा ही है और ऐसे बहुतेरे शब्द जो हिंदी मे आते है उन भाषाओं मे भी पाए जाते हैं। इसलिये अगर ऐसे शब्द जो इन भाषाओं में भी पाए जाते हैं राष्ट्रभाषा मे रखे जायँ तो जाहिर है कि इन भाषाओं में बोलनेवालो के लिये राष्ट्रभाषा सीखने में बड़ी सुविधा हो जाय।"

डा० राजेंद्रप्रसाद देश के प्रतिष्ठित नेता हैं। उनपर पक्षपात का आरोप नही किया जा सकता। उन्होंने जिस भाषा मे उक्त भाषण दिया है यदि उसी को मानने के लिये वे हिंदीवालों से अनुरोध करते हैं तो सभा उसका समर्थन करती है और किसी हिंदी-प्रेमी को इसमे विरोध करने के लिये कोई कारण नहीं मिल सकता। किंतु क्या उर्दू के धुरंधर विद्वान भी इसे राष्ट्रभाषा मानने को तैयार होंगे ? अपने उक्त कथन के अनुसार डा० राजेंद्रप्रसाद भी यह मानेगे कि डाक्टर अब्दुल हक ने अपने रेडियो भाषण मे ऊपर कहे गए जिस हिंदी वाक्य को 'सरासर बनावटी ज़बान' बतलाया है वही दो एक, सो भी जनसंख्या की दृष्टि से छोटे, प्रांतों को छोड़कर भारत के सभी प्रांतों में आसानी से समझा जा सकता है।

आगे चलकर डाक्टर राजेंद्रप्रसाद ने अपने उक्त भाषण में कहा है—

"इसी प्रकार पंजाब और सीमाप्रात में अरबी फारसी के बहुत शब्द वहाँ

की स्थानीय बोलियों में आ गए हैं। अगर ऐसे शब्द राष्ट्रभाषा में ले लिए जायँ तो वहाँ के लोगों को राष्ट्रभाषा सीखने में बहुत सुविधा हो जाय।" सभा ने या हिंदीवालों ने कभी इस बात का आग्रह नहीं किया कि 'राष्ट्रभाषा' में से प्रचलित विदेशी शब्दों को निकाल दिया जाय अथवा उसमें आवश्यकतानुसार अरबी, फारसी, अँगरेजी के शब्द व्यवहार की सुविधा के लिये न लिए जायँ। पर वस्तुस्थिति तो यह है कि उर्दू के विद्वान जान बूझकर, प्रयत्न करके प्रत्येक ऐसे सरल शब्द को भी निकाल फेंकने में लगे हुए हैं जिसमें उन्हें कुछ भी संस्कृत या भारतीयता की गंध आती है। जहाँ हिंदी-शब्दसागर में अल्प-प्रचलित भी उर्दू के अधिक से अधिक शब्दों का समावेश किया गया है वहाँ 'फरहगे आसफिया' के संपादक सैयद अहमद देहलवी यह घोषणा करते हैं—

"उर्दू नज्म ने भी फारसी ही की तर्ज अख्तियार की क्योंकि यह लोग तुर्कीउलनस्ल थे या फारसीउलनस्ल या अरबीउलनस्ल। यह हिंदी की मुतावकत किस तरह कर सकते थे ?" (मुकदमा, पृ० ८)

उर्दू के संबंध में यह बात भूलने की नहीं है कि 'उर्दू की ईजाद' करनेवालों ने आरंभ ही से भारतीयता और भारतीय भाषाओं का बहिष्कार कर दिया था। इस प्रवृत्ति के कारण हिंदी और उर्दू में शब्दों का ही नहीं भावों, विचारों और परंपराओं का भी पूरा भेद हो गया है। उर्दू ने 'मतरूक', 'मुब्तजल' और 'इम्तयाज' की ऐसी खोल ओढ़ ली है कि उसे उतारे बिना उसका हिंदी के निकट आना असंभव है। मतरूक का सीधा सादा अर्थ है कुछ अप्रिय शब्दों को भाषा से बलपूर्वक निकाल बाहर करना। आजकल की हिंदुस्तानी रीडरों में इस नीति का खूब प्रयोग किया जाता है। इस मतरूक की नीति के कारण ही उर्दू वाले कष्ट, कृपा, दया, क्षमा, सुख, दुःख, जन्म, मरण, धर्म, कर्म, माता आदि नित्य के व्यवहार के शब्दों का भी प्रयोग नहीं कर सकते।

'मतरूक' से पूरा न पड़ते देख 'मुब्तजल' का कानून लगाया गया और अत्यंत प्रचलित शब्दों को भी तुच्छ और 'जलील' समझा गया। 'देवर' जैसे नित्यप्रयोग के घरेलू शब्द सदा के लिये उर्दू से अलग कर दिए गए। जब इससे भी संतोष न हुआ तब 'इम्तियाज' की नीति प्रचलित की गई और हर प्रकार से हिंदियों से अलग रहने का प्रयत्न

किया गया। उर्दू के संबंध में 'फरहंगे आसफिया' के विद्वान संपादक ने स्पष्ट लिखा है—

"हम अपनी जबान को मरहटी धाजों लावनी बाजों की जबान, धोबियों के खंड, जाहिल ख्याल वंदों के ख्याल, टेमू के राग यानी वे सर व पा अल्फाज का मजमूआ बनाना कभी नहीं चाहते और न उस आजादाना उर्दू को ही पसंद करते हैं जो हिंदुस्तान के ईसाइयों, नवमुस्लिम भाइयो, ताजा विलायत साहब लोगों, खानसामाओं, खिदमतगारों, पूरब के मनहियों, कैम्पब्वायों और छावनियों के सतबेझड़े बाशिन्दों ने अख्तियार कर रखो है। हमारे जरीफुलतबा दोस्तों ने मजाक से इसका नाम पुड़दू रख दिया है।" (सबवे तालीफ, पृ०२३)।

क्या इस ऐंठभरी बिलगाव की प्रवृत्ति के रहते उर्दू कभी हिंदी के निकट आ सकती है? क्या हिंदुस्तानी के समर्थक हिंदी का रूप बिगाड़ कर उर्दू को प्रसन्न कर सकते हैं? नागरीप्रचारिणी सभा ने इस वर्ष भाषा का प्रश्न, बिहार में हिंदुस्तानी तथा कचहरी की भाषा और लिपि नाम की पुस्तके प्रकाशित कर भाषा-संबंधी प्रश्नों पर भलीभाँति विचार किया है। इस संबंध में और पुस्तकें भी प्रकाशित की जायँगी। हिंदी के लेखकों से सभा यह अनुरोध करती है कि वे उर्दू को प्रसन्न करने के मोह में हिंदी भाषा का रूप बिगाड़ने की आत्मघातिनी चेष्टा न करें।

रेडियो

भारत सरकार के रेडियो विभाग की नीति भी उर्दू की घोर पक्षपातिनी है और उसके द्वारा हिंदी की जैसी मर्मपीड़क उपेक्षा हो रही है उसे वे ही हिंदीप्रेमी अनुभव कर सकते हैं जिन्हें रेडियो का कार्यक्रम सुनने के अवसर मिला करते हैं। हिंदी का गला दबाने के लिये रेडियो विभाग के पास भी वही सुलभ साधन है—'आमफहम हिंदुस्तानी'। गत २० मार्च को केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा मे भारत सरकार के यातायात सदस्य सर एड्र्यू क्लो ने डाक्टर जियाउद्दीन के प्रश्न के उत्तर में कहा था कि "रेडियो विभाग की नीति यह है कि ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाय जिसे सुननेवाले अधिक से अधिक संख्या में

समझ सकें।" क्या उनका तात्पर्य यह है कि लाहौर, दिल्ली, लखनऊ आदि रेडियो स्टेशनों से जो भाषा हिंदुस्तानी के नाम से बोली जाती है उसे सुननेवाले उसको अधिक से अधिक संख्या में समझ सकते हैं ? सच्ची परिस्थिति इसके बिलकुल विपरीत है। रेडियो विभाग इसे न जानता हो सो बात नहीं । क्योंकि उसके कार्यों से बिल्कुल स्पष्ट है कि वह जानबूझकर अपनी कथित नीति का उल्टा प्रयोग करता है। रेडियो विभाग इस बात से बड़ी सावधानी रखता है कि उसके कार्यकर्ताओं और वक्ताओं में चुन चुनकर केवल उर्दू के विद्वान् और अधिकतर हिंदी विरोधी मुसलमान रखे जायँ। इसका प्रमाण यह है कि १ जनवरी से ३० अप्रैल सन् १६३६ तक रेडियो विभाग ने हिंदुस्तानी के ७३ अभिनय ब्राडकास्ट किए। इनमें से ६९ मुसलमानों द्वारा उर्दू मे लिखे गए थे और चार हिंदुओं के द्वारा लिखे गए थे जिनकी भाषा उर्दू के ही बोझ से दबी हुई थी। भाई परमानंद ने भी रेडियो के संबध में केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा मे कुछ प्रश्न किए थे जिनके उत्तर मे बताया गया था कि रेडियो विभाग मे समाचार तैयार करने के लिये चार अनुवादक रखे गए हैं। इन चारों में हिंदी पत्रों मे काम करने का अनुभव किसी को नहीं है किंतु उर्दू पत्रों मे काम करने का अनुभव तीन को है। इन अनुवादकों को चुनने के लिये जो परीक्षा ली गई थी उसमे ३० मुसलमान और १६ हिंदू बुलाए गए थे । यह भी ध्यान रखना चाहिए कि रेडियो विभाग के समाचार सब फारसी लिपि मे ही लिखे जाते हैं।

हिंदुस्तानी के झगड़े को सुलझाने के लिये रेडियो विभाग ने उल्लिखित जिन छ सज्जनों को चुना था और जिनकी वाणी को उसने प्रमाण माना उनमे से हिंदी का एक भी प्रतिनिधि विद्वान् नहीं था। इन बातों से स्पष्ट है कि रेडियो विभाग जान बूझकर हिंदी की उपेक्षा करता है। इसपर भी यदि कभी कोई वक्ता गेहूँ, उत्तर, दूत जैसे सरल शब्दों का प्रयोग कर देता है तो उर्दू के समर्थक आलोचकों के कान खड़े हो जाते हैं। उनकी समझ में उक्त शब्द बड़े कठिन और अप्रचलित हैं, और गेहूँ के बदले 'गंदुम' उत्तर के बदले 'शुमाल' और दूत के बदले 'सफीर' के जनता अधिक सुगमता से समझ सकती है। ऐसी समझ को क्या कहा जाय

सबसे अधिक दुःख की बात यह है कि इस धाँधली का प्रधान कारण है स्वयं हिंदीवालों के द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा। हिंदी के विद्वान् भी यदि रेडियो विभाग के द्वारा आमंत्रित किए जाते हैं तो वे प्रयत्न करके ऐसी बनावटी भाषा का प्रयोग करते हैं जिसका प्रयोग वे अपने लेखों में कभी नहीं करते। उन्हें डर लगा रहता है कि कहीं उनकी भाषा हिंदुस्तानी के बदले हिंदी न समझ ली जाय। रेडियोवाले भी हिंदीप्रेमियों की इस दुर्बलता को अच्छी तरह जानते हैं, तभी उन्हें हिंदी की ऐसी उपेक्षा करने का दुस्साहस होता है। हिंदी प्रेमी यह जानते हुए भी कि उनके साथ अन्याय होता है, इसके विरुद्ध कोई प्रयत्न नहीं करते। इस वर्ष 'लीडर', 'प्रताप' आदि पत्रों मे विशेषकर 'अर्जुन' और 'हिंदू' में रेडियो की भाषा के विरोध मे लेख निकले थे। एक आध हिंदी के विद्वान् ने भी लिखा पढ़ी की थी, पर उसका फल प्राय कुछ नहीं हुआ। इसके लिये आवश्यक यह है कि हिंदी के विद्वान्, हिंदी की संस्थाएँ और रेडियो रखनेवाले हिंदी प्रेमी लोग सभी सम्मिलित रूप से और अलग अलग भी, ऐसा सघटित आंदोलन करें कि रेडियो विभाग के अधिकारियों को चैन न मिले। तभी निश्चित रूप से उनपर प्रभाव पड़ सकता है। सभा ने इस संबंध मे कुछ प्रयत्न किया है और कर रही है। उसकी नीति से सभी हिंदी के विद्वान सहमत हैं और उसे सहयोग देने को तैयार हैं। यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि संघटित प्रयत्न का यही उपयुक्त समय है। गत मार्च सन् १९३९ मे समाप्त होने वाले वर्ष में भारत मे लगभग ७१००० रेडियो यंत्रो के लायसेंस लिए गए। इसके पहले के वर्ष मे यह संख्या केवल ५५००० थी। इससे स्पष्ट है कि प्रतिवर्ष किस तेजी से रेडियो का प्रचार हो रहा है, और उसके साथ ही हिंदी का ह्रास।

यद्यपि इस वर्ष जो कुछ आंदोलन इस संबंध में हुआ है वह नहीं के ही बराबर है तथापि ऐसा विदित होता है कि रेडियो विभाग उसकी नितांत उपेक्षा नहीं कर सका है। अभी अभी नई दिल्ली में श्री ए. एस. बुखारी के सभापतित्व मे रेडियो-संचालकों का जो सम्मेलन हुआ है उसमें भाषा संबंधी कठिनाइयों पर विवाद हुआ और इस बात पर जोर दिया गया है कि जिन प्रांतो मे दो भाषाएँ प्रचलित हों वहाँ के स्टेशनों से दोनों भाषाओं में कार्यक्रम ब्राडकास्ट किए जायँ।

हिंदी उर्दू के संबंध में भी यह बात लागू होगी या नहीं, यह तो भविष्य ही बताएगा। इस निश्चय के बाद से अब तक तो उसी पुरानी नीति के अनुसार काम हो रहा है।

लिपि

लिपि के प्रसंग में यद्यपि यत्र तत्र रोमन लिपि की चर्चा भी होती रही, फिर भी उसे विशेष महत्व न मिल सका। उर्दू के पत्रों में नागरी लिपि की निंदा और अरबी लिपि का गुणगान भी कम नहीं रहा। अरबी लिपि की कठिनता के कारण उर्दू के प्रचार में बाधा पड़ी तो प्रांतीय भाषाओं की लिपियों में भी उसका सीखना-सिखाना हानिकर नहीं समझा गया। बंगाली लिपि में उर्दू सीखी जा सकती है पर कैथी या नागरी से उसे दूर ही रखना चाहिए! फिर भी उर्दू के प्रचारक अरबी लिपि को भारत की सभी भाषाओं के लिये उपयुक्त और मंगलप्रद बतलाते रहे हैं!

महात्मा गांधी ने इस बात को स्पष्ट किया कि उर्दू के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं की लिपि एक ही हो, और इसके लिये नागरी को उपयुक्त बताया। हिंदुस्तानी के लिये वे अरबी और नागरी दोनों लिपियों को साथ साथ रखना चाहते हैं। अवश्य ही वे उर्दूवालों के हठ की रक्षा के लिये ऐसा चाहते हैं, अन्यथा यह तो सभी जानते हैं कि हिंदी का कोई भी शब्द अरबी लिपि में शुद्धता से लिखा ही नहीं जा सकता।

श्रीयुत काका कालेलकर तथाकथित सुधरी हुई नागरी लिपि का प्रयोग बराबर कर रहे हैं। वर्धा की राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की ओर से सभी पत्र और पुस्तकें इसी तथाकथित सुधरी लिपि में निकलती हैं। नागरीप्रचारिणी सभा और हिंदी-साहित्य सम्मेलन इन सुधारों को ग्रहण नहीं कर सके हैं। सभा और सम्मेलन सुधार के विरोधी नहीं हैं, पर जो सुधार किए गए हैं उनसे वे सहमत नहीं हैं।

साहित्य

काव्य

इस वर्ष हिंदी काव्य की प्रचलित धाराओं में कोई उल्लेखनीय विशेषता या नवीनता परिलक्षित नहीं हुई। गत वर्ष की ही प्रवृत्तियाँ

अधिक पुष्ट और व्यवस्थित होती रहीं । व्रजभाषा काव्य की धारा अनुदिन क्षीण होती दिखाई दे रही है । छायावाद की कविता अभिव्यंजन शैली की नवीनता और विचित्रता से हटकर भाव व्यवस्था की ओर अधिक झुकी और इस प्रकार वह भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से बहुत कुछ संयत रही । इससे, पहले से चली आती हुई खड़ीबोली की काव्यधारा के समीप आ जाने से दोनों धाराओं का प्रसन्न प्रवाह सुखद रहा । पुरानी धारा की कविताओं में विषय और भाव का प्राचुर्य तो पहले से ही विद्यमान था, यहाँ तक कि अभिव्यंजना की गौणता के कारण वह कभी-कभी गद्योन्मुख हो जाती थी, पर इस वर्ष वह अभिव्यंजना मे नवीनता और आकर्षण लाने मे समर्थ रही । इस धारा में इस वर्ष मुक्तक और प्रबंध दोनों प्रकार के वीरकाव्य की प्रधानता रही और कुछ करुण काव्य की ओर भी झुकाव रहा ।

छायावाद की कविता में जो व्यक्तिगत कल्पना-वैचित्र्य की कमी और इस लोक के सामान्य अनुभवों को लेकर उसके साथ साथ चलने की प्रवृत्ति की अधिकता दिखाई पड़ी उसे कुछ लोगों ने 'प्रगतिवाद' नाम देना अच्छा समझा (क्योंकि सभी प्रकार की 'वादी' कविताओं में अपनी प्रर्वृत्ति की परिभाषा वा व्याख्या करने की प्रबल प्रवृत्ति होती है । कुछ भी विशेषता प्रकट होते ही उसका कोई न कोई नाम रखना उन्हें आवश्यक जान पड़ता है) । छायावाद के काव्य-विषय मे अध्यात्म, अमूर्त और काल्पनिक रूपों की ओर झुकाव अधिक रहता था यह झुकाव कुछ कवियों में उसी प्रकार बना हुआ है । पर नए कवियों में से अधिकांश में और पहले के छायावादी कवियों में से कुछ मे प्रगतिवाद स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है, जिसकी मुख्य विशेषता है स्थूल, मूर्त, यथार्थ और भूतवाद की ओर प्रवृत्ति । इनमे भी दो वर्ग कहे जा सकते हैं । एक को वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था तथा रूढियों से असंतोष है, उन्हें तोड़कर वह नई व्यवस्था लाना चाहता है । वह क्रांति और पविवर्तन का पक्षपाती है, पर व्यवस्था और औचित्य का विरोधी नही । केवल उसका व्यवस्था और औचित्य का मानदंड बदल गया है । वह कालधर्म का अनुगामी है । वास्तविक प्रगतिवादी वर्ग यही है । दूसरा वर्ग भी पुरानी व्यवस्था और रूढियों का विरोधी है । पर उसमे नैराश्य और निष्कर्मता है । अपेक्षित परिस्थि

तियों के अभाव और प्रयत्न की अनिच्छा के कारण वह संसार के हेय और उपेक्ष्य समझे जानेवाले सुख सौंदर्य में लिप्त हो जाने को ही परिवर्तन की निधि समझता है।

सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि हिंदी कविता का प्रवाह प्रसन्न और प्रसादकर रहा। इससे भविष्य में उत्तम और उच्च कोटि की कविता की आशा की जा सकती है।

उपन्यास-कहानी-नाटक

कविता के बाद यदि हिंदी साहित्य का कोई अंग पुष्ट हुआ है तो वह कहानी है। यद्यपि नए लेखकों की बहुत सी कहानियाँ ऐसी निकली हैं जो कला की दृष्टि से अपुष्ट और नौसिखी सी लगती हैं तथापि अधिकांश कहानियाँ अच्छी लिखी गई हैं और कुछ तो बहुत अच्छी हैं—कला की दृष्टि से और विषय तथा भाव की दृष्टि से भी। कहानियाँ अनेक विषयों की लिखी गई हैं और उनकी भाषा और शैली भी विषयानुरूप रही है। और सबसे बड़ी बात यह है कि उनका विकास स्वतंत्रता के साथ हुआ है।

कहानी के बाद उपन्यास आता है। उपन्यासों में कोई विशेष उन्नति नहीं हुई। एक आध अच्छे उपन्यास अवश्य निकले पर अधिकतर साधारण कोटि के हैं। प्रसाद और प्रेमचंद की कोटि के उपन्यास लिखे जाने में अभी देर मालूम होती है।

कविता में जो प्रगतिवाद प्रगट हुआ है वह कहानी और उपन्यास में तो पहले ही से चला आ रहा था, पर इस वर्ष उसका शुद्ध रूप अधिक दिखाई पड़ा।

नाटकों में भी उन्नति नहीं हुई—न लेखन-कला की दृष्टि से न अभिनय की दृष्टि से। एकांकी नाटकों की प्रधानता रही जिनमें भारत की परिवर्तित परिस्थिति की झाँकियाँ मिलीं। नाटकों की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

गद्यकाव्य-निबंध-आलोचना

निबंध और गद्यकाव्य की कमी इस वर्ष भी पूर्ववत् रही। गद्यकाव्य तो स्वभावतः कम होना ही चाहिए, पर निबंधों की कमी खटकती है। निबंधों में व्यवस्थित भाव और विचार शृंखला की कई

आवश्यकता होती है और उसमें कोई दोष हुआ तो वह बड़ी सरलता से प्रगट हो जाता है। इसलिये निबंध लिखना कुछ कठिन होता है। किंतु इसीलिये उसका लिखा जाना और भी आवश्यक है। अब कुछ व्यक्तिप्रधान निबंध भी लिखे जाने लगे हैं जिन्हें अंग्रेजी में 'पर्सनल ऐसे' कहते हैं। यह अच्छा ही है।

आलोचना के क्षेत्र में भावुक आलोचना की प्रधानता इस वर्ष भी रही। स्वतंत्र और व्याख्यात्मक आलोचना का अभाव बना ही रहा। यह अभाव तब तक दूर नहीं हो सकता जब तक आलोचना की कोई नवयुगोपयोगी व्यवस्थित भारतीय पद्धति प्रस्तुत नहीं हो जाती।

प्रमुख पुस्तकें

इस वर्ष हिंदी मे भिन्न भिन्न विषयों की जो प्रमुख पुस्तकें सभा के देखने में आईं उनके नाम निम्नलिखित हैं—

अपराजिता	श्री 'अंचल'
प्रभातफेरी	श्रीनरेंद्र
यामा	श्रीमती महादेवी वर्मा
रेणुका (संशोधित और परिवर्धित)	श्री 'दिनकर'
वैदेही वनवास	श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय
हल्दीघाटी	श्रीश्यामनारायण पांडेय
क्रांतिकारी कहानियाँ	श्रीबेचन शर्मा 'उग्र'
गुलेरीजी की अमर कहानियाँ	स्व० श्रीचंद्रधर शर्मा गुलेरी
न्याय का संघर्ष	श्रीयशपाल
पिंजड़े की उड़ान	,, ,,
पनघट	श्रीसुदर्शन
पुरस्कार	श्रीकृष्णानंद गुप्त
झूठसच	श्रीसियाराम शरण गुप्त
निबंधिनी	श्रीगंगा प्रसाद पांडेय
धर्म समाज और विज्ञान	श्रीशचीन्द्रनाथ सान्याल
शेष स्मृतियाँ	श्रीमहाराजकुमार डा० रघुबीरसिंह
हिंदी साहित्य का इतिहास (संशोधित और प्रवर्धित)	श्रीरामचंद्र शुक्ल

द्विवेदी मीमांसा	श्रीप्रेमनारायण टंडन
साकेत, एक अध्ययन	श्रीनगेंद्र
हिंदी के सामाजिक उपन्यास	श्रीताराशंकर पाठक
कचहरी की भाषा और लिपि	श्रीचंद्रबली पांडेय
बिहार में हिंदुस्तानी	,, ,, ,,
भाषा का प्रश्न	,, ,, ,,
भारतीय मूर्तिकला	श्रीराय कृष्णदास
भारत की चित्रकला	,, ,, ,,
प्राच्यदर्शन समीक्षा	श्रीसाधु शांतिनाथ
बालमनोविज्ञान	श्रीलालजीराम शुक्ल
राजनीति के मूल सिद्धान्त	श्रीचंदी प्रसाद
राजनीति विज्ञान	श्रीसुधीर कुमार लाहिड़ी, विनयेंद्रचंद्र बंद्योपाध्याय
वर्तमान युद्ध, उसके कारण और भावी संभावनाएँ	श्री डा० सत्यनारायण और खानचंद गौतम
सभा-विधान	श्री विष्णुदत्त शुक्ल
हमारे अधिकार और कर्त्तव्य	श्रीकृष्णचंद्र विद्यालंकार
चंद्रगुप्त मौर्य और अलेक्जेंडर की भारत में पराजय	श्रीहरिश्चंद्र सेठ
गुप्त साम्राज्य का इतिहास	श्रीवासुदेव उपाध्याय
बिहार, एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन	श्रीजयचंद्र विद्यालंकार श्री पृथ्वी सिंह मेहता
बीकानेर राज्य का इतिहास	श्रीमहामहोपाध्याय राय बहादुर डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा
बुद्धपूर्व का भारतीय इतिहास	श्री रावराजा रायबहादुर डा० श्यामबिहारी मिश्र
रोमांचक रूस में	श्री डा० सत्यनारायण
स्वर्गा की कहानी	श्रीराजबहादुर सिंह
कुल्ली भाट	श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

इस वर्ष की पत्र-पत्रिकाएँ

इस वर्ष हिंदी की सभी पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ अपने अपने ढंग पर सुचारु रूप में निकलती रहीं। उनमें कोई विशेष उल्लेखनीय बात नहीं हुई। बहुत सी नई पत्र-पत्रिकाएँ भी सभा के देखने में आईं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—

मासिक—सबकी बोली (वर्धा); साधना, मराल और अखंडज्योति (आगरा), प्रकाश (जयपुर), व्यावहारिक वेदांत (लखनऊ); रानी (कलकत्ता), जीवन साहित्य (बंबई), मेलमिलाप (पटना) रंगमंच (प्रयाग); सन्मार्ग, श्रीविश्वेश्वर, छायावाद, झरना, सरिता, खंडेलवाल संदेश (काशी)।

साप्ताहिक—आवाज (बंबई), जीवन और सूत्रधार (सहारनपुर), राष्ट्रसंदेश (पूर्णियाँ), सिद्धांत (काशी) और विचार कलकत्ता।

दैनिक—अग्रगामी (काशी)।

ये सभी पत्र-पत्रिकाएँ अंतरंग और बहिरंग दोनो दृष्टियों से अच्छी निकलती रहीं किंतु जितनी उन्नति संख्या में हुई है उतनी योग्यता में नहीं। भाषा और शैली पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। बिना किसी नियंत्रण की छपाई की बाढ़ में कुछ अंशों तक तो यह स्वाभाविक है, पर चलती हुई पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों का इस ओर ध्यान न देना खेदजनक है।

हिंदी की प्रकाशित पुस्तकों की संख्या

सन् १९३९ में निम्नलिखित प्रांतों में प्रकाशित होने वाली हिंदी और उर्दू पुस्तकों की संख्या नीचे दी जाती है—

प्रांत	अवधि	हिंदी	उर्दू
युक्तप्रांत—	३१ मार्च को समाप्त होने वाले त्रिमास में	४२३	५८
	३० जून ,, ,, ,,	३३६	४६
	३० सितंबर ,, ,, ,,	५६६	५१
	३१ दिसंबर ,, ,, ,,	४१८	३९

पंजाब—३१ मार्च	,,	,,	.	५८	३११
३० जून	,,	,,	,,	५६	३८४
३० सितंबर	,,	,,	,,	७८	३०५
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	९०	३०६
अजमेर-मेरवाड़ा ३१ मार्च	,,	,,	,,	१४	×
३० जून	,,	,,	,,	२१	३
३० सितंबर	,,	,,	,,	४७	६
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	२६	×

हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

इस वर्ष सभा ने भिन्न भिन्न प्रांतों में होनेवाली प्रायः सभी परीक्षाओं के हिंदी परीक्षार्थियों की संख्या देने का प्रयत्न किया है। और जिन संस्थाओं ने समय पर सूचना देने की कृपा दिखलाई है उन्हें सभा हृदय से धन्यवाद देती है।

खेद है कि पंजाब, बंबई और मद्रास के विश्वविद्यालयों से तथा युक्त-प्रांतीय शिक्षा विभाग से इस संबंध की सूचना प्राप्त नहीं हुई। युक्त-प्रांतीय शिक्षा विभाग और बंबई विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार महोदयों का तो उत्तर ही नहीं आया और मद्रास से इस आशय का उत्तर मिला कि हमारे यहाँ कार्यकर्ताओं की संख्या काफी नहीं है जो इस प्रकार के पत्रों का उत्तर दे सके। पंजाब विश्वविद्यालय ने इस आशय का उत्तर दिया कि इस संबंध की सूचना नहीं दी जा सकती।

(तालिका अगले पृष्ठ पर)

हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

प्रांत	परीक्षण संस्थाएं — सरकारी	परीक्षण संस्थाएं — गैर सरकारी	परीक्षा	परीक्षार्थियों की संख्या	हिंदी	उर्दू
युक्तप्रांत	बोर्ड आव हाई स्कूल एंड इंटर मीजिएट एजुकेशन		हाई स्कूल	१५४४१	७८३४	६१४९
			इंटर मीजिएट	४७६७	११९४	८८८
	प्रयाग विश्वविद्यालय		बी० ए०	५७८	१४३	५५
			एम० ए०	३०९	७५	५
	यु० प्रा० शिक्षाविभाग		एडवांस	६७२३	४७१२	२०११
	आगरा विश्वविद्यालय		बी० ए०	१६२७	४२५	१२३
	,, ,,		एम० ए०	४९०	९०	×
	अलीगढ़ ,, *		हाईस्कूल, इंटर बी ए. एम. ए	१००२	×	१००२
	,, ,,					
	काशीविश्वविद्यालय *		एडमिशन	१०३८	७०५	६८
			इंटरमीजिएट	५५४	३७७	३९
			बी० ए०	२७२	२१५	२६
			एम० ए०	८३	१३	×
		हिंदी साहित्य सम्मेलन	भिन्न भिन्न	३९७०	३९७०	×
		प्रयाग महिला विद्यापीठ	,, ,,	८७६	८७६	×
		गुरुकुल काँगडी	,, ,,	३९१	३९१	×

* अलीगढ़ विश्वविद्यालय में हिंदी किसी परीक्षा में पाठ्य विषय नहीं रखी गई है। पर एम ए (प्रीवियस) के तीसरे प्रश्नपत्र में 'भाषा' रखी गई है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उर्दू पाठ्य विषय रखी गई है और उर्दू लेकर विद्यार्थी परीक्षाओं में बैठते भी हैं।

प्रांत	परीक्षा संस्थाएं — सरकारी	परीक्षा संस्थाएं — गैर सरकारी	परीक्षा	परीक्षार्थियों की संख्या	हिन्दी	उर्दू
मध्यप्रांत, बरार	हाईस्कूल बोर्ड		हाई स्कूल	८३५३	११७३	२७०
	नागपुर विश्वविद्यालय		इंटर	७८२	६५	२५
	,, ,,		बी० ए०	५४२	५१	१५
	,, ,,		एम० ए०	१९१	२४	१४
		हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा	भिन्न भिन्न	७८३१	७८३१	×
बिहार	पटना विश्वविद्यालय		मैट्रिक	८४४६	५०६३	१२१४
	,, ,,		इंटर	२२१९	१२८२	३०८
	,, ,,		बी० ए०	८५९	४९३	११८
	,, ,,		एम० ए०	१११	१६	१०
		गोवर्धन साहित्य विद्यालय	भिन्न भिन्न	२५५	२४५	×
बंगाल	कलकत्ता विश्वविद्यालय		मैट्रिक	४४५८७	६८३	९९०
	,, ,,		इंटर	७१२७	१९७	११४
	,, ,,		इंटर साइंस	३६६९	७४	४२
	,, ,,		बी० ए०	४५३३	६०	८६
	,, ,,		एम० ए०	१९६	८	२

प्रांत	परीक्षण संस्थाएं: सरकारी	परीक्षण संस्थाएं: गैर सरकारी	परीक्षा	परीक्षार्थियों की संख्या	हिंदी	उर्दू
बम्बई		हिंदी विद्यापीठ	भिन्न भिन्न	६७१	६७१	×
मद्रास		दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा	भिन्न भिन्न	२०४६९	२०४६९	×
दिल्ली	दिल्ली विश्वविद्यालय		इंटर	७९६	२४ २२२	१० ३५५
			बी० ए०	४३४	× ११८	× २०२
राजपुताना, अजमेर, मध्यभारत ग्वालियर	हाईस्कूल एंड इंटर बोर्ड		हाई स्कूल	४४०५	२९१३	६७७
			इंटर	१४९३	४४९	८१
मैसूर	मैसूर विश्वविद्यालय		भिन्न भिन्न		×	१३
				कुल योग	६३१८२	१५०००

हिंदी और उर्दू की प्रकाशित पुस्तकों और उन्हें लेकर परीक्षा देने वालों की उपरि-लिखित तालिकाओं से इन दोनों की सापेक्ष स्थिति का पता सहज में चल जायगा। इससे जो निष्कर्प निकलता है उसको कहने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। फिर भी उर्दू के प्रचारक उसको ही देश की व्यापक भाषा कहते हुए नहीं हिचकते और हिंदी वाले भविष्य से निश्चिंत बैठे हैं।

शोकप्रकाश

अत्यंत शोक है कि इस वर्ष हास्यरसावतार पंडित श्रीजगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, श्रीनवजादिक लाल श्रीवास्तव, श्रीकुमार राजेंद्र सिंह (टिकरा) तथा आयुर्वेदीय वनस्पति शास्त्र के प्रसिद्ध ज्ञाता और रूपनिघंटु के लेखक श्रीरूपलाल वैश्य अब हमारे बीच नहीं रहे। उनकी मृत्यु से हिंदी साहित्य को जो क्षति हुई है वह शीघ्र पूरी होने वाली नहीं। परमात्मा इन गतात्माओं को सद्‌गति दे।

धन्यवाद

जिन सज्जनों ने किसी भी रूप में इस वर्ष सभा की सहायता की तथा हिंदी की उन्नति में योग दिया है, उन सबके प्रति सभा की ओर से मैं कृतज्ञता प्रगट करता हूँ। बाबू वैजनाथ केडिया ने सभा की अनेक प्रकार से बहुत सहायता की है। उसके लिये उन्हें अनेक धन्यवाद हैं। विशेप कर सभा का हिसाब जाँचने में उन्होंने बड़ा परिश्रम किया और अनेक उपयोगी बातें बतलाईं। सभा के विविध विभागों के अधिकारियों और सदस्यों को उनके पूर्ण सहयोग के लिये मैं सभा की तथा अपनी ओर से हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। विशेप कर सभा के सभापति पं० रामनारायण मिश्र ने अपने गत तीन वर्ष के कार्यकाल में जिस उत्साह, परिश्रम और तत्परता के साथ सभा को सब प्रकार से उन्नति करने का प्रयत्न किया है उसके प्रति कृतज्ञता शब्दों में व्यक्त करना असंभव है। सभा के सहायक मंत्री बाबू पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव एम. ए तथा उनके सहायक कर्मचारियों ने इस वर्ष सभा के कामों की अधिकता की चिन्ता न करके जिस उत्साह और खुले दिल से मेरा हाथ बँटाया है उसके लिये मैं इस समय उनको भी नहीं भूल सकता।

इस वर्ष साहित्यिक-प्रगति की सामग्री प्रस्तुत करने में श्रीचंद्रबलीपांडेय, एम. ए. श्रीनगेंद्र एम. ए. श्रीप्रकाशचंद्र गुप्त, एम. ए. तथा श्रीसत्येंद्र, एम. ए. ने जो सहायता की है उसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ ।

प्रबंध समिति की आज्ञा से

रामबहोरी शुक्ल

प्रधान मंत्री

परिशिष्ट १

इन सज्जनों तथा संस्थाओं की नामावली जिन्होंने पुस्तकों द्वारा इस वर्ष सभा की सहायता की है—

श्री अरविंद ग्रंथमाला, कलकत्ता	१
महाराज आनंदचंद्रजी, बिलासपुर	१
,, आर० बी० दयाल, नेटाल	१
,, आरा नागरी प्रचारिणी सभा, आरा	१
,, आर्य साहित्य विभाग, लाहौर	१४
,, इंडियन इंस्टीट्यूट आव फिलासफी, अमलनेर	१
,, इंपीरियल लाइब्रेरी, कलकत्ता	१
,, ईश्वर नारायण जोशी, भूपाल	१
,, उदय नारायण अखौरी, काशी	१
उदयपुर दरबार, उदयपुर	१
,, एजूकेशन बुकडिपो, जयपुर	२
,, कमलनाथ अग्रवाल, काशी	७
,, कर्मवीर प्रेस, खंडवा	१
,, कश्मीर सरकार, श्रीनगर	५,४
,, कृष्णदेव प्रसाद गौड़, काशी	१
,, केदारनाथ बेकल, अमरोहा	१
,, गंगा शंकर मिश्र, काशी	३
,, गया प्रसाद एंड संस, आगरा	?
,, गुरुनारायण सुकुल, लखनऊ	१
,, गोपालदास गहमरी, काशी	३
,, महामहोपाध्याय रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर	१
परशुराम दास अयोध्याप्रसाद मिश्र, काशी	१
,, ब्रह्मचारी सिनहा शर्मा, मधुवनी	१
,, [illegible] एंड सन, मुंगेर	१
,, [illegible] हितकारी पुस्तकमाला, प्रयाग	१३
[illegible]नाथ शास्त्री, काशी	१

,, जयदेव ब्रदर्स, बड़ोदा
,, मुनि ज्ञानसुंदर जी, अजमेर
,, कुंवर दलबीर सिंह, भंडरास्टेट
,, देवचरण शास्त्री, काशी
,, देवनारायण द्विवेदी, काशी
,, [illegible]कादास, काशी
,, धनीराम बख्शी, चाईबासा
,, नंदलाल पुरोहित, जयपुर
,, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ
,, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
,, नारायण प्रसाद दीक्षित, काशी
,, पी. एन. जोशी, काशी
,, पुस्तक भंडार लहेरिया सराय, दरभंगा
,, वचनेश मिश्र, काशी
,, बजरंगबली गुप्त, काशी
,, बलवीर सिंह, दतिया
,, बाबूराव विष्णु पराड़कर, काशी
,, बालमुकुंद वर्मा, काशी
,, रायबहादुर पंड्या बैजनाथ, काशी
,, भवानी दयाल संन्यासी, नेटाल
,, भारत सरकार, दिल्ली
,, मजदूर बुकडिपो, छपरा
,, मद्रास सरकार, मद्रास
,, मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर
,, माधवप्रसाद मिश्र, काशी
,, मुहम्मद हाफिज सैयद
,, मैकमिलन कंपनी, कलकत्ता
,, मोतीदास चेतनदास, काशी
,, डाक्टर मोहनसिंह पी-एच. डी., डी. लिट. लाहौर
,, युक्तप्रांतीय सरकार, प्रयाग
,, योगमीमांसा कार्यालय, बंबई

श्री रघुनाथ सिंह काशी [illegible]
,, महाराज कुमार डाक्टर रघुवीरसिंह, सीतामऊ २
,, रजिस्ट्रार, इलाहाबाद युनिवर्सिटी, इलाहाबाद २
,, ,, नागपुर यूनिवर्सिटी, नागपुर १
,, रस्तोगी प्रकाशन भवन, प्रयाग २
,, रामनाथ पांडेय, गोरखपुर ३
,, राजेन्द्र सिंह, जबलपुर ३
,, रामचंद्र वर्मा, काशी ४
,, रामदयाल प्रकाशचंद, कानपुर १
,, रामनारायण मिश्र, काशी ४९
,, रामनारायण मेहरोत्रा, काशी १
,, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १
,, लक्ष्मीनारायण सेठ, काशी १
,, लक्ष्मी सहाय वकील, मिर्जापुर १
,, लल्लो प्रसाद पांडेय, काशी १
,, लीडर प्रेस, प्रयाग [illegible]
,, विजयानंद त्रिपाठी, काशी [illegible]
,, विद्या विभाग, कांकरोली [illegible]
,, विप्लव कार्यालय, लखनऊ [illegible]
,, विश्वभारती पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता [illegible]
,, विश्वम्भर दयाल गुप्त, इलाहाबाद [illegible]
,, व्रताश्रम, अजमेर [illegible]
,, शिवगोविंद, मारीशस [illegible]
,, शिवप्रसाद गुप्त, काशी [illegible]
,, शिवनारायण पांडेय वकील, खंडवा [illegible]
,, [illegible]नाथसाह, काशी [illegible]
,, संकीर्तन कार्यालय, मेरठ [illegible]
,, सनातन धर्म युवक मंडली, देहली [illegible]
,, सत्य ज्ञान निकेतन, [illegible] [illegible]
,, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद [illegible]
,, सरस्वती मंदिर, [illegible] [illegible]

श्री सस्ता साहित्य मंडल,	दिल्ली	२०
,, साधना मंदिर,	बंबई	५
,, साहित्य रत्न भंडार,	आगरा	४
,, सीताराम गुप्त,	बरहज	१
,, सुकुमार सेन,	इलाहाबाद	१
,, सीताराम लालस,	बिलाड़ा	१
,, सुखसचारक कंपनी,	मथुरा	३
,, सूर्यदेव शर्मा,	अजमेर	२
,, स्वरूपानंद जी,	काशी	४
,, स्वामी हरिनामदास जी,	सक्खर	८
,, हरिमोहन लाल वर्मा,	दतिया	१
,, हरिराम नागर,	काशी	१
,, हिंदी ग्रंथरत्नाकर कार्यालय,	बंबई	२६
,, हिंदी पुस्तक भंडार,	बंबई	१
,, हिंदी पुस्तकालय,	मथुरा	१४
,, हिंदी मंदिर,	प्रयाग	१
,, हिंदी सभा,	दरभंगा	१
,, हिंदी साहित्य सम्मेलन,	प्रयाग	३
,, हिंदुस्तानी एकेडेमी,	प्रयाग	१
,, हिंदुस्तानी तालीमी संघ,	सेगाँव	१
,, हीरा देवी चतुर्वेदी,	जबलपुर	२

इसके अतिरिक्त श्री कांतिचंद्र सौनरिक्सा बी. ए (सहायक संपादक, 'विचार' कलकत्ता) ने श्री मैथिलीशरण गुप्त का एक स्वनिर्मित तैलचित्र पुस्तकालय को भेंट किया है।

परिशिष्ट २

पत्र-पत्रिकाएँ जो इस वर्ष सभा के पुस्तकालय में आती रहीं—

दैनिक

अग्रगामी, काशी	१२)
आज, ,,	,,
प्रताप, कानपुर	,,
भारत, प्रयाग	,,
लोकमान्य, कलकत्ता	,,
विश्वमित्र, ,,	,,
वीर अर्जुन, दिल्ली	,,

अर्द्ध साप्ताहिक

केसरी मराठी, पूना	८)
लीडर अंग्रेजी, प्रयाग	८)

साप्ताहिक

आज, काशी	३॥)
आदर्श, देवरिया	३)
आर्यमार्तंड, अजमेर	२॥)
आर्यमित्र, आगरा	३)
आवाज, बम्बई	३)
उत्तरभारत पौड़ी	३)
कर्मभूमि, लैंसडाउन	३॥)
ग्राम्य समाचार, हाथरस	२)
गवर्नमेंट गजट, युक्त प्रांत (अंग्रेजी) लखनऊ	
गुजरातीपंच (गुजराती) अहमदाबाद	३॥)
[illegible], काशी	२॥)
[illegible], बलिया	२॥)
[illegible], गया	२)
[illegible], बेतिया	२)
चित्रप्रकाश, दिल्ली	६।)
जनता, पटना	३)
जयाजीप्रताप, ग्वालियर	२)
जागरण, कलकत्ता	१॥)
जागृति, ,,	३॥)
जीवन, सहारनपुर	२)
देश, पटना	३॥)
देशदूत, प्रयाग	३॥)
नवज्योति, अजमेर	३॥)
नवशक्ति, पटना	३॥)
प्रताप, कानपुर	३॥)
भारत, प्रयाग	३८)
मध्यभारत, इंदौर	३)
मारवाड़ी समाचार, जोधपुर	२)
योगी, पटना	३।)
राजस्थान, अजमेर	३।)
राष्ट्रमत, प्रयाग	३।)
लोकमान्य, कलकत्ता	२)
विश्वमित्र ,,	३।)
वीर अर्जुन, दिल्ली	३)
वेंकटेश्वरसमाचार, बंबई	२)
वर्तमान, कानपुर	२)
शुभचिंतक, जबलपुर	३८)
संदेश, [illegible]	३)
सचित्र [illegible], दिल्ली	७)
समय, जौनपुर	२)
सुदर्शन, [illegible]	३)
सूत्रधार, [illegible]	२)

सैनिक, आगरा ३)
स्वतंत्र, झांसी २॥)
स्वराज्य, खंडवा ३)
स्वाधीन भारत, आरा ३॥)
हरिजनसेवक, दिल्ली ३॥)
हिंदी केसरी, काशी २।)
हिंदी प्रेमप्रचारक, आगरा ३॥।)
हिंदीमिलाप, लाहौर ३॥)
हिंदू, दिल्ली ३)

पाक्षिक

इंडियन इनफामशन सीरीज़ (अंग्रेजी) दिल्ली
कहानी, बनारस ३)
क्षत्रिय मित्र, ,, २)
म्युनिसिपल गज़ट ,, ॥=)
राजपूत ,, आगरा २)
हमारी ज़बान (उर्दू), दिल्ली १)

मासिक

अखंड ज्योति, आगरा १॥)
अनेकांत, दिल्ली ३)
अरुण, मुरादाबाद ३)
आदर्श, हरद्वार २)
आनंद (मराठी), पूना ३)
आर्य्य, लाहौर ३)
आर्य्य महिला, काशी ५)
आयुर्वेद भास्कर, आगरा २)
इंडियन प्रिंटर एंड स्टेशनरी (अंग्रेजी), राजकोट
इंडियन पी. ई. एन. (अंग्रेजी), बंबई
एजूकेशन ,, लखनऊ
एमप्लवायमेंट गजट ,, मेरठ
उषा, दिल्ली २॥)
ओरिएंटल लिटरेरी डाइजेस्ट (अंग्रेजी) पूना
कन्नौज समाचार, कन्नौज १)
कमला, काशी ४॥)
कल्पवृक्ष, उज्जैन २॥)
कल्याण, गोरखपुर ३)
कहानी, बनारस ३)
किशोर, पटना ३)
किसानोपकारक, लखनऊ १)
कुशवाहा क्षत्रियमित्र, जौनपुर १)
कूर्मिक्षत्रिय दिवाकर, काशी २)
क्षात्रधर्म, आगरा =)
खंडेलवाल संदेश, आगरा २)
खंडेलवाल महासभाबंधु, आगरा २)
खिलौना, प्रयाग २)
गीताधर्म, काशी ४)
गृहस्थ ,, १॥)
छायावाद ,, १॥)
जागृति, हवड़ा ३॥)
जीवनसखा, प्रयाग ३)
जीवन साहित्य, बम्बई १॥)
झरना, काशी १)
झुनझुना, आगरा २)
तत्त्वदर्शी, बड़ौदा १)
थियोसोफिस्ट (अंग्रेजी), काशी
दया, काशी १)
दीपक, अबोहर २॥)
देवायतन (बँगला) २)
धन्वन्तरि, अलीगढ़ ४॥)
धर्मदूत, सारनाथ ॥)
धर्मसंदेश, कानपुर १)

नई कहानियाँ, प्रयाग	६)
नई तालीम, वर्धा	१।)
नाम माहात्म्य, वृंदावन	१)
पुस्तकालय (गुजराती) बड़ौदा	५)
प्रकाश, जयपुर	३)
प्रजापति प्रकाश (गुजराती) बंबई	१)
प्रदीप, मुरादाबाद	४)
प्रवासी (बँगला) कलकत्ता	६)
बालक, लहेरियासराय	३)
बालसखा, प्रयाग	२॥)
बालहित, उदयपुर	२)
बेकारसखा, शिकोहाबाद	२)
ब्राह्मणसर्वस्व, इटावा	२॥)
भारतोदय, ज्वालापुर	३)
भूगोल, प्रयाग	३)
मनस्वी, अमेठी	१)
मराल, आगरा	२)
महिला, कलकत्ता	४)
माथुर वैश्यहितैषी	२)
माधुरी, लखनऊ	६॥)
माया, इलाहाबाद	१।)
मीमांसा प्रकाश, पूना	५)
मुसाफिर, कलकत्ता	३)
मेलमिलाप, बाँकीपुर	२)
मैथिल बन्धु, अजमेर	२)
यादवेश, काशी	१)
रंगीला मुसाफिर, सहारनपुर	३)
रानी कलकत्ता	३)
रोजगार, लहेरियासराय	२॥)
लीला, प्रयाग	२)
हिंदू, काशी	१॥)
विद्यार्थी, इलाहाबाद	२॥)
विशाल भारत कलकत्ता	६)
विश्वमित्र ,,	६॥)
विश्वेश्वर, काशी	३)
वैदिक, औंध	५)
वैद्य, मुरादाबाद	२)
व्यावहारिक वेदान्त, लखनऊ	३)
शनिवारेर चीठी (बंगला), कलकत्ता	३)
शाकद्वीपीय ब्राह्मणबंधु, बंबई	२॥)
शिक्षण अने साहित्य (गुजराती) अहमदाबाद	२)
शिक्षा सुधा, मुरादाबाद	२)
श्रेय, वृंदावन	२।)
संकीर्तन, मेरठ	३)
संगीत, हाथरस	३)
संदेश, काशी	१)
सन्मार्ग ,,	२)
सच्ची बोली, [illegible]	१)
सत्यसंदेश ,,	२)
सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग	[illegible]
सरस्वती ,,	[illegible]
सरिता, काशी	१)
सर्वोदय, वर्धा	३)
सार्वदेशिक दिल्ली	२)
साहित्य संदेश, आगरा	२)
साधना ,,	[illegible]
सुकवि कानपुर	[illegible]
सुधा, लखनऊ	[illegible]
सुधानिधि प्रयाग	[illegible]
सूर्योदय (मासिक) [illegible]	[illegible]
सेवा, इलाहाबाद	[illegible]

हंस, बनारस ४)
हिंदी शिक्षण पत्रिका, इन्दौर १)
होमियोपैथिक प्रचार, मुरादाबाद २)

त्रैमासिक

इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टरली (अंग्रेजी), कलकत्ता ६॥)
उर्दू (उर्दू), नई दिल्ली
एनल्स आव ओरिएंटल रिसर्च आव यूनिवर्सिटी (अंग्रेजी) मद्रास
एनल्स आव दी भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (अंग्रेजी) पूना
ओरिएंटल कालेज मेगजीन ,, लाहौर
कर्नाटक हिस्टारिकल रिव्यू ,,
क्वार्टरली जर्नल आव दी मिथिक सोसायटी ,, बंबई
चारण लिंबड़ी २॥)
जर्नल आव दी आंध्र हिस्टारिकल रिसर्च सोसायटी (अंग्रेजी), राजामुंद्री
जर्नल आव दी ग्रेटर इंडिया सोसायटी (अंग्रेजी) कलकत्ता
जर्नल आव दी तेलगू एकेडेमी (अंग्रेजी) कोकोनाडा
जर्नल आव दी बिहार उडीसा रिसर्च सोसायटी (अंग्रेजी) पटना २०)
जर्नल आव दी मद्रास ज्याग्राफिकल असोसिएशन (अंग्रेजी) मद्रास
जर्नल आव दी यूनिवर्सिटी आव बांबे (अंग्रेजी) बंबई १५)
जैनसिद्धान्त भास्कर, आरा ५)
देशी राज्य (गुजराती), नडियाद
नागरीप्रचारिणी पत्रिका, काशी १०)
निगार (उर्दू), लखनऊ १)
न्यू एशिया (अंग्रेजी), कलकत्ता
प्रबुद्धप्रभा, ,, बंबई
बुद्धिप्रकाश (गुजराती), अहमदाबाद
ब्रह्मविद्या (अंग्रेजी), अडयार ६)
भारतीय इतिहास संशोधक मंडल (मराठी), पूना ३)
महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका (मराठी), पूना २)
विश्वभारती (अंग्रे०) शांतिनिकेतन ८)
साहित्य, पटना
साहित्यपरिषद् पत्रिका (बंगला), कलकत्ता
हारवर्ड जर्नल आव एशियाटिक सोसायटी (अंग्रेजी) केम्ब्रिजमेसेट

चतुर्मासिक

जर्नल आव इंडियन हिस्ट्री (अंग्रेजी) मद्रास १०)

अर्द्धवार्षिक

जर्नल आव दी बाम्बे ब्रांच आव दी रायल एशियाटिक सोसायटी (अंग्रेजी), बंबई
बुलेटिन आव दी स्कूल आव ओरिएंटल स्टडीज़ (अंग्रेजी), लंदन

परिशिष्ट ३

इस वर्ष खोज विभाग द्वारा सभा के लिये प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों की सूची

(श्री बाबूराम बित्थरिया द्वारा प्राप्त)

ग्रंथ—		ग्रंथकर्ता—
१—बिहारी सतसई	(खंडित)	बिहारीलाल चौबे
२—मोक्ष	,,	वल्लभ रसिक
३—पिंडदानादि विधि	,,	×
४—स्वरोदय	,,	चरनदास
५—रत्नावली	(पूर्ण)	मिश्र
६—पांडव गीता की टीका	,,	हरिचरन
७—उपदेश	(खंडित)	×
८—रूपा कथा	,,	रामदास
९—पदसंग्रह [१]	,,	×
१०— ,, [२]	,,	×
११—कृष्ण लीलाएं	,,	श्रीपति जी
१२— ,,	,,	,,
१३— ,,	,,	,,
१४—पदों की पुस्तक	,,	×
१५—शीघ्र बोध (वार्तिक)	(पूर्ण)	×
१६—सनेह लीला	,,	मनमोहन
१७—बद्रीनाथ स्तोत्र	,,	×
१८—रमल	(अपूर्ण)	×
१९—पूजन आह्वानादि	,,	×
२०—हरिनाम माला	,,	×
२१—आदित्य हृदय	(पूर्ण)	×
२२—भक्त विरदावली	(अपूर्ण)	[illegible]
२३—दान लीला	(पूर्ण)	[illegible]
२४—विष्णु के १०८ नाम	,,	×

२५—स्तोत्र	(अपूर्ण)	×
२६—उत्तम-चरित्र	,,	अक्षर अनन्य
२७—कवित्त	,,	×
२८—गरुड़ पुराण	,,	×
२९—ध्यान मजरी	(पूर्ण)	अग्रदास
३०—रस साराश	(खंडित)	दास कवि
३१—कुछ भक्तों पर टिप्पणियाँ	,,	×
३२—सग्रह	(पूर्ण)	×
३३—सत्यनारायण की कथा	(अपूर्ण)	×
३४—चित्रकूट माहात्म्य	(पूर्ण)	कृपाराम
३५—सगुन विचार	(खडित)	×
३६—नवरत्न कवित्त	,,	×
३७—वारामासी	,,	×
३८—कवीरदास का एक खंडित ग्रंथ		कवीरदास
३९—नासकेतकथा	(पूर्ण)	चरणदास
४०—भगत पद्धरी	,,	मलूक दास
४१—लघु चाणकी राजनीति	,,	लघुमति
४२—धर्म समाधि	(खंडित)	×
४३—फुटकर पदादि	,,	×
४४—गगा पचीसी	,,	गंगा साहव
४५—भक्ति पदावली	,,	मलूक दास
४६—मेपादि दोपोपाय	,,	×
४७—मुहूर्त चिन्तामणि	(पूर्ण)	चंद्रमणि
४८—रमल शकुन	(अपूर्ण)	×
४९—धातु शोधन	,,	×
५०—उड्डीस	,,	×
५१—द्वादश महावाक्य विचार	,,	वनमाली
५२—आर्ज्या	,,	×
५३—पोथी लेखिन	(पूर्ण)	×
५४—ध्रुव चरित्र	(अपूर्ण)	मुरली
५५—संस्कृत के काल	(पूर्ण)	केवल कृष्ण

५६—अष्टक	(खंडित)	केवल कृष्ण
५७—विनय निवेदन	(पूर्ण)	,,
५८—संग्रह [भजनादि]	(अपूर्ण)	,,
५९—व्याकरण	,,	,,
६०—रेखागणित अध्याय छठवाँ	(पूर्ण)	×
६१—माप विधान	(पूर्ण)	देवीदीन
६२—ईसाधर्म वर्णनसार	,,	बालकृष्ण 'कृष्ण'
६३—युवती धर्म	(अपूर्ण)	,,
६४—पचरत्न	(पूर्ण)	,,
६५—नीति पचीसी	,,	,,
६६—अबला विनय निवेदन	(अपूर्ण)	,,
६७— ,, ,, विलाप	,,	,,
६८—नूतन प्रशंसा पंचरत्न	(पूर्ण)	,,
६९—फारसी हिंदी-कोश	(खंडित)	×
७०—भारत खंड का वर्णन	,,	×
७१—पंच कल्याणक	,,	रूपचंद जैन
७२—ब्रह्मोपासना	,,	कृष्ण कवि
७३—रामायण [उत्तरकांड]	,,	तुलसीदास
७४—रामायण की कुछ चौपाइयों के अर्थ	(खंडित)	×
७५—उर्दू की कुछ कहानियाँ	,,	×
७६—संस्कृत का एक खंडित ग्रंथ	,,	×
७७—एकादशी की कथा	,,	×
७८—दो पद	,,	×
७९—देवी अष्टक	(पूर्ण)	×
८०—हिंडोरादि पद	,,	×
८१—गर्मी आदि की दवा	,,	×
८२—बसन्त बधाया	,,	×
८३—ज्ञान स्वरोदय	,,	[illegible]
८४—भ्रमर गीत	,,	[illegible]
८५—इतिहास सार समुच्चय	(अपूर्ण)	[illegible]
८६—ख्यालों की पुस्तक	,,	[illegible]
८७—छदपद	,,	×

८८—औषधियों की पुस्तक	,,	×
८९—सनेह लीला	(पूर्ण)	जनमोहन
९०—उपाचरित्र बारहखड़ी	(अपूर्ण)	कुंजजन
९१—रसिक शृंगार	,,	गिरधरनाथ 'ना
९२—सूर्य स्तोत्र	(पूर्ण)	×
९३—हनुमत जंजीरा	,,	×
९४—संकष्टास्तोत्र	,,	×
९५—हनुमान स्तोत्र	(अपूर्ण)	×
९६—विष्णु के अट्ठाइस नाम	,,	×
९७—सूर्य का मत्र	(पूर्ण)	×
९८—लक्ष्मी स्त्रोत	,,	×
९९—फुटकर छद (अपूर्ण)		

(श्री दौलतराम जुयाल द्वारा प्राप्त)

ग्रंथ—	ग्रंथकर्त्ता—	
१—स्वरोदय	×	
२—प्रह्लाद चरित्र	चोखन	
३—मानलीला	×	एक ही गुटके से
४—जुगलध्यान	ध्रुवदास	एक ही गुटके से
५—बुद्धि विलास	मोहनदास	एक ही गुटके से
६—प्रतीत परीक्ष्या	उदय	
७—रामायण बाराखड़ी	×	
८—शनी की कथा	रामानंद	
९—गीता	×	
१०—गणेश पुराण	×	
११—मोहनदेव जी की वार्ता	×	
१२—ईसख प्रकाश	मिरजा ईसख	
१३—योगोभ्यास मुद्रा	कुमुदी पाद	
१४—शनीश्चर की कथा	×	
१५—(बिना नाम का)	अनाथ	
१६—बाराखड़ी	×	
१७—रास पचाध्यायी	नददास	
१८—सनेहलीला	जनमोहन	
१९—भ्रमर गीत	नददास	

परिशिष्ट ४

मान्य सभासद

डा० अमरनाथ झा, एम० ए०, वाइसचांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

,, साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', संकटहरन, बनारस

,, डा० आनंद के० कुमारस्वामी, डी. एस सी (लंदन)
कीपर अव दि इंडियन सेक्शन, म्यूजियम अव फाइन आर्ट्स
बोस्टन (यू. एस. ए.)

,, रेवरेंड ई ग्रीव्स, नं० १, दी लाइन्स, हानिओल्ड रोड, लेस्बर्न (इंग्लैंड)

ए जी शिरफ आई सी एस, कमिश्नर, फैजाबाद

,, प्रोफेसर एस् एच् होरीवाला, २७, कान्वेन्ट एवेन्यू, [illegible] रोड,
शान्ता क्रूज बम्बई सबर्बन डिस्ट्रिक्ट, बम्बई

,, राय कृष्णदास, रामघाट, बनारस

,, काका कालेलकर, वर्धा

,, गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, प्रधानमन्त्री, सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, लाहौर

,, महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति रायबहादुर,
डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर

,, चन्द्रशेखरधर मिश्र, ग्राम—रतनमाला, पोस्ट—बगहा, जिला—चंपारन

,, सेठ जमनालाल बजाज, ठिकाना रायबहादुर बछराज जमनालाल, वर्धा

,, साहित्यवाचस्पति, डा० जी ए ग्रियर्सन, पी एच-डी, के सी एस
आई, राथफार्नहम, कैंबरली, सरे (इंग्लैंड)

डाक्टर दुर्गाशंकर नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, न्यायभूषण, प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा
[illegible]

,, आचार्य नरेन्द्रदेव एम ए, एल एल बी, फैजाबाद

,, प्रोफेसर निकोलस रोरिक, नग्गर, कुलू

,, डाक्टर पन्नालाल, आई सी एस, डी लिट्, एडवाइजर टु दि
यू पी गवर्नमेंट लखनऊ

८८—ओषधियों की पुस्तक ,, ×
८९—सनेह लीला (पूर्ण) जनमोहन
९०—उपाचरित्र बारहखड़ी (अपूर्ण) कुंजजन
९१—रसिक शृंगार ,, गिरधरनाथ 'नाथ'
९२—सूर्य स्तोत्र (पूर्ण) ×
९३—हनुमत जंजीरा ,, ×
९४—संकष्टास्तोत्र ,, ×
९५—हनुमान स्तोत्र (अपूर्ण) ×
९६—विष्णु के अट्ठाइस नाम ,, ×
९७—सूर्य का मत्र (पूर्ण) ×
९८—लक्ष्मी स्त्रोत ,, ×
९९—फुटकर छद (अपूर्ण)

(श्री दौलतराम जुयाल द्वारा प्राप्त)

ग्रंथ—	ग्रंथकर्त्ता—	
१—स्वरोदय	×	
२—प्रह्लाद चरित्र	चोखन	
३—मानलीला	×	एक ही गुटके मे
४—जुगलध्यान	ध्रुवदास	एक ही गुटके मे
५—बुद्धि विलास	मोहनदास	एक ही गुटके मे
६—प्रतीत परीक्ष्या	उदय	
७—रामायण बाराखड़ी	×	
८—शनी की कथा	रामानंद	
९—गीता	×	
१०—गणेश पुराण	×	
११—मोहनदेव जी की वार्ता	×	
१२—ईसख प्रकाश	मिरजा ईसख	
१३—योगोभ्यास मुद्रा	कुमुदी पाव	
१४—शनीश्चर की कथा	×	
१५—(बिना नाम का)	अनाथ	
१६—बाराखड़ी	×	
१७—रास पंचाध्यायी	नंददास	
१८—सनेहलीला	जनमोहन	
१९—भ्रमर गीत	नददास	

परिशिष्ट ४

मान्य सभासद

श्री० अमरनाथ झा, एम० ए०, वाइसचांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

,, साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', संकटहरन, बनारस

,, डा० आनंद के० कुमारस्वामी, डी. एस सी. (लंदन) कीपर अव दि इंडियन सेक्शन, म्यूजियम अव फाइन आर्टस, बोस्टन (यू. एस. ए.)

,, रेवरेंड ई ग्रीव्स, नं० १, दी लाइन्स, हार्निओल्ड रोड, मेलवर्न (इंग्लैंड)

,, ए. जी शिरफ, आई सी एस, कमिश्नर, फैजाबाद

,, प्रोफेसर एम्. एच्. होरीवाला, २७, कान्वेन्ट एवेन्यु, गोवर्धनदास रोड, शान्ता क्रूज बंबई सबर्बन डिस्ट्रिक्टस्, बंबई

,, राय कृष्णदास, रामघाट, बनारस

,, काका कालेलकर, वर्धा

,, गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, प्रधानमन्त्री, सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, लाहौर

,, महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति रायबहादुर, डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर

,, चन्द्रशेखरधर मिश्र, ग्राम–रतनमाला, पोस्ट–बगहा, जिला–चंपारन

,, सेठ जमनालाल बजाज, ठिकाना रायबहादुर बच्छराज जमनालाल, वर्धा

,, साहित्यवाचस्पति, डा० जी ए ग्रियर्सन, पी. एच-डी., के. सी एस. आई, रायफर्नहम, कैंबरली, सरे (इंग्लैंड)

,, डाक्टर दुर्गाशंकर नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन

,, राजगुरु धुरेंद्र शास्त्री, न्यायभूषण, प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रांत, लखनऊ

,, आचार्य नरेंद्रदेव एम. ए, एम एल ए., फैजाबाद

,, प्रोफेसर निकोल्स रोरिक, नग्गर, कुलू

,, डाक्टर पन्नालाल, आई. सी. एस., डी. लिट्., एडवाइजर टु द यू पी. गवर्नमेंट, लखनऊ

,, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन, एम ए., एल-एल. बी.,
अध्यक्ष, प्रांतीय असेंबली, संयुक्तप्रांत, लखनऊ

,, बनारसीदास चतुर्वेदी, टीकमगढ़

,, भगवद्दत्तजी, वैदिक अनुसधान संस्था, ९ सी, माडल टाउन, लाहौर

,, डाक्टर भगवानदास, एम ए , डी. लिट्., सिगरा, बनारस

,, साहित्यवाचस्पति महामना पं० मदनमोहन मालवीय,
हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस

,, माखनलाल चतुर्वेदी, संपादक 'कर्मवीर', कर्मवीर प्रेस, खंडवा

,, मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव, झांसी

,, मोतीलाल शर्मा, बालचंद्र प्रेस, जयपुर सिटी

,, साहित्यवाचस्पति, डाक्टर महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी,
सेवाग्राम, वर्धा

,, परमहंस बाबा राघवदास, परमहंसाश्रम, बरहज, जिला—गोरखपुर

,, देशरत्न डाक्टर राजेंद्रप्रसाद, सदाकत आश्रम, पटना

,, आचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल, दुर्गाकुंड, बनारस

,, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, त्रिपिटकाचार्य, छपरा

,, रायसाहब ठाकुर शिवकुमारसिंह, बैजनत्था, बनारस

,, शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन, बनारस

,, रायसाहब श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम ए (लंदन), आर्यनगर, लखनऊ

,, श्रीराम वाजपेयी, १ चैथमलाइन्स , इलाहाबाद

,, रावराजा, रायबहादुर, डाक्टर श्यामबिहारी मिश्र, एम ए , डी. लिट्,
१०५, गोलागंज, लखनऊ

,, संपूर्णानंद, बी एस-सी., एल टी., एम एल. ए ,
भूतपूर्व शिक्षामंत्री—संयुक्तप्रांत, जालपादेवी, बनारस

,, सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशगृह, कालाकाँकर (प्रतापगढ, अवध)

,, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नारियलवाली गली, हाथीखाना, लखनऊ

,, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी ए , विद्याभूषण,
तहवीलदार का रास्ता, जयपुर

योग—४०

विशिष्ट सभासद्

श्री० राय कृष्णजी, पांड़ेपुर, बनारस

,, राय गोविंदचंद्र, एम ए., एम. एल. सी. कुशस्थली, बनारस

,, सेठ घनश्यामदास बिडला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, महामाननीय डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, एम. ए., एल-एल. डी, केटी, डी सी. एल., १८, अलबर्ट रोड, इलाहाबाद

,, सेठ सर बदरीदास गोयनका, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

,, राजा बलदेवदास बिड़ला, लालघाट, बनारस

,, सेठ ब्रजमोहन बिड़ला, ८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, मनीबाई शाह, युनिटी लाज. लखनऊ

,, मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन, बनारस

,, राधेकृष्णदास, शिवालाघाट, बनारस

,, रामनारायण मिश्र, बी ए, (अवसर प्राप्त) पी. ई. एस., कालभैरव, बनारस

,, सेठ वंशीधर जालान, कोठी सूरजमल नागरमल, ६१, हरिसनरोड, कलकत्ता

,, महाराजाधिराज सर विजयचंद महताब बहादुर, जी. सी. एस. आई., वर्द्धमान

,, राय श्रीकृष्णजी, पाडेपुर, बनारस

योग–१४

स्थायी सभासदों की प्रांत क्रम से नामावली

१—असम

(सभासदों की संख्या — ×)

२—कश्मीर

(सभासदों की संख्या — ×)

३—दिल्ली

(सभासदों की संख्या—८)

दिल्ली

श्रीयुत लाला वनवारी लाल, कोठी—भानामल गुलजारीमल, चावड़ी बाजार,
,, लाला रघुवीरसिंह, बी. ए , कश्मीरी गेट,
,, रामधन शर्मा, शास्त्री, एम ए , एम, ओ एल , साहित्याचार्य, ४१८, कटरा नील,

योग—३

नई दिल्ली

श्रीमती कृष्णादेवी झालानी, बी ए , ४, औरंगजेब रोड,
श्रीयुत ज्ञानचंद आर्य, १७, बाराखंभा रोड,
,, लाला देशबंधु गुप्त, एम एल ए , ५, कीलिंग रोड,
,, नारायणदत्त, १३, बाराखंभा, रोड,
,, हंसराज गुप्त, एम. ए., एल—एल बी., २०, बाराखंभा रोड,

योग—५

४—पंजाब

(सभासदों की संख्या—१)

लाहौर

श्रीयुत राय रामशण दास

योग—१

५-बंगाल

(सभासदों की संख्या-२९)

कलकत्ता

श्रीयुत इंद्रचंद्र केजडीवाल, फर्म कनीराम हजारीमल,
,, कालीप्रसाद खेतान, बार एट-ला, २, मांडले विला गार्डेन्स्,
पोस्ट-बाली गंज
,, केदारनाथ सेठ, शास्त्री, १, गौरदास बसाक स्ट्रीट, बड़ा बाजार,
,, गांगेय नरोत्तम शास्त्री, गांगेय भवन, १२, आशुतोष दे लेन,
,, गिरधारीलाल नागर, कोठी बलदेवराम बिहारीलाल,
५, कालीकृष्ट टैगोर स्ट्रीट,
,, गुलजारीलाल कानोडिया, ठि०/ सेठ भगीरथ कानोडिया,
४३, जकरिया स्ट्रीट,
,, गोपीकृष्ण कानोडिया, २९, विवेकानंद रोड,
,, सेठ छोटेलाल कानोडिया, ५७, बड़तल्ला स्ट्रीट,
,, जगन्नाथ प्रसाद गुप्त, १२६, चितरजन एवेन्यु,
,, दामोदर दास खन्ना, १७, वाराणसी घोष स्ट्रीट,
,, नंदलाल कानोडिया, ४२, जकरिया स्ट्रीट,
श्रीमती नर्मदा देवी ठि०/ बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका,
६, ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट,
श्रीयुत नारायणदास वर्मन, ५'५, क्लाइव स्ट्रीट,
,, पूरनचंद वर्मन, कोठी डाक्टर एस के. वर्मन, राशविहारी एवेन्यु,
,, बजरङ्गदास डागा, ठि०/ राय बहादुर वंशीलाल अबीरचंद,
४०१, अपर चितपुर रोड,
,, बालकृष्णलाल पोद्दार, ४१/१ ताराचंद दत्त स्ट्रीट,
,, मगतूराम जयपुरिया, २३, विवेकानंद रोड,
,, म्हालीराम सोनथलिया, कोठी राधाकृष्ण सोनथलिया कं,
६५, पथरिया घट्टा स्ट्रीट,
,, मूलचंद अग्रवाल, विश्वमित्र कार्यालय, १४/१ शंभुचटर्जी स्ट्रीट,
पोस्ट बोबाजार स्ट्रीट,

,, रामकुमार जालान, कोठी रामचंद्र हनुमानबख्श, ५१/२ स्ट्रैंड रोड,
,, रामकुमार भुवालका, ८, रायल एक्सचेंज प्लेस, फर्स्ट फ्लोर,
,, रायबहादुर रामदेव चोखानी, कोठी दौलतराम रामदेव,
वाराणसी घोष स्ट्रीट,
,, सेठ रामनाथ कानोडिया, कोठी लक्ष्मी नारायण कानोडिया कं.,
क्लाइव स्ट्रीट.
,, सेठ रामसुदर कानोडिया, २९, बंसतल्ला स्ट्रीट,
,, रामेश्वर नोपाणी, ठि०/श्री०दौलतरामजी रावतमलजी, १७८, हरिसन रोड,
,, विनय कृष्ण रोहतगी, बी. एस-सी, कोठी बद्रूदास लालचंद
४५, आर्मेनियन स्ट्रीट.
,, विष्णुदास बासिल, ४३, पद्दोपूकर रोड, पोस्ट एलगिन रोड,
,, सीताराम सेकसरिया, शुद्ध खादी भंडार १३२/१ हरिसन रोड,

योग—२८

हवड़ा

श्रीयुत मिहरचंद्र धीमानजी, ११५, बनारस रोड, सलकिया,

योग—१

६—बंबई

(सभासदों की संख्या—२)

बंबई

श्रीयुत हीरालाल अमृतलाल शाह, बी. ए, नं० ६९ मेरीन ड्राइव, चौथा फ्लोर,
ब्लाक नं १०,
,, गोस्वामी महाराज गोकुलनाथ, बड़ा मंदिर, इरा भोई बाडा, नं. २

योग—२

लोणावला (पूना)

श्रीयुत सी. के. देसाई, (अवसर प्राप्त) आई सी. एस, कैवल्यधाम,

योग—१

७—बिहारोत्कल

(सभासदो की संख्या—६)

छपरा

श्रीयुत ठाकुर त्रिभुवनप्रसाद शिवगोविंद, बार-एट-ला, भगवान बाजार,

योग—१

झरिया (जिला मानभूम)

श्रीयुत रामजस अग्रवाल

योग—१

डालमियानगर (शाहाबाद)

श्रीयुत सेठ रामकृष्ण डालमिया

योग—१

पटना

श्रीयुत सर गणेशदत्त सिंह, केटी, भूतपूर्व शिक्षामंत्री बिहार सरकार,

,, हरिप्रसाद वर्मा, मोकामा घाट,

योग—२

रानीगंज

श्रीयुत जगन्नाथ प्रसाद झुनझुनूवाले, आनरेरी मैजिस्ट्रेट,

योग—१

८—मद्रास

(सभासदों की संख्या—×)

९—मध्यप्रदेश-बरार

(सभासदों की संख्या—×)

१०—मध्यभारत

(सभासदों की संख्या—८)

इंदौर

श्रीयुत रामभरोसे तिवाडी, १२, तुकोगंज साउथ,

योग १

उज्जैन

श्रीयुत मदनमोहन जैन, जीवनकुटी,
,, राय बहादुर लालचंद सेठी, वाणिज्य-भूषण, विनोद भवन,

योग—२

ग्वालियर

श्रीयुत राजा खलकसिंह जू देव खनियाँधाना स्टेट, ग्वालियर रेजिडेंसी,

योग—१

धार

श्रीयुत महाराज आनंदराव साहब पँवार, धार स्टेट,
,, कृष्णराव पूर्णचन्द्र माडलीक, चीफ इन्सपेक्टर ग्रामोद्धार, धार स्टेट,

योग—२

सुल्थान (मालवा)

श्रीयुत महाराज भरत सिंह साहब

योग—१

सीतामऊ

श्रीयुत महाराजकुमार डाक्टर रघुवीर सिंह, एम ए एल-एल बी, डी. लिट्. रघुवीर निवास,

योग—१

११—मैसूर

(सभासदों की संख्या—×)

१२—राजपूताना

(सभासदों की संख्या—११)

अजमेर—मेरवाड़ा

श्रीयुत कल्याणसिंह, भिनाय स्टेट

योग—१

उदयपुर

श्रीयुत अंबालाल देरासरी, नागरवाडी
,, कुँवर तेजसिंह मेहता, मिनिस्टर
,, पुरोहित देवनाथ, मास्टर अव सेरेमनीज, पुरोहितजी की हवेली
,, दीवान बहादुर धर्मनारायण काक, सी आई. ई., प्रधान मंत्री, उदयपुर राज्य
,, कुँवर फतहलाल मेहता, राय पन्नालाल भवन

योग–५

काँकरोली (मेवाड़)

श्री १०८ श्री० गोस्वामी व्रजभूषण शर्मा, काँकरोली महाराज

योग–१

जयपुर

श्रीयुत शुकदेव पांडे, एम. एस–सी , प्रिंसिपल बिडला इंटर कालेज, पिलानी
,, रायबहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालद, जयपुर रोड

योग–२

प्रतापगढ़

श्रीयुत महाराजा महारावत साहब सर रामसिंह, के. सी. एस. आई.,

योग–१

शाहपुरा राज्य

श्रीयुत माननीय महाशय बीरूलाल, एम. ए , एल-एल. बी , जज हाईकोर्ट

योग–१

१३–संयुक्तप्रांत

(सभासदों की संख्या—४१)

आगरा

श्रीयुत प्रो० निहालकरण सेठी, सिविल लाइंस
,, प्रोफेसर हरिहरनाथ टंडन, एम. ए , संतजान्स कालेज

योग–२

इलाहाबाद

श्रीयुत कृष्णराम मेहता, बी. ए., एल-एल. बी., लीडर प्रेस
,, ठाकुर नेहपालसिंह, आई. ई. एस , २१, म्योर रोड
,, राय बहादुर भगवतीशरणसिंह, चंद्रभवन, आउटरम रोड
,, मनोहरलाल जुत्शी, एम. ए , १, बेली रोड
,, सत्यजीवन वर्मा, एम ए., हिंदुस्तानी एकेडमी, संयुक्तप्रांत
,, हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस लि०,

योग—६

कनखल

श्रीयुत गंगाप्रसाद, एम ए , (अवसरप्राप्त) चीफ जज, टेहरी राज्य,

योग—१

कानपुर

श्रीयुत लाला रामरतन गुप्त, बिहारी निवास,

योग—१

खीरी

श्रीयुत आदित्यप्रकाश मिश्र, डिप्टी कलेक्टर,

योग—१

गोंडा

श्रीमती पूर्णिमा चान्दमल, ठि०/ श्रीचान्दमल, आई. सी. एस ,

योग—१

नैनीताल

श्रीयुत रायसाहब डाक्टर भवानीशंकर याज्ञिक, पटवा डोंगर

योग—१

बनारस

श्रीयुत रायबहादुर कमलाकर दुबे, एम ए , राजुरी,
,, किशोरीरमण प्रसाद, कचौरीगली

,, गोविंद मालवीय, एम ए, एल एल बी, एम. एल. ए,
न्यू इंश्योरेंस क०,

,, सेठ गौरीशंकर गोयनका, अस्सी,

,, जगन्नाथप्रसाद खत्री, गोलागली,

,, दामोदरदास खंडेलवाल, छोटी गैबी,

,, बनारसीप्रसाद सारस्वत

,, ब्रजरत्नदास, बी. ए, एल एल. बी, ऐडवोकेट, बुलानाला,

,, रमेशदत्त पांडे, बी. ए, बरना पुल,

,, विश्वनाथप्रसाद, बुलानाला,

,, वेणीप्रसाद, रानीकुआँ,

,, राय शंभुप्रसाद, ग्राम—जगतपुर, पोस्ट–रोहनियाँ,

,, साहित्यवाचस्पति रायबहादुर श्यामसुंदरदास, बी. ए.,
१४।१११ टेढ़ी नीम,

,, श्रीशचंद्र शर्मा, बी. ए, एल-एल. बी. बी. टी., कालभैरव,

,, सत्यनारायण आर्य, एम ए., बी. टी डी ए. वी कालेज,

योग–१५

बनारस राज्य

श्रीयुत सूर्यप्रसाद शुक्ल हजारीसाहब, रामनगर,

योग–१

बुलंदशहर

श्रीयुत राय साहब मदनमोहन सेठ, एम. ए, एल-एल बी,
(अवसर प्राप्त) जिला एवं सेशन्स जज, शिवपुरी,

योग–१

मथुरा

श्रीयुत क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कंपनी

योग–१

मिर्जापुर

श्रीयुत रामप्रतापजी, मालिक दुकान भैरवमल फतहचंद, बुंदेलखंडी,

,, राजा शारदा महेश प्रसाद सिंह शाह, बड़हराधीश, बडहर, पोस्ट राजपुर,

योग–२

मुजफ्फरनगर

श्रीयुत जगदीशप्रसाद, रईस

योग—१

लखनऊ

श्रीयुत पुरोहित कृष्णकुमार, एम. ए., एल-एल. बी., ५५, मेस्टन हास्टेल

योग—१

सीतापुर

श्रीयुत ठाकुर रामसिंह, ताल्लुकेदार

,, राजा सूरजबख्शसिंह, आनरेरी मुंसिफ व मैजिस्ट्रेट, कस्मांडा, पोस्ट कमालपुर

,, सोमेश्वरदत्त शुक्ल

योग—३

सुल्तानपुर

श्रीयुत कुमार रणंजयसिंह, भूतपूर्व एम एल ए. (केन्द्रीय), अमेठी राज्य

योग—१

हरदोई

श्रीयुत ब्रजभूषणशरण जेतली, एम ए, एल एल बी, आई पी एस., सुपरिंटेंडेंट पुलिस

योग—१

हाथरस

श्रीयुत रायबहादुर चिरंजीलाल बागला, रईस, म्युनिसिपल कमिश्नर

योग—१

१४-सिंध

(सभासदों की संख्या—)

१५—हैदराबाद (दक्षिण)

श्रीयुत राजा बहादुर विश्वंभरनाथ, जज हाईकोर्ट

योग—१

१६—विदेश

(सभासदों की संख्या —×)

कुल योग—१०८

समस्त सभासदों की प्रांत क्रम से नामावली

१—असम

(सभासदों की संख्या-२)

रेहावाड़ी

श्रीयुत यमुनासिंह, बी. ए, टीचर्स लॉज, पोस्ट-रेहावाडी,

योग-१

सिलहट

श्रीयुत भँवरलाल नाहटा, संपादक राजस्थान, बदर बाजार,

योग-१

२—कश्मीर

(सभासदों की संख्या-२)

जम्मू

श्रीयुत विद्यावाचस्पति श्रीचंद्र शर्मा, तर्कालंकार, रघुनाथ स्ट्रीट,

योग-१

बरामुला

श्रीयुत आत्माराम, डिविजनल इंजीनियर, जे. बी. रोड डिविजन

योग-१

दिल्ली

(सभासदों की संख्या-१९)

दिल्ली

श्रीयुत सेठ केदारनाथ गोयनका, कैपिटल म्युजिक हाउस, चाँदनी चौक,
,, चंद्रशेखर शास्त्री, एम. ओ पी. एच, एच. एम. टी., काव्य-साहित्य तीर्थ, आचार्य, प्राच्य विद्यावारिधि, आयुर्वेदाचार्य, नं ८११, धर्मपुर,
,, नारायणस्वामी, श्रद्धानंद बलिदान भवन,
,, लाला बनवारीलाल, कोठी भानामल गुलजारी लाल, चावड़ी बाजार,

,, लाला रघुवीर सिंह, बी. ए., कश्मीरी गेट,

,, रामधन शर्मा, शास्त्री, एम. ए., एम. ओ एल., साहित्याचार्य,
४१८, कटरा नील,

,, लक्ष्मीपति मिश्र, मेम्बर, फेडरल पब्लिक सर्विस कमीशन, मेटकाफ हाउस,

,, शिवदत्त शर्मा, रेलवे क्लियरिंग अकाउंट्स आफिस,
बी. बी. एंड सी.आई. सेक्शन, रोशनआरा,

,, श्रीराम शर्मा, आर्य समाज, बिड़ला लाइंस,

,, सुधाकर, एम. ए., शारदा मंदिर लि०, नई सड़क,

योग—१०

नई दिल्ली

श्रीयुत अमोलक राम, एम. ए., २५०२–११ बीडनपुरा, करौलबाग,

श्रीमती कृष्णादेवी झालानी, बी. ए, ४, औरंगजेब रोड,

श्रीयुत रावबहादुर काशीनाथ दीक्षित, डायरेक्टर जनरल अव आर्कियालॉजी इन
इंडिया,

,, ज्ञानचंद आर्य, १७, बाराखंभा रोड,

,, दशरथ ओझा, माडर्न स्कूल,

,, लाला देशबंधु गुप्त, एम एल. ए., ५, कीलिंग रोड

,, नारायणदत्त, १२, बाराखमा रोड,

,, हंसराज गुप्त, एम. ए., एल-एल. बी., २० बाराखंभा रोड

योग—८

पानीपत

श्रीयुत जैभगवान जैन, बी. ए, एल-एल. बी, प्लीडर

योग—१

४—पंजाब

(सभासदों की संख्या—२८)

अंबाला

श्रीयुत भैरवलाल मगनलाल जवेरिया, एम. ए, एल-एल. बी.,
प्रोफेसर, जैन कालेज

योग—१

अबोहर

श्रीयुत स्वामी केशवानंद, साहित्यसदन,

योग–१

अमृतसर

श्रीयुत डाक्टर पेडामल, एम डी, डाव, खटीकाँ

,, महामहोपदेशक, पंजावभूषण, पंडितराज बुलाकीराम शास्त्री, सांख्यरत्न, विद्यानिधि, विद्यासागर, विद्यारत्नाकर, विद्यावाचस्पति, महामान्य, महा-महाध्यापक, आदि आदि, गली भगवताँ वाली, चौक नमकमंडी

श्रीयुत राधाकृष्ण बाही, बी. ए., दुर्गेयाना,

श्रीमती रामप्यारी खन्ना, ठि०/ श्री० गुराँदित्ता खन्ना, चौक लोहगढ़,

श्रीयुत स्वामी हरिशरणानंद, वैद्य, पंजाव आयुर्वेदिक फार्मेसी.

योग–५

कुलू

श्रीयुत प्रोफेसर निकोलस रोरिक, नग्गर,

योग–१

गुजरानवाला

श्रीयुत अनंतराम जैन, बी. ए., एल-एल बी., श्रीआत्मानंद जैन गुरुकुल,

योग–१

जालंधर

श्रीमती लज्जावती देवी, प्रिंसिपल, कन्या महाविद्यालय,

योग–१

डिंगा (जिला गुजरात)

श्रीयुत स्वामी वेदानंद तीर्थ, आर्यसमाज मंदिर,

योग–१

पटियाला राज्य

श्रीयुत शमशेर सिंह अशोक, ग्राम–ग्वारा, पोस्ट-अमरगढ,

योग १–

मालेरकोटला

श्रीयुत भगवत राय जैन, वैद्य, आयुर्वेदविशारद, मालिक, देशरक्षक औषधालय,

योग—१

लायलपुर

श्रीयुत जगद्धर शर्मा गुलेरी, एम. ए., एल-एल बी, पंजाब कृषि महाविद्यालय,

योग—१

लाहौर

श्रीयुत प्रोफेसर कैलाशनाथ भटनागर, एम. ए, मेलाराम रोड,
,, गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, प्रधान मंत्री, सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा,
,, देवराज सेठी, एम. एल. ए., लाजपतराय भवन,
,, धर्मचंद्र नारंग, बी. ए., विशारद, सचालक, हिंदी भवन अनारकली, अस्पताल रोड,
,, निरंजननाथ श्रीमानजी, ४, कोर्ट स्ट्रीट,
,, भगवद्दत्तजी, वैदिक अनुसंधान संस्था, ९ सी, माडल टाउन,
,, मूलराज जैन, बी. ए., प्रभाकर, द्वि०/ डाक्टर बनारसीदास जैन, एम ए., पी-एच. डी,
,, डाक्टर रघुवीर, एम ए., पी-एच डी, डी. लिट्, एट् फिल, फाउंडर डाइरेक्टर, इंटरनेशनल एकेडमी अव इंडियन कल्चर
,, राय बहादुर रामशरण दास
,, वितस्ता प्रसाद, फिदा, बी. ए, सेकंड मास्टर, दयालसिंह हाई स्कूल,

योग—१०

शिमला

श्रीयुत गंगादत्त पांडे, प्रधान मंत्री, हिंदी प्रचारिणी सभा,
,, वासुदेव उपाध्याय, हेड पोस्टमैन, शिमला पहाड़,

योग—२

शेखूपुरा

श्रीयुत राय बहादुर वजीरचंद चोपड़ा, रिटायर्ड सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर, पंजाब इरिगेशन,

योग—१

हिसार

श्रीयुत प्रभुदयाल वर्मा मेढ, मंत्री, आर्य समाज, तोशाम,

योग–१

५–बंगाल

(सभासदों की संख्या–६०)

कलकत्ता

श्रीयुत अयोध्याप्रसाद, बी. ए., १००, हरिसन रोड,
,, पांडे आनंदलाल 'अटल', ४५।१, आद्यश्राद्धघाट रोड,
,, इन्द्रचंद्र केजडीवाल, फर्म कनीराम हजारीमल,
,, कालीप्रसाद खेतान, बार-एट-ला, ३, मांडले विला गार्डेंस, पोस्ट बालीगंज,
,, सेठ केदारनाथ शास्त्री, १ गौरदास बसाक स्ट्रीट, बड़ा बाजार,
,, गांगेय नरोत्तम शास्त्री, गांगेय भवन, १२, आशुतोष दे लेन,
,, गिरधरदास अग्रवाल, ३१, पाइकपारा रोड, पोस्ट बेलगचिया,
,, गिरधारीलाल नागर, कोठी–बलदेवराम बिहारीलाल,
५, कालीकृष्ट टैगोर स्ट्रीट,
,, गुलजारीलाल कानोडिया, ठि०/सेठ भगीरथ कानोडिया, ४३, जकरिया स्ट्रीट,
,, गोपीकृष्ण कानोडिया, २९, विवेकानंद रोड,
,, सेठ घनश्यामदास बिड़ला, ८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
,, सेठ छोटेलाल कानोटिया, ५७, बड़तल्ला स्ट्रीट,
,, जगन्नाथ प्रसाद गुप्त, १२६, चित्तरंजन एवेन्यु,
,, तारकनाथ अग्रवाल, ८०, साउथरोड, इंटाली,
,, दामोदरदास खन्ना, १७, वाराणसी घोष स्ट्रीट,
,, नंदलाल कानोडिया, ४२, जकरिया स्ट्रीट,
श्रीमती नर्मदा देवी, ठि०/ बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका,
६, ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट
श्रीयुत नारायणदास बर्मन, ५५, क्लाइव स्ट्रीट,
,, पूरनचंद बर्मन, कोठी–डाक्टर एस. के बर्मन, राशबिहारी एवेन्यु,
,, सेठ सर बदरीदास गोयनका, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
,, सेठ ब्रजमोहन बिड़ला, ८, रायल एक्सचेंज प्लेस,

श्रीयुत व्रजरत्नदास डागा, ठि०/ राय बहादुर बंशीलाल अबीरचंद,
४०१, अपर चितपुर रोड

,, बालकृष्ण लाल पोद्दार, ४१।१, ताराचंद दत्त स्ट्रीट,

,, भुवनेश्वर मिश्र 'भुवन', एम ए, विशारद, १, फ्री स्कूल स्ट्रीट,

,, भगतूराम जयपुरिया, २३, विवेकानंद रोड,

,, मधुसूदनदास बर्मन, ५५, क्लाइव स्ट्रीट,

,, महावीर प्रसाद अग्रवाल, मंत्री, बडाबाजार लायब्रेरी,
१०।३।१, मैयदसाली लेन,

,, म्हालीराम सोनथलिया, कोठी-राधाकृष्ण सोनथलिया कं०,
६५, पथरियाघट्टा स्ट्रीट,

,, मूलचंद अग्रवाल, विश्वमित्र कार्यालय, १४।१ ए. शंभु चटर्जी स्ट्रीट,
पोस्ट बोबाजार स्ट्रीट,

,, रघुनंदन मिश्र, २५९. अपर चितपुर रोड,

,, राधाकृष्ण नेवटिया, मंत्री, बडा बाजार कुमार सभा, १५६, हरिसन रोड,

,, रामकुमार जालान, कोठी रामचद्र हनुमानबख्श, ५१/३ स्ट्रेंड रोड,

,, रामकुमार भुवालका, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, फर्स्ट फ्लोर,

,, रायबहादुर रामदेव चोखानी, कोठी—दौलतराम रामदेव, वाराणसी घोष
स्ट्रीट,

,, सेठ रामनाथ कानोडिया, कोठी—लक्ष्मीनारायण कानोडिया क०, क्लाइव
स्ट्रीट,

,, रामसुंदर कानोडिया २९, बंसतल्ला स्ट्रीट,

,, रामेश्वर नोपाणी, श्री० दौलतरामजी रावतमलजी, १७८, हरिसन रोड,

,, रूपनारायण उपाध्याय, कमरा नं० २८, १/सी, मछुवा बाजार स्ट्रीट,

,, सेठ वंशीधर जालान, कोठी—सूरजमल नागरमल, ६१, हरिसन रोड,

,, विनयकृष्ण रोहतगी, बी० एस-सी०, कोठी—कल्लूबाबू लालचंद,
४५, आर्मेनियन स्ट्रीट,

,, विपिन बिहारी त्रिवेदी, एम ए. (फाइनल), ६८, राजा कटरा,

,, विमलाचरण दे, एडवोकेट, ७८ मंसाताला लेन, खिदिरपुर,

,, विश्वनाथ सिंह, १२, हरी सरकार लेन, बडा बाजार,

,, विष्णुदास वासिल, ४३, पद्मोपूकर रोड, पोस्ट एलगिन रोड,

,, सत्यपाल धवले, बिडला बिल्डिंग, ८, मंदिर स्ट्रीट,

,, सीताराम सेकसरिया, शुद्ध खादी भंडार, १३२/१, हरिसन रोड,

श्रीयुत सुदर्शन, बी. ए., २, चक्रबेरी रोड साउथ, भवानीपुर,
सुश्री कुमारी सुधाकना बोस, १९, कालेज रो,
श्रीयुत हर्षचंद्र छाजेड ओसवाल, ४०१/७ ए, अपर चितपुर रोड,

योग-४९

कुमिल्ला

श्रीयुत राशमोहन चक्रवर्ती, सुपरिंटेंडेंट, राममाला छात्रावास,

योग-१

चौवीस परगना

श्रीयुत रघुनंदन लाल गुप्त, पोस्ट टीटागढ, जिला चौवीस परगना

योग-१

दार्जिलिंग

श्रीयुत सदानंद प्रसाद, जलपाई गुडी,
,, हरनंदनसिंह, ठि०/ हिमाचल हिंदीभवन,

योग-२

नदिया

श्रीयुत नलिनी मोहन सान्याल, एम. ए., शांतिपुर,

योग-१

वर्द्धमान

श्रीयुत कालीदास कपूरिया, एम. ए , बी. एल., मोरमहल,
,, महाराजाधिराज सर विजयचंद महताव बहादुर, जी. सी. एस. आई.,

योग-२

मुर्शिदाबाद

श्रीयुत रामस्वरूप पंडित, पोस्ट अजीमगंज,

योग-१

रामपुर हाट

श्रीयुत एच. सी. गुप्त, आई. सी एस., सबडिविजनल अफसर,

योग-१

हवड़ा

श्रीयुत श्रीनारायण चोखानी, ८, न्यु घुसुडी रोड, श्रीहनुमान पुस्तकालय, सलकिया,

,, मिहरचंद धीमानजी, ११५, बनारस रोड, सलकिया,

योग–२

६–बंबई

(सभासदों की संख्या–४७)

अहमदाबाद

श्रीयुत ए. बी. ध्रुव, एम ए, एल–एल बी, (अवसरप्राप्त) आई. ई. एस,

,, मुनि जिनविजयजी, भारती निवास सोसायटी, ब्लाक न. १८. एलिस ब्रिज,

,, जेठालाल जोशी, खाडिया अमृतलाल की पोल,

,, मणिभाई गुलाबभाई बहिवचा, स्वामीनारायण मंदिर, टीबापोल,

,, रामनारायण विश्वनाथ पाठक, सेठ लालभाई दलपतभाई कालेज,

योग–५

उत्तर गुजरात

श्रीयुत ठाकुर खेतसिंह नारायण गढ़वी, मुकाम मुढेरा, पोस्ट बड़ावली, तालुका–चाणस्मा, वडोदा स्टेट,

,, जयशंकर उमाशंकर पाठक, मुकाम व डाकघर अगलोड, जिला बीजापुर

योग–२

काठियावाड़

श्रीयुत चतुर भाई, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल, सोनगढ,

योग–१

गुजरात

श्रीयुत मुनि पुण्यविजयजी, सागर का उपाश्रम, मनिआती पाड़ा, पाटण,

श्रीयुत पन्यास सपत विजयजी, ठि० / सागर का उपाश्रम, पाटण,

योग–२

पुलगाँव

श्रीयुत नागरमल पोद्दार, पुलगाँव काटन मिल्स्,

योग—१

पूना

श्रीयुत दत्तो वामन पोतदार, १०८, शनिवार पेठ,

योग—१

बंबई

श्रीयुत प्रोफेसर एस. एच. होरीवाला, २७, कान्वेन्ट एवेन्यु, गोधनदास रोड, शांताक्रुज, सबर्बन डिस्ट्रिक्टस्,
,, कुदनलाल जैन, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव,
,, कृष्ण लाल वर्मा, ग्रंथ भांडार, माटुंगा,
,, केशवदेव पोद्दार, ९, फणसवाडी, पोद्दार हाउस,
,, बाबा गणेश सावरकर, सावरकर सदन, चेलुस्कर रोड, दादर, १४,
,, गोस्वामी महाराज गोकुलनाथ, बडा मंदिर, ३ रा भोइ बाडा, नं० २,
,, जादवजी त्रिकमजी, आचार्य, वैद्य, कालबादेवी रोड,
,, ठाकरसीदास जैन, मंत्री, श्री ए. पी. दि जैन सरस्वती भवन, सुखानंद धर्मशाला, ४,
,, दशरथलाल श्रीवास्तव, हाफकिन इस्टिट्यूट अव सायंस,
,, नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव,
,, नारायणलाल वंशीलाल, मलाबार हिल,
,, प्रेमचंद केडिया, ६१४, द काटन एक्सचेंज, २,
,, बेगराज गुप्त, ठि०/ बेगराज रामस्वरूप, कालबादेवी रोड,
,, डाक्टर मोतीचंद्र चौधरी, एम. ए., पी-एच. डी., क्युरेटर, आर्ट सेक्शन, प्रिंस अव वेल्स् म्युजियम्,
,, मोहनलाल दुलीचंद देसाई, बी. ए., एल-एल. बी., वकील हाईकोर्ट, तवावाला बिल्डिंग, लोहार चाल,
,, रामप्रताप शुक्ल, मैनेजर, मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय, १७५, कालबादेवी रोड,

श्रीमती लीलावती बाई, ठि०/ र० रू० श्राविकाश्रम, जुबिली बाग, तारदेव,

श्रीयुत शारंगधर शामजी पहिलवान, श्री० गंगाराम छबीलदास,
१३१/१३३, मोती बाजार, नं० २,
श्रीमती शीला माथुर, ठि०/ प्रोफेसर माताप्रसाद, डी. एस-सी.,
रायल इंस्टिट्यूट अव सायंस,
श्रीयुत शूरजी वल्लभदास वर्मा, कच्छ कैसल, सैंढर्स्ट रोड, ४,
,, हरिजी गोविंद, ४१, हम्माम स्ट्रीट, फोर्ट
,, हीरालाल अमृतलाल शाह, बी. ए., नं० ६९, मेरीन ड्राइव, चौथा फ्लोर,
ब्लाक नं० १०,

योग–२२

वड़ोदरा

श्रीयुत नवाब साराभाई मणिलाल, नवी पत्थरचाल,

योग–१

बड़ोदा राज्य

श्रीयुत अमृतलाल मोहनलाल भोजक, मुकाम पाटण, उत्तर गुजरात,
,, आर. बी. महंत, श्री० महंत पुस्तकालय, रामगलोला वाला,
नं० ६०, अलकापुरी,
,, रमणलाल केशवलाल, पेटलाटवाला, पोस्ट पेटलाद, गुजरात,
,, शांतिप्रिय आत्माराम, आत्माराम रोड,
,, हरगोविंददास लालजीभाई, वकील, पोस्ट सावली,
,, डाक्टर हीरानंद शास्त्री, एम. ए., डायरेक्टर अव आर्कियालजी,

योग–६

भावनगर (काठियावाड़)

श्रीयुत वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी, मंत्री, श्रीजैन आत्मानंद सभा,
,, विजय इंद्र सूरि, ठि०/ यशोविजय ग्रंथमाला,

योग–२

लोणावला (पूना)

श्रीयुत सी. के. देसाई, (अवसर प्राप्त) आई. सी. एस , कैवल्यधाम,

योग–१

सूरत

श्रीयुत परमेष्ठीदास जैन, न्यायतीर्थ, मंत्री, हिंदी प्रचारक मंडल, गांधी चौक,
,, शंकरदेव विद्यालंकार, गुरुकुल विद्यामंदिर, सूपा, वाया नवसारी,

योग–२

हुबली

श्रीयुत वी. जी. सराफ, सरस्वती विद्यारण्य फ्री लायब्रेरी,

योग–१

७–बिहार

(सभासदों की संख्या—४३)

गया

श्रीयुत गोपालकृष्ण महाजन, मुरारपुर,
,, राय वागीश्वरी प्रसाद, किरानी घाट,
,, सूर्यप्रसाद महाजन, मन्नूलाल लायब्रेरी,

योग–३

चंपारन

श्रीयुत चंद्रशेखरधर मिश्र, ग्राम–रतनमाला, डाकघर–बगहा,
,, डाक्टर मुंशी दयाचंद जालान, साहित्यभूषण, एम एच. बी, मोतिहारी,

योग–२

छपरा (सारन)

श्रीयुत ठाकुर त्रिभुवन प्रसाद शिवगोविंद, बार–एट–ला, भगवान बाजार,
,, ध्रुवदेव सहाय, ठि०/ श्री• कपिलदेव सहाय जमींदार,
ग्राम–हरदिया, पोस्ट—बरहरिया,
,, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, त्रिपिटकाचार्य,

योग–३

देवघर

श्रीयुत लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु', एम. ए., गोवर्द्धन साहित्य महाविद्यालय,

योग–१

पटना

श्रीयुत केदारनाथ चतुर्वेदी, ११५ ए, एकूजिबिशन रोड,
,, सर गणेशदत्तसिंह, केटी., भूतपूर्व शिक्षा मंत्री, बिहार सरकार,
,, गोपीकृष्ण कारुडिया, ठि०/ मेसर्स महालीराम निरंजनदास,
,, वंशीधर याज्ञिक, बेतिया हाउस रोड, पोस्ट गुलजारबाग,
,, यदुनंदन प्रसाद पाडे, एम ए, बी. एड्., शिक्षक–पटना ट्रेनिंग स्कूल, पोस्ट महेंदु,
,, देशरत्न डाक्टर राजेंद्र प्रसाद, सदाकत आश्रम,
,, रामदहिन मिश्र, ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर,
,, रायसाहब रामशरण उपाध्याय, प्रधानाध्यापक, पटना ट्रेनिंग कालेज, पोस्ट महेंदु,
,, डाक्टर सच्चिदानंद सिन्हा, बार–एट–ला,
,, हरिप्रसाद वर्मा, मोकामाघाट,

योग–१०

पूर्णिया

श्रीयुत गणेश लाल वर्मा, मिडिल इंगलिश स्कूल, बनमनखी, पोस्ट–बनमनखी,

योग–१

बिहार शरीफ

श्रीयुत प्रोफेसर वेणीमाधव अग्रवाल, सेक्रेटरी कामन रूम, नालंदा कालेज,

योग–१

भागलपुर

श्रीयुत एच. एल. दास गुप्त, एम. एस–सी., टी. एन. जे. कालेज,
,, सत्येंद्र नारायण, बी ए, नया बाजार,

योग–२

मानभूम

श्रीयुत रामजस अग्रवाल, झरिया,

योग–१

मुंगेर

श्रीयुत चौधरी राजराजेश्वरी प्रसाद सिंह, नवा कोठी,

योग–१

मुजफ्फरपुर

श्रीयुत महेंद्र प्रसाद सिंह, बी. ए., डिप्टी कलक्टर, हाजीपुर,

योग–१

मोतिहारी

श्रीयुत रामकीर्तिलाल, एल. ए–जी., असिस्टेंट डायरेक्टर ऐग्रिकल्चर,

योग–१

राँची

श्रीयुत गोकुलचंद राउत, देव दहार गिद्दा, रेंगारीह,
,, रेवरेंड फादर पी. शांति नवरंगी, विशारद, संत जान्स स्कूल,
,, रामकुमार बजाज, मंत्री, संतूलाल पुस्तकालय,
,, रासविहारी शर्मा, एम. ए., साहित्यरत्न, ट्रेनिंग कालेज,
,, वेणीमाधव मिश्र, राँची जिला स्कूल,

योग–५

रानीगंज (ई. आई. आर.)

श्रीयुत जगन्नाथ प्रसाद झुन्झनूवाले, आनरेरी मैजिस्ट्रेट,
,, विभूतिप्रसाद शर्मा, साहित्य विशारद, मारवाड़ी सनातन विद्यालय,
(अथवा ग्राम–तेंदुई, पोस्ट–बड़ागाँव, जिला बनारस)

योग–२

शाहाबाद (आरा)

श्रीयुत निर्मलकुमार जैन, मंत्री, जैन सिद्धांत भवन,
,, छेदीलाल गुप्त, बी. ए., बी. टी., हेडमास्टर-इंगलिश स्कूल,
डालमियानगर

श्रीमती रमादेवी जैन, डालमियानगर,
श्रीयुत सेठ रामकृष्ण डालमिया, डालमियानगर,

योग–४

सिंहभूम

श्रीयुत धनीराम बख्शी, हितैषी कार्यालय, पोस्ट—चाईबासा,

योग—१

हजारीबाग

श्रीयुत रायबहादुर गुरुसेवक उपाध्याय, रामगढ राज,
,, डाक्टर जगन्नाथ प्रसाद, एम. डी. एच.,
,, नवलकिशोर प्रसाद, एम. ए., बी एल., वकील,
,, बद्रीदत्त शास्त्री, साहित्यरत्न, सेंट स्टेनिसलस कालेज, सीतागढ,

योग—४

८—मद्रास

(सभासदों की संख्या—३)

ट्रावनकोर

श्रीयुत ई. वी. रामन नम्बूथिरी, ब्रह्मविलास मठ, पेरूरकाडा, ट्रिवेंड्रम

योग—१

मद्रास

श्रीयुत पी. वी. आचार्य, आल इंडिया रेडियो,

योग—१

विजयानगरम्

श्रीमती डवागर महारानी साहिबा,

योग—१

९—मध्यप्रदेश—बरार

(सभासदों की संख्या—२३)

अमरावती

श्रीयुत जगन्नाथ प्रसाद, मंत्री, भारत हिंदी पुस्तकालय,
,, हीरालाल जैन, एम. ए., एल—एल. बी., प्रोफेसर, किंग एडवर्ड कालेज,

योग—२

विजयराघवगढ़ (वाया केमोर)

श्रीयुत ठाकुर ब्रजमोहन सिंह, बी. ए., बैरिस्टर–एट–ला,

योग–१

खंडवा

श्रीयुत माखन लाल चतुर्वेदी, संपादक–'कर्मवीर', कर्मवीर प्रेस,

योग–१

छिंदवाड़ा

श्रीमती जुगुनू बाई, स्वामिनी, सेंट्रल लॉ प्रेस,
श्रीयुत बाबूलाल श्रीवास्तव 'प्रेमी', प्रासिक्युटिंग सबइंसपेक्टर,
,, रामाधार शुक्ल, 'आशुकवि', डी. सी. आफिस,

योग–३

जबलपुर

श्रीयुत व्याकरणाचार्य कामताप्रसाद गुरु, गढ़ा फाटक,
,, रमेशदत्त पाठक, एम. ए., एल–एल. बी., जार्ज टाउन,
,, ब्यौहार राजेंद्रसिंह, एम. एल. ए., साठिया कुआँ,
,, रामनाथसिंह, ३३, गोरखपुर, सिटी,
,, रायबहादुर लज्जाशंकर झा, शांति कुटीर, गोला बाजार,

योग–५

नरसिंहपुर

श्रीयुत द्वारका प्रसाद पाठक, एम. ए., एल–एल. बी., वकील,
,, नीतिराज सिंह, बी. एस–सी., एल–एल. बी.,

योग–२

नागपुर

श्रीयुत करुणाशंकर न० दवे, मेयो, रोड,
,, गंगाशंकर पंड्या, बी. ए. आनर्स (लंदन), ठि०/ श्री आर. के. पंड्या, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, नागपुर विश्वविद्यालय,

योग–२

रायपुर

श्रीयुत केदारनाथ वर्मा, मिडिल शाला, बसना, पोस्ट–बसना,

योग–१

वर्धा

श्रीयुत काका कालेलकर,
,, सेठ जमनालाल बजाज, ठि०/ रायबहादुर बच्छराज जमनालाल,
,, साहित्यवाचस्पति, डाक्टर, महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी, सेवाग्राम,
,, यू० मार्तंड राव, शिक्षक, राबर्टसन हाईस्कूल, हींगणघाट,

योग–४

बिलासपुर

श्रीयुत व्रजभूषण मिश्र, एम. ए., म्युनिसिपल हाई स्कूल,
,, सखाराम साव, शिक्षणालय, बह्मनीडी, पोस्ट–बह्मनीडी, वाया बाराद्वार,

योग–२

१०–मध्य भारत

(सभासदों की संख्या—५०)

रीवाँ

श्रीयुत ठाकुर साहब गोपाल शरण सिंह, नई गढी, पोस्ट–मऊगंज,
,, महावीर प्रसाद अग्रवाल, एम. ए , एल-एल. बी, दरबार इंटर कालेज,
,, शारदाप्रसाद, सतना,

योग–३

नागोद राज्य (वाया सतना जी. आई. पी. आर.)

श्रीयुत महाराजकुमार लाल भार्गवेंद्र सिंह जू देव, दीवान,

योग–१

इंदौर

श्रीयुत कमलाशंकर बालकृष्ण मिश्र, एम. ए , २८ अहल्यापुरा,
,, ज्वाला प्रसाद सिंहल, एम. ए., एल-एल. बी., प्रोफेसर, होल्कर कालेज, ८, कोडियागंज'

श्रीयुत माठूलाल, आर. एस., ३२, तुकोगंज,

,, रावबहादुर सरदार माधवराव विनायकराव किबे, सी आई. ई , छावनी,

,, रामभरोसे तिवारी, १२, तुकोगंज साउथ,

,, शंकरराव जोशी, तहसीलदार, पोस्ट सावेर, राज्य

,, शिवसेवक तिवारी, नं. ४, इतवरिया बाजार, सिटी,

,, श्रीनिवास चतुर्वेदी, एम. ए., संस्कृत और हिंदी के प्रोफेसर होल्कर कालेज, मल्हारगंज,

योग—८

ग्वालियर

श्रीयुत श्रीमत सरदार आनंदरावजी भाऊ साहब फाल्के, कृष्ण मंदिर,

,, एम बी. गर्दे, डायरेक्टर अव आर्कियालाजी,

,, गुरुप्रसाद टंडन, एम. ए , एल-एल. बी., प्रोफेसर, विक्टोरिया कालेज,

,, जुगुल किशोर वैश्य, (अवसर प्राप्त) डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर, पी. डब्लू. डी. जयाजी चौक, लश्कर,

,, त्रिवेणी प्रसाद वाजपेयी, एम ए , एल. टी , साहित्यरत्न, हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के व्याख्याता, विक्टोरिया कालेज,

,, रईसुद्दौलाबहादुर पंचमसिंह साहब, पहाड़गढ़ कोठी, लक्ष्मीगंज,

,, राजराजेंद्र, श्रीमंतसरदार, कर्नल, मालोजी नरसिंह राव साहब शितोले, नरसिंह निवास,

,, राधाकृष्ण जायसवाल, विशारद, जेंद्रगंज, लश्कर,

,, रामचंद्र श्रीवास्तव, 'चंद्र' एम. ए., एल-एल. बी., साहित्यरत्न, जयाजी प्रताप, लश्कर,

,, राजा खलकसिंहजूदेव, खनियाँधाना स्टेट, रेजिडेंसी,

,, कुँवर पृथ्वीसिंह, मैजिस्ट्रेट, खनियाँ धाना, रेजिडेंसी,

योग—११

उज्जैन

श्रीयुत व्याकरणाचार्य गोपीकृष्ण शास्त्री, सराफा बाजार, श्रीमदनमोहन लाल के मंदिर के पास,

,, डाक्टर दुर्गाशंकर नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय,

,, मंगलदेव शर्मा, गणेशभवन, मगरमुहाँ,

,, मदनमोहन जैन, जीवनकुटी,

श्रीयुत रामचंद्र व्यास, सिंहपुरी,
,, रमाशंकर शुक्ल, एम. ए., प्रोफेसर, माधव कालेज, दौलतगंज,
,, रायबहादुर लालचंद सेठी, वाणिज्यभूषण, विनोद भवन,
,, श्रीधर शर्मा, शास्त्री, साहित्यरत्न, संस्कृताध्यापक, कार्तिकचौक,
,, सूर्यनारायण व्यास, भारती भवन, बड़े गणेश,
,, साहित्याचार्य डाक्टर प्रोफेसर हरिरामचंद्र दिवेकर, एम ए, डी. लिट्.,

योग—१०

टीकमगढ़ (ओड़छा राज्य)

श्रीयुत बनारसी दास चतुर्वेदी,

योग—१

धार

श्रीयुत महाराज आनंदराव साहब पँवार,
,, काशी प्रसाद दुबे, धीरेश्वर दरवाजा,
,, कृष्णराव पूर्णचंद्र मांडलीक, चीफ इंसपेक्टर ग्रामोद्धार,
,, गोपालचंद्र सुगंधी, एम. ए., डिप्टी इंसपेक्टर अव स्कूलस्, लाड़लेन.
,, चिंतामणि बलवंत लेले, इतिहास कचहरी,
,, पुरुषोत्तम डबराल, एम ए., रासमंडल,
,, भीलचंद नंदराम वर्मा, खल घाट, स्टेट,
,, मेलाराम वर्मा, एम. ए., प्रिंसिपल, आनंद कालेज,
,, शरच्चंद्र भटोरे, अध्यापक, बनियाँ वाडी,

योग—९

भूपाल

श्रीयुत ईशनारायण जोशी, चौक,

योग—१

मनावर, (वाया महू बी. बी. एंड सी. आई. आर.)

श्रीयुत भास्कर रामचंद्र भालेराव, तहसीलदार,

योग—१

मुन्थान (मालवा)

श्रीयुत महाराज भरतसिंह साहब,

योग—१

रतलाम

श्रीयुत कवि गुलाबशंकर कल्याणजी बोरा, ठि०/ पंड्या चुन्नीलाल केशवलाल
सुप्री, श्रीसज्जन ब्राह्मण बोर्डिंग,
,, रायसाहब चुन्नीलाल एम० श्राफ, दीवान,
,, नाथूलाल शर्मा, बी ए., असिस्टैंट सेक्रेटरी, स्टेट काउंसिल,

योग–३

सीतामऊ

श्रीयुत महाराजकुमार डाक्टर रघुवीर सिंह, एम. ए., एल-एल. बी., डी. लिट्.,
रघुवीर निवास,

योग–१

११–मैसूर

(सभासदों की संख्या–३)

मैसूर

श्रीयुत जी. सच्चिदानंद, १०५५, नंजराज, अग्रहर,
,, ना० नागप्पा, ९४४, चामुंडी, बढ़ावण,
,, हिरण्मय ठि०/ हिंदी प्रचार सभा,

योग–३

१२–राजपूताना

(सभासदों की संख्या–८४)

अजमेर

श्रीयुत कनकमल मधुकर, सहायक संपादक, राजस्थान
,, कल्याण सिंह जी, भिनाय स्टेट, मेरवाड़ा,
,, किशनलाल दुबे, सहायक अध्यापक, हस्बैंड मेमोरियल हाई स्कूल,
,, रायसाहब गोपालसिंह राठोर, खरवा,
,, महामहोपाध्याय, रायबहादुर डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
साहित्यवाचस्पति, राजपुताना म्युजियम,
,, ठाकुर नारायण सिंह, बी. ए., संपादक 'क्षात्रधर्म',

,, कुँवर नाहरसिंह, बी. ए., एल-एल बी., उदयपुर हाउस, मेयो कालेज,
,, पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य, धर्मशिक्षक तथा अंग्रेजी प्रोफेसर, मेयो कालेज,
,, रायसाहब मदनमोहन वर्मा, एम. ए., सेक्रेटरी, बोर्ड अव हाईस्कूल एँड इंटरमीडियट एजुकेशन, अजमेर मेरवाड़ा,
,, ठाकुर मदनसिंह, एम. ए., एल-एल. बी, प्रोफेसर मेयो कालेज,
,, रामचंद्र शर्मा, वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय,
,, रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम. ए., नहर मुहल्ला.
,, दीवानबहादुर हरविलास शारदा, हरनिवास, सिविल लाइन्स,

योग—१३

माउंट आबू

श्रीयुत रोशनलाल झा, राजपूताना एजेंसी आफिस,

योग—१

उदयपुर (मेवाड़)

श्रीयुत अंबालाल देरासरी, नागरबाडी,
,, उमाशंकर द्विवेदी, 'विरही', विरही सदन,
,, करनीदान दधवाड़िया, खेमपुर की हवेली,
,, के. कोंचम्माल् बाई सरस्वती, विशारद, राजस्थान महिला विद्यालय,
,, खवास जोरावरनाथ, भट्याणी चौहट्टा,
,, कुंवर तेजसिंह मेहता, मिनिस्टर,
,, पुरोहित देवनाथ, मास्टर अव सेरेमनीज, पुरोहितजी की हवेली,
,, दीवानबहादुर धर्मनारायण काक, सी. आई. ई, प्रधानमंत्री, उदयपुर राज्य,
,, कुँवर फतहलाल मेहता, राय पन्नालाल भवन,
,, बख्तावर लाल शर्मा, मिशन अस्पताल,
,, बलवंतसिंह महता, साहित्य कुटीर, सोना सहरी,
श्रीमती मुमताज देवी, संगीतरत्ना, अमल का कांटा,
श्रीयुत रणबहादुर सिंह, एम ए, एल टी, भूपाल नोबुल्स् हाई स्कूल,
,, रायसाहब राजसिंह बेदला,
,, रामशंकर भट्ट, अध्यक्ष षट्दर्शन, भट्ट जी का रावला,

योग—१५

काँकरोली (मेवाड़)

श्रीयुत १०८ श्री गोस्वामी व्रजभूषण शर्मा, काँकरोली महाराज,

योग—१

कोटा

श्रीयुत गोपीनाथ अग्रवाल, बी. ए., शिक्षक, श्री० महाराजकुमार,
,, कविराजा दुर्गादान, कोटड़ी,
,, डाक्टर मथुरालाल शर्मा, एम. ए, डी. लिट्., पलायथा भवन,
,, सेठ मोतीलाल जैन, पोस्ट मंगरोल, राज्य,

योग—४

चिड़ावा

श्रीयुत रामचंद्र शर्मा, 'प्रफुल्ल', श्रीकृष्ण वाचनालय,

योग—१

जयपुर

श्रीयुत गणेशनारायण सोमाणी, वकील,
,, महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, दर्शनाचार्य, पान का दरवाजा, सिटी,
,, पुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न, ताजीमी सरदार, राज्य,
,, मनोहर शर्मा, पोस्ट विसाऊ, स्टेट,
,, मुकुंद शास्त्री पर्वणीकर, हवामहल के सामने,
,, मोतीलाल शर्मा, बालचंद प्रेस, सिटी,
,, रूटमल शर्मा, बी. ए., बी. टी., छज्जूलाल की टोंटी, चोकडी तोपखाना, देश,
,, स्वामी लक्ष्मीराम, वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, संगानेर दरवाजा,
,, राजश्री ठाकुरसाहब शिवनाथसिंह, मलसीसर भवन,
,, शुकदेव पांडे, प्रिंसिपल, बिड़ला इंटर कालेज, पिलानी, राज्य,
,, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी. ए., विद्याभूषण, तहवीलदार का रास्ता,
,, रायबहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालंद, जयपुर रोड,

योग—१२

,, कुँवर नाहरसिंह, बी. ए., एल-एल बी., उदयपुर हाउस, मेयो कालेज,
,, पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य, धर्मशिक्षक तथा अंग्रेजी प्रोफेसर, मेयो कालेज,
,, रायसाहब मदनमोहन वर्मा, एम. ए., सेक्रेटरी, बोर्ड अव हाईस्कूल एँड इंटरमीडियट एजुकेशन, अजमेर मेरवाडा,
,, ठाकुर मदनसिंह, एम. ए., एल-एल. बी., प्रोफेसर मेयो कालेज,
,, रामचंद्र शर्मा, वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय,
,, रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम. ए., नहर मुहल्ला,
,, दीवानबहादुर हरविलास शारदा, हरनिवास, सिविल लाइंस,

योग—१३

माउंट आबू

श्रीयुत रोशनलाला झा, राजपूताना एजेंसी आफिस,

योग—१

उदयपुर (मेवाड़)

श्रीयुत अम्बालाल देरासरी, नागरबाडी,
,, उमाशंकर द्विवेदी, 'बिरही', बिरही सदन,
,, करनीदान दधवाड़िया, खेमपुर की हवेली,
,, के. कोंचम्माळू बाई सरस्वती, विशारद, राजस्थान महिला विद्यालय,
,, खवास जोरावरनाथ, भट्याणी चौहट्टा,
,, कुंवर तेजसिंह मेहता, मिनिस्टर,
,, पुरोहित देवनाथ, मास्टर अव सेरेमनीज, पुरोहितजी की हवेली,
,, दीवानबहादुर धर्मनारायण काक, सी. आई. ई., प्रधानमंत्री, उदयपुर राज्य,
,, कुँवर फतहलाल मेहता, राय पन्नालाल भवन,
,, बख्तावर लाल शर्मा, मिशन अस्पताल,
,, बलवंतसिंह महता, साहित्य कुटीर, सोना सहरी,
श्रीमती मुमताज देवी, संगीतरत्ना, अमल का काँटा,
श्रीयुत रणबहादुर सिंह, एम ए., एल. टी., भूपाल नोबुल्स् हाई स्कूल,
,, रायसाहब राजसिंह वेदला,
रामशंकर भट्ट, अध्यक्ष षट्दर्शन, भट्ट जी का गवला

कॉंकरोली (मेवाड़)

श्रीयुत १०८ श्री गोस्वामी व्रजभूषण शर्मा, कॉंकरोली महाराज,

योग–१

कोटा

श्रीयुत गोपीनाथ अग्रवाल, बी. ए., शिक्षक, श्री० महाराजकुमार,
,, कविराजा दुर्गादान, कोटडी,
,, डाक्टर मथुरालाल शर्मा, एम. ए., डी. लिट्., पलायथा भवन,
,, सेठ मोतीलाल जैन, पोस्ट मंगरोल, राज्य,

योग–४

चिड़ावा

श्रीयुत रामचंद्र शर्मा, 'प्रफुल्ल', श्रीकृष्ण वाचनालय,

योग–१

जयपुर

श्रीयुत गणेशनारायण सोमाणी, वकील,
,, महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, दर्शनाचार्य, पान का दरवाजा, सिटी,
,, पुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न, ताजीमी सरदार, राज्य,
,, मनोहर शर्मा, पोस्ट विसाऊ, स्टेट,
,, मुकुन्द शास्त्री पर्वणीकर, हवामहल के सामने,
,, मोतीलाल शर्मा, बालचंद प्रेस, सिटी,
,, रूदमल शर्मा, बी. ए., बी. टी., छज्जूलाल की टॉटी, चौकडी तोपखाना, देश,
,, स्वामी लक्ष्मीराम, वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, संगानेर दरवाजा,
,, राजश्री ठाकुरसाहब शिवनाथसिंह, मलसीसर भवन,
,, शुकदेव पांडे, प्रिंसिपल, बिड़ला इंटर कालेज, पिलानी, राज्य,
,, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी. ए., विद्याभूषण, तहवीलदार का रास्ता,
,, रायबहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालंद, जयपुर रोड,

योग–१२

जोधपुर

श्रीयुत रामकर्ण जी, मोती चौक,
,, साहित्याचार्य विश्वेश्वरनाथ रेऊ, अफसर इनचार्ज, आर्कियालॉजिकल डिपार्टमेंट, राज्य,
,, शुभकरण बदरीदान कविया, रायपुर की हवेली,
,, सोमनाथ गुप्त, एम. ए., काली गुमटी, सरदारपुरा,

योग–४

झालरापाटन

श्रीयुत नवरत्न गिरधर शर्मा, झालावाड राजगुरु,
,, रायबहादुर सेठ माणिकचंद सेठी, विनोद भवन, सिटी,

योग–२

डूँगरपुर स्टेट

श्रीयुत राठोर सूरजमल बागडिया, पुरातत्त्व विभाग,

योग–१

नवलगढ़

श्रीयुत हरनाथ सिंह, डुंडलोद, पोस्ट

योग–१

नाथद्वारा (मेवाड़)

श्रीयुत अखिलेशचंद्र नदवाना,
,, भट्ट पुरुषोत्तम शर्मा तैलंग, विद्या विभाग,

योग–२

प्रतापगढ़

श्रीयुत महाराजा महारावत सर रामसिंह साहब, के. सी. एस. आई.,

योग–१

फलोदी

श्रीयुत अनूपचंद झाबख, झावखकी गवाड़,

योग–१

बनेड़ा (मेवाड़)

श्रीयुत रविशंकर देरासरी, बार-एट लॉ,

योग–१

ब्यावर

श्रीयुत मुनि ज्ञानसुंदर जी,

,, दीपचंद्र अग्रवाल, ठिकाना, एलफ पन्नालाल, दि जैन सरस्वती भवन, नागियाँ,

योग–२

बीकानेर

श्रीयुत अगरचंद भैरोदान सेठिया, मुहल्ला मरोठियों का,

,, एम. एन. तोलानी, प्रिंसिपल, डूगर कालेज,

,, कस्तूरचद व्यास, माधवनिवास, चूनगर चौक,

,, गजराज ओझा, एम ए., एल एल-बी., तहसीलदार, रतनगढ, स्टेट,

,, गोपीनाथ तिवारी, बी. ए., मुख्य हिंदी अध्यापक, एम एम हाई स्कूल,

,, स्वामी नरोत्तमदास, एम. ए , शांति आश्रम. पावर हाउस के पास,

,, ठाकुर युगुलसिंह खीची, एम. ए , एल एल. बी., बार-एट-लॉ, डी. पी एड् (लंदन), रोशनीघर के पास,

,, रामलौटन प्रसाद वर्मा, विशारद, श्री शार्दूल हाई स्कूल,

,, ठाकुर रामसिंह, एम. ए , डायरेक्टर जनरल अव एजुकेशन,

,, शिवचंदराय खेमका, हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ,

योग–१०

बूँदी

श्रीयुत राणावत महेंद्र सिंह, चीफ रेवेन्यू अफसर, स्टेट,

,, राव शत्रुसाल जी, पुरोहितों की गली,

योग–२

भरतपुर

श्रीयुत प्रभुदयाल गुप्त, अध्यापक, द्वि/० श्री हिंदी साहित्य समिति, सिटी,

,, प्रेमनाथ चतुर्वेदी, बी. ए , ब्राह्मणों का मुहल्ला, सिटी,

योग–२

भीलवाड़ा (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुर चन्द्रनाथ माथुर, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट,

योग—१

मारवाड़

श्रीयुत पुरुषोत्तम दास पुरोहित, बी ए, फर्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट और हाकिम, शेरगढ़,

,, सीताराम लालस अब नेरवा, डी. एल. पी स्कूल, बिलाड़ा,

,, हस्तीमल, विशारद, हुकूमत श्री बिलाड़ा,

योग—२

राजकोट

श्रीयुत ए. एल स्वादिया, क्युरेटर, वाट्सन म्युजियम,

योग—१

बड़ी रूपाहेली (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुरसाहब चतुर सिंह, राजस्थान,

योग—१

शाहपुरा

श्रीयुत माननीय महाशय घोसूलाल, एम. ए., एल.एल बी, जज हाई कोर्ट, रियासत,

योग—१

१३—संयुक्त प्रांत

(सभासदों की संख्या ४२७)

अलमोड़ा

श्रीयुत मक्खन लाल, गवर्नमेंट इंटरमीडियट कालेज,

,, हरिराम पांडे, बी ए, बी एल, मुहल्ला कसौन,

योग—२

अलीगढ़

श्रीयुत गोकुलचंद शर्मा, एम. ए, साहित्य सदन,
,, ज्योतिस्वरुप शर्मा, अध्यक्ष, सारस्वत, सरस्वती प्रेस, गर्भीरपुरा,
,, फूलचंद मिश्र, आनरेरी मैजिस्ट्रेट, श्यामनगर,
,, मुरलीमनोहर गुसारा, एम ए. (प्रयाग), एम. ए. (आक्सन),
धर्मसमाज कालेज,

योग–४

आगरा

श्रीयुत अंबिकाचरण शर्मा, एम, ए., हिंदी विभाग, संत जांस् कालेज,
, अभयचंद भगवानदास गार्धा, ठि/० जैनाचार्य श्री विजय सूरिजी, बेलनगंज,
,, अमूल्यरत्न प्रभाकर, प्रभाकर भवन, राजामंडी,
,, गुलाब राय, एम ए, गोमती भवन,
,, चिरंजीलाल शर्मा पालीवाल, भैरो बाजार,
,, जीवनचद ताल्लुकेदार, एम. ए, संत जांस् कालेज,
,, टीकमसिंह तोमर, लेक्चरर हिंदी, बलवत राजपूत कालेज,
, महेंद्र जैन, मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा,
, विश्वभरदयाल शांडिल्य, एम. ए, लेक्चरर हिंदी, आगरा कालेज,
, हरिहरनाथ टंडन, एम ए, प्रोफेसर, संत जांस् कालेज,

योग–१०

आजमगढ़

श्रीयुत अलगूराय शास्त्री, एम. एल. ए, डाकखाना-अमिला, जिला,
,, दुक्खी सिंह, प्रधानाध्यापक, अपर प्राइमरी स्कूल वकवल, मऊनाथ भजन,
,, लाल परीखा सिंह, ग्राम–वकवल, पोस्ट–मऊ,
,, प्यारे लाल 'आजिज़', एम. ए, एल. टी, अजमतगढ पैलेस,
,, मुंशी महेंद्रलाल श्रीवास्तव, हेडमास्टर, एम ए. वी. स्कूल,
मऊनाथ भजन,
,, राजकुमार सिंह, सुरजपुर,
, राय रासविहारी लाल, ग्राम वनकठा, पोस्ट कोइलसा, जिला,
,, हरिहर प्रसाद, जज,

योग–८

भीलवाड़ा (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुर चन्द्रनाथ माथुर, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट,

योग—१

मारवाड़

श्रीयुत पुरुषोत्तम दास पुरोहित, बी ए, फर्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट और हाकिम, शेरगढ,

,, सीताराम लालस भव नेरवा, डी. एल. पी स्कूल, बिलाड़ा,

,, हस्तीमल, विशारद, हुकूमत श्री बिलाडा,

योग—३

राजकोट

श्रीयुत ए. एल. स्वादिया, क्युरेटर, वाट्सन म्युजियम,

योग—१

बड़ी रूपाहेली (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुरसाहब चतुर सिंह, राजस्थान,

योग—१

शाहपुरा

श्रीयुत माननीय महाशय घीसूलाल, एम ए., एल.एल बी , जज हाई कोर्ट, रियासत,

योग—१

१३—संयुक्त प्रांत

(सभासदों की सख्या ४२७)

अलमोड़ा

श्रीयुत मक्खन लाल, गवर्नमेंट इंटरमीडियट कालेज,

,, हरिराम पांडे, बी ए, बी एल, मुहल्ला कसौन,

ो —२

अलीगढ़

श्रीयुत गोकुलचंद शर्मा, एम. ए, साहित्य सदन,
,, ज्योतिस्वरुप शर्मा, अध्यक्ष, सारस्वत, सरस्वती प्रेस, गर्भारपुरा,
,, फूलचंद मिश्र, आनरेरी मैजिस्ट्रेट, श्यामनगर,
,, मुरलीमनोहर गुप्तारा, एम. ए. (प्रयाग), एम. ए (आक्सन),
धर्मसमाज कालेज,

योग–४

आगरा

श्रीयुत अंबिकाचरण शर्मा, एम, ए., हिंदी विभाग, संत जांस् कालेज,
,, अभयचंद भगवानदास गार्धी, ठि/० जैनाचार्य श्री विजय सूरिजी, बेलनगंज,
,, अमूल्यरत्न प्रभाकर, प्रभाकर भवन, राजामंडी,
,, गुलाब राय, एम. ए, गोमती भवन,
,, चिरंजीलाल शर्मा पालीवाल, भैरो बाजार,
,, जीवनचद ताल्लुकेदार, एम. ए., संत जांस् कालेज,
,, टीकमसिह तोमर, लेक्चरर हिंदी, बलवत राजपूत कालेज,
,, महेंद्र जैन, मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा,
,, विश्वभरदयाल शांडिल्य, एम. ए, लेक्चरर हिंदी, आगरा कालेज,
,, हरिहरनाथ टडन, एम ए, प्रोफेसर, संत जांस् कालेज,

योग–१०

आजमगढ़

श्रीयुत अलगूराय शास्त्री, एम एल. ए., डाकखाना-अमिला, जिला,
,, दुक्खी सिंह, प्रधानाध्यापक, अपर प्राइमरी स्कूल वकवल, मऊनाथ भजन,
,, लाल परीखा सिंह, ग्राम–वकवल, पोस्ट–मऊ,
,, प्यारे लाल 'आजिज़', एम. ए, एल. टी., अजमतगढ़ पैलेस,
,, मुंशी महेंद्रलाल श्रीवास्तव, हेडमास्टर, एम ए. वी. स्कूल,
मऊनाथ भजन,
,, राजकुमार सिंह, सुरजपुर,
,, राय रासविहारी लाल, ग्राम वनकटा, पोस्ट कोइलसा, जिला,
,, हरिहर प्रसाद, जज,

योग–८

इटावा

श्रीयुत रामनारायण चतुर्वेदी, एम. ए., एल. टी., साहित्यरत्न;

गवर्नमेंट इंटर कालेज,

श्रीयुत रायबहादुर विश्वभरनाथ, रघुनाथ भवन, छिपैटी,

योग—१

इलाहाबाद

श्रीयुत अमरनाथ झा, एम. ए., वाइसचांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय,

,, इकबालनारायण गुर्टू, एम. ए., एल एल बी., भूतपूर्व-वाइसचांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय,

श्रीमती इंदुमती तिवारी, एम, ए., ४थी बेंक रोड,

सुश्री कुमारी इन्द्रमोहिनी सिन्हा, १६ बैंक रोड.

श्रीयुत कुँवरकृष्ण सुखिया, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल,

,, कृष्णचंद्र, एम. ए., एल-एल बी., सिविल जज,

,, कृष्णाराम मेहता, बी. ए., एल-एल. बी., लीडर प्रेस,

,, गंगा प्रसाद उपाध्याय, एम. ए., भूतपूर्व प्रधानाध्यापक, डी. ए. वी. हाई स्कूल,

,, गुर्ति सुब्रह्मण्यम, विशारद, ११७ दारागंज,

सुश्री कुमारी चंद्रावती त्रिपाठी, एम. ए., १६ बैंक रोड,

श्रीयुत आयुर्वेदपंचानन जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, सम्मेलन मार्ग,

सुश्री कुमारी जनक कौल, १६ बैंक रोड,

श्रीयुत महामाननीय सर तेजबहादुर सप्रू, एम. ए., एल एल. डी., केटी., डी. सी. एल., १८ अलबर्ट रोड,

,, डाक्टर धीरेंद्र वर्मा, एम. ए., डी. लिट्. (पेरिस), अध्यक्ष हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय,

,, नंददुलारे वाजपेयी, एम. ए., इंडियन प्रेस लि०,

,, ठाकुर नेहपाल सिंह, आई. ई. एस., २१ म्योर रोड,

,, पी. बालकृष्णन, ठि/० हिंदी साहित्य सम्मेलन,

,, भगवती प्रसाद, हिंदू महिला विद्यालय, कैनिंग रोड,

,, मनोहरलाल जुत्शी, एम. ए., १ बेली रोड,

,, बाबूराम सक्सेना, एम. ए., बी. एस-सी., एल-एल. बी., ऐडवोकेट, हाई कोर्ट, २३ ए एलगिन रोड,

श्रीयुत डाक्टर बाबूराम सक्सेना, एम. ए., डी. लिट्., २५ चैथम लाइन,
श्रीमती रत्नकुमारी, ठि/० डाक्टर सत्यप्रकाश, डी. एस-सी , डी, बेली रोड,
श्रीयुत राजेंद्रसिंह गौड, एम ए सी टी., अध्यापक-डी ए वी हाई स्कूल,
सुश्री कुमारी राजेश्वरी कालिया, वीमेंस होस्टल,
,, राय रामचरण अग्रवाल,एम ए ,एल-एल.बी , विशारद,बडी कोठी,दारागंज,
,, रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर.
,, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी एम ए , डी एस-सी , १०६ लूकरगंज,
,, लक्ष्मीधर वाजपेयी संपादक-तरुण भारत ग्रंथावली, दारागंज,
,, विष्णुदत्त भार्गव, १६ केनिंग रोड,
,, वेंकटेशनारायण तिवारी, एम. ए., एम. एल ए, कीडगंज,
,, शक्तिधर शर्मा गुलेरी, संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय,
,, शालिगराम, पेशकार, ७६६ कटरा,
,, शिवदयाल जायसवाल, नं० ११५ नखास कोना,
,, श्रीराम भारतीय, एम ए , स्थायी मंत्री, अखिल भारतीय सेवा समिति,
१५ कचहरी रोड,
,, श्रीराम वाजपेयी, १ चैथम लाइंस्,
,, सत्यजीवन वर्मा, एम. ए , हिंदुस्तानी एकेडमी, संयुक्त प्रांत,
,, सद्गोपाल, एम एस-सी (टेक), हिंदुस्तान एरोमेटिक्स को०, नैनी,
सुरेंद्रनाथ तिवारी, आफिस अव इंसपेक्टर जनरल, रेलवे पुलिस,
सुश्री कुमारी सुशीलकुमारी वर्मा, ठि/० राय साहब श्री० अवधनारायण,
असिस्टंट इंजीनियर, नं० ४२ केनिंग रोड,
श्रीमती सौदामिनी देवी, विदुषी, नं० १ एलगिन रोड,
श्रीयुत हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस लि०,

योग-४१

उन्नाव

श्रीयुत कृष्णदत्त त्रिपाठी, साहित्यरत्न, ठि/० श्री हजारीलाल आश्रम, मौरावाँ,
,, जयनारायण कपूर, बी ए , एल-एल. बी., वकील, प्रधान मंत्री,
हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ,
,, शिवदुलारे त्रिपाठी, मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, मौरावाँ,

योग-३

एटा

श्रीयुत रामदत्त भारद्वाज, एम. ए., एल एल बी., एल टी.,
ए. वी. पी. हाई स्कूल, कासगंज,

,, वासुदेव प्रसाद मिश्र, एम ए., साहित्यरत्न, हिंदी अध्यापक,
गवर्नमेंट हाई स्कूल,

योग—२

कनखल

श्रीयुत गंगाप्रसाद, एम. ए., अवसरप्राप्त चीफजज, टेहरी राज,

योग—१

कानपुर

श्रीयुत अयोध्यानाथ शर्मा, एम. ए., सनातनधर्म कालेज,

,, एन वी. भारद्वाज, नयागंज,

,, ठाकुर कन्हैया सिंह, बी ए., इनकमटैक्स अफसर.

,, कालिकाप्रसाद, सेक्रेटरी, गयाप्रसाद पुस्तकालय, सरस्वती सदन,
मेस्टन रोड,

,, कुंजविहारीलाल श्रीवास्तव, ए. वी. म्युनिसिपल हाई स्कूल, नवाबगंज,

,, चंद्रशेखर पांडे, एम ए., प्रोफेसर, सनातनधर्म कालेज,

,, नारायणदास बाजोरिया ठि/० श्री जगन्नाथ विजराज, कपूरगंज,

,, परमेश्वरदीन मिश्र, एम. ए., बी एस-सी. एल-एल बी.,
ऐडवोकेट हाई कोर्ट, सुपुत्र/श्री० देवीचरण मिश्र, रिटायर्ड पुलिस इंसपेक्टर,
कछियाना मुहाल, मोती मुहाल सड़क,

,, परिपूर्णानंद वर्मा, शास्त्री, कमला टावर,

,, प्यारेलाल गर्ग, व्याख्यानदाता, कृषि महाविद्यालय, नवाबगंज,

,, माधव प्रसाद पांडे, एस सी., रिटायर्ड डिप्टी इंसपेक्टर अव् स्कूलस्,
प्रेमनगर,

,, मन्नीलाल नेवटिया, काहूकोठी,

,, लाला रामरतन गुप्त, विहारी निवास,

श्रीयुत लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, एम ए., पटकापुर,

श्रीमती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु' विद्या विभाग, नवाबगंज,

श्रीयुत सद्गुरुशरण अवस्थी, एम. ए., प्रेम मंदिर,

,, हीरालाल खन्ना, एम एस सी. प्रिंसिपल, वी. एन एस डी. कालेज,

योग—१७

खीरी

श्रीयुत आदित्यप्रकाश मिश्र, डिप्टी कलेक्टर,
,, मकठा प्रसाद वाजपेयी, लखीमपुर,
श्रीयुत सूरजनारायण दीक्षित, एम. ए , एल एल. बी., ऐडवोकेट,

योग–३

गढ़वाल

श्रीयुत तोताराम थपल्याल, ग्राम-गंगोलीसैण, डाकघर–पोखरीखेत,
,, दौलतराम ज्ञुयाल, ग्राम क्षवाणासार, पो दोगड्डा,
,, शालिगराम वैष्णव, शांतिसदन, कर्णप्रयाग,

योग–३

गाजीपुर

श्रीयुत रायसाहब घनश्यामदास, रिटायर्ड कलक्टर,

योग–१

गोंडा

श्रीयुत गणेशदत्त मिश्र, पुस्तकाध्यक्ष–अमन सभा पब्लिक पुस्तकालय,
श्रीमती पूर्णिमा चाँदमल, द्वि/० श्री० चांदमल, आई. सी. एस ,

योग–२

गोरखपुर

श्रीयुत रायसाहब आद्याप्रसाद, बी ए., एल-एल बी., ऐडवोकेट, रईस, वसंतपुर, जिला
,, कामेश्वरी प्रसाद नारायणसिंह, पोस्ट सलेमगढ़,
,, कुँवरबहादुर, एम ए., एल एल बी., प्रिंसिपल, टी. बी, इंटर कालेज,
,, ठाकुर गिरिजाशंकर सिन्हा, एम ए , बी एस-सी , एल एल बी , ऐडवोकेट, देवरिया, जिला,
,, घनश्यामनारायणदास, १२६ कसया रोड, नोटिफाइड एरिया,
,, जगन्नाथ प्रसाद, एम. ए., एल एल बी , देवरिया, जिला,
,, परमहंसमल्लसिंह, बी. एस-सी., एल-एल. बी , वकील,
,, बालमुकुंद गुप्त, एम ए., साहित्यरत्न, बालमुकुंद इंटर कालेज,

,, राय साहब मधुसूदनदास
,, बाबा राघवदास परमहंस, परमहंसाश्रम–बरहज, जिला,
,, राजनाथ पांडे, एम. ए., प्रोफेसर, संत एंड्रूज कालेज,
,, रायसाहब राजेश्वरी प्रसाद, एम. ए., एल-एल. बी., एडवोकेट,
,, रामनारायण तिवारी, अलीनगर,
,, सेठ रामप्रसाद मालोठिया, पोस्ट-सिसवा बाजार, जिला,
,, रामरक्षपाल संघी, स्थान व डाकघर-रामकोला, जिला,
,, विंध्येश्वरी नारायण चन्द्र, एम. ए., एल-एल. बी., बसंतपुर, जिला,
,, शशिभूषण गुप्त, मार्फत श्री इंदुभूषण गुप्त, न्यु बिल्डिंग्ज, गोलघर,
,, सरयू प्रसाद मिश्र, विशारद, वकील, देवरिया, जिला,
,, हीरानंद पाठक, रीडर, कलेक्टरेट,
,, होतीलाल, ओवरसियर, देवरिया, जिला,

योग–२०

जौनपुर

श्रीयुत रायबहादुर राजनारायण मिश्र, बी. ए., मैनेजर, जौनपुर स्टेट,
,, ठाकुर लालबिहारी सिंह, बी. ए., एल-एल. बी., ग्राम–तरियारी, पोस्ट केराकत, जिला,
,, कुँवर श्रीपाल सिंह, सिंगरामऊ राज्य, जिला,

योग–३

झांसी

श्रीयुत कालिका प्रसाद अग्रवाल, एम. ए., एल-एल. बी., ऐडवोकेट, मानिकचौक,
,, मैथिलीशरण गुप्त, चिरगांव,
,, कुँवर विश्वनाथ सिंह, फूलबाग, पोस्ट-मोठ, समथर स्टेट,
,, श्यामबिहारी शर्मा, एम. ए., एल. टी., ५९ लक्ष्मणगंज,

योग–४

देहरादून

श्रीयुत रामचंद्र, रिटायर्ड सबडिविजनल अफसर, धीराजभवन, लक्ष्मणचौक,

योग–१

नैनीताल

श्रीयुत तुलाराम वर्मा, नं० २० बड़ाबाजार,
,, रायसाहब भवानीशंकर याज्ञिक, पटवाडोगर,
,, ठाकुर राजनारायण सिंह, आई. एफ. एस., डिविजनल फारेस्ट अफसर,

योग–३

प्रतापगढ़ (अवध)

श्रीयुत गोपालचंद्र सिंह, मुंसिफ,
,, ठाकुर लालकुमार सिंह, कालाकाँकर,
,, सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशगृह, कालाकांकर,
,, कुँवर सुरेशसिंह, नक्षत्र, कालाकांकर,

योग–४

फर्रुखाबाद

श्रीयुत महेश्वर, बी. ए., भारतीय पाठशाला,
,, रामनाथ शर्मा, एम. ए., एल-एल. बी., मुंसिफ, कायमगंज,

योग–२

फैजाबाद

श्रीयुत आचार्य नरेन्द्रदेव, एम ए, एम. एल. ए.,
,, राजरूप ओझा, बी. ए, एल-एल. बी., अकाउंटंट, म्युनिसिपल बोर्ड आफिस,
,, रामस्वरूप, एम ए, बी. टी., विशारद, होबार्ट हाई स्कूल, टांडा,
,, ए जी. शिरफ, आई. सी एस., कमिश्नर,
,, श्रीराम मिश्र, ऐडवोकेट, श्री निकेतन,

योग ५

बदायूं

श्रीयुत गौरी शंकर प्रसाद वर्मा, मुक़ाम–क़ानूनगोयान,
श्रीमती मालती देवी, द्वि/० श्री शिवकुमार डिडन, एम. ए., एल–एल. बी., सिविल लाइन,
श्रीयुत शांतिस्वरूप, कूचा पाटा,

योग ३

वनारस

श्रीयुत डाक्टर अचल विहारी सेठ, कमच्छा,
,, अमर नाथ जेतली, शास्त्री, ब्रह्मनाल,
,, अमर नाथ मेहरोत्रा, नीची ब्रह्मपुरी,
,, अमरेश प्रसादसिंह, २१/३५ कमच्छा,
,, अंबिकादत्त उपाध्याय, एम. ए., आचार्य, अस्सी,
,, राय साहब डाक्टर अयोध्या प्रसाद मिश्र, भदैनी,
,, साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', संकट हरन,
,, अवधविहारी लाल, बी. ए., एल. एल बी , ५६/१२४ बड़ी पियरी,
,, उदित मिश्र, ग्राम कूंडी, पोस्ट वडागांव, जिला,
,, उमाशंकर, १५० टाउनगर,
,, कन्हैयालाल, ब्रह्मपुरी फुलवाई, चौखमा,
,, कन्हैयालाल मिश्र, आर्योपदेशक, ठि० श्री० रामनारायण मिश्र, बी ए, अवसर प्राप्त पी ई एस , कालभैरव,
,, रायवहादुर कमलाकर दुबे, एम. ए , खजुरी, कैंट,
श्रीमती कमलाकुमारी, आनरेरी महिला मैजिस्ट्रेट, २९९ सराय गोवर्धन,
श्रीयुत कांतानाथ पांडे, एम. ए , अध्यापक, हरिश्चंद्र कालेज,
,, कालीचरणसिंह, गवर्नमेंट पेंशनर, ग्राम फुलवरिया, काली पल्टन, कैंट,
,, काशीनाथ उपाध्याय, एम ए, साहित्यरत्न, सराय गोवर्धन,
,, काशीराम, एम. ए, अवसरप्राप्त संस्कृत पाठशालाओं के निरीक्षक, मीरघाट
,, किशोरीरमण प्रसाद, कचौरीगली,
,, कविराज कृष्णचंद्र शर्मा, कालभैरव,
,, रायकृष्णजी, पाँडेपुर,
,, राय कृष्णदास, रामघाट,
,, कृष्णदास अग्रवाल, सूडिया,
,, कृष्णदेव प्रसाद गौड, एम. ए , एल. टी., बडी पियरी,
,, कृष्णलाल जालान, सुखलाल साहु गेट,
,, कृष्णानंद, एम ए., बी टी., ३/२७८ अर्दली वाजार,
,, केदारनाथ सारस्वत, रणवीर संस्कृत पाठशाला, हिंदू स्कूल,
,, केशव प्रसाद मिश्र, भदैनी,
,, खेदनलाल, चेतगंज,

श्रीयुत गंगाशंकर मिश्र, एम० ए०, गंगातरंग, नगवा,
,, गणेश रामचंद्र भागवत, ९/१२ पत्थर गली, कालभैरव,
,, गयाप्रसाद ज्योतिषी, एम० ए०, प्राच्य विद्याविभाग, हिंदूविश्वविद्यालय,
,, गिरधरलाल व्यास, कमच्छा,
,, डाक्टर गिरिवरसिंह, जी० पी० वी० सी०, वेटरेनरी सर्जन,
,, गिरिजाशंकर गौड, विशारद, २०८ बड़ी पियरी,
,, गुप्तेश्वरसिंह, बी० ए०, एल एल० बी०, कबीरचौरा,
,, गुरुसरन लाल सिन्हा, क्वींस कालेज, तेलियाबाग,
,, गोवर्द्धनदास गुप्त (प्रधानाचार्य. सकेतलिपि विद्यालय,
ना० प्र० सभा, काशी), कोदई चौकी,
,, रायगोविंदचंद्र, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, एम० एल० ए०,
कुशस्थली,
,, गोविंद मालवीय, एम० ए०, एल-एल० बी०, एम० एल० ए०,
न्यू इंश्योरेन्स कंपनी,
,, गौरीनंदन उपाध्याय, बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील, बांसफाटक,
,, सेठ गौरीशंकर गोयनका, अस्सी,
,, चंद्रबली पांडेय, एम० ए०, ठि०/मुंशी महेशप्रसाद आलिम फाजिल,
अमेठी कोठी,
,, चंद्रभाल, बी० एस-सी०, एम० एल० सी०, शांतिसदन, सिगरा,
,, चंद्रमौलि सुकुल, टीचर्स ट्रेनिंगकालेज, कमच्छा,
,, चाँदबिहारी कपूर, एम० ए०, एल एल० बी०, पी० सी० एस,
हवेली मुंसिफ,
,, जगदंबाप्रसाद, डिप्टी इंस्पेक्टर अव स्कूल्स, शिक्षा विभाग,
अर्दली बाजार,
,, ठाकुर जगदीशप्रसादसिंह, एम० ए०, एल एल० बी०, वाइस प्रिंसिपल,
उदयप्रताप क्षत्रिय कालेज,
,, जगन्नाथप्रसाद खत्री, गोलागली,
,, जगन्नाथप्रसाद शर्मा, एम० ए०, औरंगाबाद,
,, जगन्नाथशर्मा वाजपेयी, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य, अस्सी,
,, जमुनादत्त सनवाल, हिंदूविश्वविद्यालय कार्यालय,
,, जयकृष्णदास, कालभैरव,
,, जयेंद्रनारायण सिन्हा, ठि०/१७८ अर्दली बाजार,

श्रीयुत ज्योतिर्भूषण गुप्त, सेवा उपवन,

,, जीवनदास अग्रवाल, प्रधानाध्यापक, अग्रवाल महाजनी पाठशाला,

,, जे० पी० चौधरी, काव्यतीर्थ, भूपचडी,

,, ठाकुरदास, एडवोकेट, राजा दरवाजा,

,, ठाकुरदास अग्रवाल, एम० ए०, एल-एल० बी०, वकील, बुलानाला,

,, ठाकुर प्रसाद शर्मा, एम० ए०, एल एल० बी०, जालपा देवी,

,, दामोदर दास खडेलवाल, छोटी गैबी,

,, गोस्वामी दामोदर लाल, बुलानाला,

,, ठाकुर दिलीपनारायण सिह, एम० ए०, १२० छोटी पियरी,

,, दुर्गाप्रसाद सिंह, म्युनिसिपल कमिश्नर, ब्रह्मनाल,

,, द्वारिका दास, म्युनिसिपल कमिश्नर, २६ गोविंद जी नायक,

,, देवेंद्रचंद्र विद्याभास्कर, विद्याभास्कर बुकडिपो,

,, नंदगिरि कांतानाथ शास्त्री तैलंग, टेढी नीम,

,, नंदलाल भारद्वाज, बी० ए०, एल० टी०, अध्यापक, डी० ए० वी० कालेज,

,, नरसिंह लाल शर्मा, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर,
सेंट्रल हिंदूस्कूल, कमच्छा,

,, नवरग सिंह, दूकान, इंडियन प्रेस, चौक,

,, निष्कामेश्वर मिश्र, बी० ए०, लाहौरी टोला,

,, पद्माकर द्विवेदी, खजुरी, कैंट,

,, पद्मनारायण आचार्य, एम० ए०, अस्सी,

,, पद्मिनी देवी कलमकर (यमुना देवी मजूरकर), महिला विद्यालय,
हिंदूविश्वविद्यालय,

,, डाक्टर परमात्माशरण, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय,

,, डाक्टर प्रतापनारायण राजदान, पी-एच० डी०, प्रोफेसर,
टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा,

,, प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिंह, प्रताप पार्क, हिंदू विश्वविद्यालय,

,, डाक्टर प्राणनाथ विद्यालंकार, डी० एस-सी० (लंदन), पी-एच० डी० (वियना), प्रोफेसर, एंशंट मिडिल ईस्ट हिस्टरी एंड एंटिक्विटीज,
हिंदू विश्वविद्यालय,

,, पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, ७/२१ गली लालेश्वर,

,, प्यारेलाल श्रीवास्तव, बी० ए०, कामिल, आनरेरी मैजिस्ट्रेट,
सी १२/५ औरंगाबाद,

श्रीयुत बजरंगबली गुप्त, जालपा देवी,
,, बटुकनाथ शर्मा, एम० ए०, कालभैरव,
,, बनारसीप्रसाद सारस्वत,
,, बलदेव उपाध्याय, एम० ए०, राखालभवन, दूधविनायक,
,, राजा बलदेवदास बिडला, ललघाट,
,, बलदेव प्रसाद मिश्र, १५ शकरकंद गली,
,, बलराम उपाध्याय, ऐडवोकेट, बड़ी पियरी,
,, बलवंत मिश्र, ग्राम-कूंडी, डाकघर-बड़ागाँव, जिला,
,, डाक्टर ब्रजमोहन, एम० ए०, पी-एच० डी०, हिंदूविश्वविद्यालय,
,, ब्रजमोहन केजरीवाल, नंदनसाहु लेन,
,, ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल एल० बी०, एडवोकेट, बुलानाला,
,, ब्रजलाल सब्बरवाल, पोस्टमास्टर, सदर पोस्ट आफिस,
,, बांकेलाल मेहरोत्रा, एम० ए० (कैंटब), काशी विद्यापीठ,
,, बांकेबिहारीलाल, बी० एस-सी०, एल० टी०, सिद्धमाता की गली,
,, बाबूराव विष्णु पराडकर, प्रधान संपादक 'आज', ज्ञानमंडल,
,, विट्ठलदास नागर, दामोदरदासजी बल्लभदासजी, सूतटोला,
,, बैजनाथ केडिया, अध्यक्ष, हिंदी पुस्तक एजेंसी, चौक,
,, राय भगवतीप्रसाद, ग्राम जगतपुर, पोस्ट रोहनियां, जिला,
,, डाक्टर भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट्०, भूतपूर्व एम० एल० ए० (केंद्रीय), सिगरा,
,, भगवान प्रसाद, अवसरप्राप्त डिप्टी इंसपेक्टर अव स्कूल्स, ग्राम भडिलाई, शिवपुर, जिला,
,, डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, एम० ए०, डी० फिल (आक्सन), प्रिंसिपल, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज,
,, मंगलाप्रसाद सिंह, जमींदार, मंगल भवन, भेलूपुर,
,, साहित्यवाचस्पति महामना पं० मदनमोहन मालवीय, हिंदू विश्वविद्यालय,
,, मदनमोहन शास्त्री, शकरकंद गली,
,, मधुसूदनदास, बी० ए०, एल एल० बी०, सातो चौक, चौखंभा,
,, मनोरमा खास्तगीर, एम० ए०, द्वि०/ डाक्टर कैप्टन एस० के० चौधरी, रामकाली चौधरी रोड,
,, महीपत सिंह मास्टर, पुलिस लाइन,
,, महादेवलाल श्राफ, फार्मेसी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय,

श्रीयुत माधोप्रसाद खन्ना, थियासाफिकल सोसायटी,
,, ठाकुर मार्कंडे सिंह, एम० ए०, साहित्यरत्न, अध्यापक, उदयप्रताप, क्षत्रिय कालेज,
,, मुकुंददेव शर्मा, ठि०/ श्री साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', संकटहरन,
,, मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन,
,, मोहनलाल गुप्त, एम० ए०, रामप्रसाद बिल्डिंग, चेतगंज,
,, रमापति शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, अध्यापक, बेसेंट स्कूल,
,, रमेशदत्त पांडे, बी० ए०, वरनापुल,
,, डाक्टर राजेंद्रनारायण शर्मा, सराय गोवर्धन,
,, राधेकृष्णदास, शिवालाघाट,
,, दीवान रामचंद्र कपूर, ब्रह्मनाल,
,, रामचंद्र वर्मा, ३ सरस्वती फाटक,
,, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, दुर्गाकुंड,
,, रामचरन पांडे, क्वीस कालेज,
,, रामनारायण मिश्र, बी० ए०, अवसर प्राप्त पी० ई० एस०, काल भैरव,
,, रामनारायण मेहरोत्रा, लाहौरी टोला,
,, रामबहोरी शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, प्रो०, क्वींसकालेज,
,, रामशंकर लाल, वकील दारानगर,
,, रामशंकर लाल नैपाली, चौखंभा,
,, रामशरणलाल, मुख्तार, रामनिवास, तेलियाबाग,
,, ठाकुर रामाधार सिंह, वकील, विश्वेश्वर गंज,
,, रामेश्वर सहाय सिन्हा, (शिक्षा सुपरिंटेंडेंट-म्युनिसिपल बोर्ड), ६४/१०० हीरापुरा,
,, लक्ष्मण नारायण गर्दे, पत्थरगली, रतन फाटक,
,, चौधरी लक्ष्मीचंद्र, भारतेंदु भवन, चौखंभा,
,, लक्ष्मीनारायण मिश्र, 'संचय,' १/१८२ अस्सी संगम,
,, चौधरी लक्ष्मीनारायण सिंह, 'ईश,' सराय गोवर्धन,
,, लक्ष्मी प्रसाद पांडे, इंडियन प्रेस लि०,
,, लालचंद खत्री, कोठी, पूरनचंद हरनारायण, रानीकुआ,
,, लालजी राम शुक्ल एम० ए०, बी० टी०, प्रो०, टीचर्स ट्रेनिंगकालेज, कमच्छा

श्रीयुत लालबहादुर लाल, सी० टी०, ग्राम–भडिलाई, पोस्ट–शिवपुर, जिला,
,, वशगोपाल झिंगरन, एम० एस–सी०, बी० एड०,
प्रो०, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा,
,, वाचस्पति उपाध्याय, एम० ए०, भदैनी,
,, विजयकृष्ण, ११० खजुरी, कैंट,
,, विद्याभास्कर, ठि०/ श्री० संपूर्णानंद, बी० एस–सी०, एल० टी०,
(भूतपूर्व शिक्षामंत्री संयुक्तप्रांत), जालपादेवी,
,, विद्याभूषण मिश्र, एम० ए०, एल०एल० बी०, सिगरा,
,, विमलानंदनप्रसाद, दारानगर,
,, विश्वनाथप्रसाद (लाल इमली वाले), बुलानाला,
,, विश्वनाथप्रसाद भार्गव, ठि० मनोहरलाल भार्गव, जतनवर,
,, विश्वेश्वरनाथ जेतली, २१/१०३ कमच्छा,
,, वेणीप्रसाद, रानीकुआं,
,, वेणीप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल० टी०, अध्यापक, हरिश्चंद्र कालेज,
,, शंभुनाथ वर्मा, बी० ए०, आनरेरी मैजिस्ट्रेट, गौरी गणेश,
,, राय शंभुप्रसाद, ग्राम-जगतपुर, पोस्ट-रोहनियां, जिला,
शशिशेखरानंद गैरोला, इंजीनियरिंग कालेज, हिंदूविश्वविद्यालय,
,, शांतिप्रिय द्विवेदी, सहायक संपादक, 'कमला', कमला कार्यालय,
,, शारदा प्रसाद, कोठी किशोरीलाल मकुंदीलाल, विश्वेश्वर गंज,
,, शालिग्राम सिंह, गायघाट,
,, रायसाहब ठाकुर शिवकुमार सिंह, बैजनत्था,
,, शिवमंगल सिंह "सुमन", एम० ए०, ठि०/ श्री डाक्टर दुबे,
ग्लास टेकनालोजी विभाग, हिंदूविश्वविद्यालय,
,, शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन,
,, ठाकुर श्यामनारायणसिंह, बी० ए०, एल एल० बी०, मध्यमेश्वर,
,, साहित्य वाचस्पति रायबहादुर श्यामसुंदरदास बी० ए०,
१४/११ टेढ़ीनीम,
,, श्रीरायकृष्णजी, पाटेपुर,
,, श्रीकृष्ण पंत, ललिताघाट,
,, श्रीनाथशाह, दुर्गाकुंड,
,, श्रीनारायण तिवारी, बी० ए०, बी० टी०, अध्यापक, हिंदू स्कूल कमच्छा,
,, श्रीनिवास शाह, दुर्गाकुंड.

श्रीयुत श्रीशचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल एल० बी०, बी० टी०, कालभैरव,
,, सकटाप्रसाद गुप्त, कोठी श्रीछोटेलाल वामनदास, मृडिया,
,, संतराम, काशी ग्रामोफोन स्टोर्स, नलानाला,
,, संपूर्णानंद, बी० एस-सी०, एल० टी०, एम० एल० ए०
(भूतपूर्व शिक्षा मंत्री, संयुक्त प्रांत), जालपा दे
,, सच्चिदानंद भारतीय, एम० ए०, एल० टी०, सहायक अध्यापक,
सेंट्रल हिंदू स्कूल कम
,, सत्यनारायण आर्य, एम० ए०, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा,
,, राय सत्यव्रत, लहरतारा,
,, सतीशचंद्र गुह, गांधी ग्राम, विद्यापीठ,
,, सहदेव सिंह, ऐडवोकेट, बडी पियरी,
,, सांवल जी नागर,
,, सीताराम, रजिस्ट्रेशन क्लर्क,
,, सीताराम चतुर्वेदी, एम० ए०, एल-एल बी०, बी० टी०, प्रोफेसर,
टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच
,, सीताराम मिश्र, बी० ए०, बी० टी०, सेंट्रल हिंदू स्कूल, कमच्छा,
श्रीमती हीरा कुमारी जैन, व्याकरण-न्याय-सांख्य-तीर्थ, न्यु ई०/२,
हिंदू विश्वविद्याल

योग—१७८

बनारस राज्य

श्रीयुत सरदार झारखंडी प्रसाद नारायणसिंह, किला रामनगर,
,, कप्तान मंगलाप्रसाद सिंह, तपोवन, रामनगर,
,, रविशरण वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०, मुंशीखाना, रामनगर,
,, वल्लभनाथ दुबे, फोर्ट, रामनगर,
,, व्रजनाथ, बी० काम्०, मैनेजर, बनारस स्टेट बैंक, रामनगर,
,, विनोदविहारी सेनराय, प्रधानाध्यापक, मेस्टन हाई स्कूल, रामनगर,
,, विश्वनाथ प्रसाद, बी० ए०, एल एल० बी०, चीफ जज, रामनगर,
,, श्रीनारायण तिवारी, रामनगर
,, सूर्यप्रसाद शुक्ल, हजारी साहब रामनगर

योग—९

बरेली

श्रीयुत भोलानाथ शर्मा, एम० ए०, अध्यापक, बरेली कालेज,
,, साहित्याचार्य विद्येंद्र शास्त्री, पंचतीर्थ, २०४ सैयदपुरा,
,, श्रीधर पंत, एम० ए०, एल० टी०, प्रोफेसर, बरेली कालेज,
,, कृष्णकुमार लाल सकसेना, निकट पत्थर वाली हवेली, मुहल्ला मूड,

योग—४

बलिया

श्रीयुत केशवचंद्र शुक्ल, डिप्टीकलक्टर,
,, गणेशप्रसाद एम० ए०, हिंदी अध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल,
,, परशुराम चतुर्वेदी, वकील,
,, राजासिंह, तहसीलदार, राज बड़ागढ़ रेवती, पोस्ट रेवती, जिला,
,, शिवप्रसादसिंह, वी० टी० सी०, विशारद, अध्यापक, मिडिल स्कूल रेवती, रेलवे स्टेशन रेवती, जिला,
,, श्यामसुंदर उपाध्याय, सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्टबोर्ड,
,, हरिकृष्णराय, साहित्यरत्न, हेडमास्टर, ग्राम—वाजिदपुर, पोस्ट दलन छपरा, जिला,
,, सीताराम पांडे, प्रधानाध्यापक, मिडिल स्कूल, भीमपुरा, पोस्ट औराई कलां, जिला

योग—८

बस्ती

श्रीयुत नरसिंहनारायण मिश्र, वैद्य, नगरराज्य, पोस्ट नगर, जिला,

योग—१

बाँदा

श्रीयुत मूलचंद्र जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०, करवी, जिला,

योग—१

बुलंदशहर

श्रीयुत केशवराम, अनूपशहर, जिला
,, घमंडीलाल शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, विशारद, पद्मसिंह गेट, खुर्जा,

श्रीयुत जगनलाल गुप्त, मुख्तार, माल व फौजदारी,
,, सरजीवनलाल चौबे खजांची, इंपीरियल बैंक,
,, त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी, विज्ञानाध्यापक, जे० ए० एस० स्कूल, खुर्जा, जिला,
सुश्री कुमारी भागीरथी पोद्दार, C/o श्रीसेठ गोवर्धनदास पोद्दार, खुर्जा, जिला,
श्रीयुत रायसाहब मदनमोहन सेठ, एम० ए०, एल-एल० बी०,
अवसरप्राप्त जिला एवं दौरा जज, शिवपुरी, जिला,

योग—७

मथुरा

श्रीयुत कामेश्वरनाथ, एम० ए०, प्रभाकर प्रेस,
,, क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कं०,
सुश्री कुमारी गायत्रीदेवी गुप्त, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल
श्रीयुत जवाहरलाल चतुर्वेदी, कूवावाली गली,
,, मदनमोहन नागर, क्युरेटर, कर्जन म्युजियम,
,, मोहनवल्लभ पंत, एम०ए०, बी०टी०, लेक्चरर, किशोरीरमण इंटर कालेज,
,, राय बहादुर राधारमण, रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर, डैपियरनगर,
,, रामनिवास पोद्दार,
श्रीमती रामप्यारी देवी, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल,
सुश्री कुमारी शकुंतला भार्गव, प्रधानाध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स् स्कूल,
श्रीयुत सत्येंद्र, एम० ए०, ए० टी० सी०, गली कानून गोयान,
रामदास की मंडी,
सुश्री कुमारी स्नेहलता कक्कड़, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स् स्कूल,
श्रीयुत लाला हीरालाल, श्यामकाशी प्रेस,

योग—१२

मिर्जापुर

श्रीयुत प्रमथनाथ भट्टाचार्य, वेलेस्लीगंज,
,, रामप्रतापजी, मालिक दूकान भैरवमल फतहचंद, बुंदेलखंडी,
,, राजा शारदामहेशप्रसादसिंह शाह, बड़हराधीश, बड़हर,
पोस्ट-राजपुर, जिला,
,, सत्यनारायण शर्मा, विशारद, ग्राम—भैसा, डाकधर—कछवा, जिला,

योग—४

मुजफ्फरनगर

श्रीयुत गोविंदविहारी शोरावाल, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज,
,, जगदीशप्रसाद, रईस,

योग—२

मुरादाबाद

श्रीयुत केदारनाथ, 'बेकल', बी० ए० एल० टी०, गवर्नमेंट हाई स्कूल, अमरोहा, जिला,
,, कृष्णगोपाललाल सक्सेना, हेड कापिइस्ट, कलेक्टरेट,
,, गंगाशरण शर्मा, शील, एम०ए०, एम० एम० इंटर कालेज, चदौसी, जिला,
,, तोताराम गुप्त, काठ, जिला,
,, शिवदत्त त्रिपाठी शास्त्री, एम० ए०, प्रोफेसर, इंटरमिडियट कालेज, चंदौसी, जिला,

योग—५

मेरठ

श्रीयुत आनंदस्वरूप बुवलिश, बी० एस-सी०, एल-एल बी०, वकील,
,, कृष्णानंद पंत, एम० ए०, साहित्यरत्न, प्रोफेसर, मेरठ कालेज,
,, चौधरी रघुवीरनारायणसिंह, एम० एल० ए० (केंद्रीय), असोड़ा, पोस्ट—हापुड़, जिला,
,, शांतिस्वरूप अग्रवाल, अध्यापक, कमर्शल ऐंड इंडस्ट्रियल हाई स्कूल, हापुड, जिला,

योग—४

मैनपुरी

श्रीयुत मक्खनलाल केला, बी० ए०, एल-एल बी०, पी० सी० एस०,
,, बाबूराम चित्थरिया, सिरसागंज, जिला,

योग—२

रायबरेली

श्रीयुत राजा जगन्नाथ बख्श सिंह, ताल्लुकेदार, रहवां, जिला,
,, शिवनारायणलाल, विशारद, वैजनाथाश्रम, ग्राम और पोस्ट—रउरावां, जिला,

योग—२

लखनऊ

श्रीयुत राव साहब एस. एल. आर. खेर, इनकमटैक्स कमिश्नर,

,, पुरोहित कृष्णकुमार, एम. ए., एल-एल. बी., ५'१ मेस्टन होस्टल,

,, काशीनाथ गुप्त, एल-एल. बी (फाइनल), ७० महमूदाबाद होस्टल,

,, कालीदास कपूर, एम. ए., एल. टी., हेडमास्टर, कालीचरण हाईस्कूल,

,, त्रिभुवननारायण सिंह, नेशनल हेराल्ड आफिस,

,, दीनदयाल गुप्त, एम. ए., एल-एल. बी., हिंदी लेक्चरर, लखनऊ विश्वविद्यालय,

,, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, न्यायभूषण, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त प्रांत,

,, डाक्टर पन्नालाल, आई. सी. एस., डी. लिट्., एडवाइजर टु द यू. पी. गवर्नमेंट,

,, डाक्टर पीतांबरदत्त बडथ्वाल, एम. ए., एल-एल. बी., डी. लिट्., हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय,

,, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन, एम. ए., एल-एल. बी., अध्यक्ष-प्रांतीय असेंबली, संयुक्तप्रांत,

,, ब्रह्मदेव वाजपेयी, ३९ मेजर बैंक्स रोड,

,, बालकृष्ण पांडे, प्रिंसिपल, कान्यकुब्ज इंटर कालेज,

,, बालकृष्णराव, आई. सी. एस., इंफर्मेशन डिपार्टमेंट, यू. पी. गवर्नमेंट,

,, बैजनाथसिंह, एम. ए., बी. टी., ठि०/ श्री श्रीधरसिंह, जुबली इंटरमीडियट कालेज,

श्रीमती मनीबाई शाह, युनिटी लाज,

श्रीयुत माधवशरण, ५१८ नरही,

,, वासुदेवशरण अग्रवाल, एम. ए., अजायबघर,

,, विजयबहादुर रायजादा, रिटायर्ड एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिश्नर, बारूदखाना, गोलागंज,

,, विद्यासागर भटनागर, मौसमबाग, सीतापुर रोड,

,, शंकरदयाल शर्मा, १०१ महमूदाबाद होस्टल,

,, श्रीधरसिंह, एम. ए., गवर्नमेंट जुबिली इंटरमीडियट कालेज,

,, राय साहब श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम. ए. (लंदन), आर्यनगर,

,, रावराजा, राय बहादुर, डाक्टर श्यामबिहारी मिश्र, एम. ए., १०५ गोलागंज,

,, रायबहादुर शुकदेव बिहारी मिश्र, गोलागंज,

श्रीयुत सूर्यकांत त्रिपाठी, 'निराला', नारियलवाली गली, हाथीखाना,
,, हरिश्चचद्र, आई. सी एस., सेक्रेटरी टु द गवर्नमेंट युक्तप्रांत, जुडिशल डिपार्टमेंट,

योग—२६

सहारनपुर

श्रीयुत वागीश्वर विद्यालंकार उपाध्याय, गुरुकुल, कांगड़ी, जिला,

योग—१

सीतापुर (अवध)

श्रीयुत अनिरुद्धसिंह, नीलगाँव,
,, कन्हैयालाल महेंद्र, एम ए, एल-एल. बी, वकील, मोतीबाल बाग,
,, कृष्णविहारी मिश्र, गंधौली सिधौली,
,, गजाधर प्रसाद मेहरोत्रा, कोठी पोस्ट बिसवा, जिला,
,, ठाकुर प्रसाद शर्मा, हिंदी साहित्य सभा, लालबाग,
,, वैद्य मधुसूदन दीक्षित, शास्त्री, मृत्युंजय औषधालय,
,, ठाकुर रामसिंह ताल्लुकेदार,
,, राजा सूरजबख्शसिंह, आनरेरी मुंसिफ व मैजिस्ट्रेट, कस्माड़ा, पोस्ट कमालपुर, जिला,
,, सोमेश्वर दत्त शुक्ल,

योग—९

सुल्तांपुर (अवध)

श्रीयुत दिनकर प्रकाश जोशी, कुड़वार,
,, महेश प्रसाद, प्रधानाध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल,
,, कुमार रणंजयसिंह, भूतपूर्व एम. एल. ए (केंद्रीय), अमेठीराज, जिला,

योग—२

हरदोई

श्रीयुत ब्रजभूषण शरण जेतली, एम ए, एल-एल बी. आई. पी एस, सुपरिंटेंडेंट पुलिस
,, शिरोमणिसिंह चौहान, एम. एस-सी, विशारद, सब रजिस्ट्रार, बिल ग्राम, जिला

योग—२

लखनऊ

श्रीयुत राव साहब एस. एल. आर. खेर, इनकमटैक्स कमिश्नर,
,, पुरोहित कृष्णकुमार, एम. ए , एल-एल. बी , '५'१ मेस्टन होस्टल,
,, काशीनाथ गुप्त, एल–एल. बी (फाइनल), ७० महमूदाबाद होस्टल,
,, कालीदास कपूर, एम. ए , एल. टी., हेडमास्टर, कालीचरण हाईस्कूल,
,, त्रिभुवननारायण सिंह, नेशनल हेराल्ड आफिस,
,, दीनदयाल गुप्त, एम. ए , एल-एल. बी , हिंदी लेक्चरर, लखनऊ विश्व-विद्यालय,
,, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, न्यायभूषण, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त प्रांत,
,, डाक्टर पन्नालाल, आई. सी. एस , डी. लिट्., एडवाइजर टु द यू. पी. गवर्नमेंट,
,, डाक्टर पीतांबरदत्त बडथ्वाल, एम ए , एल-एल बी., डी. लिट्., हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय,
,, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन, एम ए , एल–एल बी , अध्यक्ष-प्रांतीय असेंबली, संयुक्तप्रांत,
,, ब्रह्मदेव वाजपेयी, ३९ मेजर बैंक्स रोड,
,, बालकृष्ण पांडे, प्रिंसिपल, कान्यकुब्ज इंटर कालेज,
,, बालकृष्णराव, आई. सी. एस., इंफर्मेशन डिपार्टमेंट, यू पी. गवर्नमेंट,
,, बैजनाथसिंह, एम. ए , बी टी , ठि०/ श्री श्रीधरसिंह, जुबली इंटरमीडियट कालेज,

श्रीमती मनीबाई शाह, युनिटी लाज,
श्रीयुत माधवशरण, ५१८ नरही,
,, वासुदेवशरण अग्रवाल, एम, ए., अजायबघर,
,, विजयबहादुर रायजादा, रिटायर्ड एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिश्नर, बारूदखाना, गोलागंज,
,, विद्यासागर भटनागर, मौसमबाग, सीतापुर रोड,
,, शंकरदयाल शर्मा, १०१ महमूदाबाद होस्टल,
,, श्रीधरसिंह, एम. ए , गवर्नमेंट जुबिली इंटरमीडियट कालेज,
,, राय साहब श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम. ए (लंदन), आर्यनगर,
,, राजराजा, राय बहादुर, डाक्टर श्यामबिहारी मिश्र, एम. ए , १०५ गोलागंज,
,, रायबहादुर शुकदेव बिहारी मिश्र, गोलागंज,

श्रीयुत सूर्यकांत त्रिपाठी, 'निराला', नारियलवाली गली, हाथीखाना,
,, हरिश्चन्द्र, आई. सी. एस., सेक्रेटरी टु द गवर्नमेंट युनाइटेड प्राविन्स [illegible]

योग-२६

सहारनपुर

श्रीयुत [illegible] विद्यालंकार उपाध्याय, गुरुकुल [illegible], जिला,

योग-१

सीतापुर (अवध)

श्रीयुत अनिरुद्धसिंह [illegible],
कन्हैयालाल मेहरा, एम. ए., एल एल. बी., वकील, [illegible]
,, कृष्णबिहारी मिश्र, गंधोली, सिधौली,
,, गजाधर प्रसाद मेहरोत्रा, कोठी पांडे बिसवाँ, जिला,
,, [illegible] प्रसाद शर्मा, हिंदी साहित्य सभा [illegible]
वैद्य मधुसूदन दीक्षित, शास्त्री, मृत्युंजय आयुर्वेदालय,
,, ठाकुर रामसिंह तालुकेदार,
,, राजा सूरजबख्शसिंह आनरेरी मुंसिफ व मजिस्ट्रेट, [illegible]
[illegible]
,, सोमदत्त दत्त शुक्ल,

हाथरस

श्रीयुत रायबहादुर चिरंजीलाल बागला, रईस, म्युनिसिपल कमिश्नर,

योग—१

सिंध

(सभासदों की संख्या २)

सक्खर

श्रीयुत स्वामी हरिनामदास उदासीन, श्री साधुबेला तीर्थ,

योग—१

हैदराबाद

श्रीयुत टोपनलाल शर्मा, वैद्यरत्न, मुखी की गली,

योग—१

हैदराबाद (दक्षिण)

(सभासदों की संख्या ४)

उस्मानाबाद

श्रीयुत मोतीलाल हीराचंद गांधी, मुकाम पोस्ट,

योग—१

सिकंदराबाद

श्रीयुत चि० म० वीरभद्रशास्त्री तैलंग, ४२६८ सजनलाल स्ट्रीट,

योग—१

हैदराबाद

श्रीयुत राजा बहादुर विश्वेश्वरनाथ, जज हाईकोर्ट,

" सत्यनारायण लोया, मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय, ७७५ रेजिडेंसी बाज़ार,

योग—२

विदेश

(सभासदों की संख्या, ९)

United States of America

संयुक्त राज्य अमेरिका

Dr. Anand K. Coomaraswamy D. Sc. (London),
Keeper of the Indian section,
Museum of fine arts, Boston.

[illegible] M. [illegible]sinclair, Esq.,
Oriental Institute, University [illegible] Hawaii,
Honolulu, Ha[illegible]

योग–२

एशिया

Arabia (Persian Gulf)

अरब (फारस की खाड़ी)

श्री० विश्राम जे० पटेल,
मस्केत,

योग–१

यूरप Europe

इंगलैंड England

Revd. E. Greaves,
No. 1 The L[illegible]s
Hornyold Road, [illegible]

Dr. G. A. Grierson, Ph. D., K. C. S. I.
Rathfarnham [illegible]

Revd. [illegible]
[illegible]
[illegible]

T Graham Baily, Esq ,
236 Nethor street,
London No 3

योग–४

पोलैंड Poland

Stefen stasiack,
Prof at the University
L Wow

योग–१

यूरेशिया Urasia

यू० एस० एस० आर० रूस, U. S. S. R Russia,

Prof. A Barranikoff,
Blochiva st , IF/log 6,
Leningrad

योग–१

९६ में सं० ९७ के लिये चुने गए सभासदों की नामावली

श्रीयुत अक्षरसिंह मजिस्ट्रेट, द्वितीय श्रेणी, बिलासपुर स्टेट, पंजाब ।
" अग्निमुनिमल्ल जी, एम. ए , एल–एल. बी., राजाबाजार, पडरौना, जिला गोरखपुर ।
" आमोदकुमार वर्मा, चौखंभा, बनारस ।
" उमराव तिवारी, हरसू ब्रह्मधाम, पोस्ट चैनपुर, जिला शाहाबाद ।
" रेवरेंड एस.जे. सी. फुल्के, संत मेरीस कालेज, कुरसियांग, बंगाल ।
" कल्पनाथ सहाय, अध्यापक, मेस्टन हाई स्कूल, रामनगर, बनारसराज्य ।
" चैतन्यप्रकाश जी विद्यार्थी, खादी भंडार, मेरठ ।
" त्रिगुणानंद मिश्र, ग्राम–बकुची, पोस्ट-सतरावँ, जि० गोरखपुर ।
" डाक्टर दामोदर लालजी, पी–एच. डी., बी. एड , गौतमगली, उदयपुर ।
" देवीप्रसाद मालवीय, अलीनगर, गोरखपुर ।

T Graham Baily, Esq ,
236 Nothor street,
London No 3

योग—४

पोलैंड Poland

Stefon stasiack,
Prof at the University,
L Wow

योग—१

यूरेशिया Urasia

यू० एस० एस० आर० रूस, U. S. S. R Russia,

Prof. A Barranikoff,
Blochiva st , IF/log 6,
Leningrad

योग—१

९६ में सं० ९७ के लिये चुने गए सभासदों की नामावली

श्रीयुत अक्षरसिंह मजिस्ट्रेट, द्वितीय श्रेणी, बिलासपुर स्टेट, पंजाब ।

" अत्रिमुनिमल्ल जी, एम. ए., एल-एल. बी., राजाबाजार, पड़रौना, जिला गोरखपुर ।

" आमोदकुमार वर्मा, चौखंभा, बनारस ।

" उमराव तिवारी, हरमू ब्रह्मधाम, पोस्ट चैनपुर, जिला शाहाबाद ।

" रेवरेंड एम.जे सी. फुल्के, संत मेरीस कालेज, कुरसियांग, बंगाल ।

" कल्पनाथ सहाय, अध्यापक, मेस्टन हाई स्कूल, रामनगर, बनारसराज्य ।

" चैतन्यप्रकाश जी विद्यार्थी, खादी भंडार, मेरठ ।

" त्रिगुणानंद मिश्र, ग्राम-बकुची, पोस्ट-सतरावँ, जि० गोरखपुर ।

" डाक्टर दामोदर लालजी, पी-एच. डी., बी. एड , गौतमगली, उदयपुर ।

" देवीप्रसाद मालवीय, अलीनगर, गोरखपुर ।

श्रीयुत नथुनी मिश्र, सतूलाल पुस्तकालय, रांची।
" पन्नालाल माहेश्वरी, १६ डाक्रापट्टी, कलकत्ता।
" सेठ पृथ्वीनाथ, शांतिनिकेतन, मेरठ।
" प्रागध्वजसिंह, वकील, एम. एल. ए., देवरिया, गोरखपुर।
" पुरुषोत्तमदास बहेचरदास ब्रह्मभट्ट, शिक्षक, पडाला तालुका डमोई, स्कूल, (वाया मायागांव) बड़ोदा, राज्य, गुजरात।
" बलदेवप्रसाद मिश्र, रायबहादुर, एम. ए., डी. लिट्., दीवान रायगढ़, बी. एन. आर।
" बालमुकुंद शास्त्री, देवनागरी इंटर कालेज, मेरठ।
" महेशचन्द्र गर्ग, बी. ए., १५५ हिंदू होस्टल, प्रयाग।
" मुरारीलाल शर्मा, अध्यापक, सेवामंदिर, देवनागरी इंटर कालेज, मेरठ।
" राजेश्वरीदयाल सिन्हा, बी. ए., २१/६६ कमच्छा, बनारस।
" रामगोपाल रस्तोगी, हिंदी प्रचारिणी सभा, शिमला।
" रामदेवजी, टोडरमल रोड, न्यु दिल्ली।
" रामनारायण मिश्र, लेक्चरर, एग्रिकलचरल कालेज, धर्मपेठ, नागपुर।
" लाला रामप्रसाद, मैनेजर, दयानंद स्कूल, शाहाबाद।
" रामसुंदरसिंह, ग्राम-धनेच्छा, पो. दुर्गावती, शाहाबाद (बिहार)
" पं० रामस्वरूप, पोस्ट अजीमगंज, मुर्शिदाबाद।
" लक्ष्मण गोविंद लघाटे, नि० सरदार किबे साहब, सरस्वती निकेतन, इंदौर।
" लक्ष्मीनाथ मिश्र, एम. ए., एल. टी., एल-एल. बी., डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, ओरछा राज्य टीकमगढ़।
" शेषमणि त्रिपाठी, एम. ए., बी. टी., साहित्यरत्न, सब डिप्टी इंसपेक्टर अव स्कूल्स्, सुल्तांपुर।
" श्रीराम बी. ए., हिंदी रिपोर्टर, बिहार असेंबली, पटना।
" संग्रामप्रसाद, सब डिप्टी इंसपेक्टर अव स्कूल्स्, डिस्ट्रिक्टबोर्ड, कानपुर।
" सतगुरुप्रसाद चौधरी, बलदेवप्रसाद रोड, गोरखपुर।
" सत्याचरण एम. ए., बी. टी., हेडमास्टर, डी. ए. वी., हाई स्कूल, प्रयाग।
" सोहनलाल, मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय, कालबादेवी, बंबई।
" हरलालदास गुप्त, प्रिंसिपल, टी. एन. जे. कालेज, भागलपुर।
" हरिहरप्रसाद दुबे, एम. ए., एल-एल. बी., एडवोकेट, गोरखपुर।

योग–३६

परिशिष्ट ५

सभा से संबद्ध संस्थाएँ

१ नागरीप्रचारिणी सभा, बुलंदशहर।
२ नागरीप्रचारिणी सभा, भगवानपुररत्ती, पो० इमरीनपुर, जिला मुजफ्फरपुर
३ नागरीप्रचारिणी सभा, गोंडा।
४ सुहृद संघ, मुजफ्फरपुर।
५ बालक संघ, विष्णुपुर, पटना।
६ प्रसाद परिषद, काशी।
७ हिंदी साहित्य भवन, धरफरी, मुजफ्फरपुर।
८ स्वयंसेवक पुस्तकालय, छपरा।
९ साहित्यसदन, माँझी, सारन।
१० हिंदी प्रचार मंडल, आर्यकुमार सभा, बदायूँ।
११ मस्कत और मत्रा नागरीप्रचारिणी सभा, अरब, फारस की खाड़ी।
१२ हिंदी साहित्य सदन, सहसराम।
१३ हिंदी प्रचारिणी सभा, जम्मू।
१४ हिंदी हितैषिणी सभा, लालगंज, मुजफ्फरपुर।
१५ हिंदी प्रचारिणी सभा, लालगंज, मुजफ्फरपुर।

परिशिष्ट ६

१ वैशाख से ३० चैत्र तक २५) या अधिक दान देने वाले सज्जनों की नामावली

प्राप्ति तिथि	दाता	प्राप्त धन	प्रयोजन
१ वैशाख ९६	श्रीमान् महाराणा साहेब भूपालसिंह बहादुर, के. सी आई. ई., जी. सी. एस. आई., उदयपुर नरेश	२०००)	साधारण व्यय
६ " "	श्रीक्षेत्रपाल शर्मा, मथुरा	१००)	स्थायी कोश
१४ " "	श्री देवनाथ पुरोहित, उदयपुर	१००)	"
१९ " "	श्री प० मनोहरलाल जुत्शी, प्रयाग	१००)	"
६ ज्येष्ठ "	श्री लाला रामरतन गुप्ता, कानपुर	१००)	"
१८ " "	श्री वीरेंद्र केशव साहित्य परिषद, ओड़छा	१०००)	साधारण व्यय
२० " "	श्री लालचंद सेठी, राय बहादुर, वाणिज्यभूषण, उज्जैन	१०१)	स्थायी कोश
२२ " "	श्री राय कृष्णदासजी, काशी	१८७॥)	कलाभवन
२३ " "	श्री रामभरोसे तिवारी, इंदौर	१०१)	स्थायी कोश
" " "	श्री महाराजा महारावत सर रामसिंह बहादुर, के सी एस. आई., प्रतापगढ़, राजपूताना	१००)	"
१० आषाढ़ "	श्री मदनमोहन जैन, उज्जैन	१००)	"
१२ " "	श्रीमती पूर्णिमा चादमल, लखनऊ	१००)	"
१३ " "	श्री कुमार रणजयसिंह, अमेठी राज्य, सुलतानपुर	१००)	"

प्राप्ति-तिथि	दाता	प्राप्त धन	प्रयोजन
१६ आषाढ़ ९६	श्री मुरारीलाल केडिया, काशी	२५०)	भवन-निर्माण
४ श्रावण "	" " "	१००)	"
५ भाद्रपद "	" " "	५०)	"
५ आश्विन "	" " "	५०)	"
९ मार्गशीर्ष "	" " "	७५)	श्रीरामप्रसाद समादरकोष
२७ पौष "	" " "	५०)	भवन-निर्माण
३ श्रावण "	श्री राय बहादुर हरिप्रसाद, नालंद, अजमेर	१००)	स्थायी कोश
१५ श्रावण ९६	श्री व्रजरत्नदासजी, बी. ए एल-एल. बी. वकील, काशी	७५)	कवियों और लेखकों का वृत्तसंग्रह
१७ " "	श्री स्पेशल मैनेजर, कोर्ट अव वार्डस्, गाजीपुर	३००)	कलाभवन
२२ " "	श्री रायसाहब डा० भवानी-शंकर याज्ञिक, नैनीताल	१०१)	स्थायी कोश
३१ " "	श्रीमती कुसुमकुमारी शाह, लखनऊ	१००)	कला-भवन
५ भाद्रपद "	श्री कुंवर तेजसिंह मेहता, उदयपुर	१००)	स्थायी कोश
१४ " "	श्री हरिहरनाथ टंडन, एम.ए., आगरा	१००)	"
२० भाद्रपद "	श्री विष्णुदास वासिल, कलकत्ता	१००)	"
२६ " "	श्री छोटेलाल गयाप्रसाद ट्रस्ट, कानपुर	३६)	साधारण व्यय
८ आश्विन "	श्री शिवप्रसाद गुप्त, काशी	२५)	कला-भवन
१८ " "	श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, गोरखपुर	१०१)	"
२३ " "	श्री त्रिभुवनप्रसाद शिवगोविंद, छपरा	१००)	स्थायी कोश
२६ " "	श्रीमती सौदामिनीदेवी, रामहाट (बंगाल)	२५)	कला-भवन

प्राप्ति तिथि	दाता	प्राप्त-धन	प्रयोजन
२७ आश्विन ९६	श्री गोविंद मालवीय, एम. ए., एल-एल. बी., काशी	१००)	स्थायी कोश
१३ कार्तिक "	श्री बीसूलाल, एम-ए., एल-एल बी., एडवोकेट, अजमेर	१००)	"
४ मार्गशीर्ष	श्री महाराजा आनंदराव पंवार, धार स्टेट	१००)	"
९ " "	श्री श्रीप्रकाशजी, काशी	२५)	श्रीरामप्रसाद समादर कोश
" " "	श्री किशोरीरमण प्रसादजी, काशी	२५)	"
" " "	श्री ब्रजमोहनदास केजरीवाल, काशी	२५)	"
२३ " "	श्री कृष्णराव पूर्णचंद माडलिक, धार राज्य	१००)	स्थायी कोश
२५ " "	श्रीमान् महाराजा भरतसिंह, मुल्थान, (मध्यभारत)	१००)	"
८ पौष "	श्री हरिप्रसादवर्मा, मुकामाघाट	१००)	"
१० " "	श्री सर चुन्नीलालजी मेहता, के. सी. एस. आई., बंबई	१००)	नागरी-प्रचार
११ " "	श्री केदारनाथ सेठ शास्त्री, कलकत्ता	१००)	स्थायी कोश
२५ " "	म्युनिसिपलबोर्ड बनारस,	२७०)	पुस्तकालय
१५ चैत्र "	" [३०) मासिक] " "	६०)	"
२७ पौष ९६	श्री प० रामधन शर्मा, एम.ए., एम,ओ. एल., शास्त्री, साहित्याचार्य, दिल्ली	१००)	स्थायी कोश
" " "	श्री लाला ज्ञानचंद आर्य, नई दिल्ली	१००)	"
१६ माघ "	श्री प० रमेशदत्त पांडे, बी.ए., काशी	१००)	"
२३ " "	श्री सेठ रामेश्वरलालजी, कोठी विश्वंभर लालजी, गोरखपुर	२५)	नागरी-प्रचार

प्राप्ति-तिथि	दाता	प्राप्त-धन	प्रयोजन
२८ माघ ९६ इस वर्ष चार किश्तों में	श्री युक्तप्रांतीय सरकार	१०००)	कलाभवन
” ”	” ” ”	१०००)	पुस्तकालय
” ”	” ” ”	२०००)	हस्तलिखित पुस्तकों की खोज
३ फाल्गुन	श्री बनारसीप्रसाद सारस्वत, काशी	१००)	स्थायी कोश
४ ” ”	श्री ज्योतिभूषण गुप्त, काशी	२५)	कलाभवन
५ ” ”	श्री लाला बनवारी लालजी, दिल्ली	१०१)	स्थायी कोश
१० ” ”	श्री नारायणदत्त, नई दिल्ली	१००)	”
१४ ” ”	श्री हंसराजगुप्त, एम. ए., एल-एल. बी., दिल्ली	१००)	”
१७ ” ”	श्री श्रीनाथ शाह, काशी	२५)	कलाभवन
” ” ”	श्री गोपीकृष्ण कानोडिया, कलकत्ता	२५)	श्री रामप्रसाद समादर कोश
४ चैत्र ”	श्री श्रीशचंद शर्मा, काशी	१००)	स्थायी कोश
५ ” ”	श्री सेठ रामगोपाल आर्य, आजमगढ़	१००)	”
१४ ” ”	श्री जगन्नाथ झुन्झनू वाला, आनरेरी मजिस्ट्रेट, रानीगंज	१००)	विशेष सहायता
१५ ” ”	श्री किशोरीरमण प्रसादजी, काशी	१००)	स्थायी कोश
१८ ” ”	श्री नेहपालसिंह, आई ई. एस., प्रयाग	१००)	”
२० ” ”	श्री राधेकृष्ण दासजी, काशी	१००)	रत्नाकर निधि
२३ ” ”	श्री लाला देशबधु गुप्त, एम. एल. ए., दिल्ली	१००)	स्थायी कोश
२६ ” ”	श्री लाला रघुबीरसिंह बी ए., दिल्ली	१००)	”
” ” ”	श्री बाबू विश्वनाथप्रसाद, काशी	१००)	”
२९ ” ”	श्री राय भगवतीप्रसाद, काशी	२५)	कला भवन

कुल ८५२८॥)

परिशिष्ट ७

काशी नागरीप्रचारिणी सभा का सं० १९९६ के आय व्यय का ब्योरा

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
गत वर्ष की बचत	४९७०।≈)५				
हिंदी पुस्तकों की खोज, यु० प्रा०	२०००)		हिंदी पुस्तकों की खोज,यु० प्रा०	२१०७≡)	
साहित्य परिषद्	३६-)५½		साहित्य परिषद	४०)७½	
पदक तथा पुरस्कार	४५०॥≈)१०		पदक तथा पुरस्कार	२९३॥-)१०	
देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		१३१५॥-)	देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		१०१५)७½
बालाबक्स रा० चा० पु० मा०		४४०॥≈)॥।	बालाबक्स रा० चा० पु० मा०		२९५।≈)॥
सूर्यकुमारी पुस्तकमाला		२३१०॥≈)॥	सूर्यकुमारी पुस्तकमाला		१२७५॥=)।
पुस्तकालय	२४६१॥≡)३½		पुस्तकालय	३३८४)१½	
कलाभवन	१८०५॥।)१		पुस्तकालय-अमानत	१५५)	
सभासदों का चंदा	१५६७॥)		कलाभवन	३६०३॥≈)॥।	
पुस्तकों की बिक्री		६७६९)	छपाई तथा पारिश्रमिक		२८१८।-)८
सूरसागर		१५६≡)॥	कार्यालय का वेतन	२८८४॥)॥।	
रूपनिघंटु		८≈)॥।	सूरसागर		१२७।)
हरिश्चंद्र ग्रंथावली		१४२॥≡)	रूपनिघंटु		३५२)
नागरी प्रचार	२३३-)॥		नागरी प्रचार	८४४॥≡)	

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
फुटकर	१६८१॥≈)७	
विशेष आय	८२१।≈)७½	
स्थायी कोश	४२७७≈)	
संकेत लिपि विद्यालय	११९)१	
जमानत	१५३॥)	
प्राविडेंट फंड	२९४।-)२	
मालती माला		३०॥।-)॥
भवन निर्माण कोश	५०२≈)॥।	
देव पुरस्कार ग्रंथावली		११३०)॥।
प्रतिनिधिमंडल यात्राव्यय	१०१)	
कवियों के चित्र तथा परिचय	७५)	
स्थायी ग्राहक		१३)
हरिऔध अभिनंदन	११)	
रामप्रसाद खमाटर कोष	२४२)	
	२२८८४॥≈)९½	१२:१८-)॥।
जोट	३६२०२॥।)६½	

व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
फुटकर	१०३॥≦)॥	
डाकव्यय	५५९॥≈)॥	
हिंदी पुस्तकों की खोज, दिल्ली	४)॥।	
स्थायी कोश	२९८६-)	
अमानत	३४५९।≦)=	
संकेतलिपि विद्यालय	१९७-)।	
मालती माला		२०२।-)
देव पुरस्कार ग्रंथावली		१२२१)।
भवन निर्माण कोश	९४९।॥=)४½	
प्रतिनिधिमंडल यात्राव्यय	२२२।≦)॥	
हरिऔध अभिनंदन	४।)॥	
	२३१३९॥≦)१	७३१५)३½
	३०४५४॥≦)४½	
बचत	५७४७॥-)२	
जोट	३६२०२॥।)६½	

वचत का व्योरा—

विवरण	रकम
रोकड़ सभा में	१६७≡)॥
इलाहाबाद बंक चलता खाता नं० १	९७३॥≠)८
,, ,, ,, ,, नं० २	२७४॥≡)८
,, ,, सेविंग बंक (प्रकाशन)	३।≡)
,, ,, ,, पुस्तकालय अमानत	७५१॥)॥
,, पोस्ट आफिस से० बंक (फुटकर)	१)१
,, ,, ,, कला भवन	२।-)११
,, ,, ,, पुस्तकालय	४६)॥।
,, ,, ,, स्थायी कोश	११०७-)।
,, ,, ,, संकेत लिपि विद्यालय	४६≠)१
,, ,, ,, भवन निर्माण कोश	३≠)॥।
,, ,, ,, ट्रे० चै० एंडाउमेंट ट्रस्ट फंड	५५९॥≠)
,, ,, ,, प्राविडेंट फंड	५२६।-)४
,, ,, ,, खोज	॥।-)४
सेंट्रल बंक देव-पुरस्कार ग्रंथावली	९॥≠)।
,, ,, जमानत	१३८॥।)
बनारस बंक जमानत	४३५॥।)१
,, ,, स्थायी कोश	७००)
जोड़	५७४७॥।-)२

जाँचा और सही पाया

राम बहोरी शुक्ल
प्रधान मंत्री

जीवन दास
आयव्यय निरीक्षक

परिशिष्ट ८

स्थायी निधियों का विवरण

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
१–देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला			
इंपीरियल बंक के ७ हिस्से	३५००)	१०३६२॥)	६३० (दोनों का)
,, ,, १४ हिस्से	१७५०)	१७५०)	
दाता–स्वर्गवासी मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ, जोधपुर। इसके व्याज से ऐतिहासिक पुस्तकें प्रकाशित की जाती है।			
२–बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१२०००)	७२५९≈)	४२०)
दाता–बारहट बालाबख्शजी, जयपुर। इसके व्याज से राजपूतों और चारणों की रची हुई डिंगल और पिंगल भाषा की पुस्तकें प्रकाशित की जाती है।			
३–जोधसिंह पुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१६००)	१५८०)८	५६)
दाता–स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह, उदयपुर। इसके व्याज से प्रति चौथे वर्ष सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के रचयिता को २००) पुरस्कार दिया जाता है।			
४–रत्नाकर पुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	३२००)	२२२३-)७	११२)
दाता–बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर, काशी। इसके व्याज से प्रति चौथे वर्ष सर्वोत्तम व्रज-			

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
भाषा काव्य के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।			
५–बटुकप्रसाद पुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता–राय बहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष सर्वोत्तम शिक्षाप्रद मौलिक नाटक या उपन्यास के लिये २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१७००)	१०१९≈)॥	५९॥)
६—डाक्टर छन्नूलालपुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता–पंडित रामनारायण मिश्र, बी०ए०, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष विज्ञान विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१६००)	१०४८)	५६)
७–बिड़लापुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता–राजा बलदेवदास बिड़ला। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष अध्यात्मतत्व, योगशास्त्र, सदाचार, नीति, मनोविज्ञान आदि विषयों के सर्वोत्तम ग्रंथ के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१६००)	१०२१≋)	५६)
८–सुधाकर पदक तथा ग्रीव्ज पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट सुधाकर पदक के दाता–बाबू गौरीशंकर प्रसाद एडवोकेट, काशी। इसके ब्याज	२००)	१४४॥–)	७)

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जाता है। ग्रीव्स पदक के दाता—पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०। इसके ब्याज से भी एक पदक प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है।			
९—द्विवेदी पदक गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय पंडित महावीर प्रसादजी द्विवेदी। इसके ब्याज से सर्वोत्तम हिंदी ग्रंथ के रचयिता को प्रति वर्ष स्वर्ण पदक दिया जाता है।	१६००)	११९०।)॥।	५६)
१०—शंभूरत्नस्मारक निधि गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय बाबू जयशंकर प्रसाद। इसके ब्याज से साहित्य-परिषद तथा गोष्ठी के अधिवेशन किए जाते हैं।	१३००)	९०४॥।≡)	४५॥)
११—शिवलाल मेहरोत्रा निधि गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता बाबू गंगाप्रसाद खत्री। इसके ब्याज से कलाभवन के लिये वस्तुएँ खरीदी जायँगी।	१००)	६१॥)	२॥)
१२—बलदेवदास पदक गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—बाबू ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल-एल० बी०, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जायगा।	१००)	९९≡)४	२॥)

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
१३–रा० ब० डा० हीरालाल स्वर्णपदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१०००)	१०॰१)	३५)
दाता–स्वर्गीय रा० ब० डा० हीरालाल। इसके ब्याज से प्रति दूसरे वर्ष एक स्वर्ण पदक, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र, इंडोलॉजी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध के रचयिता को दिया जायगा।			
१४–राधाकृष्णदास पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	९९≡)४	३॥)
दाता–बाबू शिवप्रसाद गुप्त। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जायगा।			
१५–गुलेरी पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥|-)॥|	३॥)
दाता–श्री जगद्धर शर्मा गुलेरी।			
१६–रेडिचे–पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥|-)१०	३॥)
फुटकर चंदे से			

नोट—निधि सं० ८ का रुपया इंपीरियल बैंक के हिस्सों में लगा है और शेष के स्टाक सर्टिफिकेट ट्रेजरर चैरिटेबल एंडाउमेंट फंड्स, युक्त प्रांत के पास जमा हैं।

परिशिष्ट १

युक्तप्रांतीय ट्रेजरर, चैरिटेब्ल् एंडाउमेंट्स के पास सभा की जो निधियाँ जमा हैं उनके संबंध में सरकारी विज्ञप्ति

United Provinces Government Gazette, Saturday, 13th, January, 1940.
(Vol LXII, No. II).

Education Department

Miscellaneous

5th January, 1940

In the Matter of the Nagri Pracharini Sabha Endowment Trust Fund, Benares.

No. 3966/XV-336-39 —Whereas application has been made to the Provincial Government of the United Provinces by the Secretary, Nagri Pracharini Sabha, Benares, that the funds consisting of the securities for money specified in the Schedule hereto appended of which the Sabha is the absolute owner, be vested, under the designation specified in the heading, in the Treasurer of Charitable Endowments for the territories subject to the said Provincial Government to be applied in Trust upon the terms contained in the scheme of administration of the said trust issued with the notification of this department no. 4139/XV-336-39 of this date, and whereas by notification no 98L/XV-336-1939, dated the 12th June, 1939, as subsequently ammended by notifications Nos 1574/XV-336, and 2273/XV-336-1939, dated respectively 13th July and 7th August, 1939, notice was given of the intention to vest the said property in the Treasurer of Charitable Endowments, United Provinces, and the term fixed by that notification for the presentation of any objections to the issue of the proposed vesting order has expired and no objections have been received.

It is hereby ordered under section 4, sub-section (1) of the Charitable Endowments Act, 1890 (VI of 1890), that the securities hereinafter specified be, and they hereby are, vested in the said Treasurer of Charitable Endowments upon the terms aforesaid

SCHEDULE

Particulars of securities vested in the Treasurer of Charitable Endowments, United Provinces.—

Number	Date	Per cent	Loan of	Amount
				Rs
1969	5 5 '23	3½	1865	1, 700
1655	25. 4. '29	3½	1900–01	1, 600
1335	1 8. '33	3½	1900–01	1, 600
1349	1. 1. '34	3½	1900-01	100
1358	17. 2 '34	3½	1900–01	1, 100
1359	17. 2. '34	3½	1900–01	1, 600
1360	17. 2 '34	3½	1900–01	200
1361	17 2. '34	3½	1900–01	2, 800
1362	11 3. '37	3½	1900–01	1, 000
SPC89A / 1900–01	28. 1 '38	3½	1900–01	400
SPC42A / 1900–01	20 5 '38	3½	1900–01	200
SPC52A / 1900–01	30 6 '38	3½	1900–01	1, 200
SPC68A / 1900–01	1 8. '38	3½	1900–01	100
SPC69A / 1900–01	4. 8 '38	3½	1900–01	400
SPC76A / 1900–01	16. 9 '38	3½	1900–01	1, 200
SPC77A / 1900–01	21 9. '38	3½	1900–01	1, 300
SPC91A / 1900–01	28. 11 '38	3½	1900–01	1, 000
SPC97A / 1900–01	6. 1. '39	3½	1900–01	400

Number	Date	Per cent	Loan of	Amount
SPC101A / 1900-01	10. 2. '39	3½	1900-01	200
SPC109A / 1900-01	15. 3. '39	3½	1900-01	700
SPC17A / 1900-01	12. 6. '39	3½	1900-01	100
SPC18A / 1900-01	12. 6. '39	3½	1900-01	800
874	18. 2. '25	3½	1900-01	12,000
			Total	32,000

Education Department
Miscellaneous

5th January, 1940.

In the Matter of the Nagri Pracharini Sabha Endowment Trust Fund, Benares.

No 1139/XV-336-39.—In continuation of the vesting order published with this department notification No 3966/XV-336-39 of this date and on the application and with the concurrence of the Nagri Pracharini Sabha, Benares, the following Scheme has, under section 5, sub-section (1) of the Charitable Endowments Act, 1890 (VI of 1890), been settled for the administration of the property of the said trust and under sub-section (3) of the said section of the said Act, it is hereby ordered that it shall come into force from the date of this notification.

Scheme

1. The Trust shall be called the Nagri Pracharini Sabha Endowment Trust Fund, Benares.

2. The Nagri Pracharini Sabha, Benares, which is a registered society under the Societies Registration Act, 1860 (XXI of 1860), shall administer the trust.

3. The Treasurer of Charitable Endowments, United Pro-

vinces shall remit the amount of interest on the vested funds belonging to the Trust to the Secretary, Nagri Pracharini Sabha, Benares, who shall credit the same in the name of the trust in a current account in the Savings Bank of the Post Office at Benares and shall draw money therefrom to give effect to the purposes of the trust.

4. The said Sabha shall spend the income of the trust on the purposes specified in Appendices A, B, C and D.

5. In order to augment the funds of the trust, the Sabha may accept donations with or without condition for the purposes specified in Appendices A, B, C and D or for other purposes provided that the acceptance of such donation shall not involve any change in the name, object or constitution of the said Sabha.

6. All donations received for the trust shall be vested in the Treasurer of Charitable Endowments, United Provinces, and the interest on the amount so vested shall be expended on the purposes of the trust as specified in Appendices A, B, C and D.

7. All savings out of the income from the vested funds of the trust, from whatever cause arising, shall be spent on the maintenance of office establishment.

8. The Secretary of the Nagri Pracharini Sabha, Benares, shall—

(a) In books to be kept by him for the purpose enter or cause to be entered full and true account of all money received and paid respectively on account of the trust,

(b) cause the books so kept to be audited annually by the Local Fund auditors, without paying any fee for any such audit, and

(c) on demand submit annually to such public servant as the Provincial Government may from time to time direct, a correct abstract of such accounts and such returns as to other matters relating to the administration of the trust, as the said Government may, from time to time, see fit to require.

APPENDIX. A

Prizes and Medals.

Serial number	Name of Prize or Medal	Amount of Endowment	Value of Prize or Medal	When to be awarded	Purpose
		Rs.	Rs		
1	Dr Heeralal Gold Medal	1,000	60	Every second year with effect from Samvat 1995	To be awarded to the author of the best original Hindi book or essay on Indology, Philology, Epigraphy, Palaeontology and Numismatics
2	Dwivedi Gold Medal	1,600	50	Every year with effect from Samvat 1996	To be awarded to the author of the best Hindi work on any subject in a year.
3	Birla Prize	1,600	200	Every fourth year with effect from Samvat 1997	To be awarded to the author of the best Hindi work on Theology, Yoga, Ethics, Civics, Psychology and other allied subjects.
4.	Radice Medal	100	12	Every fourth year with effect from Samvat 1997, along with Birla Prize	..

Serial number	Name of Prize or Medal	Amount of Endowment	Value of Prize or Medal	When to be awarded	Purpose
5.	Ratnakar Prize No. 1.	1,600	200	Every fourth year with affect from Samvat 1998	To be awarded to the author of the best original or edited work in Braj Bhasha
6.	Radha Krishna Das Medal	100	12	Every fourth year with effect from Samvat 1998, along with Ratnakar Prize No. 1	..
7.	Rai Bahadur Batuk Prasad Prize.	1,700	200	Every fourth year with effect from Samvat 1998.	To be awarded to the author of the best original and instructive Hindi drama or novel.
8.	Sudhakar Medal	100	12	Every fourth year with effect from Samvat 1998, along with Rai Bahadur Batuk Prasad Prize	...

num-ber	...me of Prize or Medal	Amount of Endowment	Value of Prize or Medal	When to be awarded	Purpose
9	Ratnakar Prize No. 2	Rs 1,600	Rs. 200		To be awarded to the author of the best original or best edited work in dialects of Hindi, other than Braj Bhasha, i e, Dingal, Rajasthani, Awadhi, etc.
10.	Baldevadas Medal	100	12	Every fourth year with effect from Samvat 1999, along with Ratnakar Prize no. 2.	...
11	Dr Chhannulal Prize	1,600	200	Every fourth year with effect from Samvat 2000	To be awarded to the author of the best Hindi work on a scientific subject.
12.	Greaves Medal	100	12	Every fourth year with effect from Samvat 2000, along with Dr. Chhannulal Prize	...

Serial number	Name of Prize or Medal	Amount of Endowment	Value of Prize or Medal	When to be awarded	Purpose
		Rs.	Rs		
13	Mehta Jodh-Singh Prize	1,600	200	Every fourth year with effect from Samvat 2005.	To be awarded to the author of the best Hindi work on a historical subject.
14.	Chandradhar Sharma Guleri Medal	100	12	Every fourth year with effect from Samvat 2005, along with Mehta Jodh Singh Prize	...
	Total	12,900	1,382		

APPENDIX B

Serial Number	Name of Fund	Amount of Endowment	Purpose
		Rs	
1.	Shambhu Ratna Smarak Nidhi.	1,300	The interest to be spent on organizing lectures, literary entertainments, etc.

APPENDIX C

Serial Number	Name of Fund	Amount of Endowment	Purpose
1.	Nagari Pracharini Sabha Permanent Fund	Rs. 5,800	The interest to be spent mainly on the maintenance of office establishment.

APPENDIX D

Serial Number	Name of Fund	Amount of Endowment	Purpose
1.	Nagari Pracharini Sabha Publication Fund	Rs 12,000	The interest to be spent on publishing books written by Rajputs and Charans in Dingal and Pingal dialects in memory of Barahat Bala Baksha of Jaipur, the donor

U P Government Gazette, Saturday 16th July 1910
Vol XII No XXVII

Education Department

Miscellaneous.

3rd July, 1910.

In the matter of the Nagari Pracharini Sabha Endowment Trust Fund, Benares.

No A 2399/XV-336-39—whereas an application has been made to the Provincial Government by the Secretary, Nagri Pracharini Sabha, Benares, being the person acting in the administration of the trust specified in the heading, that the addition of funds consisting of the securities of money specified in the schedule hereto appended, be vested under the designation of the said trust in the Treasurer of Charitable Endowments, United Provinces to be applied in trust upon the terms contained in Appendix C mentioned in paragraph 1 of the scheme of admimitration of the trust issued with this department notification no 4139/XV-336-39, dated the 5th January, 1910

It is hereby ordered under section 4, sub-section (1) of the Charitable Endowments Act, 1890 (VI of 1890), that the securities hereinbefore mentioned be, and they hereby are, vested in the said Treasurer of Charitable Endowments upon the terms aforesaid.

SCHEDULE

Particulars of securities vested in the Treasurer of Charitable Endowments, United Provinces

Number	Date	Per-cent	Loan of	Amount
SPC21A / 1900-01	3rd July, 1939	3½	1900-01	Rs. 300
SPC26A / 1900-01	10th July, 1939	3½	1900-01	200
SPC35A / 1900-01	4th August, 1939	3½	1900-01	300
SPC36A / 1900-01	14th August, 1939	3½	1900-01	200
SPC38A / 1900-01	13th Sept, 1939	3½	1900-01	400
SPC41A / 1900-01	6th Nov, 1939	3½	1900-01	300
SPC42A / 1900-01	30th Nov, 1939	3½	1900-01	200
SPC44A / 1900-01	18th Dec, 1939	3½	1900-01	300
SPC53A / 1900-01	10th January, 1940	3½	1900-01	200
SPC4A / 1900-01	13th May, 1940	3½	1900-01	1800
			Total	4200

परिशिष्ट १०

(क) काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रारंभ से सं० १९८३ तक के आय व्यय का ब्योरा

आय	धन	व्यय	धन
चंदा	४८४५७=)॥	वेतन आदि	३३८९२॥।≡)१
दान	९८३४॥=)॥।	प्रकाशन	२८७७१२)४½
प्रकाशन	२९९८९७)३½	हिंदी पुस्तकों की खोज	२३३८६≈)२
हिंदी पुस्तकों की खोज	२६७९१॥)	पुस्तकालय	१६११३॥=)९
भवन निर्माण	४४९९३।≈)५	भवन निर्माण	४०४९७।≡)८
पुस्तकालय	१५६९६॥=)॥	पुरस्कार आदि	२८३२=)
पुरस्कार	२८२८॥।≡)।	निधियाँ	२१८०९॥।≡)७
फुटकर	१५२८५॥।≈)७½	डाकव्यय	१३०७०॥≡)
		फुटकर	२२२८९॥≡)४½
			४६१६०४॥।≈)
		बचत	२१८०≡)४
	४६३७८५=)४		४६३७८५=)४

(ख) काशी नागरी प्रचारिणी सभा के सं० १९८४ से १९९६ तक के आय-व्यय का ब्योरा

आय के खाते	धन	व्यय के खाते	धन
बचत	२१८०≡)४	कार्यालय के कार्यकर्ताओं का वेतन	२५८२५।≡)
सभासदों का चंदा	१८६५७-)१०	टाकव्यय	७८५४।।।=)
हिंदी पुस्तकों की खोज, यु० प्रा०	२६५०२।≡)६	हिंदी पुस्तकों की खोज, यु० प्रा०	२७६०४।।।)२
पुस्तकालय	१४८५०।।।≡)१½	पुस्तकालय	२११९२=)
पदक तथा पुरस्कार	११५११।।।≡)८	पदक तथा पुरस्कार	११२२६।)४
नागरी प्रचार	९५५≡)६	नागरी प्रचार	५७२५।।-)६½
फुटकर	८८२६।।-)७	भवन निर्माण	५०८८८।।।-)२½
स्थायी कोष	३६४६३।।।=)६	फुटकर	७९१८।।)१
उत्सव	५१४।।)	प्रकाशन तथा फुटकर छपाई	५१६४२।।।-)९
पुस्तकालय जमानत	८७३)	देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०	७१५८।।।=)६½
जमानत	१५८८३।।)	सूर्य कुमारी पुस्तक माला	१०४१३।≡)१०
प्रकाशन (कोश, सूरसागर, द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, भारतेंदु ग्रंथावली, रूपनिघंटु आदि)	१२३५१०।।≡)१०	बालाबक्ष रा० चा० पु० माला	५२७०४।।।=)१०
देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०	१३३२५≡)९	पुस्तकालय-जमानत	६५१)
सूर्यकुमारी पुस्तक माला	१२३२५।।।-)४	जमानत	१७७२५=)९½
		उत्सव	९२६।≡)९

आय के खाते	धन	व्यय के खाते	धन
बालावक्ष रा० चा० पुस्तकमाला	६५५०)९	कलाभवन	११०२४≡)
कलाभवन	१०३२४॥≡)७	साहित्य परिषद	१३८६=)१०
भवन निर्माण	१७८२७)९	स्थायी कोष	८२५०|||=)६
साहित्य परिषद	१२०९|||≡)५	दक्षिण भारतीय हिंदी प्रेमी दल का स्वागत	२९|||-)६
विशेष आय	२९८५-)६	हिंदी पुस्तकों की खोज, दिल्ली	७३१)२
जमानत	५७४॥)३	हिंदी संकेत लिपि विद्यालय	८४१=)६
हिंदी संकेत लिपि विद्यालय	८५८॥)१	देवपुरस्कार ग्रंथावली	१२२१)२
प्राविडेंट फंड	५५६|||=)५	प्रतिनिधिमंडल यात्राव्यय	२२१≡)६
देवपुरस्कार ग्रंथावली	११३०)९		२२२०७८|||)४
प्रतिनिधिमंडल यात्राव्यय	१०१)		
कवियों के चित्र तथा परिचय	८०)	बचत	[illegible]
रामप्रसाद समादर कोष	२४२)		[illegible]
	[illegible]		

उक्त ब्योरों के अनुसार ८७ वर्षों में सभा की कुल आय ८० [illegible] रही और कुल ७९४६८३॥=)४ व्यय हुआ।

रामनारायण [illegible]

सभा के उद्देश्य

(१) देश विदेश में हिंदी भाषा और नागरी लिपि का प्रचार करना तथा उसे उचित अधिकार दिलाने के लिये उद्योग करना।

(२) हिंदी भाषा की उन्नति करना, आवश्यक विषयों के ग्रंथों से उसे अलंकृत करना और उसके प्राचीन भाडार की रक्षा करना।

(३) हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने का उद्योग करना।

(४) ऐसा संग्रहालय खोलना जिसके द्वारा हिंदी भाषा, नागरी लिपि तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा और उन्नति हो।

(५) अन्य ऐसे कार्य करना जो सभा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये उपयुक्त और आवश्यक हो।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की

कुछ नवीन प्रकाशित पुस्तकें

बाल-मनोविज्ञान

(लेखक—श्री लालजीराम शुक्ल, एम. ए, बी टी)

यह हिंदी भाषा की अपने विषय की एक मात्र पुस्तक है। बच्चों के मन की स्थिति का अध्ययन कर इच्छानुसार उनका भविष्य किस प्रकार निर्माण किया जा सकता है इसका विशद विवेचन विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक में बहुत ही सरल ढंग से किया है। पुस्तक भारतीय वातावरण के सर्वथा उपयुक्त है। पृ० सं० २५० से ऊपर, मू० ?।)

मध्य प्रदेश का इतिहास

(लेखक—रा. ब. डा. हीरालाल जी, बी. ए.)

प्रस्तुत पुस्तक विद्वान् लेखक का आजीवन तपस्या का फल है। पुस्तक में मध्य प्रदेश के प्राचीन और अर्वाचीन भागों का भौगोलिक विवेचन और प्रागैतिहासिक काल से लेकर अँगरेजी सरकार की स्थापना तक के इतिहास का वर्णन अत्यंत रोचक ढंग से हुआ है। साथ में आधुनिक मध्य प्रदेश और महाराज कर्णदेव के राज्य-विस्तार के एक एक मानचित्र भी हैं। रायल अठ-पेजी आकार की, अच्छे कागज पर छपी, १०६ पृष्ठों की पुस्तक का मू० १॥)

भारतीय मूर्तिकला

(लेखक—श्री राय कृष्णदास)

इस पुस्तक में मोहनजोदड़ो के समय से लेकर आजतक की भारतीय मूर्तिकला का सरल भाषा में वर्णन है। साथ ही इस कला के सौंदर्य की विशेषताएँ एवं तात्त्विक व्याख्या है। यह अपने ढंग की हिंदी ही में नहीं समस्त भारतीय भाषाओं में पहली और सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। पृ० सं० २३९+१३, ३९ चित्र तथा मैटर के साथ अनेक रेखा आकृतियाँ। मू० १) विशिष्ट संस्करण १।)

भारत की चित्रकला

(लेखक—श्री राय कृष्णदास)

इसमें भारत की चित्रकला का अथ से इति तक का इतिहास, सौंदर्य निरीक्षण एवं उसके मर्म की बातों का विवरण है। इसमें ग्रंथ रचयिता के ३० वर्ष के अपने गंभीर अध्ययन का सार है। उन्होंने भारतीय चित्रकला के इतिहास, विषयक कई महत्त्व पूर्ण नई बातों का उद्घाटन किया है। यह भी समस्त भारतीय भाषाओं में पहली पुस्तक है। पृ० सं० १८०+१६, चित्र सं० २७ (सादे) + १ (रंगीन), मैटर के साथ अनेक रेखा आकृतियाँ। मूल्य १) वि०सं० १।

सोवियत् भूमि

(लेखक—महापंडित राहुल सांकृत्यायन)

सोवियत् रूस के संबंध में इतनी सर्वांग पूर्ण पुस्तक हिंदी में ही नहीं बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी कदाचित् ही निकली हो। रूस की क्रांति और उसके आधुनिक उत्थान का क्रमिक इतिहास, सोवियत् विधान, महा सोवियत् का चुनाव तथा सोवियत् नेता, सोवियत् स्त्री पुरुष, लेखक, फिल्म, कोल्खोज़ (सरकारी कृषि) आदि का सामाजिक तथा राजनीतिक दृष्टि से विस्तृत विवेचन किया गया है। साथ ही यात्रा संबंधी आवश्यक सूचनाएँ भी दी हुई हैं और अफगानिस्तान का भी अच्छा वर्णन है। इसपर लेखक को सेकसरिया पुरस्कार प्राप्त हुआ है। पृ० सं० ८०० से ऊपर, चित्र सं० ११६ तथा मानचित्र २। मू० केवल ५)।

प्रेमसागर

(संपादक—बाबू ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल एल बी०)

लल्लूलाल जी के लिखे मूल प्रेमसागर की १८१० ई० में प्रकाशित, तथा सन् १८४२ ई० की छपी एक दूसरी प्रति से इसका संपादन किया गया है। भूमिका में लल्लूलाल जी का जीवनचरित्र और हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास भी दिया गया है। लगभग पौने पाँच सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १॥)।

मालती माला

(लेखिका—श्रीमती मालती शर्मा)

यह लेखिका की लिखी १५ भाव पूर्ण कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी मनुष्य जीवन तथा समाज की किसी न किसी जटिल समस्या को लेकर आरंभ होती है और उसके विकसित रूप को चलती हुई भाषा में चित्रित करती है। पृ० सं० लगभग २००। मू० केवल ॥)

राष्ट्र की भाषा संबंधी उत्तम पुस्तकें—

बिहार में हिंदुस्तानी (श्री चंद्रबली पांडे, एम० ए०)		।)
कचहरी की भाषा और लिपि	,,	॥।)
भाषा का प्रश्न	,,	॥।)
मुल्क की जबान और फाजिल मुसलमान	,,	।=)
मुगल बादशाहों की हिंदी	,,	(छप रही है)
हिंदुस्तानी का उद्गम (श्री रामचंद्र शुक्ल)		≠)
हिंदी बनाम उर्दू (श्री वेंकटेशनारायण तिवारी)		अमूल्य

प्रधान मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

मुद्रक—बी. के शास्त्री, ज्योतिष प्रकाश प्रेस; विश्वेश्वरगंज, काशी।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

(स्थापित सं० १९५० वि०)



अड़तालीसवाँ वार्षिक विवरण

सं० १९९७

हिंदी की संस्थाओं की संख्या जिनकी नामावली नागरी-प्रचारिणी पत्रिका ४५-४ में प्रकाशित हो चुकी है—

असम	३	बड़ोदा	२	सिंध	४
उत्कल	२	बिहार	१३	हैदराबाद	१
कश्मीर	२	मद्रास	७	दक्षिण अफ्रिका	१
दिल्ली	४	मध्यप्रांत	७	फारस की खाडी	१
पंजाब	७	मध्यभारत	६	ब्रह्मदेश	१
बंगाल	६	युक्तप्रांत	४०		
बंबई	१२	राजपूताना	८		
					१३०

भिन्न-भिन्न प्रांतों में 'हिंदी' पत्र की ग्राहक-संख्या

संयुक्त प्रांत	७८७	राजपूताना	३७
बिहार	६६	अजमेर	३
बंगाल	७	उदयपुर	१
ग्वालियर	२	जयपुर	५
ब्रह्म देश	१८	जोधपुर	३
मद्रास	१४	बीकानेर	८७
मैसूर	२	पंजाब	१६१
बंबई	१२९	दिल्ली	११
सिंध	१	कास्मीर	२५
मध्यभारत	७	मध्यप्रांत	९
हैदराबाद (दक्षिण)	२४		१३९९

विषय-सूची

वार्षिक विवरण ... १-५९

१—सभा के अधिवेशन १
२—सभासद १
३—पदाधिकारी तथा प्रबंध-समिति के सदस्य २
४—आर्यभाषा पुस्तकालय ४
५—हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज . ७
६—भारत-कलाभवन १२
७—नागरीप्रचारिणी पत्रिका १५
८—नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला १८
९—मनोरंजन पुस्तकमाला १८
१०—प्रकीर्णक पुस्तकमाला १९
११—सूर्यकुमारी पुस्तकमाला १९
१२—देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला ... २०
१३—बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला . २१
१४—देव पुरस्कार ग्रंथावली २२
१५—श्री महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली .. २२
१६—श्रीमती रुक्मिणी तिवारी पुस्तकमाला २२
१७—साहित्य-गोष्ठी २३
१८—पुरस्कार और पदक २४
१९—संकेत-लिपि विद्यालय .. २७
२०—संबद्ध संस्थाएँ . .. २७
२१—स्थायी कोश ३०
२२—आय-व्यय . .. ३१
२३—हिंदी-प्रचार ३२
२४—वार्षिकोत्सव ३३
२५—अर्द्धशताब्दी ३३

	पृष्ठ
२६—हिंदी (मासिक पत्रिका)	३४
२७—हिंदी की प्रगति	३४-५७
रेडियो, वैज्ञानिक शब्द उपसमिति, जनगणना, प्रांतीय सरकारें, रियासतें, राष्ट्रभाषा और उसका स्वरूप, साहित्य, हिंदी संस्थाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ, प्रकाशित पुस्तकों की संख्या, परीक्षार्थियों की संख्या	
२८—शोक-प्रकाश	५८
२९—धन्यवाद ..	५८
परिशिष्ट	
१—पुस्तकदाताओं की नामावली	६०
२—पुस्तकालय में आनेवाली पत्र-पत्रिकाओं की सूची .	६४
३—खोज विभाग द्वारा प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों की सूची .	६८
४—सभासदों की सूची .	७६-१५५
५—सभा के संरक्षक	१५६
६—सभा के संस्थापक ..	१५६
७—सभा से संबद्ध संस्थाएँ ...	१५७
८—स्थायी निधियों का विवरण	१५८
९—सं० १९९७ में सभा को २५) या अधिक दान देनेवाले सज्जनों की नामावली ..	१६२
१०—सं० १९९७ के आयव्यय का लेखा .. .	१६५
११—सं० १९९७ तक सभा के खातों का ब्योरा .	१६८
१२—ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, यू० पी०, की विज्ञप्ति	१६९
१३—ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, यू० पी०, के पास जमा किया हुआ सभा का धन .. .	१७०
१४—इंपीरियल बैंक के शेयर	१७१
१५—स्थायी कोष में जमा धन	१७२
१६—संवत् १९९७ के अंत में प्रांतक्रम से प्रत्येक प्रांत में सभा के सभासदों की संख्या	१७२

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

का

अड़तालीसवाँ वार्षिक विवरण

सभा के अधिवेशन

भगवान् की असीम कृपा से नागरीप्रचारिणी सभा, काशी का यह अड़तालीसवाँ वर्ष पूर्ण हुआ। इस वर्ष साधारण सभा के १० और प्रबंध-समिति के १२ अधिवेशन हुए। साधारण सभा की सामान्य उपस्थिति ११ ६ और प्रबंध-समिति की १०·७५ रही।

सभासद

गत वर्ष सभा के सभासद ८०६ थे। इस वर्ष ३९१ नए सभासद बने। किंतु ८ सभासदों का देहान्त हो गया और ७ ने त्यागपत्र दिया। नियम ३१ के अनुसार शुल्क न देने से ४२ और निःशुल्क सूची के दोहराने पर ८ सभासद पृथक् हुए, जिससे वर्ष के अंत में सभासदों की कुल संख्या १०३२ रही। इनमें १८ विशिष्ट, १२६ स्थायी, ४८ मान्य, ८१८ साधारण और २२ नि.शुल्क रहे। इस वर्ष महिला सभासदों की संख्या ४७ रही।

गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष कुल २२६ सभासदों की वृद्धि हुई। पिछले कुछ वर्षों पर दृष्टि रखते हुए यह वृद्धि कुछ आशाजनक अवश्य है, किंतु यदि इस बात पर विचार किया जाय कि हिंदी भारतवर्ष में सबसे अधिक लोगों की मातृभाषा है और यह सभा हिंदी की सबसे पुरानी और सबसे अधिक सेवा करनेवाली सर्वभारतीय संस्था है तो इसके सभासदों की यह अल्प संख्या नहीं के बराबर है।

पृष्ठ

२६—हिंदी (मासिक पत्रिका) ३४

२७—हिंदी की प्रगति ३४-५७

रेडियो, वैज्ञानिक शब्द उपसमिति, जनगणना, प्रांतीय सरकारें, रियासतें, राष्ट्रभाषा और उसका स्वरूप, साहित्य, हिंदी संस्थाएँ, पत्र पत्रिकाएँ, प्रकाशित पुस्तकों की संख्या, परीक्षार्थियों की संख्या

२८—शोक-प्रकाश ५८

२९—धन्यवाद ५८

परिशिष्ट

१—पुस्तकदाताओं की नामावली .. . ६०

२—पुस्तकालय में आनेवाली पत्र-पत्रिकाओं की सूची .. ६४

३—खोज विभाग द्वारा प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों की सूची . ६८

४—सभासदों की सूची . ७६-१५५

५—सभा के संरक्षक १५६

६—सभा के संस्थापक . .. १५६

७—सभा से संबद्ध संस्थाएँ ... १५७

८—स्थायी निधियों का विवरण १५८

९—सं० १९९७ में सभा को २५) या अधिक दान देनेवाले सज्जनों की नामावली १६२

१०—सं० १९९७ के आयव्यय का लेखा .. . १६५

११—सं० १९९७ तक सभा के खातों का ब्योरा . १६८

१२—ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, यू० पी०, की विज्ञप्ति . १६९

१३—ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, यू० पी०, के पास जमा किया हुआ सभा का धन १७०

१४—इंपीरियल बैंक के शेयर . १७१

१५—स्थायी कोष में जमा धन . १७२

१६—संवत् १९९७ के अंत में प्रांतक्रम से प्रत्येक प्रांत में सभा के सभासदों की संख्या १७२

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

का

अड़तालीसवाँ वार्षिक विवरण

सभा के अधिवेशन

भगवान् की असीम कृपा से नागरीप्रचारिणी सभा, काशी का यह अड़तालीसवाँ वर्ष पूर्ण हुआ। इस वर्ष साधारण सभा के १० और प्रबंध-समिति के १२ अधिवेशन हुए। साधारण सभा की सामान्य उपस्थिति ११·६ और प्रबंध-समिति की १०·७५ रही।

सभासद

गत वर्ष सभा के सभासद ८०६ थे। इस वर्ष ३९१ नए सभासद बने। किंतु ८ सभासदों का देहांत हो गया और ७ ने त्यागपत्र दिया। नियम ३१ के अनुसार शुल्क न देने से ४२ और निःशुल्क सूची के दोहराने पर ८ सभासद पृथक् हुए, जिससे वर्ष के अंत में सभासदों की कुल संख्या १०३२ रही। इनमें १८ विशिष्ट, १२६ स्थायी, ४८ मान्य, ८१८ साधारण और २२ निःशुल्क रहे। इस वर्ष महिला सभासदों की संख्या ४७ रही।

गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष कुल २२६ सभासदों की वृद्धि हुई। पिछले कुछ वर्षों पर दृष्टि रखते हुए यह वृद्धि कुछ आशाजनक अवश्य है, किंतु यदि इस बात पर विचार किया जाय कि हिंदी भारतवर्ष में सबसे अधिक लोगों की मातृभाषा है और यह सभा हिंदी की सबसे पुरानी और सबसे अधिक सेवा करनेवाली सर्वभारतीय संस्था है तो इसके सभासदों की यह अल्प संख्या नहीं के बराबर है।

कुछ सभासदों ने इस कमी को पूर्ण करना आरंभ कर दिया है, जिनमें बीकानेर के श्री रामलौटनप्रसाद का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके प्रयत्न से बीकानेर में इस समय ९४ सभासद हो गए हैं। इसके लिये सभा उन्हें धन्यवाद देती है। काशी के बाद अब सभा के सभासदों की सबसे अधिक संख्या बीकानेर में ही है। इससे बीकानेर की जनता का सभा और हिंदी के प्रति प्रेम और उत्साह प्रकट होता है।

इस वर्ष सभा के जिन आठ सभासदों की मृत्यु हुई है उनमें सबसे अधिक क्षति हुई है सभा के मान्य सभासद, सभापति तथा हिंदी के मर्मज्ञ विद्वान् आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मृत्यु से। उनके न रहने से सभा और हिंदी-साहित्य की जो महान् क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होती नहीं दिखाई देती। आचार्य शुक्लजी के शरीरत्याग के कुछ ही दिनों के भीतर सभा के दूसरे मान्य सभासद प्रसिद्ध भाषा-मनीषी डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन की मृत्यु ने हिंदी पर दूसरा प्रहार किया। बीकानेर के श्री मुन्नालाल राँका यद्यपि सभा के नए सभासद थे, फिर भी वे सभा के परम सहायक थे। बीकानेर में सभा के सदस्य बनाने में उन्होंने बड़ी सहायता की थी। दिल्ली के श्री केदारनाथ गोयनका भी हिंदी के अनन्य भक्त थे और उसकी उन्नति के प्रयत्न में बराबर लगे रहते थे। माधव कालेज उज्जैन के अध्यापक श्री रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' एम० ए० मध्य-भारत के उदीयमान कवि और साहित्यप्रेमी युवक थे। सभा को अपने सभी दिवंगत सभासदों के देहावसान पर दुःख है तथा वह उनके कुटुंबियों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करती है।

पदाधिकारी तथा प्रबंध-समिति के सदस्य

२१ वैशाख, १९९७ को सभा के वार्षिक अधिवेशन में इस वर्ष के लिये सभा के ये पदाधिकारी चुने गए थे—

सभापति — पं० रामचंद्र शुक्ल
उपसभापति—पं० रामनारायण मिश्र
,, ,, —पं० रमेशदत्त पांडे
प्रधान मंत्री—पं० रामबहोरी शुक्ल
साहित्यमंत्री—बा० रामचंद्र वर्मा
अर्थमंत्री —बा० जीवनदास

किंतु १८ माघ को पं० रामचंद्र शुक्ल का देहांत हो जाने के कारण २१ फाल्गुन को राय साहब ठाकुर शिवकुमार सिंह उनके स्थान पर शेष काल के लिये सभापति चुने गए।

उक्त वार्षिक अधिवेशन में प्रबंध-समिति के निम्नलिखित सदस्य चुने गए—

सं० १९९७-९९ के लिये

बा० रायकृष्णदास, काशी, बा० सहदेव सिंह, काशी, राय सत्यव्रत, काशी, श्री कृष्णानंद, काशी; रायबहादुर रामदेव चोखानी, कलकत्ता, डा० सच्चिदानंद सिन्हा, पटना, और पं० जगद्धर शर्मा गुलेरी, लायलपुर (पंजाब)।

सभा के नियम ४९ तथा ५१ के अनुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति होने पर निम्नलिखित सज्जन प्रबंध-समिति के सदस्य हुए—

सं० १९९७-९८ के लिये

बा० मुरारीलाल केडिया, काशी; पं० केशवप्रसाद मिश्र, काशी, बा० ठाकुरदास एडवोकेट, काशी, राय साहब ठा० शिवकुमार सिंह काशी; श्री दत्तो वामन पोतदार, पूना; श्री व्योहार राजेंद्रसिंह, जबलपुर, और सरदार माधवराव विनायकराव किबे, इंदौर।

सं० १९९७ के लिये

बा० कृष्णदेवप्रसाद गौड, काशी; राय कृष्णदास, काशी, पं० वंशगोपाल झिंगरन, काशी; पं० विद्याभूषण मिश्र, काशी; बा० हरिहरनाथ टंडन, आगरा; पं० अयोध्यानाथ शर्मा, कानपुर; और पं० रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, अजमेर।

किंतु उपर्युक्त वार्षिक अधिवेशन में ही यह निश्चय हुआ था कि इस वर्ष में प्र० स० के सदस्यों की संख्या २१ से बढ़ाकर ३९ कर दी जाय, और साधारण सभा को अतिरिक्त चुनाव का अधिकार दिया गया था। इसके अनुसार ५ ज्येष्ठ १९९७ को साधारण सभा में निम्नलिखित सज्जन प्र० स० के सदस्य चुने गए—

सं० १९९७-९९ के लिये

पं० चंद्रबली पांडे, काशी, राय साहब पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी, लखनऊ पं० भोलानाथ शर्मा, बरेली, श्री भँवरलाल नाहटा, सिलहट;

बा० मूलचंद्र अग्रवाल, कलकत्ता (ब्रह्मदेश के लिये); और बा० लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु', पूर्णिया (उत्कल के लिये)।

सं० १९९७-९८ के लिये

बा० ब्रजरत्नदास, काशी; पं० श्यामसुंदर उपाध्याय, बलिया, पं० श्रीचंद्र शर्मा, जम्मू; डा० हीरानंद शास्त्री, बड़ोदा, श्री ना० नागप्पा, मैसूर; और श्री पी० वी० आचार्य, मद्रास।

सं० १९९७ के लिये

श्रीमती कमलाकुमारी, काशी; स्वामी हरिनामदासजी उदासीन, सक्खर (सिंध); श्री सुधाकर जी, दिल्ली; श्री सत्यनारायण लोया, हैदराबाद (दक्षिण); श्री जी० सच्चिदानंद, मैसूर (सिंहल के लिये); और श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा, जयपुर।

राय साहब ठाकुर शिवकुमार सिंह के सभापति चुन लिए जाने पर उनके स्थान पर २१ फाल्गुन, १९९७ के साधारण अधिवेशन में पं० लल्लीप्रसाद पांडेय प्रबंध समिति के सदस्य चुने गए।

इस वर्ष सभा के आय-व्यय-निरीक्षक पं० सूर्यनारायण आचार्य चुने गए थे। पर उन्हें अवकाश न था। इससे उनके स्थान पर बा० गुलाबदास नागर चुने गए।

आर्यभाषा-पुस्तकालय

गत वर्ष पुस्तकालय की आय २४६१॥≈)३ थी और व्यय ३३८४।)५⅓ था। इस वर्ष २४३१।)११ आय हुई जिसमें १०००) प्रांतीय सरकार से, ३६०) म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस से और १०७१।)११ सहायकों के वार्षिक चंदे तथा फुटकर दान से प्राप्त हुआ। इस वर्ष व्यय ३०७६।॥)॥≈ हुआ, जिसमें ९८१॥) पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में, १६८५॥≈) वेतन में और २२९॥≈) रोशनी आदि में हुआ। ५५।)॥≈ जिल्दबंदी के सामान में लगा। (जिल्दबंदी के लिये विशेष रूप से नियुक्त किए गए दफ्तरियों का वेतन ऊपर वेतन की रकम में ही सम्मिलित है।) १२४।) फुटकर व्यय हुआ।

गत वर्ष पुस्तकालय के सहायकों की संख्या ८२ थी, इस वर्ष ११७ रही। इस वर्ष भी कुछ सहायकों के यहाँ दो वर्ष या इससे अधिक का चंदा बाकी रहने से उनकी अमानत की रकम से पुस्तकों का मूल्य तथा चंदा लेकर, पुस्तकालय के नियम १४ के अनुसार उनके नाम सहायक-श्रेणी से पृथक् करने पडे, जिसका सभा को खेद है।

गत वर्ष २०३ पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं। इस वर्ष ६० पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का आना बंद हो गया और ४१ नई पत्र पत्रिकाएँ आने लगीं। इस प्रकार इस वर्ष पुस्तकालय में कुल १८४ पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं।

गत वर्ष पुस्तकालय के हिंदी-विभाग में १५२८२ मुद्रित पुस्तकें थीं। इस वर्ष ६१८ नई पुस्तकें आईं। अब इस विभाग में मुद्रित पुस्तकों की संख्या १५९०० है।

गत वर्ष पुस्तकालय के हस्तलिखित पुस्तक-विभाग में ८३१ पुस्तकें थीं। इस वर्ष ४ पुस्तकें आईं। अब ८३५ हस्त-लिखित पुस्तकें हैं।

द्विवेदी-संग्रह तथा रत्नाकर-संग्रह में पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त क्रमश. २७७३ तथा १५२४ पुस्तकें हैं।

गत वर्ष अँगरेजी-विभाग में २३३६ पुस्तकें थीं। इस वर्ष ७९ नवीन पुस्तकें आईं। अब इस विभाग में २४१५ पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त संस्कृत, मराठी, बँगला, गुजराती, उर्दू आदि की भी पुस्तकें हैं। इन सब की सूची प्रस्तुत कराने का आयोजन हो रहा है।

इस वर्ष पुस्तकालय २७९ दिन तथा वाचनालय ३३८ दिन खुला रहा और नित्य के पढ़नेवालों की सामान्य संख्या १२० थी। सहायकों ने लगभग ३५०० पुस्तकें पढ़ीं।

इस वर्ष दाशमिक-वर्गीकरण पद्धति के अनुसार हिंदी विभाग के दर्शन, धर्म, समाजशास्त्र, भाषा, विज्ञान, उपयोगी कला, ललित कला, साहित्य और इतिहास-भूगोल की शेष समस्त पुस्तकों पर संख्याएँ अंकित की गई। हर्ष का विषय है कि पुस्तकों का नवीन-पद्धति के वर्गीकरण का कार्य, जो गत कई वर्षों से हो रहा था, इस वर्ष पूरा हो गया। पुस्तकालय की पुस्तकों की यह सूची छपने के लिये तैयार है पर धनाभाव के कारण इस वर्ष छापी न जा सकी। आशा है, वह अगले वर्ष सर्व-साधारण के लिये सुलभ हो जायगी।

जैसा गत वर्ष संकेत किया गया था, पुस्तकालय की उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण स्थान और अलमारियों का अभाव है। इसमें पुस्तकें तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ आदि रखने की कोई ठीक व्यवस्था नहीं हो पाती। नवीन पद्धति के अनुसार पुस्तकालय के लिये यथेष्ट और आवश्यक उपकरण (कैबिनेट कार्ड शेल्फ अलमारियाँ आदि) प्राप्त करना सभा की वर्तमान आर्थिक स्थिति के कारण कठिन जान पड़ता है। इस संबंध में सभा ने गत वर्ष कम से कम एक सहस्र रुपयों की आवश्यकता बतलाई थी। खेद है, पुस्तक-प्रेमियों ने इस छोटी सी आवश्यकता की पूर्ति की ओर ध्यान नहीं दिया। यदि उदार हिंदी-प्रेमी चाहें तो पुस्तकालय की वर्तमान कठिनाइयों के दूर होने में देर न लगेगी।

पुस्तकालय का उपयोग उसके सहायकों के अतिरिक्त स्वाध्याय तथा ग्रंथ-रचना के लिये भी उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। गत वर्ष काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय और प्रयाग-विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थियों ने अपनी खोज के निबंध प्रस्तुत करने में आर्य भाषा पुस्तकालय से यथेष्ट लाभ उठाया था। इस वर्ष प्रयाग-विश्वविद्यालय के श्री राजा पन्नालाल वृत्ति-भोगी पं० उमाशंकर शुक्ल ने भी इस पुस्तकालय में अपनी खोज का कार्य किया। इसके अतिरिक्त लखनऊ-विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी ने भी पुस्तकालय के संग्रह से समुचित लाभ उठाया।

इस प्रकार आर्यभाषा-पुस्तकालय खोज के विद्यार्थियों के काम का भी हो रहा है। आशा है, भविष्य में और भी अन्वेषक और विद्यार्थी इसका उपयोग करेंगे।

सभा निरंतर यह उद्योग करती रहती है कि उसका यह पुस्तकालय तथा वाचनालय सभी दृष्टियों से परिपूर्ण रहे। हिंदी-पुस्तकों का प्रकाशन जिस द्रुत गति से बढ़ रहा है उसको देखते हुए हिंदी संसार की सभी प्रकाशित पुस्तकों तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाओं को मूल्य देकर प्राप्त करना सभा की शक्ति के बाहर जान पड़ता है। इसके लिये सभा को कम से कम तीन हजार रुपये वार्षिक की आवश्यकता है। सभा उन अनेक लेखकों, कवियों और प्रकाशकों की कृतज्ञ है जो अपनी रचनाएँ और अपने प्रकाशन सभा को सादर प्रदान किया करते हैं, किंतु जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने सभा के उस निवेदन की ओर अब तक ध्यान नहीं दिया है उनसे सभा विशेष रूप से अनुरोध करती है। उनकी इस

सहायता से यह पुस्तकालय सहज ही पूर्ण बन सकता है। साथ ही युक्तप्रांतीय सरकार से सभा का अनुरोध है कि वह अपनी वर्त्तमान सहायता में कम से कम एक सहस्र रुपये वार्षिक की और वृद्धि करे। ऐसा होने से सभा का पुस्तकालय हिंदी का सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय बन सकेगा और उसका उपयोग खोज करनेवाले विद्वान् एवं सर्वसाधारण हिंदी-प्रेमी भली भाँति कर सकेंगे।

जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने इस वर्ष पुस्तकालय के लिये पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि दान दी हैं, उनमें पं० रामनारायणजी मिश्र (काशी), इंडियन प्रेस लिमिटेड (प्रयाग), पं० राधेश्यामजी कथावाचस्पति (बरेली), दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा (मद्रास) और श्री कमलनाथ अग्रवाल (काशी) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बिहार के प्रसिद्ध साहित्यसेवी पं० अक्षयवट मिश्र ने अपनी संपूर्ण कृतियाँ एक सुंदर छोटी अलमारी में सजाकर अपने जीवन के अंतिम काल में इस पुस्तकालय को भेंट की थीं। यदि इसी प्रकार सभा में प्रसिद्ध साहित्यकारों के ग्रंथ और संभव हो तो उनके सभी संस्करण अलग अलग अलमारियों में रखे जा सकें तो कितना अच्छा संग्रह हो जाय। वह खोज और साहित्य के इतिहास-निर्माण में बहुत ही उपयोगी और सहायक हो।

इस वर्ष श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ पुस्तकालय के निरीक्षक थे।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज

इस वर्ष खोज का कार्य इटावा और मथुरा जिलों में होता रहा। इटावा में पं० बाबूराम बित्थरिया ने और मथुरा में पं० दौलतराम जुयाल ने कार्य किया। पं० बाबूराम बित्थरिया कुछ महीने कार्य करने के बाद कार्तिक मास में सभा से अलग कर दिए गए। उनके स्थान पर श्री महेशचंद्र गर्ग एम० ए० नियुक्त किए गए।

इस वर्ष इटावा जिले में १६० और मथुरा जिले में १८४ हस्त-लिखित ग्रंथों के विवरण लिए गए। इनके अतिरिक्त दतिया (बुंदेलखंड) के श्री हरिमोहन लाल वर्मा, बी० ए०, साहित्यरत्न ने ३ तथा श्री हरिदास दुबे 'हरिहर' ने ६ विवरण भेजने की कृपा की। समस्त ३५३ ग्रंथों में से ६४ ग्रंथों के रचयिताओं के नाम अज्ञात हैं, शेष १७९ ग्रंथ १४३

ग्रंथकारों के रचे हुए हैं। ग्रंथकार तथा ग्रंथों का शताब्दी-विभाग निम्न प्रकार है :—

शताब्दी संवत्	१६वीं	१७वीं	१८वीं	१९वीं	अज्ञात	योग
ग्रंथकार	८	३२	२९	१०	१०३	१८२
ग्रंथ	७	२४	३३	११	२७८	३५३

ये ग्रंथ निम्नलिखित विषयों में इस प्रकार विभक्त हैं :—

(१) भक्ति—९३, (२) अध्यात्म तथा दर्शन—२५, (३) योग—२, (४) काव्य—५७, (५) संगीत—२, (६) कोश—२, (७) रीति—७, (८) पुराण—९, (९) पौराणिक कथा—२१, (१०) ज्योतिष—१०, (११) भूगोल—१, (१२) राजनीति—२, (१३) नीति—२, (१४) स्वप्न—१, (१५) स्तोत्र—१५, (१६) कथा-कहानी—५, (१७) धार्मिक—२३, (१८) यत्र-तंत्र—८, (१९) सामुद्रिक—५, (२०) रमल, शकुन तथा शुभाशुभ प्रश्न—१०, (२१) पिंगल—२, (२२) जीवन-वार्त्ता—१७, (२३) वैद्यक—३, (२४) स्वरोदय—१, (२५) कोकशास्त्र—१, (२६) विविध—२९।

इटावा जिले मे जिन ग्रंथों के विवरण लिए गए उनमे से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण हैं :—

(१) बाल बजरगी चरित्र—इसमे दोहा, सोरठा और चौपाई की प्रबधात्मक शैली मे हनुमानजी का जीवनचरित्र लिखा गया है।

(२) गंगा-भक्ति-विनोद—इसका निर्माणकाल सवत् १९०९ है। इसकी रचना सस्कृत के गगा-लहरी नामक काव्य के आधार पर हुई है। इसके रचयिता का नाम रसिकसु दर है।

(३) पक्षी चेतन—इसमे सयोग-वियोग शृ गार के ३१ दोहे है, जिनमे किसी न किसी पक्षी का नाम श्लिष्ट पद के रूप मे आया है।

(४) चित्रगुप्त की कथा—लेखक द्विज कवि मोतीलाल। इसमें चित्रगुप्त तथा कायस्थो की उत्पत्ति की कथा है।

(५) कंस की कथा—इसके लेखक तथा निर्माण-काल अज्ञात हैं। लेखक ने व्रजभाषा गद्य मे राजा कंस की कथा का वर्णन किया है। इसको पढ़ने मे काव्य का सा आनद आता है।

मथुरा मे प्राप्त अनेक उत्तमोत्तम ग्रंथो मे निम्नलिखित उल्लेखनीय है :-

ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार का नाम	निर्माणकाल सवत्	लिपिकाल संवत्
योगाभ्यास मुद्रा	कुमुटिपाव	×	१८९७
काव्यरस	महाराज जयसिह	×	१८०२
व्रजकेलि	नारायण स्वामी	×	×
श्रीहित जू कृत फुटकर बानो की टीका या सुभावनाबोधिनी	व्रजगोपालदास	१९००	१९३८
कोक सामुद्रिक	अहमद	१६७८	×
जुगल विलास	महाराज रामसिंह	१८३६	×
कृष्णचंद्रिका	अखैराम	१८११	१८८३
दुर्गाभक्ति चद्रिका	कुलपति मिश्र	१७८९	[illegible]
विहारिन देवजी की बानी	विहारिन देवजी	×	×
रसरूप	सरस्वती	×	१८९५
श्रीकबीर के पदो की टीका	×	×	×
कवितरंग	सीताराम	[illegible]	[illegible]
अलंकार आभा	चतुर्भुज मि[illegible]	[illegible]	×
रागमाला	×	×	
द्रव्यसग्रह	[illegible]	×	[illegible]

(१) **योगाभ्यास मुद्रा**—यह हठयोग का ग्रंथ है। इसके रचयिता कुमुटिपाव हैं जो संभवतः चौरासी सिद्धिवाले कुमरिपा हैं। उक्त ग्रंथ में षट्चक्र और पंच मुद्राओं का वर्णन है। इसकी भाषा का रूप विचारणीय है। नीचे उदाहरण दिया जाता है :—

"अजपा जपती महामुनि इति ब्रह्मचक्र जाप प्रभाव बोलीये। ब्रह्मचक्र ऊपर गुह्य चक्र सीस मंडल स्थाने वसै। इकईस ब्रह्मांड बोलीये।"

"परम सून्य स्थान ऊपर जे न विनसै न आवे न जाई योग योगेंद्र हे समाई। सुनौ देवी पार्वती ईश्वर कथितं महाज्ञान।"

इसमें एक ओर 'जपती', 'स्थाने' तथा 'कथित' आदि रूप हैं और दूसरी ओर 'बोलीये' 'ऊपर' 'वसै' "न विनसै न आवे न जाई" इत्यादि। यह प्राचीन हिंदी का उदाहरण है। इससे प्रकट होता है कि सिद्धों की रचनाओं में संस्कृत के साथ साथ लोकभाषा को भी स्थान मिलने लगा था।

२—**ब्रजकेलि**—लेखक नारायण स्वामी। ये वृंदावन-निवासी थे। प्राप्त ग्रंथ में इनके दोहे, कवित्त, पद, रेख्ता भजन आदि हैं। काव्य की दृष्टि से रचना उत्कृष्ट है।

३—**श्री हित जू कृत फुटकर वानी की टीका या सुभावनाबोधिनी**—अब तक श्री हित हरिवंशजी के केवल ८४ पद ही उपलब्ध थे, परंतु प्रस्तुत टीकाग्रंथ के द्वारा उनके कुछ फुटकर कवित्त सवैया भी हमारे सामने आए हैं। टीका सरल, सुबोध तथा परिमार्जित ब्रजभाषा गद्य में है।

४—**कोकसामुद्रिक**—यह जहाँगीर काल के एक मुसलमान लेखक की रचना है। प्राचीन होने के कारण महत्त्वपूर्ण है।

५—**जुगल विलास**—लेखक महाराजा रामसिंह (नरवरनरेश)। यह अत्यंत सरस और सुंदर रचना है।

६—**कृष्णचंद्रिका**—भागवत की कथा के अनेक मर्मस्पर्शी प्रसंगों पर काव्य-रचना की गई है। लेखक का नाम अखैराम है। यह उत्कृष्ट काव्य-ग्रंथ है।

७—**श्री कबीर साहब के पदों की टीका**—इस ग्रंथ में कबीर साहब के १२१ पद टीका सहित दिए गए हैं। टीका प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण है।

एक हस्तलेख, जिसमे भगवद्गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, अनुस्मृति और गजेंद्रमोक्ष नाम के पाँच संस्कृत ग्रंथ संगृहीत हैं, पंद्रह चित्रों सहित है। ये चित्र भाव की दृष्टि से उत्तम है। चित्रो का परिचय नीचे दिया जाता है—

हिरण्यकशिपुवध, वामन द्वारा बलि को छलना, गजग्राहयुद्ध; परशुराम-सहस्रार्जुन युद्ध, श्रीकृष्ण और अश्व, श्रीकृष्ण-अर्जुन-संवाद के भिन्न भिन्न आकृति के छः चित्र; अर्जुन द्वारा विराट्रूप दर्शन; शेषशायी श्रीविष्णु भगवान्; भीष्म पितामह की शरशय्या तथा धृतराष्ट्र और पांडव।

इनके अतिरिक्त चार चित्र और प्राप्त हुए है जो इस प्रकार हैं—

१—सीताराम और हनुमान का चित्र, २—श्रीगणेशजी (ऋद्धिसिद्धि सहित), ३—श्री गुसाईं जी और ४—श्री दाऊजी।

प्रथम चित्र (सीता-राम और हनुमान का) भाव और कला दोनो की दृष्टि से उत्तम है।

संस्कृत का एक ऐसा हस्तलेख भी मिला है जिसके किनारो पर सुनहरे बेल-बूटे चित्रित है। आरंभ के दो पत्रो के बेल-बूटे विशेष दर्शनीय है।

इस वर्ष मथुरा से ६६ हस्तलेख प्राप्त हुए है जिनमे १६७ ग्रंथ हैं। इन ग्रंथो की सूची परिशिष्ट ३ मे दी गई है। इस कार्य मे अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल को प्रशसनीय सफलता प्राप्त हुई। इटावा मे श्री वित्थरिया ने ३४ हस्तलेख प्राप्त किए।

ऊपर दिए गए विवरण से स्पष्ट है कि इस वर्ष खोज का कार्य संतोषजनक हुआ। अनेक ग्रंथ साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तथा उच्च कोटि के हैं। 'योगाभ्यास मुद्रा' मे सिद्धो की वाणी मे संस्कृत पदावली के मध्य हिंदी भाषा का अंकुर देखा जाता है। 'कोकसामुद्रिक' इस बात का प्रमाण है कि मुसलमानो ने हिंदी को काव्य के लिये ही नहीं, ज्योतिष तथा सामुद्रिक आदि विविध विषयो के निरूपण के लिये भी अपनाया था।

खोज के संबंध में यह ध्यान रखा गया है कि जिन ग्रंथो के अनेक बार विवरण लिए जा चुके है उनके पुनः विवरण लेना तब तक आवश्यक नहीं है, जब तक नवीन प्रति लिपि-काल, पाठ की शुद्धता अथवा अन्य किसी दृष्टि से विशेष महत्त्व न रखती हो।

खेद है कि खोज संबंधी कठिनाइयाँ अभी पूर्ववत् बनी हुई हैं। ग्रंथों के स्वामी अपने ग्रंथों को दिखलाने में नाना प्रकार की अड़चनें उपस्थित करते हैं। कहीं अंधविश्वास बाधक होता है, कहीं अज्ञान। कहीं कहीं तो इसे व्यर्थ की झंझट समझकर टालने की चेष्टा की जाती है। फिर भी संतोष है कि अनेक महानुभावों ने अपने ग्रंथों को प्रसन्नता-पूर्वक दिखलाया तथा उनके विवरण देने की प्रत्येक सुविधा प्रदान की। इसके अतिरिक्त कुछ ने अपने हस्तलेखों को सभा के लिये दान देकर अपनी उदारता का परिचय दिया। सभा इन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है। सभा के अन्वेषकों को अनेक प्रकार की सहायता देनेवाले अनेक सज्जनों में कुछ ये हैं—

सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, मथुरा; पं० मोहनवल्लभ पंत, किशोरी-रमण कालेज, मथुरा; श्री सत्येंद्रजी, चंपा अग्रवाल कालेज, मथुरा; श्री बिशनस्वरूप अग्रवाल, कोसी कलाँ, मथुरा; पं० छोटेलालजी रास-धारी, मुखराई, मथुरा, पं० उमाशंकरजी वैद्य, वृंदावन, गोस्वामी रूपलालजी हित, राधावल्लभ मंदिर, वृंदावन; पं० नत्थनलाल शर्मा, मंत्री, साहित्य-समिति, भरतपुर; पं० मदनमोहन लाल आयुर्वेदाचार्य, भरतपुर; पं० मदनलालजी ज्योतिषी, भरतपुर; पं० हरिकृष्णजी वैद्य, डीग, भरतपुर; पं० वासुदेवजी, पुरानी डीग, भरतपुर, और श्री चुन्नीलालजी शेष, मथुरा।

आशा है, इनसे तथा अन्य सज्जनों से सभा के अन्वेषकों को भविष्य में भी पूर्ववत् सहायता प्राप्त होती रहेगी।

इस वर्ष खोज-विभाग के निरीक्षक डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल और सहायक निरीक्षक पं० विद्याभूषण मिश्र चुने गए थे; परंतु अस्वस्थता के कारण डा० बड़थ्वाल के पदत्याग करने पर पं० विद्याभूषण मिश्र वर्ष के अंत तक निरीक्षक रहे।

भारत-कलाभवन

इस वर्ष भारत-कलाभवन का राजघाट की खोदाई से घनिष्ठ संबंध रहा। जनवरी १९४० के आरंभ से ही ईस्ट इंडियन रेलवे की ओर से 'काशी' स्टेशन को बढ़ाने के लिये उक्त स्टेशन के उत्तर वाली गंगा-किनारे

को भूमि की खोदाई हो रही थी। खोदाई मे निकलनेवाली प्राचीन वस्तुओ के संबध मे रेलवे अधिकारी उदासीन थे, अतः रोजगारियो ने वहाँ अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी। वे उक्त वस्तुओ को अधिक धन-प्राप्ति के लोभ से अन्य सग्रहालयो को भेज देते थे। इस प्रकार कला-भवन को साधारण वस्तुएँ ही प्राप्त होती थीं। किंतु बराबर यही उद्योग किया जाता था कि अपने नगर के इन प्राचीन चिह्नो का यहाँ अधिक से अधिक संख्या मे संग्रह किया जाय। इस वर्ष के आरभ से इस कार्य मे सफलता मिलने लगी और अब कलाभवन मे राजघाट की वस्तुओ का अद्वितीय सग्रह हो गया है। इनमे अधिकाश वस्तुएँ गुप्तकाल (चौथी, पाँचवीं शती) की है और इतिहास एव कला की दृष्टि से अत्यत महत्त्व-पूर्ण हैं। इन वस्तुओ के समुचित प्रदर्शन के लिये श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया ने पॉच ' शो केस' बनवा दिए है।

कलाभवन के आग्रह करने पर गत अक्तूबर मे भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने रेलवे द्वारा खोदी हुई उक्त भूमि को अपने संरक्षण मे लेकर उसके कुछ हिस्से की वैज्ञानिक ढग से खोदाई कराई। फलस्वरूप चौथी-पाँचवीं शती की वाराणसी नगरी के ध्वसावशेष निकले हैं। ये सभी दृष्टियो से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

राजघाट की रेलवे की खोदाई मे गहड़वार महाराज गोविदचंद्र देव का मिति कार्तिक पूर्णिमा सवत् ११९७ का बड़े आकार के दो पत्रोवाला ताम्रपत्र रेलवे अधिकारियो के हाथ लगा था। भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने इसे प्राप्त कर लिया है और वैज्ञानिक क्रियाओ से इसकी सफाई आदि कराके भारत-कलाभवन को ही दे देने का निश्चय किया है।

भारतीय पुरातत्त्व विभाग के डाइरेक्टर-जनरल ने कलाभवन की उत्तरोत्तर समृद्धि एवं उन्नति से सतुष्ट होकर अब यह नीति निर्धारित की है कि सारनाथ के अतिरिक्त काशी तथा आसपास के अन्य स्थानो से पुरातत्त्व सबंधी जो वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं तथा भविष्य मे प्राप्त होगी वे कलाभवन में रहेगी। इस नीति के अनुसार अन्य स्थानो से प्राप्त और सारनाथ सग्रहालय मे रखी मूर्तियो और इमारती पत्थरो मे से २९ वस्तुएँ उक्त विभाग की ओर से भारत-कलाभवन को प्राप्त हुई है। इनमे काशी के बकरियाकुण्ड से प्राप्त गोवर्द्धनधारी कृष्ण की गुप्तकालीन विशाल मूर्ति अत्यत भव्य तथा दर्शनीय है। इसी प्रकार जैन तीर्थंकर

श्रेयांस की गुप्तकालीन बडी मूर्ति भी बहुत सुंदर और कलापूर्ण है। भारतीय पुरातत्त्व विभाग से प्राप्त राजघाट की पत्थर की वस्तुएँ यद्यपि मध्यकालीन है, फिर भी कुछ विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण हैं।

कलाभवन में राजघाट की वस्तुओं का विभाग अलग कर दिया गया है। उसका उद्घाटन २ भाद्रपद १९९७ को डाक्टर पन्नालाल, आई० सी० एस०, डी० लिट्० ने किया।

चित्रमंदिर—इस वर्ष इस विभाग के प्रदर्शन मे कई महत्त्वपूर्ण विशेपताओं का समावेश किया गया है। चित्रो के स्थायी परिचय-पत्र तैयार हो रहे हैं और शीघ्र ही लगा दिए जायँगे। सूची भी शीघ्र ही छापी जायगी।

दर्शक—इस वर्ष दर्शकों की संख्या बहुत अधिक रही। इनमें भारतीय पुरातत्त्व विभाग के प्राय. सभी उच्च पदाधिकारी, भारतीय इतिहासपरिपद् तथा भारतीय विज्ञानपरिषद् के काशी मे होनेवाले अधिवेशनो मे आए हुए विज्ञानवेत्ता तथा विद्वज्जन, थियोसाफिकल सोसायटी की जुबिली के प्रतिनिधिगण, अनेक शिक्षा-संस्थाओं—जैसे इलाहाबाद के टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, बोलपुर के शांतिनिकेतन और काशी के वसंत महिला कालेज—के छात्र तथा छात्राएँ मुख्य हैं। सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, श्री बी० एस० मुंजे, श्री श्रीकृष्णसिंह, सर यदुनाथ सरकार, डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी, डा० विनय सरकार, श्री ओ० सी० गांगुली, श्री अमरनाथ झा, श्री नंदलाल बास, डा० बीरबल साहनी, सर आर्देशीर दलाल, यु० प्रा० सरकार के परामर्शदाता डा० पन्नालाल, श्री एन० सी० मेहता आइ० सी० एस०, युक्तप्रांतीय शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर श्री पावेल प्राइस, बनारस के कमिश्नर डा० श्री श्रीधर नेहरू आइ० सी० एस०, कलक्टर, तथा पुलिस-सुपरिंटेंडेंट आदि अन्य अधिकारी, बनारस के इंस्पेक्टर ऑव स्कूल्स, कैंब्रिज विश्वविद्यालय के श्री जेम्स हिटमोर, डा० मेघनाद साहा, मद्रास थियोसाफिकल सोसायटी के श्री जिनराजदास आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

इस वर्ष कलाभवन मे दर्शकों की संख्या लगभग ५००० थी।

रामप्रसाद समादर उत्सव—भारत कलाभवन ने मुगल शैली की चित्रकला के एकमात्र वर्तमान प्रतिनिधि वयोवृद्ध उस्ताद श्री रामप्रसादजी के समादर मे एक हजार रुपए का एक कोप भेंट करने की योजना बनाई

थी। समस्त भारत के गुणग्राही तथा गुणी लोगों ने इस कार्य में सहयोग दिया और यह कार्य २२ मार्गशीर्ष १९९७ को श्री अमरनाथ झा, वाइस चांसलर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सभापतित्व में संपन्न हुआ।

इस वर्ष भी कलाभवन के सत्राध्यक्ष श्री राय कृष्णदास रहे।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

नागरीप्रचारिणी पत्रिका का यह पैंतालीसवाँ वर्ष समाप्त हुआ। पत्रिका में पहले की ही भाँति उच्च कोटि के लेख निकलते रहे। इस वर्ष पत्रिका के संपादक-मंडल में निम्नलिखित सज्जन चुने गए थे—

श्री रामचंद्र शुक्ल   डा० मंगलदेव शास्त्री

श्री केशवप्रसाद मिश्र   श्री वासुदेवशरण

श्री कृष्णानंद (संपादक)

इस वर्ष पत्रिका में प्रकाशित लेखों की सूची नीचे दी जाती है—

विषय   लेखक

भारतीय मुद्राएँ और उन पर हिंदी का स्थान [लेखक—श्री दुर्गाप्रसाद, बी० ए०, विज्ञानकला-विशारद, एम्० एन्० एस्०]

देवनागरी लिपि और मुसलमानी शिलालेख [लेखक—डा० हीरानंद शास्त्री, एम्० ए०, डी० लिट्०]

राष्ट्र-लिपि के विधान में रोमन लिपि का स्थान [लेखक—डा० ईश्वरदत्त, विद्यालंकार, पी-एच्० डी०]

नागरी और मुसलमान [लेखक—श्री चंद्रबली पांडे, एम० ए०]

मलिक मुहम्मद जायसी का जीवनचरित [लेखक—श्री सैयद आले मुहम्मद मेहर जायसी, बी० ए०]

कदर पिया [लेखक—श्री गोपालचंद्र सिंह, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, विशारद]

भृगुवंश और भारत [लेखक—भारतदीपक डा० विष्णु सीताराम सुकथनकर, एम्० ए०, पी-एच्० डी०]

विषय लेखक

वीसलदेवरासो का निर्माणकाल [लेखक—महामहोपाध्याय राय बहादुर डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, डी० लिट्०]
काशी-राजघाट की खुदाई [लेखक—श्री राय कृष्णदास]
राजघाट के खिलौनों का एक अध्ययन [लेखक—श्री वासुदेवशरण अग्रवाल, एम्० ए०]
हिंदी का चारण काव्य [लेखक—श्री शुभकर्ण बदरीदान कविया एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]
प्राचीन हस्तलिखित हिंदी-ग्रंथों की खोज का सोलहवाँ त्रैवार्षिक विवरण [लेखक—डा० पीतांबरदत्त बड्थ्वाल, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, डी० लिट्०]
पृथ्वीराज रासो [लेखक—साहित्यवाचस्पति रायबहादुर श्यामसुंदर-दास, बी० ए०]
रागमाला [लेखक—श्री नारायण शास्त्री आठले]
अजयदेव और सोमल्लदेवी की मुद्राएँ [लेखक—श्री दशरथ शर्मा एम्० ए०]

चयन—

ओरिएंटल कान्फरेंस के हिंदी विभाग के अध्यक्ष का भाषण [सं० श्री कृ]
निचुल और कालिदास [सं० श्री कृ]
पंजाब में हिंदी [सं० श्री कृ]
छत्रसालदशक का अनस्तित्व [सं० श्री कृ]
पृथिवीपुत्र [सं० श्री कृ]
दक्षिणभारत-हिंदी-प्रचारक-सम्मेलन के सभापति का अभिभाषण [सं०श्री कृ]
हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति का अभिभाषण [सं० श्री कृ]

समीक्षा—

आवारे की युरोपयात्रा [सं० श्री रामचंद्र श्रीवास्तव]
हिंदीसाहित्य का सुबोध इतिहास [सं० श्री पद्म]
उमर खैयाम की रुबाइयाँ [सं० श्री कृ]

विषय लेखक

द्रव्यसंग्रह [स० श्री कैलाशचंद्र शास्त्री]
छहढाला [स० ,, ,,]
गुटका गुरुमत-प्रकाश [स० श्री सच्चिदानंद तिवारी एम० ए०]
सुखमना [,, ,, ,, ,, ,,]
रणमत्त संसार [स० श्री रामबिहारी शुक्ल]
योग के आधार [स० श्री रामचंद्र वर्मा]
गोरखनाथ एंड मिडीवल हिंदू मिस्टिसिज्म [स० श्री चंद्रबली पांडे एम० ए०]
कामुक [स० श्री जगन्नाथप्रसाद शर्म्मा एम० ए०]
आधीरात [स० श्री चित्रगुप्त]
दर्जीविज्ञान [स० श्रीमती कृष्णकिशोरी]
कानून कर आमदनी भारतवर्ष १९२२ [स० श्री ब्रजरत्नदास]
कानून कब्जा आराजी संयुक्त प्रांत १९३९ [,, ,,]
नेताओं की कहानियाँ [स० श्री खानचंद गौतम]
जीवित मूर्तियाँ [स० श्री खानचंद गौतम]
वीणा [स० श्री चित्रगुप्त]
जीवन साहित्य [स० श्री शं० वा०]
आरती [,, ,,]
मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग [स० श्री अवधविहारी पांडेय]
हिल्लोल [स० श्री रा० ना० श०]
प्रभुमति के दोहे [स० श्री जीवनदास]
साहित्यसंदेश का उपन्यास-अंक [स० श्री श० वा०]
आकाशवाणी [स० श्री श० वा०]

विविध—

उपनिवेशों में हिंदी-प्रचार [ले० श्री कृ]
आभार-स्वीकृति [ले० श्री कृ]
एक विचारणीय शब्द [,,]
जापानी अंतर्राष्ट्रीय निबंध-प्रतियोगिता [ले० श्री कृ]

विषय	लेखक

महाभारत का संशोधित संस्करण [ले० श्री कृ]
वाहीक ग्रामों के शुद्ध नाम [ले० श्री वासुदेवशरण]
पंजाब में हिंदी आंदोलन [ले० श्री कृ]
संस्कृत का महत्त्व [ले० श्री कृ]
भारत की प्रादेशिक भाषाओं के लिये समान वैज्ञानिक शब्दावली [ले० श्री कृ]
बहुमूल्य प्राचीन ग्रंथ-संपत्ति अमेरिका गई [ले० श्री कृ]
पृथ्वीराज रासो संबंधी शोध [ले० श्री कृ]
'सभ्यता की समाधि' में योग इंस्टीट्यूट के प्रकाशन [ले० श्री कृ]
'हिंदी' [ले० श्री कृ]
कार्तिक अंक के चित्र [ले० श्री कृ]
सभा की प्रगति [ले० श्री सहायक मंत्री]
हिंदी-प्रचारिणी संस्थाएँ [,, ,,]

नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला

इस माला में सभा प्राचीन कवियों और लेखकों की रचनाएँ योग्य विद्वानों से संपादित करा के प्रकाशित करती है। द्रव्य के अभाव में इस वर्ष इसमें कोई नया ग्रंथ नहीं प्रकाशित किया गया।

सूरसागर को, जिसका प्रकाशन सात अंक निकालने के बाद स्थगित कर दिया गया था, अब फिर उसी रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। गत वर्ष इसका एक सस्ता संस्करण निकालने का निश्चय हुआ था, पर इस वर्ष सभा के वार्षिकोत्सव के सभापति कथावाचस्पति पं० राधेश्याम वानप्रस्थी ने इसके लिये द्रव्य संग्रह करने का वचन दिया है, जिससे आशा है कि अब यह उसी सुंदर रूप में छपाया जा सकेगा।

मनोरंजन पुस्तकमाला

इस माला में ५३ उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। आर्थिक कठिनाई के कारण इसकी ५४ वीं पुस्तक, जो तैयार है, इस वर्ष छापी न जा सकी।

प्रकीर्णक पुस्तकमाला

इस वर्ष इसमे ये तीन पुस्तके प्रकाशित की गईं—उर्दू का रहस्य, मुल्क की जबान और फाजिल मुसलमान (उर्दू में), मुगल बादशाहो की हिंदी। ये तीनो पुस्तकें हिंदी भाषा की स्थिति स्पष्ट करने और उर्दू के संबध मे प्रचारित बहुत सी भ्रम मे डालनेवाली बातो का निराकरण करने मे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

सूर्यकुमारी पुस्तकमाला

श्रीमान् शाहपुराधीश महाराज उम्मेदसिंह जी ने अपनी स्वर्गवासिनी धर्मपत्नी श्रीमती सूर्यकुमारी देवी की स्मृति में सभा को धन देकर इस पुस्तकमाला को प्रकाशित कराने की व्यवस्था की थी। इसके लिये शाहपुरा दरबार से सभा को कुल ११९८४) प्राप्त हुए थे। इस माला मे अब तक १७ ग्रंथ प्रकाशित हो चुके है।

इस वर्ष इस पुस्तकमाला मे 'हिंदी-साहित्य का इतिहास' का संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशित किया गया जो, खेद है, विद्वान् लेखक की आकस्मिक मृत्यु से किंचित् अधूरा ही रह गया। 'हिंदी-साहित्य का इतिहास' का एक संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त 'हिंदी की गद्य-शैली का विकास' का पुनर्मुद्रण हुआ। स्व० पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी के लेखो का संग्रह 'गुलेरी ग्रंथ' के नाम से छप रहा था, किंतु गुलेरी जी के पुत्र पं० योगेश्वर शर्मा गुलेरी से इसके संबंध मे कुछ आवश्यक विषयो पर पत्र-व्यवहार हो रहा है जिससे १५ फार्म के बाद आगे छपाई रोक दी गई है। आशा है शीघ्र ही फिर छपाई आरंभ हो जायगी।

इस वर्ष माला के आय-व्यय का ब्योरा इस प्रकार है—

आय		व्यय	
५६९०॥)४	गत वर्ष की बचत	३६६)	हिंदी गद्य-शैली के विकास की छपाई
१५६९॥।)॥	पुस्तकों की बिक्री तथा रायल्टी	५८४॥=)	हिंदी गद्य-शैली के विकास के लिये कागज
७२६०॥)१०			

४७८।)	शशाक के लिये कागज
२९८।)	शशाक की छपाई
२७९॥-)॥	शशाक की जिल्द बँधाई
१७६)	हिंदी-साहित्य के इतिहास की रायल्टी
१९६≡)॥	कार्यालय-व्यय
२४९॥)॥	सोविएत् भूमि की जिल्द बँधाई
२३९)	सोविएत् भूमि की रायल्टी
१२॥≡)॥ =	फुटकर
२८८०।≡)॥ =	
४३८०)११½ बचत	
७२६०॥)१०	

देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला

जोधपुर-निवासी स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ की दी हुई निधि से इस माला मे ऐतिहासिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। इस माला मे अब तक १४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इस वर्ष १५ वीं पुस्तक 'मोहे जो दड़ो' छपने को दी गई है। उसकी छपाई प्रायः समाप्त हो चुकी है। वह शीघ्र प्रकाशित होगी।

इस वर्ष माला के आय-व्यय का ब्योरा इस प्रकार है—

आय		व्यय	
६९४२।=)४½	गत वर्ष की बचत	८९)	मध्य प्रदेश के इतिहास की छपाई
६३०)	इंपीरियल बैंक के शेयरों का मुनाफा	२॥)	बैंक बट्टा
१०४॥≡)	इनकम टैक्स का फिरता	२६)	मोहे जो दड़ो के प्रूफ संशोधन करने का पारिश्रमिक
३५५।)	पुस्तकों की बिक्री तथा रायल्टी	६०॥=)॥।	कागज
		१३६≡)॥ =	कार्यालय व्यय
८०३२।-)४½			

४)॥॥= फुटकर व्यय

३०७॥≡)॥

७७२४॥-)१०½ बचत

८०३२।-)४½

बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला

जयपुर के स्वर्गीय बारहट बालाबख्शजी की दी हुई निधि से इस माला में राजपूतों और चारणों की लिखी डिंगल और पिंगल भाषा की पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इस वर्ष इस माला में जोधपुर के वयोवृद्ध विद्वान् श्री रामकर्णजी द्वारा संपादित 'राजरूपक' नाम के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का छापना आरंभ किया गया। इसका कुछ अंश छप चुका है।

माला के इस वर्ष के आय-व्यय का हिसाब निम्नलिखित है—

आय		व्यय	
१५२४≡)७	गत वर्ष की बचत	२०७=)	रघुनाथ रूपक गीतारो का पारिश्रमिक
३४३≡)॥	सरकारी कागजों का व्याज	१८६)	रघुनाथ रूपक की छपाई
६१।)	इनकम टैक्स का फिरता	३०-)॥	रघुनाथ रूपक के लिये शेष कागज
१०६)॥	पुस्तकों की बिक्री तथा रायल्टी	१२०-)॥	रघुनाथ रूपक की जिल्द बँधाई
		३३०।।)	राजरूपक के लिये कागज
		९०२।।)	स्टाक रूम की बनवाई
		६३॥-)॥	कार्यालय व्यय
		४॥≡)॥	फुटकर
		१८४५=)॥	
		१८९॥-)४	बचत
२०३४॥≡)७		२०३४॥≡)७	

देव पुरस्कार ग्रंथावली

ओड़छा का की वीरेंद्र केशव साहित्य-परिषद् ने उक्त ग्रंथावली के नाम से उच्च कोटि की साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित करने के लिये सभा को १०००) दिया था। इस ग्रंथावली मे इस वर्ष कोई पुस्तक प्रकाशित नही हुई। इस वर्ष इस माला के आय-व्यय का हिसाब इस प्रकार है :—

आय		व्यय	
९१९॥।-)॥	पुस्तकों की बिक्री	९०॥।≡)॥	गत वर्ष का अधिक व्यय
९१९॥।-)॥		२५)	जिल्दबंदी का सामान
		११)	पुट्ठे की छपाई
		१०२।≡)॥	कार्यालय व्यय
		२॥।-)॥।	फुटकर व्यय
		२३२।-)॥।	
		६८७।≡)॥।	बचत
		९१९॥।-)॥	

श्री महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली

युक्त प्रांत के कृषिविभाग के डिप्टी डाइरेक्टर श्री प्यारेलाल गर्ग ने हिंदी के पुराने और प्रतिष्ठित लेखक अपने स्वर्गीय पिता डाक्टर महेंदुलाल गर्ग की स्मृति मे उन्ही के नाम से उक्त ग्रंथावली प्रकाशित करने के लिये सभा को १०००) देने का वचन दिया है। इसमे से २००) वे दे भी चुके हैं। दाता महोदय कृपिशास्त्र के शब्दो की सूची भी स्वयं तैयार कर रहे हैं। उसके तैयार हो जाने पर उसपर सभा द्वारा कृपिशास्त्र के विद्वानो की सम्मति माँगी जायगी।

श्रीमती रुक्मिणी तिवारी पुस्तकमाला

सभा के पुराने सदस्य अजमेर के स्वर्गीय राय साहब चंद्रिकाप्रसाद तिवारी की सुपुत्री श्रीमती रामदुलारी दुबे ने अपनी स्वर्गीया माता की

स्मृति मे उन्हीं के नाम से महिलाओ और शिशुओ के लिये उपयोगी एक पुस्तकमाला निकालने के लिये सभा को २०००) देने का वचन दिया है। उसमे से १०००) वे प्रदान कर चुकी हैं।

साहित्य गोष्ठी

स्वर्गीय बाबू जयशकर प्रसाद ने ९००) रुपयो की जो निधि साहित्य-परिषद् के लिये सभा को दान दी थी उसके उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये यह गोष्ठी स्थापित की गई है। यह इसका दशम वर्ष है। इसके द्वारा साहित्य-प्रेमियों को समय-समय पर स्थानीय तथा बाहर के अनेक विद्वानो एवं सुकवियों के व्याख्यानो तथा रचनाओ को सुनने के अवसर मिलते हैं। गोष्ठी को अधिक उपयोगी तथा आकर्षक बनाने के हेतु सं० १९९४ से इसके अतर्गत 'प्रसाद'-व्याख्यान-माला की आयोजना की गई है, जिसमे विभिन्न अवसरो पर विद्वानो द्वारा सुबोध व्याख्यान हुआ करते हैं।

इस वर्ष १ ज्येष्ठ को गोष्ठी की ओर से मैसूर विश्वविद्यालय के गणित के आचार्य श्री एम० वी० जवुनाथन् का स्वागत किया गया जिसमे जलपान का भी आयोजन किया गया था। ३ ज्येष्ठ को 'दक्षिण भारत मे हिंदी-प्रचार' पर उनका भाषण भी हुआ।

२५ श्रावण को गोष्ठी की ओर से पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के सभापतित्व मे तुलसीजयती मनाई गई। आरंभ मे हरिऔधजी के पौत्र श्री मुकुंददेव शर्मा ने 'हरिऔध' विरचित "बन राम-रसायन की रसिका रसना रसिको की हुई सफला" से प्रारंभ होनेवाले पद का बड़े ही सुरीले स्वर मे पाठ किया। तत्पश्चात् पं० लालधर त्रिपाठी ने 'तुलसी का महत्त्व' पर भाषण दिया तथा पं० प्यारेलालजी शर्मा 'व्यास' द्वारा रामायण की कथा हुई। इसके अनतर श्री संपूर्णानंदजी ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण द्वारा यह बतलाया कि गोस्वामीजी की कृति मे धनुषधारी राम द्वारा अनाचारी रावण के संहार तथा आर्य-साम्राज्य की प्रतिष्ठा का वर्णन पढ़कर हिदुओ का पुन: साम्राज्य-रक्षा की ओर ध्यान गया। इसके पश्चात् प० रामनरेश त्रिपाठी तथा प० चद्रबलीजी पाडे के व्याख्यान हुए और श्री 'कौतुक' जी का कविता-पाठ हुआ।

अत मे सभापति महोदय ने 'तुलसी के काव्य' पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिया।

१४ कार्तिक को काशी-विश्वविद्यालय के वयोवृद्ध पडित प्रमथनाथ तर्कभूषण के सभापतित्व में 'कालिदास-दिवस' मनाया गया। आरभ मे जयनारायण स्कूल के छात्रो द्वारा कविता-पाठ हुआ। श्री श्रीशदत्त जी ने कालिदास के रघुवश के सरस स्थलो का बड़े ही मधुर स्वर में पाठ किया। इसके पश्चात् प० केशवप्रसाद मिश्र, श्रीसंपूर्णानदजी, डाक्टर मगलदेव शास्त्री, प० महादेव शास्त्री, पं० रामबालक शास्त्री, पं० पद्मनारायण आचार्य, प० सीताराम चतुर्वेदी, पं० कान्तानाथ पाडेय आदि के भाषण हुए।

१३ पौष को कर्नाटक प्रात के प्रसिद्ध सगीतविशारद श्री बी० आर० पुराणिकजी ने अपनी उच्च कोटि की सगीतकला का प्रदर्शन किया।

सगीत द्वारा हिंदी-साहित्य की अद्भुत रक्षा हुई है। इस निधि में यदि कुछ अधिक धन होता तो सभा प्रसिद्ध सगीतज्ञो को समय समय पर निमंत्रित करती रहती।

इस वर्ष 'प्रसाद'-व्याख्यान-माला मे व्याख्यान देनेवाले सज्जनो के नाम और उनके विषय नीचे दिए जाते है—

नाम	विषय
(१) श्री संपूर्णानद	आर्यों का मूल निवास-स्थान भारत ही था
(२) ,, ,,	,,
(३) पं० शिवनाथ झारखडी	आर्य सस्कृति
(४) प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिंह	बच्चो के रोग
(५) ,, ,,	युवको के रोग
(६) प० रामनरेश त्रिपाठी	ग्रामगीत
(७) श्री डा० उदयभानु	मानस चिकित्सा

पुरस्कार और पदक

उत्तम और मौलिक ग्रंथकर्ताओ को नियमानुसार जो पदक तथा पुरस्कार सभा दिया करती है उनकी निधियो का विवरण परिशिष्ट ८ में

दिया गया है। ये निधियाँ ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट संयुक्तप्रांत के पास जमा कर दी गई है और उनके ब्याज से ये पुरस्कार और पदक दिए जाते है।

जिस प्रकार ये पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं उसका विवरण निम्नलिखित है—

राजा बलदेवदास बिड़ला पुरस्कार—श्रीमान् राजा बलदेवदास बिड़ला की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार संवत् १९९७ से प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। इस बार यह पुरस्कार १ माघ १९९३ से २९ पौष १९९७ तक प्रकाशित अध्यात्म, योग, सदाचार, मनोविज्ञान और दर्शन के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिये दिया जायगा।

बटुकप्रसाद पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार स्वर्गवासी राय बहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री की दी हुई निधि से सर्वोत्तम मौलिक उपन्यास या नाटक के लिये संवत् १९९८ से प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। इस बार १ माघ १९९४ से २९ पौष १९९८ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक के लिये यह पुरस्कार संवत् १९९८ में दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (१)—स्वर्गवासी श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार व्रजभाषा के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। अगला पुरस्कार १ माघ १९९४ से २९ पौष १९९८ तक प्रकाशित सर्वोत्तम ग्रंथ पर सं० १९९८ में दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (२)—यह दूसरा रत्नाकर पुरस्कार भी २००) का है। यह पुरस्कार व्रजभाषा के सदृश हिंदी की अन्य भाषाओं (यथा डिंगल, राजस्थानी, अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी आदि) की सर्वोत्तम रचना अथवा सुसंपादित ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ १९९५ से २९ पौष १९९९ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० १९९९ में दिया जायगा।

डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार—श्रीयुत पंडित रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह २००) का पुरस्कार विज्ञान विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ पर प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार

१ माघ १९९६ से २९ पौष स० २००० तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००० में दिया जायगा।

जोधसिंह पुरस्कार—उदयपुर के स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह की दी हुई निधि से यह २००) का पुरस्कार सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ सं० २००१ से २९ पौष सं० २००५ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००५ मे दिया जायगा।

डा० हीरालाल स्वर्णपदक—स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल की दी हुई निधि से एक स्वर्णपदक सभा द्वारा पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, इंडोलाजी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी मे लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध पर प्रति दूसरे वर्ष दिया जायगा। अब यह पदक १ वैशाख ९४ से ३० चैत्र ९७ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक वा निबंध पर दिया जायगा।

द्विवेदी स्वर्णपदक—स्वर्गीय आचार्य प० महावीरप्रसाद द्विवेदी की प्रदान की हुई निधि से प्रति वर्ष यह स्वर्ण-पदक हिंदी मे सर्वोत्तम पुस्तक के रचयिता को दिया जाता है। इस वर्ष यह पदक १ वैशाख १९९५ से ३० चैत्र १९९६ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर दिया जाने को था पर अभी पुस्तको पर विचार नही हो सका है अतः अब अगले वर्ष विचार करके यह पदक दिया जायगा।

सुधाकर पदक—स्वर्गीय बाबू गौरीशंकरप्रसाद ऐडवोकेट की दी हुई निधि से यह रौप्यपदक बटुकप्रसाद पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

ग्रीव्ज पदक—श्रीयुत पं० रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह रौप्यपदक डा० छन्नूलाल पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

राधाकृष्णदास पदक—श्रीयुत बाबू शिवप्रसाद गुप्त की दी हुई निधि से यह रौप्यपदक रत्नाकर पुरस्कार सं० १ पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

बलदेवदास पदक—श्रीयुत बाबू ब्रजानंददास वकील की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० २ प्राप्त करनेवाले सज्जन को दिया जायगा।

गुलेरी पदक—स्वर्गीय श्रीयुत पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी की स्मृति में श्रीयुत पं० जगद्धर शर्मा गुलेरी की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक जोधसिंह पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

रेडिचे पदक—यह रौप्य पदक बिड़ला पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा। इसके लिये सभा को ३७) चंदे से प्राप्त हुए थे। सभा ने शेष रुपए पूरे करके इसकी भी निधि स्थापित कर दी है।

संकेत-लिपि विद्यालय

इस विद्यालय में इसके अध्यक्ष पं० निष्कामेश्वर मिश्र की आविष्कृत प्रणाली से संकेतलिपि की तथा इसके प्रधानाध्यापक श्री गोवर्धनदास गुप्त लिखित 'हिंदी टाइप राइटिंग' के आधार पर हिंदी टाइप राइटिंग की शिक्षा दी जाती है। इस समय यहाँ से उत्तीर्ण विद्यार्थी सरकारी विभागों, रियासतों तथा बड़े-बड़े व्यापारियों के कार्यालयों में काम कर रहे हैं।

इस वर्ष के अंत तक इस विद्यालय में ३२ विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की। इनमें कई तो दूर-दूर के प्रांतों और रियासतों से केवल इसी विषय की शिक्षा प्राप्त करने यहाँ आए थे।

दो वर्ष पूर्व केवल उर्दू जाननेवाले संवाददाताओं को ही सरकारी गुप्तचर विभाग में विशेषता दी जाती थी, परंतु अब उसमें हिंदी संवाद-दाताओं की भी माँग बढ़ती जा रही है।

खेद है कि धन के अभाव के कारण विद्यालय की उन्नति में बड़ी बाधा उपस्थित हो रही है। विद्यालय का मुख्य उद्देश्य यह है कि उसके विद्यार्थी सभी क्षेत्रों में पहुँचकर हिंदी का प्रचार करें। इसके लिये हिंदी में कई उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन बहुत आवश्यक है। विद्यालय पुस्तकें तैयार करा सकता है पर उनके प्रकाशन के लिये धन का प्रबंध नहीं है।

संबद्ध संस्थाएँ

जो संस्थाएँ सभा से संबद्ध हैं उनकी सूची परिशिष्ट ७ में दी गई है। उनमें से जिनका विवरण समय पर प्राप्त हुआ, उनका उल्लेख यहाँ किया जाता है—

हिंदी-प्रचारिणी सभा, जम्मू—यह संस्था कश्मीर में अच्छा काम कर रही है। कश्मीर-सरकार की शिक्षा-संगठन समिति की सिफारिश थी कि कश्मीर में शिक्षा का माध्यम उर्दू ही रहे। उक्त सभा ने इसके विरोध में बहुत प्रयत्न किया। इससे कश्मीर में लोकमत जागरित हुआ और कश्मीर-सरकार ने यह आज्ञा निकाली कि प्राइमरी स्कूलों में सरल उर्दू शिक्षा का माध्यम होगी जो फारसी और नागरी दोनों लिपियों में लिखी जाया करेगी।

स्टेट हाईकोर्ट आव जुडीकेचर में भाषा उर्दू है, पर इस सभा ने एक दरख्वास्त हिंदी में दिलाई जो कुछ आना-कानी के बाद स्वीकार कर ली गई।

राज्य की प्रजासभा में प्रश्नों, बिलों, प्रस्तावों आदि के विवरण अब तक अँगरेजी और उर्दू में ही लिए जाते थे पर सभा के प्रयत्नों से यह घोषणा हो चुकी है कि अब वे विवरण हिंदी में भी लिए जायँगे। कश्मीर के सरकारी गजट तथा अन्य सूचनाओं को अँगरेजी, उर्दू के अतिरिक्त हिंदी में भी प्रकाशित करने के लिये दस हजार हस्ताक्षरों के साथ सरकार के पास अनुरोधपत्र भेजने का आयोजन किया जा रहा है।

जनगणना के संबंध में हिंदीभाषियों को सचेत करने के लिये इस सभा ने बीस हजार 'पोस्टर' छपाकर रियासत के सभी भागों में प्रचार किया।

अब तक इस सभा की चार शाखाएँ थीं, अब अखनूर में एक शाखा और खोली गई है। सभा के सभासदों की संख्या २०० से ऊपर है। जम्मू नगर में एक विशाल पुस्तकालय स्थापित करने का प्रयत्न आरंभ हो गया है।

नागरी-प्रचारिणी सभा, भगवानपुर रत्ती, मुजफ्फरपुर—इस सभा का अब चौदहवाँ वर्ष समाप्त हुआ। इस वर्ष इसके प्रयत्न से आसपास के स्थानों में सात पुस्तकालय खोले गए। सभा के पुस्तकालय में २१६ नई पुस्तकें खरीदी गईं। कई सज्जनों ने पुस्तकें भेंट भी कीं। घर पुस्तकें ले जानेवालों की संख्या ११४३ रही। वाचनालय में १३ पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं। वाचनालय में पाठकों की संख्या ३६८ रही। वाचनालय खुलने का समय सायंकाल ४ से ९ बजे तक है।

इस सभा के खोज विभाग ने इस वर्ष चार हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त किए। वैशाली से भगवान् बुद्ध की दो प्रस्तरमूर्तियाँ भी प्राप्त की गई। एक ध्यानमग्न व्यक्ति की पीतल की मूर्ति भी मिली है। चाँदी और मिट्टी के कुछ सिक्के मिले हैं जिनपर उर्दू तथा पाली में लेख हैं।

जनगणना में हिंदी लिखवाने के संबंध में सभा ने सूचनाएँ छपाकर बँटवाईं। इसके द्वारा तुलसी और हरिश्चंद्रजयंती भी यथासमय मनाई गई।

गाँव में स्थित होकर भी यह सभा बहुत अच्छा कार्य कर रही है।

सुहृद्-संघ, मुजफ्फरपुर—छः वर्षों से यह संस्था हिंदी की अच्छी सेवा कर रही है। हिंदुस्तानी तथा रेडियो की भाषा का विरोध और अदालतों में हिंदी-प्रचार के संबंध में इसने विहार में अच्छा प्रयत्न किया। इस वर्ष इसने बिहार की साक्षरता-प्रसार-समिति के इस निर्णय का घोर विरोध किया कि संथालियों के लिये प्राइमरी पुस्तकें रोमन लिपि में तैयार कराई जायँ। इसमें उसे बहुत कुछ सफलता भी मिली।

संघ का पुस्तकालय और वाचनालय भी है। वाचनालय में ६० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। नित्य के पाठकों की संख्या इस वर्ष ६० और ७० के बीच रही। संघ की ओर से हिंदी साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा और मध्यमा परीक्षा के परीक्षार्थियों को निःशुल्क पुस्तकें देने तथा उनके लिये उपयोगी व्याख्यान दिलाने का भी प्रबंध किया गया।

संघ ने ग्रामगीतों का संग्रह-कार्य भी आरंभ किया है। इस विभाग के मंत्री श्री रामइकबाल 'राकेश' के प्रयास से अब तक १५०० गीतों का संग्रह हो चुका है।

संघ ने अपना भवन बनवाने के लिये इस वर्ष भूमि खरीद ली है। इसके लिये विहार सरकार से भी सहायता मिली है। भवन बनवाने का प्रयत्न हो रहा है।

डा० राजेंद्रप्रसाद ने इस संघ का कार्य देखकर इसके विषय में बहुत अच्छी सम्मति दी है।

प्रसाद-परिषद्, काशी—परिषद् का यह तीसरा वर्ष समाप्त हुआ इस अल्प-काल में ही इसने अपने विभिन्न सुरुचिपूर्ण आयोजनों द्वारा काशी के साहित्यिक जीवन में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है।

आर्थिक कठिनाइयो के कारण यद्यपि इसकी प्रकाशन, वाचनालय तथा पुस्तकालय संबंधी योजनाएँ कार्यान्वित न हो सकीं, तथापि इसके सदस्यो मे उत्साह की कमी नहीं है, वे उद्योगशील हैं।

इस वर्ष परिषद् के सदस्यो की सख्या ५० रही। इसकी सब १४ बैठके हुई जिनमे तीन विशेष अधिवेशन थे। प्रथम मे हिंदी के श्रेष्ठ कवि पं० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला' का अभिनदन किया गया। दूसरा अधिवेशन पूना हिंदी-साहित्य सम्मेलन के मनोनीत सभापति श्री संपूर्णानद के सत्कार मे किया गया। तीसरे मे प्रसाद-स्मृति-दिवस मनाया गया। परिषद् ने बनारस जिला हिंदी-साहित्य सम्मेलन के सहयोग से सरकारी जनगणना विभाग की हिंदी-विरोधी नीति का विरोध करने के लिये प० रामनारायण मिश्र के सभापतित्व मे एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया। उसमे उक्त विषय का प्रस्ताव कराकर जनगणना-अधिकारियो के पास और समाचारपत्रो मे भेजा।

आचार्य रामचद्र शुक्ल परिषद् के जन्म से ही उसके सभापति थे। इस वर्ष वे इसके सरक्षक भी चुने गए थे। उनकी अचानक मृत्यु से परिषद् की वर्णनातीत क्षति हुई है।

स्थायी कोश

इस वर्ष सभा के स्थायी कोश मे जो आय-व्यय हुआ उसका ब्योरा निम्नलिखित है—

आय		व्यय	
२२६७८=)११	गत वर्ष की बचत	४५७५॥।)११	गवर्मेंट स्टाक सर्टिफिकेट ४८००) अंकित मूल्य के खरीदे गए
२७५॥।≡)७	स्टाक सर्टिफिकेट और पो० आ० से० बैंक का ब्याज	१०५८॥।)१०	बचत जिसका स्टाक सर्टिफिकेट खरीदा जायगा।
११८)	सा० सभासदो के चंदे का २० वॉ अंश		
३०१३।≡)३	स्थायी सभासदो का चंदा		
५६७४॥-)९		५६७४॥-)९	

आय-व्यय

इस वर्ष के आय-व्यय का लेखा इस विवरणपत्र में अन्यत्र दिया गया है। उससे पता चलता है कि इस वर्ष के अंत में कुल आय ३६३८४।।।=)२ हुई। इसमें ५७४७।।।-)२ गत वर्ष की बचत है और ३०६३७-) इस वर्ष की आय है। इस वर्ष कुल व्यय २८९९०=)२ हुआ।

इस वर्ष आय का अनुमान २१०६७) किया गया था और व्यय का २१०६७)। किंतु आय और व्यय दोनों ही अनुमान से अधिक हुए। कलाभवन के लिये लगभग २४००) चंदा मिला। अनुमान से अधिक स्थायी सभासद बने जिससे स्थायी कोष में भी वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त साधारण सदस्य भी अधिक बने। श्रीमती रामदुलारी देवी (अजमेर) ने रुक्मिणी देवी ग्रंथ-माला के लिये १०००) का दान दिया। श्री प्यारेलाल गर्ग ने डा० महेंदु-लाल गर्ग विज्ञान-ग्रंथावली के लिये २००) दिया। पुस्तकों की बिक्री अनुमान से लगभग १९००) की अधिक हुई। सभा के कुएँ का जीर्णोद्धार कराने के लिये श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया ने ४००) की सहायता की। अन्य मदों में भी साधारण आय अधिक हुई।

इस वर्ष स्थायी कोष में ४८००) अंकित मूल्य का स्टाक सर्टिफिकेट क्रय किया गया। राजघाट की खोदाई में प्राप्त बहुमूल्य वस्तुओं के लिये कलाभवन में लगभग १५००) व्यय किया गया। उनके रखने के लिये शो केस के बनवाने में ४००) व्यय हुआ। बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला से प्रकाशित पुस्तकों के रखने के लिये एक स्टाक रूम बनवाया गया। इसमें ९०२।) व्यय हुआ। श्री उस्ताद रामप्रसाद चित्रकार को ८५०) की थैली भेंट की गई। इससे उनके लिये मकान खरीद लिया गया। इसके अतिरिक्त पुस्तकें अधिक प्रकाशित होने तथा कागज की महँगी के कारण सब मालाओं तथा सभा की पुस्तकों की छपाई में भी अधिक व्यय हुआ। इन सब कारणों से व्यय भी अनुमान से अधिक हुआ जो अत्यंत आवश्यक था। इस बात का ध्यान रखा गया कि आय से अधिक व्यय न हो। अंत में ७३९४।।।) की बचत रही। इस वर्ष सभा को १९९३।।।-)१०३ और ऋण लेना पड़ा जिससे सभा

पर वर्ष के अंत में २०२७७॥|)११ का ऋण हो गया। इसमें लगभग ९५००) बाजार का देना है, बाकी सभा के ही अन्य विभागों तथा मालाओं का लग गया है। यह कुल धन सभा के प्रकाशन में लगा हुआ है। सभा का साधारण व्यय आय से अधिक है। सभासदों का चंदा पत्रिका के प्रकाशन में ही खर्च हो जाता है। वास्तव में उससे पत्रिका संबंधी व्यय पूरा नहीं हो पाता। प्रकाशन से जो बचत होती है वह पुस्तकालय, कलाभवन तथा फुटकर खर्च एवं डाकव्यय के लिये पर्याप्त होती है परंतु लगभग २०००) कार्यालय के वेतन आदि की पूर्ति का कोई साधन नहीं है। यह धन स्थायी कोष के व्याज से दिया जा सकता है परंतु इस मद में अभी बहुत कम धन जमा हुआ है। आशा है सर्वसाधारण इधर ध्यान देंगे। ३०००) की आय बढ़े बिना सभा के ऋण की पूर्ति असंभव प्रतीत होती है। जब तक ऐसा न होगा ऋण बढ़ता ही जायगा।

हिंदी-प्रचार

इस वर्ष पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए० ने सभा की ओर से लखनऊ, मेरठ, देहरादून, सहारनपुर, हरिद्वार, बरेली आदि स्थानों में हिंदी-प्रचार के लिये यात्रा की। उनके प्रयत्न का अच्छा फल हुआ और सभा के बहुत से सभासद भी बने।

बरेली की कचहरी में वहाँ के कुछ उत्साही हिंदी-प्रेमियों ने प्रयत्न करके एक हिंदी-लेखक नियुक्त किया है। उसके खर्च के लिये सभा ने भी एक वर्ष तक ५) मासिक के हिसाब से सहायता देना स्वीकार किया।

दिसंबर के अंत में मद्रास में दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा और जनवरी के आरंभ में पंजाब प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन हुए। द० भा० हि० प्र० सभा ने अपने प्रचारक-सम्मेलन और पं० प्रां० सा० सम्मेलन ने अपने शिक्षा-सम्मेलन के सभापतित्व के लिये सभा के उपसभापति पंडित रामनारायण मिश्र को आमंत्रित किया। मिश्रजी ने हिंदी-प्रचार-व्रती होने के नाते काशी से मद्रास, हैदराबाद और पंजाब की लंबी यात्रा का कष्ट स्वीकार किया, फिर १ फरवरी को वे जौनपुर जिला हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के १३वें वार्षिकोत्सव के सभापति हुए।

उक्त तीनो सम्मेलन मिश्रजी के सभापतित्व मे खूब सफल रहे, और उनके द्वारा हिंदी का अच्छा प्रचार हुआ।

वार्षिकोत्सव

१३-१४ फरवरी को बरेली-निवासी कथावाचस्पति पं० राधेश्यामजी वानप्रस्थी के सभापतित्व मे सभा का वार्षिकोत्सव मनाया गया। इसमें हिंदी के सबध मे कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। यह उत्सव इस दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण रहा कि हिंदी के एक सच्चे और समर्थ सेवक पं० राधेश्यामजी की सेवाएँ सभा को पहले पहल प्राप्त हुईं। उन्होंने सभा की कठिन आर्थिक स्थिति के साथ पूर्ण सहानुभूति दिखलाई और वचन दिया कि सन् १९४१ मे वे विशेष रूप से धन-संग्रह आदि द्वारा सभा का ही कल्याण साधन करेंगे। सभा इसके लिये हृदय से उनकी कृतज्ञ है।

सभा की अर्धशताब्दी और महाराज विक्रमादित्य की द्विसहस्राब्दी

विक्रमीय द्विसहस्राब्दी की पूर्ति का समय अब निकट आ रहा है। उसी समय सभा के ५० वर्ष भी पूरे हो जायँगे। इस महान् अवसर पर सभा अपनी अर्धशताब्दी तथा महाराज विक्रम की द्विसहस्राब्दी साथ साथ मनाएगी। सभा ने निश्चय किया है कि इस अवसर पर एक महोत्सव किया जाय और भारत की सभी भाषाओं के विद्वानो की सभा की जाय। सभी लेखकों और कवियों से प्रार्थना की जाय कि वे इस विषय पर अपने अपने मंतव्य प्रकट करें और उन मंतव्यो को एक बड़े स्मारक ग्रंथ में प्रकाशित किया जाय तथा श्रीमानों की सहायता से एक भव्य स्मारक बनवाया जाय।

सभा देश के श्रीमानो, कवियो, लेखको और विद्वानो से विशेष रूप से इस महोत्सव मे सफलता के लिये सहयोग की प्रार्थना करती है।

'हिंदी' (मासिक पत्रिका)

सभा ने इस वर्ष अपने तत्त्वावधान मे 'हिंदी' नाम की एक मासिक पत्रिका निकालने की स्वीकृति दी। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा और नागरी लिपि का प्रचार तथा उसपर अनेक ओर और प्रकार से होनेवाले आघातो से उसकी रक्षा करना है। सभा ने इसकी आर्थिक व्यवस्था से अपना कोई सबंध नहीं रखा और न इसकी नीति का उत्तरदायित्व ही ग्रहण किया है। इसके सपादक, प्रकाशक और मुद्रक प० चंद्रवली पांडे, एम० ए० हैं और इसकी व्यवस्था तथा नीति की देख-रेख भी वही करते है।

'हिंदी' के जो चार अक अब तक प्रकाशित हुए हैं उनसे 'हिंदी' के आविर्भाव की आवश्यकता सार्थक प्रमाणित हुई है। लोगो ने उसको पसद भी किया है। परंतु आवश्यकता है उसके अधिक से अधिक प्रचार की। इसी प्रचार के उद्देश्य से इस पत्रिका का वार्षिक मूल्य बहुत ही कम--भारत मे ॥), ब्रह्मदेश मे ॥।) और विदेशों मे १॥)--रखा गया है। हिंदी-प्रेमियों को चाहिए कि इसके स्वयं ग्राहक बनें तथा जितने हो सकें और ग्राहक भी बनाकर हिंदी-सेवा के पुनीत कार्य मे हाथ बँटावें।

हिंदी की प्रगति

गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष हिंदी की प्रगति अधिक व्यापक और अधिक हलचलो से पूर्ण रही। हिंदी के विरोधियो ने उसपर अपना चौमुख आक्रमण खुले और छिपे रूप मे अधिक वेग और चेष्टापूर्वक जारी रखा। हिंदी के नाम और रूप के सबंध का झगड़ा भी चलता रहा। परतु संतोष की बात है कि हिंदी अपने मार्ग पर दृढ़ता के साथ अग्रसर होती रही और विरोध और कठिनाइयो ने उसे अधिकाधिक बल ही प्रदान किया।

भारत की केंद्रीय सरकार और पजाब तथा बबई की प्रांतीय सरकारो ने हिंदी के प्रति जो नीति बरती उससे हिंदीभाषी जनता की धारणा प्रबल होती गई कि उन्होने हिंदी के साथ न्याय नहीं किया। इस कारण हिंदीभाषाभाषी जनता मे क्षोभ हुआ और पत्र-पत्रिकाओ मे निरतर

सका प्रतिवाद होता रहा। भारत के प्रधान सिक्के—रुपए—
र हिंदी अक्षरो को पहले ही से स्थान नहीं मिला था।
धर जो नए रुपए और एक रुपए के नोट चले उनपर भी
नके दर्शन नहीं हुए। कुछ दिन हुए, 'रायल इंडियन नेवी' की
ओर से एक विज्ञप्ति निकली थी जिसमे ऐसे पढे-लिखे रगरूटो या नौकरों
की मॉग थी जो अँगरेजी अथवा हिदुस्तानी पढ़ लिख सकते हो—हिंदु-
स्तानी वह नहीं जो नागरी और उर्दू लिपियो मे लिखी जाती हो, बल्कि
रोमन और उर्दू लिपियो मे लिखी जानेवाली हिदुस्तानी! इसके विरुद्ध
भी पत्रो मे लिखापढ़ी हुई।

रेडियो

रेडियो स्टेशनो की धाँधली भी प्राय. उसी प्रकार चलती रही।
हिदुस्तानी के नाम पर अब भी उर्दू का ही ढोल पीटा जाता है।
हिंदी की जो दुर्गति रेडियो मे की जाती है उस पर अत्यंत दुःख और
साथ ही आश्चर्य भी होता है। लाहौर, दिल्ली और लखनऊ के
रेडियो-स्टेशनो से गत जनवरी और फरवरी मास में २५४४
रचनाएँ सुनाई गई। इनमे २५३० तो उर्दू कवियों की थीं और केवल
१४ हिंदी कवियो की। इन १४ मे भी केवल तुलसीदास, सूरदास
और मीरा आदि के अतिरिक्त हिंदी के किसी भी नए कवि का नाम नहीं।
और उधर उर्दू मे गालिब से लेकर जिगर तक सभी कवि विद्यमान थे।
रेडियो मे हिंदी की छीछालेदर के नमूने हिंदी-प्रेमियो के समक्ष निरतर पर्याप्त
सख्या मे उपस्थित किए गए। उदाहरणार्थ ३१ अक्टूबर को लखनऊ
रेडियो मे जो कालिदास-जयंती मनाई गई थी उसमें 'श्रद्धाजलि' को
'शिरधाजली', 'महारथी' को 'महार्थी', 'प्रभावित' को 'परभावत', 'प्रवाह'
को 'पुरवाह', 'साहित्य' को 'साहित्या' और 'नाटक' को 'नाटिक' कहला-
कर इस प्रकार के अनेक शब्दो की जो मरम्मत की गई वह रेडियो कार्य-
क्रम मे साधारण सी बात हो रही है।

रेडियो की भाषा नीति के विरोध मे इस वर्ष समाचारपत्रो में काफी
चर्चा हुई। हिंदी के सभी प्रमुख पत्रों और प्रांत के अँगरेजी पत्रो मे भी,
जिनमे "लीडर" मुख्य है, इस विषय के अनेक लेख प्रकाशित किए।
लखनऊ मे रेडियो सुननेवालो का एक सघ स्थापित हुआ और उसकी
ओर से "आकाशवाणी" नाम की पाक्षिक पत्रिका भी (जो कुछ दिनों के

जनगणना

इस वर्ष फरवरी में भारत सरकार की ओर से भारत के मनुष्यों की गणना की गई। युक्त प्रांत के गणकों के संकेतार्थ एक "फेहरिस्त सवालात" छपी थी। उसमें मातृभाषा संबंधी मुख्य अंश इस प्रकार दिया हुआ था—

"१८—आपकी मादरी जबान क्या है ?

हिदायत—(मादरी जबान) यह दर्ज कीजिए कि उस शख्स की मादरी ज़बान क्या है। यानी उस शख्स ने कौन सी जबान सबसे पहले बोली। दूध पीते बच्चों और गूँगे, बहरे लोगों की जबान वही दर्ज की जायगी जो उनकी माँ की है। सूबे की आम लोगों की जबान को "हिंदुस्तानी" दर्ज कीजिए। उर्दू या हिंदी न दर्ज कीजिए। पहाड़ी बोली के लिये भी हिंदुस्तानी दर्ज होगी।"

इस प्रकार जिन स्थानों की मातृभाषा हिंदी है वहाँ की मातृभाषा "हिंदुस्तानी' लिखने के लिये गणकों को आदेश दिया गया था। सरकारी हल्कों और उर्दू के पक्षपातियों का हिंदुस्तानी से क्या अभिप्राय है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। उर्दू के विद्वानों ने तो उसके विषय में अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त कर दिए हैं।

"अगर कोई पूछे कि सूब: बिहार की मादरी जबान क्या है तो जवाब हर तरफ से यही मिलेगा कि "हिंदुस्तानी जिसको आम तौर से उर्दू कहा जाता है।"

(नुकूशे सुलेमानी पृ० २५९)

दिसंबर सन् ४० में कानपुर में दूसरे अखिल भारतीय उर्दू सम्मेलन के अध्यक्ष पद से सर अब्दुल कादिर ने कहा था कि उर्दू भारत की राष्ट्र-भाषा बनाई जा सकती है और उर्दू और हिंदुस्तानी में कोई अंतर नहीं है। जब पंजाब जैसे प्रांतों में उर्दू वालों को अपनी मातृभाषा 'उर्दू' लिखाने का अधिकार हो और युक्त प्रांत तथा बिहार में हिंदीभाषियों की मातृभाषा 'हिंदुस्तानी' लिखी जाय (जिसका अर्थ प्रत्येक अवस्था में 'उर्दू' ही सिद्ध किया जायगा) तो हिंदीभाषियों का अस्तित्व कहाँ रहेगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं।

सभा ने जनगणना-विभाग के भाषा-संबंधी उपर्युक्त आदेश का विरोध करने के लिये हिंदी-दिवस मनाने का आयोजन किया था और पत्रों द्वारा हिंदी की सभी प्रमुख संस्थाओं से वसंत पंचमी से एक सप्ताह के भीतर हिंदी दिवस मनाने का अनुरोध किया था। तदनुसार बहुत सी हिंदी संस्थाओं ने हिंदी दिवस मनाया। हिंदू सभा तथा आर्य-समाज ने भी इस संबंध में बहुत प्रयत्न किया। फलस्वरूप जनता को यह आश्वासन मिला कि हिंदी और उर्दू बोलनेवालों की मातृभाषाएँ हिंदुस्तानी न लिखकर हिंदी और उर्दू ही लिखी जायँगी। जनगणना में इसका पालन किया गया या नहीं, इसका ठीक पता तो जनगणना का विवरण प्रकाशित होने पर ही चलेगा, और इसकी अभी कई वर्ष तक प्रतीक्षा करनी होगी।

प्रांतीय सरकारें

भारत सरकार से संबद्ध भाषाविषयक कार्यों का कुछ उल्लेख हो चुका, अब प्रांतीय सरकारों के कार्य देखने चाहिएँ। पंजाब में सर सिकंदर हयात खाँ की सरकार ने अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा कानून बनाया है। उसके अनुसार पंजाब में लड़के-लड़कियों के लिये प्राइमरी शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। परंतु शिक्षा उर्दू में ही दी जायगी। पंजाब की व्यवस्थापिका सभा में रायबहादुर लाला सोहनलाल ने उक्त बिल में एक संशोधन पेश किया। इसपर वहाँ के शिक्षामंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा—"मैं गवर्नमेंट की पालिसी को साफ तौर पर बयान कर देना चाहता हूँ जैसा कि इससे पहले मैं एक मौके पर कर चुका हूँ। जहाँ तक सूबा पंजाब का ताल्लुक है, जरिया तालीम उर्दू है।" आगे उन्होंने यह भी कहा—"जरिया तालीम और सूबे की दफ्तरी और सरकारी जबान का गहरा ताल्लुक है। और चूँकि सूबा पंजाब की दफ्तरी और सरकारी जबान उर्दू है इसलिये लड़कों के मदारिस में जरिया तालीम उर्दू ही रहेगा।" किंतु जब इस बिल से लोगों में असंतोष और विरोध की भावना बढ़ने लगी तब संतोष देने के लिये प्रधान मंत्री सर सिकंदर हयात खाँ ने जो कहा वह ध्यान देने योग्य है—

"हुकूमत ने प्राइमरी एजुकेशन के मुताल्लिक जो कानून पास किया है उसका जरिया तालीम से कोई ताल्लुक नहीं है।" उन्होंने 'स्टेटस को' की भी चर्चा की है जिससे उनका तात्पर्य यह है कि सन् १९३६ के पहले जो हालत हिंदी और गुरुमुखी की थी वही अब भी रहेगी। परंतु यह आवश्यक नहीं कि यदि १९३६ के पहले हिंदी और गुरुमुखी की अवस्था अच्छी नहीं थी तो आगे भी उन्हें दबाए रखने का ही ढंग रचा जाय। आश्चर्य तो यह है कि युक्तप्रांत, बिहार और मध्यप्रांत में जहाँ उर्दू जनता की संख्या क्रमशः केवल १४, १२ तथा ४॥ प्रतिशत के लगभग है, वहाँ उर्दू पढ़नेवालों के लिये पूरा प्रबंध किया गया है; और उधर पंजाब की अधिकांश जनता की भाषा हिंदी और पंजाबी है, फिर भी वहाँ हिंदी और पंजाबी में शिक्षा देने के लिये समुचित सुविधाएँ प्रस्तुत करना तो दूर, जो कुछ हैं भी उनको दूर करने के नियम बन रहे हैं।

हिंदी के प्रेमियों की धारणा है कि बंबई सरकार भी उर्दू के प्रचार में किसी से पीछे नहीं रहना चाहती। वहाँ सरकार की ओर से स्कूलों की आरंभिक कक्षाओं में हिंदुस्तानी सिखलाने का प्रबंध है। हिंदुस्तानी के शिक्षकों को एक 'हिंदुस्तानी शिक्षक सनद' प्राप्त करनी पड़ती है। उनके लिये हिंदुस्तानी भाषा के साथ उर्दू लिपि का ज्ञान भी आवश्यक है, क्योंकि हिंदुस्तानी तो उर्दू और हिंदी दोनों लिपियों में लिखी जाती है। परंतु हिंदुस्तानी का अर्थ भी उर्दू ही है यह बंबई सरकार के उस परिपत्र से स्पष्ट हो जाता है जिसके अनुसार उसने उर्दू माध्यमवाली पाठशालाओं को हिंदुस्तानी की अनिवार्य पढ़ाई से मुक्त कर दिया है। उर्दू जाननेवालों को हिंदुस्तानी पढ़ने की आवश्यकता ही क्या? आखिर हिंदुस्तानी में उर्दू के साथ कुछ शब्द तो हिंदी के आ ही जाते हैं। इसके अतिरिक्त हिंदुस्तानी पढ़ने में नागरी लिपि सीखने का भी परिश्रम करना पड़ता है। उर्दूवाले यह व्यर्थ भार क्यों वहन करें? इस तर्क के फल-स्वरूप बंबई सरकार ने जो नियम बनाया है उससे हिंदी को पर्याप्त धक्का लगा है।

बिहार में हिंदुस्तानी का हल्ला तो इस वर्ष मंद रहा पर जान पड़ता है कि ईसाई पादरियों की सफलता के लिये बिहार सरकार की साक्षरता-प्रसार-समिति ने यह निश्चय किया कि संथालियों को

शिक्षा देने के लिये प्राइमरी पुस्तकें रोमन लिपि मे तैयार कराई जायें। प्रांत भर मे इस निश्चय का उचित विरोध किया गया, जिसमे मुजफ्फरपुर के सुहृद् संघ ने भी बड़ा उद्योग किया। इस संबंध में डा० सच्चिदानंद सिनहा, रायबहादुर श्यामानंदनसहाय और श्री सी० पी० एन० सिनहा का एक प्रतिनिधिमंडल गवर्नर के परामर्शदाता श्री व्हजिस से मिला। फलत. विदित हुआ है कि अब संथालियो के लिये नागरी लिपि मे ही पुस्तकें छपाई जायँगी।

रियासतें

हैदराबाद में यद्यपि उर्दू-भाषियों की संख्या बहुत ही कम है, फिर भी निजाम सरकार ने अपनी अधिकांश प्रजा की सुविधा का कोई ध्यान न रखकर रियासत की 'लोअर सेकंडरी कोर्स' की शिक्षा मे उर्दू को अनिवार्य कर दिया है। वहाँ के जनशिक्षासम्मेलन की स्थायी समिति ने निजाम सरकार के शिक्षा विभाग के पास पत्र भेजा है जिसमे 'लोअर सेकंडरी कोर्स' मे अनिवार्य उर्दू का विरोध किया है और बालिकाओं की शिक्षा का भी उचित ध्यान रखने का अनुरोध किया गया है। अभी इसका कोई उत्तर नहीं मिला है।

कश्मीर सरकार ने राज्य की शिक्षा-संगठन समिति की सिफारिश के विरुद्ध उर्दू के साथ साथ प्राइमरी शिक्षा मे नागरी लिपि को भी स्वीकार किया। यद्यपि कश्मीर राज्य ने हिंदीवालो के साथ यह कोई बहुत बड़ी रियायत नहीं की, क्योंकि हिंदी सीखनेवाली प्रजा के साथ न्याय करना उसका कर्तव्य था, फिर भी मुसलमान लोग वहाँ की राजसभा मे तथा बाहर बराबर इसका विरोध कर रहे हैं और नागरी लिपि को हटाने पर तुले हुए है। प्रसन्नता की बात है कि कश्मीर सरकार अपनी न्यायनिष्ठा मे अचल है और इसके लिये वह धन्यवाद की पात्र है। परंतु अब कश्मीरवासियों का यह परम कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में हिंदी की शिक्षा दिलाकर कश्मीर सरकार के न्याय का लाभ उठाएँ।

राष्ट्रभाषा और उसका स्वरूप

इस वर्ष उर्दू के हितैषियो की अनेक करतूतो से हिंदीप्रेमियो को इस बात मे कोई संदेह नहीं रह गया कि उर्दू हिंदुस्तानी नाम की आड मे से हिंदी पर बराबर घातक चोटे करती जा रही है। राजनीति मे पली हुई हिंदुस्तानी हिंदी के भोले भक्तों को भुलावे मे डालने के लिये 'वारागनेव' 'अनेकरूपा' होकर प्रकट हुई—हैदराबाद मे राजभाषा उर्दू बनकर और कश्मीर मे लोकभाषा उर्दू बनकर; बबई, मद्रास, बिहार और युक्त प्रात मे राष्ट्रभाषा हिंदुस्तानी के नाम से हिंदी को विकृत करके तथा पजाब मे सर्वसाधारण की भाषा होने का दावा करती हुई निरावरण उर्दू का रूप धारण करके, उर्दू सम्मेलन के मच पर उर्दू नाम से भावी राष्ट्रभाषा का वेश बनाकर तथा हिंदी-उर्दू— समझौता के प्रेमियो के निकट हिंदी-हिंदुस्तानी का बाना पहनकर। परतु यह सब छद्मलीला कब तक चल सकती थी। अत में उसकी वास्तविकता छिपी न रह सकी और बंबई, मद्रास, असम, बिहार, युक्तप्रांत, यहाँ तक कि दिल्ली, पंजाब और कश्मीर में भी इसकी बहुरंगी राजनीतिक चालो से लोग सावधान हो गए। चारो ओर से इसी पक्ष की पुष्टि हुई कि भारत की राष्ट्रलिपि देवनागरी और राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है। किसी मोह में पड़कर उसके रूप को विकृत करना स्वयं अपनी जड़ काटना है। दिल्ली की हिंदी साहित्य सभा मे श्री अणे ने, मदुरा और बरार मे होनेवाली अखिल भारतीय तथा प्रातीय हिंदू सभाओ मे डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी तथा सर मन्मथनाथ मुखर्जी ने, पूना मे उन्तीसवें हिंदी साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर महाराष्ट्र-साहित्य-सम्राट् श्री नरसिंह चितामणि केलकर ने और बबई विद्यापीठ के दीक्षात भाषण मे शातिनिकेतन के आचार्य श्री क्षितिमोहन सेन ने बलपूर्वक इसी सत्य का समर्थन किया। मैसूर हिंदी-लेखक-सम्मेलन के अध्यक्ष प्रोफेसर एम० वी० जबुनाथन् ने भी मद्रास सरकार की हिंदुस्तानी का विरोध करते हुए राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचलित स्वाभाविक रूप को ही अपनाने की सम्मति दी। अस्तु।

हिंदी के सच्चे सेवको के बीच तो राष्ट्रभाषा के स्वरूप के सबध मे कोई मतभेद हो ही नहीं सकता, परतु राष्ट्रीय महासभा के सूत्रधार महात्मा गांधी और उनके प्रभाव से हिंदी साहित्य-सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा के लिये

हिंदुस्तानी या हिंदी-हिंदुस्तानी नाम को स्वीकार कर लिया था, इतना ही नहीं, सम्मेलन ने कांग्रेस की भाँति उसका नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखा जाना भी स्वीकार कर लिया था। संभव है हिंदी की अमूल्य सेवा करनेवाले राष्ट्र के नेताओं ने कोई बड़ा लाभ समझकर ही 'हिंदी-हिंदुस्तानी' नाम और उसके लिये दोनों लिपियों को स्वीकार किया हो, परंतु इसमें उनके द्वारा प्रांतीय शासनकाल में भाषा-संबंधी जो कार्य हुए उनसे कांग्रेस के प्रति हिंदी-प्रेमियों का संदेह बढ़ रहा था, और सम्मेलन से तो उनका मन खिंचने लगा था। फलस्वरूप एक ओर तो हिंदी के अनन्य भक्त श्री काका कालेलकर को वर्धा की राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति से अलग होना पड़ा—काका साहेब की हिंदी-निष्ठा को जाननेवालों को इससे कितना दुःख हुआ, यह कहने की आवश्यकता नहीं—और दूसरी ओर श्री पुरुषोत्तमदास टंडन को लेख लिखकर सम्मेलन की ओर से सफाई देनी पड़ी। परंतु इससे सम्मेलन के प्रति अभी हिंदी-जनता का संदेह पूर्णतया दूर नहीं हुआ।

युक्तप्रांत के भूतपूर्व शिक्षामंत्री श्री संपूर्णानंद कांग्रेस के प्रतिष्ठित नेता हैं। उन्होंने अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के उन्तीसवें अधिवेशन के अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी और हिंदुस्तानी के संबंध में जो कुछ कहा वह योग्यतापूर्ण भाषण होने के साथ ही अपनी निर्भीक स्पष्टवादिता के कारण हिंदी के संबंध में सम्मेलन और कांग्रेस की स्थिति को बहुत कुछ स्पष्ट कर देता है। उस भाषण का प्रसंग-प्राप्त अंश नीचे दिया जाता है—

"आप में से बहुतों ने वह पत्रव्यवहार देखा है जो पारसाल मुझमें और महात्माजी में हुआ था। मेरा अब भी विश्वास है कि मैंने जो सम्मति प्रकट की थी वह समीचीन है। हमारी भाषा का नाम हिंदी इसे कतिपय मुसलमान लेखकों ने दिया पर हमने इसे अपना लिया। यह नाम हमको प्यारा है और इसमें सांप्रदायिक या अन्य किसी प्रकार का दोष नहीं है। इसे उर्दू नाम से पुकारने का कोई कारण नहीं है। पृथ्वी पर भारत ही तो एक देश नहीं है। दूसरी जगहों में भाषा का नाम देश के नाम पर होता है। फ्रांसीसी, अँगरेजी, जापानी, अरबी, ईरानी—यह सब नाम देशों से संबंध रखते हैं। हिंदी भी ऐसा ही नाम है पर उर्दू में यह बात नहीं है। यह नाम

इस देश के नाम से सबंध नहीं रखता। अब यह प्रश्न उठाया जाता है कि राष्ट्रभाषा को न हिंदी कहा जाय, न उर्दू प्रत्युत हिंदुस्थानी नाम से पुकारा जाय। मै स्वय तो उन लोगो मे हूँ जो इस बात को मानने को प्रस्तुत है। यदि हिंदुस्थानी कहने भर से काम चल जाय तो यह समझौता बुरा नहीं है। यह देश हिंदुस्थान भी कहलाता ही है पर मुख्य प्रश्न नाम का नहीं, भाषा के स्वरूप का है। विवाद ऊपर से भले ही नाम के लिये किया जाता हो पर उसके भीतर भाषा के स्वरूप का विवाद छिपा है। इस बात को समझकर हमको अपना मत स्पष्ट कर देना है।

"हिंदी (या वह हिंदुस्तानी जिसकी मै कल्पना करता हूँ) जीवित भाषा है और रहेगी। वह मुट्ठी भर पढ़े लिखो तक ही सीमित न रहेगी। उसके द्वारा राष्ट्र के हृदय और मस्तिष्क का अभिव्यंजन होना है। उसको दार्शनिक विचारों, वैज्ञानिक तथ्यों और हृद्गत भावों के व्यक्त करने का साधन बनना है। हमको भारत के बाहर से आए हुए शब्दों का प्रयोग करने मे कोई लज्जा नहीं है। अरबी फारसी के सैकड़ो शब्द बोले जाते है, लिखे जाते हैं। यह बात आज से नहीं, चन्दबरदाई और पृथ्वीराज के समय से चली आ रही है। सूर, तुलसी, कबीर, रहीम सबने ही ऐसे शब्दो का प्रयोग किया है। अँगरेजो के शब्दो को भी हमने अपनाया है। योगी को सुषुम्ना नाड़ी में प्राण ले जाने पर जिस दिव्य ज्योति की अनुभूति होती है उसका वर्णन करते हुए आज से सौ दो सौ वर्ष पहले चरणदासजी ने लिखा था 'सुखमना सेज पर लप दमकै।' पर यह शब्द चाहे जहाँ से आए हो हमारे हैं। आगे भी जो ऐसे शब्द आते जायँगे वह हमारे होंगे। हम उनको हठात् कृत्रिम प्रकार से नहीं लेंगे। वह आप भाषा मे अपने बल से मिल जायँगे। पर उनके आ जाने पर भी भाषा हिंदी ही है और रहेगी। जिस प्रकार पचा हुआ भोजन शरीर का अविभाज्य अंग हो जाता है उसी प्रकार वह हिंदी के अग है और होंगे। उनकी पृथक् सत्ता चली जायगी। जीवित भाषाएँ ऐसा ही करती है। हम संस्कृत के शब्दो को भी इसी प्रकार अपनाते है, उनको हिंदी शब्द बना लेते हैं। इसका बड़ा प्रमाण यह है कि वह हिंदी मे आने पर संस्कृत के व्याकरण को छोड़ देते हैं; हिंदी व्याकरण के अधीन हो

जाते हैं। राजा का बहुवचन राजानः, भुवन का भुवनानि, स्त्री का स्त्रियः नहीं किया जाता। कोई लेखक ऐसे प्रयोग करने का दुःसाहस नहीं करता। संस्कृत व्याकरण के विरुद्ध होते हुए भी 'अंतर्राष्ट्रीय' हिंदी मे व्यवहृत है। मैने शुद्ध रूप चलाना चाहा पर सफल न हुआ। पर शुद्ध उर्दू-लेखक सुलतान का बहुवचन सलातीन, मुल्क का मुमालिक, खातून का खवातीन लिखता है। यह शब्द अपना विदेशीपन नहीं छोड़ते और इन्हीं विदेशीपन के अभिमान से भरे हुए शब्दो मे ही उर्दू का उर्दूपन है, अन्यथा क्रिया, सर्वनाम, उपसर्ग, अव्यय—वह सब शब्द जो भाषा के प्राण है—हिंदी उर्दू मे एक ही हैं।

"हम ऐसी कृत्रिम भाषा को, जो जनता मे फैल ही नहीं सकती, हिंदी या हिंदुस्थानी नहीं मान सकते। वह हमारे किसी काम की न होगी।"

× × ×

प्रत्यक्ष रूप से उर्दू, या अप्रत्यक्ष रूप से कृत्रिम असार्वजनीन हिंदुस्थानी के नाम पर हिंदी का विरोध करनेवाले तर्क से बहुत दूर है। हैदराबाद की भाषा इसलिये उर्दू है कि वहाँ का राजवंश मुस्लिम है और कश्मीर की भाषा इसलिये उर्दू है कि वहाँ की प्रजा मे अधिक संख्या मुसलमानो की है। पंजाब मे उर्दू इसलिये पढ़ानी चाहिए कि वहाँ ५५ प्रतिशत मुसलमान हैं और बिहार मे इसलिये पढ़ानी चाहिए कि वहाँ मुसलमान १२ प्रतिशत भी नहीं है। यह भाषा का नहीं साम्प्रदायिकता का प्रश्न है। हम सब को इस बात का अनुभव है कि किसी भाषा मे जहाँ कोई संस्कृत का तत्सम शब्द आया वहीं उर्दू के हामी बोल उठते हैं कि 'साहब, आसान हिंदुस्तानी बोलिए, हम इस जुबान को नहीं समझते!' किंतु हिंदीप्रेमी क्लिष्ट, अरबी-फारसी शब्दो की बौछार को प्रायः चुपचाप सह लेते हैं। हिंदुस्थानी नामधारी उर्दू के समर्थको का द्वेष भाव कहाँ तक जा सकता है, उसका एक उदाहरण देता हूँ। अभी थोड़े दिन हुए, राष्ट्रपति अबुल कलाम आजाद को प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्रो की ओर से एक मानपत्र दिया गया। उस पर उर्दू के समर्थको के मुखपत्र 'हमारी जुबान' ने एक लंबी व्यंगमयी टिप्पणी लिखी। उसने उन शब्दों को रेखांकित किया जो उसकी सम्मति मे हिंदुस्थानी मे न आने चाहिएँ। यह कहना अनावश्यक है कि यह

सब शब्द संस्कृत से आए हुए थे। यह बात तो कुछ समझ में आती है। यह भी कुछ कुछ समझ में आता है कि इन लोगों की दृष्टि में अरबी-फारसी से निकले हुए दुरूह शब्द सरल और सुबोध हैं। पर विचित्र बात यह है कि मानपत्र का अँगरेजी का कोई शब्द भी रेखांकित नहीं है। यह द्वेषभाव की मर्यादा है। जिस हिंदुस्थानी में अँगरेजी को स्थान हो पर संस्कृत के शब्द छाँट छाँटकर निकाल दिए जानेवाले हों वह कदापि इस देश की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।

× × × ×

हिंदी के साथ एक और खेल खेला जाता है। अपनी हिंदुस्थानी में कुछ ऐसे शब्द गढ़ लिए जाते हैं जो देखने में हिंदी से प्रतीत होते हैं। उनका प्रयोग करके यह दिखलाया जाता है कि हमको हिंदी के सरल सुबोध शब्दों से कोई द्वेष नहीं है। इसके साथ ही हिंदी की असाहित्यिकता भी प्रदर्शित हो जाती है। जैसे—'रस्मुलखत' हिंदुस्थानी है। इसके पर्याय में 'लिखी' शब्द को जगह दी गई है। मैं नहीं कह सकता कि यह लिखी कहाँ से आया। हम आप तो 'लिपि' बोलते हैं। मैंने सुना है 'टिकट' की जगह 'वरवस' हमारे सिर मढ़ा जानेवाला है। यह भी हिंदी के भोंडेपन का प्रमाण होगा।"

बंबई हिंदी विद्यापीठ के दीक्षांत भाषण में आचार्य श्री क्षितिमोहन सेन ने अत्यंत सरस और चुभती हुई काव्यमयी भाषा में हिंदुस्थानी नाम की बनावटी भाषा के विषय में अपने विचार प्रकट किए हैं जो मननीय हैं। उनके भाषण का अल्पांश यहाँ उद्धृत कर देना उपयुक्त होगा—

"हमारे बृहत्तर जीवन में योग-साधन का कार्य करती है भाषा, उसी प्रकार जिस तरह गृह-परिवार के जीवन में योग-स्थापन करती है माता। क्योंकि बच्चों में आपसी झगड़े कितने भी क्यों न हों, वे स्नेहमयी माँ की गोद में बैठकर सभी द्वंद्व और झगड़े भूल जाते हैं। जिस प्रकार सच्ची माता संतानों के भेद-विभेद बिना दूर किए नहीं रह सकती, उसी प्रकार सच्ची भाषा और सच्चा साहित्य भी अपनी संतान का भेद-विभेद दूर किए बिना नहीं रह सकता। भाषा और साहित्य का स्थान भी माता का सा ही है।

"आप कहेंगे कि माता भी कभी मिथ्या होती है? माँ तो सदा सच्ची ही होती है। हमारे देश में जिस भाषा को भाषा कहा गया है, उस

मातृभाषा की गोद मे ही तो हम सबने जन्म लिया है, उसी माता ने हमारे चिन्मय स्वरूप की सृष्टि की है। वह माता मिथ्या कैसे हो सकती है ? वस्तुत. जब वह माता हमारे चिन्मय स्वरूप की सृष्टि करती रहती है तब सच्ची ही होती है; किंतु जब हम उस माता की सृष्टि करने का ध्यान करने लगते है तो वह निश्चय ही मिथ्या हो उठती है। माता को सतान नानाविध अलंकारो और महनीय वस्त्रो से अलकृत करे—यह तो उचित है; बल्कि सतान का यह कर्तव्य ही है कि वह माता को अधिकाधिक समृद्ध और तृप्त करता रहे पर स्वय वह माता को ही बनाने लगे, यह तो एकदम समझ मे आनेवाली बात नहीं है। हम भाषारूपी माता को नाना भाव से—कला-साहित्य-विज्ञान से समृद्ध और अलकृत कर सकते है पर उसे काट-छाँट, गढ़-छोलकर नई माता बनाने का प्रयत्न करना नितात दंभ मात्र है। × × ×

"जोड जाड़कर नारी की सृष्टि की कथा हमारे पुराणों मे एकदम नई हो, सो बात नहीं है। परतु इस प्रकार जोड़ी हुई प्रतिमा मे मातृत्व की कल्पना ही नहीं की गई। स्वर्ग की अप्सरा तिलोत्तमा ऐसी ही नारी है। उसका काम था सबका चित्त हरण करना, मातृत्व नहीं। परतु पुराण साक्षी हैं कि वह वस्तुतः किसी का भी चित्त हरण नहीं कर सकी, बल्कि एक विनाशक शक्ति के रूप मे ही प्रसिद्ध हो रही। भाषा को जोड़ जाड़कर गढ़ने के पक्षपाती लोग इस कथा को याद रखे तो अच्छा हो।"

भाषा और लिपि के सबंध मे, नवीनता और सुधार के नाम पर उतावलेपन से काम लेना उचित न होगा। परिवर्तन और विकास सृष्टि का नियम है। उसे अपनी स्वाभाविक गति से चलने देना श्रेयस्कर होता है। नेता, स्रष्टा अथवा क्रातिकारी का भूत जब चढ़ बैठता है तब सिर मे भले ही ये बातें न घुसे किंतु भाषा और लिपि की प्रगति चटपट, मनमाने ढंग से गढ़ डालने की वस्तु नहीं होती। हिंदी-प्रेमियो के लिये उक्त मनीषियो के विचारो का मनन करना श्रेयस्कर प्रतीत होता है।

साहित्य

साहित्य के क्षेत्र में इस वर्ष कोई उल्लेखनीय विशेपता देखने मे नहीं आई। न कोई नया 'वाद' ही उत्पन्न हुआ और न विशेष महत्त्वपूर्ण

साहित्यिक रचनाएँ ही प्रस्तुत हुई। क्या ऐसा तो नहीं है कि भाषा और लिपि संबधी झगड़ो ने महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रश्नो को कुछ आवश्यकता से अधिक दबा लिया है? उचित तो यह होगा कि भाषा के झगड़ों पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देकर हिंदीसाहित्य-सेवी साहित्य-रचना के आवश्यक कार्य की उपेक्षा न करें, बल्कि भाषा और साहित्य दोनो की उन्नति पर वे अपनी सतुलित दृष्टि रखें। इस सबंध में आचार्य क्षितिमोहन सेन ने अपने उपर्युक्त भाषण मे कहा है—

"कभी कभी हम देव की पूजा न करके देहर (मूर्ति के घर) की पूजा करने लगते हैं। आधेय को भूलकर आधार की पूजा कुछ ऐसी ही है। जितना बड़ा भी प्रेमी हो, वह यदि रोज एक लिफाफा ही भेजे, चिट्ठी नहीं, तो प्रेमिका का धैर्य कब तक टिका रह सकता है? और फिर यदि यह लिफाफा बैरिंग हो तब तो कहना ही क्या है? कब तक कोई सिर्फ इस बात से सतोष कर सकता है कि लिफाफा प्यारे के हाथ का भेजा हुआ है। कुछ पत्र भी तो हो, कुछ समाचार, कुछ प्रेम-संभाषण, कुछ नई जानकारी। भाषा महज एक लिफाफा है। सो भी बैरिंग, क्योंकि इसे पाने के लिये परिश्रम खर्च करना पड़ता है। उसमे का पत्र और उसमे लिखा हुआ साहित्य, विज्ञान सबंधी सत्य है। हमे लिफाफे का भी ध्यान जरूर रखना चाहिए, क्योंकि वही प्रेमपत्र को सुरक्षित रूप से पहुँचाता है पर पत्र की उपेक्षा नही करनी चाहिए। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम हिंदी-भाषा को नाना शास्त्रो और विद्याओ से भर दें।"

इसका यह तात्पर्य नहीं कि हिंदी-लेखको और कवियो पर अकर्मण्यता का दोष लगाया जा सकता है। बात यह है कि अनेक प्रकार की राजनीतिक तथा अन्य समस्याओ के कारण इस समय जैसी परिस्थिति है उसमे वर्तमान शिथिलता कुछ स्वाभाविक भी है और कुछ अशो मे इसका कारण यह भी है कि हिंदी साहित्य अब बरसात की बाढ़ के बाद शरत्-कालीन नदी-जल की स्वाभाविक गति को प्राप्त कर रहा है।

हिंदी मे प्रगतिशीलता के बहाने प्राचीन परपरा की अच्छी बातो की भी निंदा और उनके स्थान पर पश्चिम की भद्दी स्वच्छदताओ का प्रचार करने की जो प्रवृत्ति इधर कुछ वर्षों से देखी जा रही थी उसमें इस वर्ष वृद्धि ही हुई है। विशेषकर कहानियो और उपन्यासो मे प्रेम की परि-

पाटी को नए मार्ग पर चलाकर सुधारक या निर्माता बनने की अहमन्यता कुछ नवयुवक लेखको मे प्रबल हो रही है। इसका परिणाम कल्याणकर होगा ऐसा नही कहा जा सकता। ऐसो की मनोवृत्ति के परिष्कार की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त साहित्यरचना के सबंध मे हिदी-लेखको को तीन आवश्यक बातो की ओर ध्यान देना उचित होगा। एक तो यह कि रसात्मक साहित्य के सभी अंगो पर समान दृष्टि रखा जाय। जहाँ उच्च कोटि के काव्य, उपन्यास और कहानियाँ लिखी जायँ वहाँ योग्य नाटको और सरस निबंधो की कमी को भी पूरा करने को ओर ध्यान दिया जाय। दूसरे, उपयोगी साहित्य के अनेक विषयो मे उच्च कोटि के ग्रंथो की रचना का प्रयास किया जाय। इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति और दर्शन तथा विज्ञान की अनेक शाखाओ मे अभी अध्ययनयोग्य उच्च कोटि के ग्रथ बहुत ही कम प्रस्तुत हुए हैं। तीसरी ध्यान देने की बात यह है कि प्रांतीय साहित्यो--विशेषकर द्रविड़ साहित्य--से (क्योकि मराठी, बँगला आदि तो हिदी के यो भी निकट हैं) हिदी का सपर्क अधिक बढ़ाना चाहिए। इससे सभी प्रांत एक दूसरे के अधिकाधिक निकट पहुँचेगे और सच्ची राष्ट्रीय एकता का मार्ग अति सरल हो जायगा। किंतु यह स्मरण रखना चाहिए कि केवल अनुवाद-ग्रंथ भरने से ही हिंदी-साहित्य की अभिवृद्धि नहीं हो सकती। हिदी मे उच्च कोटि की ऐसी मौलिक रचनाएँ भी प्रस्तुत करनी होगी जिनसे अन्यप्रातीय साहित्य हिदी के साथ अपना संपर्क बढ़ाने मे गौरव का अनुभव करें।

हिंदी की संस्थाएँ

देश के विभिन्न भागो में हिदी प्रचारिणी संस्थाएँ उत्साहपूर्वक कार्य करती रहीं। हिदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग तथा दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा, मद्रास अपनी शाखाओं सहित अपने हिंदीप्रचार के उद्देश्य की पूर्ति मे यथावत् प्रयत्नशील रहीं। सम्मेलन का २९वाँ वार्षिक अधिवेशन इस बार २५, २६, २७, २८ दिसंबर १९४० को पूना में युक्त-प्रात के भूतपूर्व शिक्षामत्री श्रीसंपूर्णानद के सभापतित्व में हुआ जो उस समय जेल मे थे। महाराष्ट्र प्रात ने इसमे पूर्ण सहयोग दिया और

अधिवेशन सफलता के साथ समाप्त हुआ। द० भा० हिं० प्रचारक सम्मेलन का ११वाँ अधिवेशन २२-२३ दिसंबर १९४० को मद्रास में पं० रामनारायण मिश्र के सभापतित्व मे सफलता-पूर्वक हुआ। राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति वर्धा की शाखाएँ असम, उत्कल, महाराष्ट्र, गुजरात और सिंध मे बड़े उत्साह के साथ कार्य करती रहीं।

इनके अतिरिक्त असम मे नौगाँव राष्ट्रभाषा-विद्यालय तथा असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, कश्मीर मे हिंदी प्रचारिणी सभा (जम्मू), बंबई मे बंबई हिंदी विद्यापीठ, दिल्ली में हिंदी साहित्य सभा, बिहार मे प्रादेशिक हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, सुहृद् संघ (मुजफ्फरपुर) और लोकमान्य समिति (छपरा) तथा पंजाब मे राष्ट्रभाषा-प्रचारक संघ (लाहौर) और साहित्यसदन (अबोहर) प्रशंसनीय रूप से हिंदी की सेवा कर रहे हैं।

अबोहर का साहित्यसदन नगर में स्थित होने पर भी नगर की अशांति और आडंबर से कोसों दूर है। इसका कार्यक्षेत्र भी प्रधानतः गाँवों मे ही है। यहाँ के कार्यकर्ता त्याग, परिश्रम और लगन आदि गुणों मे संस्था के संस्थापक स्वामी केशवानंद का ही अनुकरण करते हैं। इस संस्था का 'दीपक' नाम का एक मासिक पत्र निकलता है। पुस्तकालय, प्रकाशन तथा शिक्षण-विभाग भी है।

देश की समस्त संस्थाएँ यदि संघटित होकर परस्पर सहयोग से कार्य करें तो हिंदी के मार्ग की बहुत सी कठिनाइयाँ शीघ्र दूर हो जायँ।

पत्र-पत्रिकाएँ

इस वर्ष हिंदी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ अपनी उदासीनता त्यागकर हिंदी की चर्चा और हिंदी संबंधी आंदोलना में बराबर योग देती रहीं। कलकत्ते के 'लोकमान्य' और 'विश्वमित्र' और दिल्ली के 'वीर अर्जुन' ने अधिक तत्परता दिखाई। 'भारत', 'देशदूत', 'प्रताप', 'अग्रगामी' तथा 'कर्मवीर' आदि भी समय-समय पर इस संबंध मे लेख और टिप्पणियाँ प्रकाशित करते रहे। काशी के दैनिक 'आज' तक को अपनी चिर निश्चलता का त्याग करना पड़ा और उसने बड़े स्पष्ट और निर्भीक शब्दों मे अपने संपादकीय लेखों मे हिंदी का पक्ष पुष्ट किया। सभा हिंदी की सभी पत्र-पत्रिकाओं से आशा

करती है कि जहाँ उनमें अनेक विषयों के लेख और समाचार छपते रहते हैं वहाँ नागरी लिपि और हिंदी भाषा संबंधी प्रश्नों की चर्चा के लिये भी अधिक नहीं तो थोड़ा स्थान अवश्य दिया करें और समय-समय पर आवश्यकतानुसार इन विषयों पर संपादकीय लेख और टिप्पणियाँ भी लिखा करें। हिंदी की रक्षा और उन्नति का प्रश्न राष्ट्र का प्रश्न है, और उनका अपना भी।

(पृ० ५१ के पहले अनुच्छेद के बाद)

इसी प्रसंग मे एक उल्लेखनीय बात यह है कि भारत सरकार के पाक्षिक पत्र 'भारतीय समाचार' मे हिंदी भाषा का निर्वाह बड़ी उत्तमता से हो रहा है। सरकारी प्रचार पत्र में ऐसी भाषा का प्रयोग यह सूचित करता है कि सरकार हिंदी को उपेक्षा की वस्तु नहीं समझती है; और उसी के द्वारा देश के विशाल जन-समुदाय के हृदय में स्थान प्राप्त किया जा सकना स्वीकार करती है। आशा है जिस परिष्कृत सर्वमान्य और प्रचलित हिंदी मे 'भारतीय समाचार' प्रकाशित होता है उसी का व्यवहार और मान सरकार के अन्य विभागो तथा कार्यों मे होगा और विशेषकर 'रेडियो' में इसी भाषा को अपनाया जायगा।

रखना इसका मुख्य उद्देश्य है। 'हिंदी पत्रिका' में पुराने 'देवनागर' की भाँति अन्य भाषाओं के लेख भी नागरी लिपि मे छपा करते हैं। यह प्रयत्न प्रशंसनीय है। यह पत्र स्थायी हो जाय तो हिंदी का हित होगा। 'प्रभात' वालोपयोगी अच्छा पत्र है। 'हिंदी' के विषय मे

लोगों की धारणा है कि वह हिंदी की ठोस सेवा करेगी। इतनी उपयोगी और इतनी सस्ती पत्रिका शायद ही दूसरी हो।

हिंदी की प्रकाशित पुस्तकों की संख्या

सन् १९४० में निम्नलिखित प्रांतों में प्रकाशित हिंदी और उर्दू पुस्तकों की संख्या नीचे दी जाती है—

प्रांत	अवधि			हिंदी	उर्दू
युक्तप्रांत—३१ मार्च को	समाप्त	होनेवाले	त्रिमास मे	४७३	५०
३० जून	,,	,,	,,	३८४	६०
३० सितंबर	,,	,,	,,	३७६	६०
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	३१५	३८
पंजाब—३१ मार्च	,,	,,	,,	४०	१८१
३० जून	,,	,,	,,	६९	३३४
३० सितंबर	,,	,,	,,	६६	३०३
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	६४	२०९
अजमेर-मेरवाड़ा—३१ मार्च		,,	,,	२३	×
३० जून	,,	,,	,,	४६	×
३० सितंबर	,,	,,	,,	२२	×
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	३०	३

सन् १९३९ ई० तथा १९४० ई० के हिंदी उर्दू के प्रांतीय प्रकाशनों का प्रतिशत ब्यौरा—

प्रांत	१९३९-हिंदी	१९४०-हिंदी	१९३९-उर्दू	१९४०-उर्दू
संयुक्तप्रांत	·९	·८८२	·१	·११८
पंजाबप्रांत	·१७८	·१८९	·८२२	·८११
अजमेर-मेरवाड़ा	९२३	·९७६	·०७७	·२४

इस तालिका से यह प्रकट होता है कि संयुक्त प्रांत में सन् १९३९ की अपेक्षा १९४० ई० में हिंदी के प्रकाशन में ह्रास और उर्दू के प्रकाशन में वृद्धि हुई है। इस ओर हमें उचित ध्यान देने की आवश्यकता है। पंजाब प्रांत में सन् १९३९ की अपेक्षा १९४० में हिंदी के प्रकाशन में वृद्धि हुई है। इस प्रांत में हिंदी के प्रचार तथा व्यवहार के लिये हमें और

शक्ति लगानी चाहिए। अजमेर-मेरवाड़ा प्रांत में भी सन् १९३९ की अपेक्षा सन् १९४० में हिंदी के प्रकाशन में वृद्धि और उर्दू के प्रकाशन में ह्रास हुआ है। पर इससे हमें अपने उद्योग में ढिलाई नहीं लानी चाहिए, प्रत्युत इसमें विशेष शक्ति लगाने की आवश्यकता है।

हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

देश में अनेक संस्थाएँ हैं जो हिंदी भाषा और साहित्य संबंधी परीक्षाएँ अथवा अन्य विषयों की परीक्षाएँ हिंदी माध्यम के द्वारा लिया करती हैं। उनमें कुछ सरकारी हैं जैसे विश्वविद्यालयों, विद्यालयों और शिक्षा बोर्ड तथा सरकारी शिक्षाविभाग की परीक्षाएँ। कुछ गैर सरकारी परीक्षाएँ हैं जो हिंदी साहित्य-सम्मेलन, द० भा० हिं० प्र० सभा तथा गुरुकुल आदि संस्थाओं द्वारा ली जाती हैं। इनके अतिरिक्त भी अनेक परीक्षण-संस्थाएँ हैं। सभा आशा करती है कि ये संस्थाएँ प्रतिवर्ष अपनी परीक्षाओं के आँकड़े सभा के विवरण में सम्मिलित करने के लिये भेज दिया करेंगी। पर कुछ संस्थाएँ इस प्रकार की सूचना सभा को नहीं दे सकीं और खेद है कि ऐसी संस्थाओं में काशी हिंदू विश्वविद्यालय और मद्रास विश्वविद्यालय का भी नाम है।

मुख्य मुख्य परीक्षण-संस्थाओं में से जिनके विवरण सभा को प्राप्त हुए हैं उनकी परीक्षाओं में सम्मिलित होनेवाले हिंदी और उर्दू परीक्षार्थियों की संख्या दी हुई तालिका से प्रकट होती है—

हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

प्रांत	परीक्षण संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
दिल्ली	दिल्ली विश्वविद्यालय	×	बी० ए०	१०५	१६४
			इंटर०	२९८	३६२
पंजाब	पंजाब विश्वविद्यालय	×	प्रॉफीशिएंसी	१७२६	७८
			हाई प्रॉफी०	१२३५	४१४
			आनर्स	६०३	१६३
			बी० ए०	६०२	११६६
			इंटर०	१४७२	४२९५
			मैट्रिक	१४५०	४१९२
	×	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	भिन्न भिन्न	१२३	×
		,, मुलतान	,, ,,	२८	×
बंगाल	ढाका विश्वविद्यालय	×	बी० ए०	×	४
बंबई	बंबई विश्वविद्यालय		एम० ए०	×	१५
			बी० ए०	×	१०

प्रांत	परीक्षा-संस्थाएँ सरकारी	परीक्षा-संस्थाएँ गैर सरकारी	परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
			इंटर०	२	१०२
			मैट्रिक	१०६	७५४
					×
	×	श्रीमती नत्थीबाई दामोदरठाकरसी इंडियन वीमेंस युनिवर्सिटी	भिन्न भिन्न	५८७	×
		गुरुकुल सूपा	,, ,,	१९८	×
		हिंदी विद्यापीठ	,, ,,	१२०७	×
		आर्यकन्या महाविद्यालय	,, ,,	२००	×
बड़ोदा	×	×	बी० ए०	५०६	१३६
बिहार	पटना विश्वविद्यालय		इंटर०	१२९७	३३७
			मैट्रिक	५८३१	१३४६
		हिंदी विद्यापीठ, देवघर	भिन्न भिन्न	६३०	×
मद्रास	×	दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा	,, ,,	६७१६	×
मध्यप्रांतबरार	नागपुर विश्वविद्यालय	×	बी० ए०	४५	२२
			इंटर०	१२०	५८
	हाईस्कूल परीक्षाबोर्ड	×	हाईस्कूल	११८९	२८१

प्रांत	परीक्षण-संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
	×	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	भिन्न भिन्न	१९०८२	×
मैसूर	मैसूर विश्वविद्यालय		बी ए.,बी.एस-सी.	×	३२
		×	इंटर	१४	८६
युक्तप्रांत	प्रयाग विश्वविद्यालय		एम० ए०	३२	६
			बी० ए०	१५३	६२
	लखनऊ विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	१६	२१
			बी० ए०	४४	५०
	आगरा विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	१२८	×
			बी० ए०	४८९	९८
	हाईस्कूल और इंटर०परीक्षा बोर्ड		इंटर०	१३५७	६०१
		×	हाईस्कूल	८६३४	६१५८
	प्रांतीय शिक्षा विभाग		वर्नाक्यूलर फा०	२०१६७	१७४८०
		×	बी० टी० सी०	१६२	२४८
			पी० टी० सी०	२५६	२६०
			विशेष योग्यता	०६८०	१६६८

प्रांत	परीक्षण-संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
	प्रांतीय शिक्षा विभाग				
	×	हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग	डी॰ एस॰	१४२	२११
		प्रयाग महिला विद्यापीठ	भिन्न भिन्न	४३१६	×
		गीता तथा रामायण परीक्षा-समिति, बरहज	,, ,,	१०१८	६
		गुरुकुल काँगड़ी	रामायण, गीता	१०८१६	×
		ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, हरिद्वार	भिन्न भिन्न	४०८	×
जपूताना, ध्यभारत, वालियर, अजमेर	हाईस्कूल और इंटर॰परीक्षाबोर्ड	×	,,	१६	×
			इंटर	४६०	७७
			हाई स्कूल	३१३९	७६१
			कुल योग	१०९५२०	४२१८६

शोक-प्रकाश

अत्यंत शोक है कि इस वर्ष हिंदी-संसार चार प्रसिद्ध साहित्यसेवियों से रिक्त हो गया। सभा के सदस्य होने के नाते पं० रामचंद्र शुक्ल, सर जार्ज डा० ग्रियर्सन, बाबू केदारनाथ गोयनका और पं० रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' का उल्लेख पहले ही हो चुका है। खेद है कि साहित्य-दर्पण के प्रसिद्ध अनुवादक पं० शालग्राम शास्त्री और हिंदी के असाधारण प्रेमी और प्रचारक अध्यापक रामरत्न भी अब हमारे बीच नहीं रहे। प्रयाग के प्रसिद्ध पत्र 'अभ्युदय' के संपादक पं० कृष्णकांत मालवीय तथा काशी के प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री के निधन से हमारी भाषा को गहरा धक्का लगा है। सभा इन सबके शोक-संतप्त परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति दे।

धन्यवाद

यह विवरण समाप्त करने के पूर्व मैं सर्वप्रथम सभा के कार्याधिकारियों और विभागाध्यक्षों को धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिनके अमूल्य सहयोग से ही सभा इस वर्ष सफलतापूर्वक कार्य कर सकी है। सबने अपनी शक्ति भर, खुले दिल से मुझे जो सहायता दी है, उसके बिना यह वर्ष सभा के लिये कुछ बातों में उन्नति का साधक न होता। सभा के अर्थमंत्री श्री० जीवनदास, साहित्यमंत्री श्री० रामचंद्र वर्मा, आय-व्यय-निरीक्षक श्री० गुलाबदास नागर, पुस्तकालय-निरीक्षक श्री० कृष्णदेवप्रसाद गौड़, प्रचारविभाग के संयोजक श्री चंद्रबली पांडे, खोज के निरीक्षक तथा प्रसाद-व्याख्यान-माला के संयोजक श्री० विद्याभूषण मिश्र, भारतकलाभवन के संग्रहाध्यक्ष श्री राय कृष्णदास और पत्रिका के संपादक-मंडल (विशेषकर उसके संपादक श्री कृष्णानंद) ने अपने विभागों का कार्य जिस तत्परता से संपन्न किया है, उससे सभा की मर्यादा की रक्षा और वृद्धि हुई है। डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल ने, खेद है, कुछ ही दिनों तक खोज विभाग का निरीक्षण किया था, फिर भी उन्हीं की व्यवस्था के अनुसार कार्य होता रहा है। इससे सभा

उनकी भी कृतज्ञ है। और पडित रामनारायण मिश्र की किस किस सहायता का उल्लेख करूँ? इन दिनो तो उन्हे दिन-रात सभा की उन्नति का ध्यान रहता है। वे हर प्रकार से सभा की प्रतिष्ठा बढ़ाने का उद्योग करते रहते हैं। मुझे और सभा को सबसे अधिक दुःख है इस बात का कि आचार्य रामचद्र शुक्ल जी अधिक समय तक हमें पथप्रदर्शन कर न सके। अस्वस्थ होते हुए भी वे सभा के कितने उपयोगी थे और हमारी कितनी सहायता किया करते थे यह स्मरण करते ही हृदय गद्गद हो जाता है। मै इन सब का कृतज्ञ हूँ। साथ ही मै अपने कार्यालय के सभी विभागो के कर्मचारियों को भी नहीं भूल सकता, जो कार्यालय के लिये नियत समय के अतिरिक्त भी मेरी तथा अन्य विभागाध्यक्षो की सुविधा और इच्छा के अनुसार, सभा के कार्यों के लिये सदैव तत्पर रहे है। इनमें से सहायक मंत्री श्री पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, पुस्तकाध्यक्ष पं० शंभुनारायण चौबे, बी० ए०, एल्-एल० बी० और कार्यालय के पं० शंभुनाथ वाजपेयी तथा मुंशी जगन्नाथप्रसाद की सेवाएँ उल्लेखनीय है।

प्रबंध-समिति की ओर से
रामबहोरी शुक्ल
प्रधान मत्री
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

परिशिष्ट १

जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकादि के द्वारा इस वर्ष सभा के पुस्तकालय की सहायता की है, अकारादि क्रम से उनकी नामावली—

श्री अखिल महाराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति, पूना	१
,, अग्रगामी साहित्य मंडल, इटावा	२
,, अछूत साहित्य मंडल, कानपुर	१
,, अनवर रहमान, कोलोंग	१
,, अभय, देहरादून	१
,, अर्जुनसिंह, रीवाँ	१
,, आर्यकुमार परिषद्, दिल्ली	१
,, आर्य साहित्य मंडल, अजमेर	१
,, इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग	३६
,, उपेंद्रनारायण वाजपेयी, कलकत्ता	१
,, एजुकेशन पब्लिशिंग कंपनी, लखनऊ	८
,, एम० बी० जैन ब्रदर्स, लश्कर	१
,, एस० एल० जोशी, इंदौर	१
,, कमलनाथजी अग्रवाल, काशी	१८
,, काशीप्रसाद श्रीवास्तव, सकलडीहा	३
,, किताबघर, पटना	२
,, किशोरजी वैद्य, जयपुर	१
,, कुटिलेशजी, कलकत्ता	१
,, कृष्णकुमार, एग्रिकलचर विभाग, हिं० वि० वि०, काशी	३
,, केदारनाथ शर्मा, काशी	१
,, गणेशप्रसाद, लखनऊ	१
,, गयाप्रसाद एंड संस, आगरा	४
,, गीताप्रेस, गोरखपुर	१०
,, गौरीशंकर, लाहौर	१
,, चंद्रगुप्त वेदालंकार, गाजियाबाद	१

श्री चक्रवर्ती चटर्जी एंड कंपनी, कलकत्ता	३
,, छात्र हितकारी पुस्तकमाला, प्रयाग	३
,, जयत विजय, चूड़ा	२
,, जयचंद्रजी विद्यालंकार, काशी	१
,, जीवनदास अग्रवाल, काशी	१२
,, जीवनसखा कार्यालय, इलाहाबाद	६
,, तत्त्वविज्ञान आश्रम, गजरौला	१
,, दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा, मद्रास	३५
,, द्वारकानाथ पड्या, काशी	१
,, द्वारकाप्रसाद लक्ष्मणदास, कराची	१
,, नंदकिशोर एंड ब्रदर्स, काशी	५
,, नंदकिशोर सिंह, आरा	१
,, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ	२
,, नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी	५
,, नारायणदत्त बहुगुणा, गढ़वाल	२
,, नारायणदासजी, काशी	१
,, प्रेमी प्रिंटिंग प्रेस, मेरठ	१
,, मेहता बलदास व्यास, काशी	७
,, बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, पटना	१
,, भगवतदास, काशी	१
,, भगवद्दत्त, लाहौर	१
,, भूगोल कार्यालय, प्रयाग	१
,, मणींद्रनाथ समाद्दार, पटना	१
,, माणिक कार्यालय, काशी	१
,, मोतीलाल बनारसीदास, पटना	१
,, मोहनलाल, काशी	३
,, युक्त-प्रांतीय सरकार, इलाहाबाद	१
,, युगलकिशोर चौधरी, नीम का थाना	२
,, युधिष्ठिर मीमांसक, लाहौर	२
,, युवराज प्रकाशन मंदिर, लखनऊ	१
,, रंगीलाल श्रीवास्तव, जयपुर	१

श्री रजिस्ट्रार इलाहाबाद युनिवर्सिटी, इलाहाबाद ८
,, रजिस्ट्रार, ट्रावनकोर विश्वविद्यालय, त्रिवेंद्रम १ (रिपोर्ट)
,, रजिस्ट्रार, पटना यूनिवर्सिटी, पटना ३
,, राज पब्लिशिंग हाउस, बुलंदशहर १
,, राजबहादुर लमगोड़ा, फतहपुर १
,, राजाराम पंड्या, काशी १
,, राधाकृष्ण जालान, रायबहादुर, पटना १
,, राधेश्याम कथावाचक, बरेली १९
, रामकृष्ण भारती, लाहौर १
,, रामकृष्ण शर्मा, काशी २
,, रामचंद्र वर्मा, काशी ४
,, रामजी वाजपेयी, काशी २
,, रामदत्त भवानीदयाल, नेटाल २
,, रामदेवजी चोखानी, रायबहादुर, कलकत्ता १
,, रामनारायणजी मिश्र, काशी ९४
,, रामवचन द्विवेदी, शाहाबाद ४
,, रामविलास पोद्दार स्मारक समिति, बंबई १
,, राष्ट्रभाषाप्रचारसमिति, वर्धा २
,, लालचंद्र वैद्यशास्त्री, काशी २
,, लीडर प्रेस, प्रयाग ७
,, विंध्यवासिनीप्रसाद वर्मा, हाजीपुर १
,, विज्ञान-परिषद्, प्रयाग ३
,, विप्लवी ट्रैक्ट, लखनऊ १
,, व्रजसाहित्य ग्र थमाला, वृंदावन ४
,, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, लाहौर ४
,, शंकरसहाय सकसेना, बरेली २
,, शंभूनारायण चौबे, काशी १
श्रीमती शकुंतला देवी, झालरापाटन ११
श्री शैदा, दिल्ली १
,, श्यामसुंदरदास, रायबहादुर, काशी २
,, संगीत कार्यालय, हाथरस १

श्री सस्ता साहित्यमंडल, दिल्ली	११
,, साधना मंदिर, बंबई २	६
,, साहित्यनिकेतन, कानपुर	२
,, साहित्य प्रेस, जबलपुर	१
,, साहित्यरत्न-भंडार, आगरा	१
,, सुतीक्ष्ण मुनि, सक्खर	१
,, सुपरिंटेंडेंट, आर्केयालाजी, जयपुर	१
,, स्वरूप ब्रदर्स, इंदौर	१
,, हजारीप्रसाद द्विवेदी, शांतिनिकेतन	१
,, हरनामदास कविराज, लाहौर	१
,, हरिमोहनलाल वर्मा, दतिया	७
,, हरिहर पुस्तकालय, बरालोकपुर	१
,, राय हरेकृष्ण, काशी	२
,, ख्वाजा हसन निजामी, दिल्ली	२
,, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई	५
,, हिंदी पुस्तक एजेंसी, काशी	१
,, हिंदी पुस्तक भंडार, बंबई	१६
,, हिंदी पुस्तक मंडल, सूरत	१
,, हिंदी प्रचार पुस्तक मंदिर, मद्रास	१
,, हिंदी भवन, लाहौर	१
,, हिंदी मंदिर, प्रयाग	४
,, हिंदी विद्यापीठ, बंबई	१
,, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग	२२
,, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद	१
,, हिंदुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा	१०
,, हिंदुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ	३
श्रीमती हेमंतकुमारी चौधुरानी, देहरादून	३

परिशिष्ट २

पत्र-पत्रिकाएँ जो इस वर्ष सभा के पुस्तकालय में आती रहीं—

दैनिक

अग्रगामी, काशी	१६)
आज ,,	१६)
जागृति, कलकत्ता	१२)
प्रताप, कानपुर	१६)
भारत, प्रयाग	१६)
लोकमान्य, कलकत्ता	१२)
वर्त्तमान, कानपुर	१६)
विश्वमित्र, कलकत्ता	१६)
वीर अर्जुन, दिल्ली	१२)

अर्द्ध साप्ताहिक

केसरी (मराठी)	८)
लीडर (अँगरेजी)	८)

साप्ताहिक

आज, काशी	४)
आदर्श, देवरिया	३)
आर्यमार्तंड, अजमेर	२॥)
आर्यमित्र, आगरा	३)
कर्मभूमि, लैंसडाउन	३॥)
कर्मवीर, खंडवा	३॥)
गुजरातीपच(गुज०)अहमदाबाद	३॥)
गुरुकुल, काँगड़ी	२॥)
गृहस्थ, गया	२)
चित्रप्रकाश, दिल्ली	६।)
जयाजीप्रताप, ग्वालियर	२)
जागरण, कलकत्ता	१॥)
जागृति, ,,	३॥)
देशदूत, प्रयाग	३॥)
नवप्रभात, पौड़ी	३)
नवशक्ति, पटना	३॥)
न्याय, इलाहाबाद	३)
न्यू प्राचीप्रकाश, रगून	४)
प्रजासेवक, जोधपुर	४)
प्रताप, कानपुर	४)
भारत, प्रयाग	४)
मारवाड़ी समाचार, जोधपुर	३।॥)
युक्तप्रातीय गवर्न०गजट,लखनऊ	२४)
योगी, पटना	३॥)
राजस्थान, अजमेर	५)
राष्ट्रलक्ष्मी, मथुरा	१।)
राष्ट्रसदेश, पूर्णिया	३)
लोकमान्य, कलकत्ता	२)
विचार ,,	७)
विश्वमित्र ,,	३॥)
वीर, नई दिल्ली	३)
वेंकटेश्वरसमाचार, बबई	२॥)
शखनाद, कानपुर	२)
शुभचितक, जबलपुर	३॥)
समय, जौनपुर	२)
समाजसेवक, कलकत्ता	३॥)

सिद्धांत, काशी	३॥)	कल्याण, गोरखपुर	४)
सुदर्शन, एटा	३)	कहानी, बनारस	३)
स्वतंत्र, झाँसी	२॥)	किशोर, पटना	३)
स्वराज्य, खंडवा	३॥)	किसान ,,	२)
हिंदीकेशरी, काशी	२)	कुशवाहा क्षत्रियमित्र, जौनपुर	१)
पाक्षिक		कूर्मि क्षत्रिय दिवाकर, बनारस	२)
आकाशवाणी, लखनऊ	॥)	केशरी, गया	२)
इंडियन इनफार्मेशन सीरीज (अँगरेजी) दिल्ली		कोकिल, सहारनपुर	२)
		कौमुदी, दिल्ली	६)
क्षत्रिय मित्र, बनारस	२)	क्षात्रधर्म, अजमेर	२)
पहेली, नई दिल्ली	१।=)	खादी सेवक, मुजफ्फरपुर	१॥)
भारतीय समाचार, नई दिल्ली		खिलौना, प्रयाग	२)
मधुकर, टीकमगढ़	२)	ग्रामसुधार, इंदौर	१)
म्युनिसिपल गजट, बनारस	॥=)	चाइना एट वार (अँगरेजी), हांगकांग	
हमारी जबान (उर्दू) दिल्ली	१)	जीवनसखा, प्रयाग	३)
मासिक		जीवनसाहित्य, बंबई	१।)
अखंड ज्योति, आगरा	१॥)	ज्योतिष्मती, काशी	१॥)
अनेकांत, दिल्ली	३)	झुनझुना, आगरा	३)
अभिनय, कलकत्ता	३)	तूफान, इलाहाबाद	२)
अरुण, मुरादाबाद	३)	थियोसाफिस्ट (अँगरेजी), काशी	
आदर्श, हरद्वार	२)	दयानंदसंदेश, दिल्ली	२)
आनंद, उरई	२॥)	दीपक, अबोहर	२॥)
आरती, पटना	५)	दुनिया, इलाहाबाद	२)
आर्य, लाहौर	३)	धन्वंतरि, अलीगढ़	३॥)
आर्यमहिला, काशी	५)	धर्मसंदेश, कानपुर	१)
इंडियन पी० ई० एन०, बंबई	३)	नई तालीम, वर्धा	१।)
इस्लाम, कानपुर	२)	नाममाहात्म्य, वृंदावन	१)
ओरिएंटल लिटरेरी डाइजेस्ट, पूना	३)	नोकझोंक, आगरा	२)
कन्नौज समाचार, कन्नौज	१)	पालीवाल संदेश, आगरा	२)
कमला, काशी	४॥)	प्रकाश, जयपुर	३)
कल्पवृक्ष, उज्जैन	२॥)	बानर, प्रयाग	३।)

बालक, लहेरियासराय	३)
बालविनोद, पटना	२॥)
बालसखा, प्रयाग	२॥)
बालहित, उदयपुर	२)
व्रजभारती, मथुरा	२)
भारतोदय, ज्वालापुर	३)
भूगोल, प्रयाग	३)
मनस्वी अमेठी	१)
माथुर वैश्य हितैषी, कानपुर	२)
माधुरी, लखनऊ	६॥)
मेलमिलाप, बाँकीपुर	२)
यादवेश, काशी	१)
रँगीला मुसाफिर, सहारनपुर	३)
राजपूत, आगरा	२)
राठौर वंधु, मडला	२॥)
रोजगार, लहेरियासराय	२॥)
विजय, काशी	१॥)
विज्ञान, प्रयाग	३)
विद्यार्थी, ,,	२॥)
विश्वमित्र, कलकत्ता	६॥)
वीणा, इंदौर	४)
वैदिक धर्म, औंध	५)
वैद्य, मुरादाबाद	२≡)
व्यापार, कानपुर	३)
व्यावहारिक वेदांत, काशी	३)
शनिवारेरचीठा (बंगला), कलकत्ता	३)
शाकद्वीपीय ब्राह्मण वंधु, बंबई	२॥)
शारदा, औरैया	२)
शिक्षण अने साहित्य (गुजराती) अहमदाबाद	२॥)
शान्ता-सुधा, मुरादाबाद	२)
श्रद्धानंद, दिल्ली	२)
संकीर्तन, मेरठ	३)
सनाढ्यजीवन, इटावा	२)
सबकी बोली, वर्धा	१)
सम्मेलनपत्रिका, प्रयाग	१॥)
सरस्वती ,,	४॥)
सर्वोदय, वर्धा	३)
साधना, आगरा	३)
साहित्यसंदेश, ,,	२)
सुकवि, कानपुर	५)
सुधा, लखनऊ	५)
सुधानिधि, प्रयाग	२)
सेवा, ,,	२।)
हंस, बनारस	४)
हिंदी, काशी	॥)
हिंदी प्रचार समाचार, मद्रास	२)
हिंदी शिक्षण पत्रिका, इंदौर	१)

त्रैमासिक

इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टरली (अँगरेजी), कलकत्ता	६॥)
उर्दू (उर्दू), नई दिल्ली	
एनल्स आव् दी ओरिण्टल रिसर्च आव युनिवर्सिटी (अँगरेजी), मद्रास	
एनल्स आव् दी भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टाट्यूट (अँगरेजी), पूना	
ओरिएंटल कालेज मेगजीन (अँगरेजी), लाहौर	
कर्नाटक हिस्टारिकल रिव्यू (अँगरेजी)	

क्वार्टरली जर्नल आव् दी मिथिक सोसायटी (अँग०), बंबई
चारण, लिंबड़ो
जर्नल आव् दी आंध्र हिस्टारिकल रिसर्च सोसायटी (अँगरेजी), राजामुंद्री
जर्नल आव् दी ग्रेटर इंडिया सोसायटी(अँग०),कलकत्ता
जर्नल आव् दी तेलगू एकेडेमी (अँगरेजी), कोकानाडा
जर्नल आव् दी बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसायटी (अँग०), पटना २०)
जर्नल आव् दी मद्रास ज्याग्रफिकल असोसिएशन (अँगरेजी), मद्रास
जर्नल आव् दी यूनिवर्सिटी आव् बाबे (अँगरेजी),बंबई
जैन सिद्धांत भास्कर, आरा ५)
नागरी-प्रचारिणी पत्रिका,काशी १०)
न्यू एशिया (अँगरेजी,)कलकत्ता
बुद्धप्रभा (अँगरेजी), बंबई
बुद्धिप्रकाश (गुजराती), अहमदाबाद
ब्रह्मविद्या (अँगरेजी), अदयार ६)
भारतीय इतिहास संशोधक-मंडल (मराठी), पूना ३)
भारतीय विद्या
महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका (मराठी), पूना ३)
विश्वभारती (अँगरेजी), शांतिनिकेतन ८)
वीरबाला, वनस्थली १)
साहित्यपरिषद् पत्रिका (बँगला), कलकत्ता
सूर्योदय (संस्कृत), काशी
हारवर्ड जर्नल आव् एशियाटिक सोसायटी (अँगरेजी) केंब्रिचूसेट

चतुर्मासिक

जर्नल आव् दी इंडियन हिस्ट्री (अँगरेजी), मद्रास १०)

अर्द्धवार्षिक

जर्नल आव् दी बाबे ब्राच आव् दी रायल एशियाटिक सोसायटी(अँगरेजी),बंबई
बुलेटिन आव् दी स्कूल आव् ओरिएंटल स्टडीज (अँगरेजी), लंदन

—

परिशिष्ट ३

इटावा जिले के अन्वेषक श्री० बाबूरामजी बित्थरिया के भेजे हुए हस्तलेखों की सूची

ग्रंथ		ग्रंथकार
१—बड़ी ओनम		माधवदास
२—केवली भक्ति		दयाराम
३—गंगाजी की स्तुति		×
४—रामाज्ञा		गौतम
५—हरि भ०	(मराठी)	×
६—पद		×
७—टीका ग्रंथ		×
८—कोक		शेखर
९—वदावली		×
१०—सामुद्रिक		×
११—पद		×
१२—सूरदास के पदो के संग्रह		×
१३—रघुराज के कवित्त		×
१४—जन्त्रावली तथा मन्त्र		×
१५—वेदस्तुति		भोपति
१६—चद		चद कवि
१७—भागवत की कुछ शंका समाधान		×
१८—भागवत के पद्याशो पर सवैया		×
१९—भीम विनय		×
२०—चद्रचूड स्तोत्र		×
२१—विवाह कृति		×
२२—शिवलिंग अष्टक		×
२३—गणेश स्तुति		×
२४—जन्त्र मन्त्र		×

ग्रंथ	ग्रंथकार
२५—मथुरा वर्णन	×
२६—कायस्थ उत्पत्ति	×
२७—सुदामा चरित्र	×
२८—विचारमाल	×
२९—विजयमुक्तावली	छत्र कवि
३०—नाममाला	नंददास
३१—वद करने की दवा	×
३२—कुछ छंद व मंत्रादि	×
३३—धन्वंतरी स्तोत्र	×
३४—सूर्यपुराण	×

मथुरा जिले के अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल द्वारा प्राप्त हस्तलेखों की सूची

१—इकतालीस शिक्षापत्र	मूल लेखक श्री हरिरायजी टीकाकार—श्रीगोपेश्वरजी
२—इकतालीस शिक्षापत्र	×
३—इकतालीस शिक्षापत्र (सचित्र)	×
४—पंच आख्यानरी कथा	×
५—सिंघासन बत्तीसी	×
६—लघुचाणक्य राजनीति (टीका)	×
७—वृद्धचाणक्य राजनीति (टीका)	×
८—सभाविलास	×
९—कवित्त-रत्नाकर	सेनापति
१०—सदाशिवजी को ब्याहलो	श्री दयाराम
११—सुदामाचरित्र	नरोत्तम
१२—कवित्त बाँसुरी	विभिन्न कविगण
१३—रामाश्वमेध	मधुअरिदास या मधुसूदनदास
१४—रामचरितमानस लंकाकांड	गो० तुलसीदासजी
१५—रामचरितमानस	"
१६—रामतंत्रराज (टीका)	×

ग्रंथ	ग्रंथकार
१७—अनेकार्थमजरी	श्री नंददास जी
१८—नाममजरी	,,
१९—ध्यानमजरी	श्री अग्रदासजी
२०—भागवत दशम स्कध	रसजानि कृत
२१—विजयमुक्तावली	छत्र कविकृत
२२—ध्रुव चरित्र	मधुकर दास
२३—अनवरचद्रिका [विहारीसतसई]	शुभकरण
२४—लघुजातक	अखैराम
२५—सौ स वत्सरौ	×
२६—अनुराग विलास	चद्रकृत
२७—दानलीला	कृष्णदास
२८—गणेशपुराण	मोतीलाल
२९—बाराखड़ी	दत्तलाल
३०—लीलावती	×
३१—इद्रजाल	×
३२—पदावली	विभिन्न कविगण
३३—सुनारिन लीला	श्रीरूप हितजी
३४—चक्र चूड़ामणि	×
३५—सदाशिवजी को व्याहलो	तापा
३६—धर्म संवाद (संस्कृत)	×
३७—नारदगीता ,,	×
३८—रामस्तुति	गो० तुलसीदासजी
३९—पचाध्यायी	श्री नददासजी
४०—विचारमाल	अनाथ
४१—भूगोलसार	प० श्रीलालजी
४२—महाभारत इतिहास-समुच्चय	लालदास कृत
४३—भ्रमरगीत	श्री नददासजी
४४—चडी चित्र	दयाल
४५—रास पंचाध्यायी	श्री नददासजी
४६—मार्कडेय पुराण	×

ग्रंथ	ग्रंथकार
४७—फुटकर पद	×
४८—ध्यानमंजरी	श्री अग्रदासजी
४९—प्रतीत परीक्षा	उदय
५०—फुकर	×
५१—भ्रमरगीत	श्री नंददासजी
५२—फुटकर पद	×
५३—पद	श्री स्वामी रामचरणजी
५४—पद	उमाँ
५५—झूलणा	दीनजी
५६—दृष्टांतसागर सटीक	मूलकार—श्री स्वामी रामचरणजी टीकाकार—श्री रामजन
५७—गीता	श्री हरिवल्लभ
५८—शनावली रूपावली	×
५९—नासकेत कथा	श्री स्वामी चरणदासजी
६०—मनविरक्तकरन गुटका सार	,, ,,
६१—दानलीला	,, ,,
६२—पद और कवित्त	,, ,,
६३—मटकी और हेली	,, ,,
६४—कालीमथनलीला	,, ,,
६५—जागरणमहात्म्य	,, ,,
६६—माखनचोर लीला	,, ,,
६७—स्फुट पद और कवित्त	,, ,,
६८—नायिका-भेद का ग्रंथ	×
६९—सतभाऊ की कथा	×
७०—प्रह्लाद कथा	×
७१—भ्रमरगीत	श्री नंददासजी
७२—गंगाजी को व्याह	×
७३—श्रीगोपालसहस्रनाम (संस्कृत)	×
७४—रुक्मणि व्याह	×
७५—गोकुल लीला	जनविदा

ग्रंथ	ग्रंथकार
७६—कृष्ण विलास	×
७७—ओखाहरण (डिंगल)	देवीदास
७८—विष्णुसहस्रनाम (संस्कृत)	×
७९—शिवमंत्र (सस्कृत)	×
८०—हनुमान अष्टक	श्री गो० तुलसीदासजी
८१—ध्रुव चरित्र	मधुकरदास
८२—रासपचाध्यायो	श्री नददासजी
८३—गीत गोविंद (संस्कृत)	जयदेव
८४—कर्मविपाक	श्री चितामणि
८५—गीता	हरिवल्लभ
८६—रुक्मणि मंगल	रामलला
८७—वृंदावन सत	श्री ध्रुवदासजी
८८—सनेह लीला	जनमोहन दास
८९—भ्रमरगीत	श्री नंददासजी
९०—विष्णुसहस्रनाम (संस्कृत)	×
९१—नारायणकवच (संस्कृत)	×
९२—सप्तश्लोकी भागवत (संस्कृत)	×
९३—सप्तश्लोकी गीता (संस्कृत)	×
९४—वर्मनारायण सवाद सस्कृत	×
९५—महिम्नस्तोत्र ,,	×
९६—सप्तश्लोकी रामगीता ,,	×
९७—हनुमान अष्टक	श्री गो० तुलसीदासजी
९८—गणेश स्तोत्र संस्कृत	×
९९—गणेशाष्टक ,,	×
१००—शिवाष्टक	×
१०१—पंचमुखी हनुमान कवच स०	×
१०२—श्रीगणेश पचरत्न संस्कृत	×
१०३—हरिनाम मालास्तोत्र संस्कृत	×
१०४—श्री गंगाकवच ,,	×
१०५—श्री गगालहरी	जनरूपराम

ग्रंथ		ग्रंथकार
१०६—गंगाष्टक	,,	×
१०७—शिवपंचाक्षर स्तोत्र	,,	
१०८—गंगामहिमापद		रामदास
१०९—शिवस्तुति		श्री वृजभूषण
११०—जगन्नाथ अष्टक	,,	×
१११—अष्टपदी	संस्कृत	×
११२—पंचमुखी हनुमान कवच	,,	×
११३—सुदामा की बाराखड़ी		सूरदासजी
११४—रामाष्टक	संस्कृत	×
११५—फुटकर		विभिन्न ग्रंथकार
११६—अमृतधारा		श्री भगवानदास 'निरंजनी'
११७—भक्ति भावती		प्रपन्नगणेशानंद
११८—विचारमाल		अनाथ
११९—अनुभव हुलास		श्री भगवानदास 'निरंजनी'
१२०—ब्रह्म जिज्ञासा		×
१२१—शंकराचार्य आदिकृत कुछ सं० श्लोक		×
१२२—कबीर के पदों की टीका		×
१२३—जोगसुधानिधि ग्रंथ		×
१२४—ग्रंथ त्रिपदा या त्रिपद वेदांत निर्णय		चिदात्माराम
१२५—ज्ञानसमुद्र		श्री स्वामी सुंदरदास जी
१२६—प्रेमलता (चौरासी पद) छाया		आचार्य श्री हितहरिवंशजी
१२७—रासपंचाध्यायी रासधारियों की छाया		×
१२८—रासविलास (चौबीस छन्द)		श्री हित वृंदावनदास जी
१२९—निंबार्क संप्रदाय से संबंधित कुछ संस्कृत रचनाएँ		×
१३०—कवित्त आदि		श्री अग्रदासजी, श्री केशवदासजी, आचार्य श्री हरिवंशजी, कविराय, रसिकगोविंद, गो० तुलसीदासजी, कविनाथ, मस्तराम, पद्माकर लाल,

ग्रंथ	ग्रंथकार
	कवि छत्रसाल,सुंदर,सुवंस, वेताल और ठाकुर।
१३१—दोहे	श्री व्यासजी और गो० तुलसीदासजी
१३२—सरस मंजावली	श्री सहचरिशरणजी
१३३—फुटकर छंद और दोहे	श्री भगवतरसिकजी, गो० श्री तुलसीदासजी, नागरी और रसनिधि।
१३४—रामायण की घटनाओं के तिथिपत्र	श्री मोहनलाल समाधिया
१३५—रागमाला	×
१३६—सुधासर	श्री नवीन जी
१३७—भगवद्गीता संस्कृत	×
१३८—विष्णुसहस्रनाम ,,	×
१३९—भीष्मस्तवराज ,,	×
१४०—अनुस्मृति ,,	×
१४१—गजेंद्रमोक्ष ,,	×
१४२—उत्सवसंग्रह	श्रीकृष्णदासि,स्वामी हरिदास-जी और श्री ललितकिशारीजी
१४३—पदावली	माणकदास
१४४—वृंदावन सत	भगवत मुदित
१४५—अमरप्रकाश या अध्यात्मप्रकाश (गुरुमुखी अक्षरों मे)	×
१४६—सामुद्रिक	अजैराज
१४७—कवित्त	बालकराम
१४८—छंद प्रकाश	विहारीलाल
१४९—जुगल विलास	महाराज रामसिंह
१५०—होरी के कवित्त	विभिन्न कविगण
१५१—मूलाक्षर वारहखड़ी	टोकाराम
१५२—पहाड़ा तथा लेषौ	×
१५३—लघु चाणक्य राजनीति	×

ग्रंथ	ग्रंथकार
१५४—वृद्ध चाणक्य राजनीति	×
१५५—दामोदरलीला	देवीदास
१५६—फाग विलास	वीरभद्र
१५७—स्याम सगाई	श्रीनंददासजी
१५८—रुक्मणि मंगल	हीरामणि
१५९—परतीत परीक्षा	×
१६०—रमल सगुनावली	×
१६१—गीता महात्म्य	भगवानदास 'निरंजनी'
१६२—संस्कृतग्रंथ (पंचरत्न) (आरभ के दो पत्रों के किनारो पर बहुत अच्छे वेल-बूटे चित्रित किए गए हैं)।	×
१६३—विना नाम का ग्रंथ	बनारसीदास जैनी
१६४—सुदामाचरित्र	आलम
१६५—चूनरी	भगौतीदास (जैनी)
१६६—चूनरी	हेम (जैनी)
१६७—सीता चरित्र	×

परिशिष्ट ४

मान्य सभासद

श्री० अमरनाथ झा, एम० ए०, वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

,, साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', संकटहरन, बनारस

,, डाक्टर आनंद के० कुमारस्वामी, डी० एस्-सी० (लंदन), कीपर आव् दि इंडियन सेक्शन, म्यूजियम आव् फाइन आर्ट्स, बोस्टन (यू० एस० ए०)

,, रेवरेंड ई० ग्रीव्स नं० १ द लाइंस, हार्निओल्ड रोड, मलवर्न (इंग्लैंड)

,, ए० जी० शिरफ, आई० सी० एस०, मेंबर रेवेन्यु बोर्ड, बोर्ड्स् कार्टर्स, लखनऊ

,, एन० सी० मेहता, आई० सी० एस०, संयुक्त प्रांतीय सरकार के एजुकेशन सेक्रेटरी, लखनऊ

,, काका कालेलकर, वर्धा

,, राय कृष्णदास, बनारस

,, केशवप्रसाद मिश्र, भदैनी, बनारस

,, गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, प्रधान मंत्री सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, लाहौर

,, महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर, डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर

,, चंद्रबली पांडेय, एम० ए०, ठि० मुंशी महेशप्रसाद, आलिम फाजिल, नगवा, बनारस

,, चंद्रशेखरधर मिश्र, ग्राम रतनमाला, डाकघर बगहा, जिला चंपारन

,, रायबहादुर, साहित्याचार्य, जगन्नाथप्रसाद 'भानु', द्वारा जगन्नाथ प्रेस, बिलासपुर, मध्यप्रांत

,, सेठ जमनालाल बजाज, ठि० रायबहादुर बच्छराज जमनालाल, वर्धा

,, जयचंद्र नारंग, विद्यालंकार, भदैनी, बनारस

,, डाक्टर दुर्गाशंकर नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन

श्री० राजगुरु धुरेंद्र शास्त्री, न्यायभूषण, आर्योपदेशक विद्यालय, शोलापुर
,, आचार्य नरेंद्रदेव, एम० ए०, एम० एल० ए०, फैजाबाद
,, प्रोफेसर निकोलस रोरिक, नग्गर, कुल्लू
,, डाक्टर पन्नालाल, आई० सी० एस०, डी० लिट्०, संयुक्त प्रांतीय सरकार के परामर्शदाता, लखनऊ
,, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एम० एल० ए०, संयुक्त प्रांतीय असेंबली के अध्यक्ष, १० क्रास्थवेट रोड, इलाहाबाद
,, बनारसीदास चतुर्वेदी, टीकमगढ़
,, रायबहादुर ब्रजमोहन व्यास, इक्जिक्युटिव अफसर, म्युनिसिपल बोर्ड, इलाहाबाद
,, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, विरजानंद आश्रम, पोस्ट शहादरा मिल
,, भगवद्दत्तजी, वैदिक अनुसंधान संस्था, ९ सी, माडल टाउन, लाहौर
,, डाक्टर भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट्, भूतपूर्व एम० एल० ए० केंद्रीय, सिगरा, बनारस
,, साहित्यवाचस्पति महामना मदनमोहन मालवीय, हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस
,, माखनलाल चतुर्वेदी, संपादक 'कर्मवीर', कर्मवीर प्रेस, खंडवा
,, मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव, झाँसी
,, मोतीलाल शर्मा, बालचंद्र प्रेस, जयपुर सिटी
,, साहित्यवाचस्पति, डाक्टर, महात्मा, मोहनदास कर्मचंद गांधी, मगनवाड़ी, वर्धा
,, डाक्टर रघुवीर, एम० ए०, पी० एच् डी०, डी० लिट्, एट्० फिल, फाउंडर डायरेक्टर, इंटरनेशनल एकेडेमी, लाहौर
,, परमहंस बाबा राघवदास, परमहंसाश्रम, बरहज, जिला गोरखपुर
,, देशरत्न डाक्टर राजेंद्रप्रसाद, सदाकत आश्रम, पटना
,, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, त्रिपिटकाचार्य, द्वारा श्री जेलर सेंट्रल जेल, हजारीबाग
,, रायबहादुर लज्जाशंकर झा, शांति कुटीर, गोलाबाजार, जबलपुर
,, रायसाहब ठाकुर शिवकुमारसिंह, बैजनत्था, बनारस
,, शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन, बनारस

श्री० रावराजा रायबहादुर डाक्टर श्यामविहारी मिश्र, एम० ए०, १०५ गोलागंज, लखनऊ

,, राय साहब श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए० (लंदन), संयुक्त प्रांत के शिक्षा-प्रसाराध्यक्ष, शिक्षा-प्रसार कार्यालय, इलाहाबाद

,, श्रीराम वाजपेयी, १चैथम लाइन्स, इलाहाबाद

,, संपूर्णानंद, बी० एस्-सी०, एल० टी०, एम० एल० ए०, संयुक्त-प्रांत के भूतपूर्व शिक्षामंत्री, जालपादेवी, बनारस

,, सत्यनारायण, प्रधान मंत्री, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

,, डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, सुधर्मा, १६ हिंदुस्तान पार्क, बालीगंज, कलकत्ता

,, सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशगृह, कालाकाँकर

,, सूर्यकांत त्रिपाठी, 'निराला' नारियलवाली गली, हाथीखाना, लखनऊ

,, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण, तहवीलदार का रास्ता, जयपुर

योग ४८

विशिष्ट सभासद

श्री० राय कृष्णजी पाडेपुर, बनारस

,, राय गोविंदचंद्र, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, एम० एल० सी०, कुशस्थली, बनारस

,, सेठ घनश्यामदास बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, महामाननीय डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, एम० ए०, एल-एल० डी०; के० टी०, डी० सी० एल०, १८ अलबर्ट रोड, इलाहाबाद

,, पुरुषोत्तमदास हलवासिया, ४७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

,, कुँवर फतहलाल महता, राय पन्नालाल भवन, उदयपुर

,, सेठ बंशीधर जालान, कोठी सूरजमल नागरमल, ६१ हरिसन रोड, कलकत्ता

,, सेठ. सर बदरीदास गोयनका, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

,, राजा बलदेवदास बिरला, लालघाट, बनारस

,, सेठ ब्रजमोहन बिरला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, मनीबाई शाह, युनिटी लाज, लखनऊ

,, मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन, बनारस

,, महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंह एम० ए०, एल्-एल० बी०, डी० लिट्०, रघुवीरनिवास, सीतामऊ

,, राधेकृष्णदास, शिवाला घाट, बनारस

,, रामदुलारी दुबे, गणेशगंज, अजमेर

,, रामनारायण मिश्र, बी० ए०, अवसरप्राप्त पी० ई० एस०, कालभैरव, बनारस

,, महाराजाधिराज सर विजयचंद महताब बहादुर, जी० सी० एस० आई०, बर्द्धमान

,, राय श्री कृष्णजी, पाडेपुर, बनारस

१८

स्थायी सभासदों की प्रांतक्रम से नामावली

१——असम

(सभासदों की संख्या—×)

२——कश्मीर

(सभासदों की संख्या—×)

३——दिल्ली

(सभासदों की संख्या—९)

दिल्ली

श्रीयुत लाला बनवारीलाल, कोठी—भानामल गुलजारीमल, चावड़ीबाजार
,, लाला रघुबीरसिंह, बी० ए०, कश्मीरी गेट,
,, रामधन शर्मा, एम० ए०, एम० ओ० एल०, साहित्याचार्य, ४१८ कटरा नील

योग—३

नई दिल्ली

श्रीमती कृष्णादेवी झालानी, बी० ए०, ४ औरंगजेब रोड,
श्रीयुत ज्ञानचंद आर्य, १७ बाराखंभा रोड,
,, लाला देशबंधु गुप्त, एम० एल० ए०, ५ कीलिंग रोड,
,, नारायणदत्त, १३ बाराखंभा रोड,
,, भरत रामजी, २२ कर्जन रोड,
,, हंसराज गुप्त, एम० ए०, एल्-एल० बी०, २० बाराखंभा रोड.

योग—६

४—पंजाब

(सभासदों की संख्या—३)

लाहौर

श्रीयुत महाशय कृष्णजी, बी० ए०, कृष्णभवन, ४१ निस्बेट रोड,

श्रीयुत राय बहादुर रामशरणदास,
,, लाला लालचंद, असिस्टेंट सेक्रेटरी, फाइनेंस, गुरु तेगबहादुर रोड, कृष्णनगर [ग्रीष्म का पता-शिमला ईस्ट]

योग-३

५-बंगाल

(सभासदों की संख्या-३१)

कलकत्ता

श्रीयुत इंद्रचंद केजड़ीवाल, फर्म कनीराम हजारीमल,
,, कालीप्रसाद खेतान, बार-एट-ला, ३ मांडले विला गार्डेन्स्, पोस्ट बालीगंज,
,, केदारनाथ सेठ, शास्त्री, १ गौरदास बसाक स्ट्रीट, बड़ाबाजार,
,, गांगेय नरोत्तम शास्त्री, गांगेय भवन, १२ आशुतोष दे लेन,
,, गिरधारीलाल नागर, कोठी बलदेवराम बिहारीलाल, ५ कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट,
,, गुलजारीलाल कानोड़िया, ठि० सेठ भगीरथ कानोड़िया, ४३ जकरिया स्ट्रीट
,, गोपीकृष्ण कानोड़िया, २९ विवेकानंद रोड,
,, सेठ छोटेलाल कानोड़िया. ५७ बड़तल्ला स्ट्रीट,
,, जगन्नाथप्रसाद गुप्त, १२६ चितरंजन एवेन्यु
,, दामोदरदास खन्ना, १७, वाराणसी घोष स्ट्रीट
,, नंदकिशोर लोहिया, ११२ चितरंजन एवेन्यु
,, नंदलाल कानोडिया, ४२ जकरिया स्ट्रीट
श्रीमती नर्मदा देवी, ठि० बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंह का, ६ ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट
श्रीयुत नारायणदास वर्मन, ५५ क्लाइव स्ट्रीट
,, पूरनचंद वर्मन, कोठी डाक्टर एस० के० वर्मन, रासविहारी एवेन्यु
,, ब्रजरत्नदास डागा, ठि० रायबहादुर बंशीलाल अबीरचंद, ४०१ अपर चीतपुर रोड
,, बालकृष्णलाल पोद्दार, ४।१।१ ताराचंद दत्त स्ट्रीट

श्रीयुत मंगतूराम जयपुरिया, २३ विवेकानंद रोड
,, म्हालीराम सोनथलिया, कोठी राधाकृष्ण सोनथलिया कं०, ६५ पथरियाघट्टा स्ट्रीट
,, मूलचंद अग्रवाल, विश्वमित्र कार्यालय, १४।१ शंभु चटर्जी स्ट्रीट, पोस्ट बहूबाजार स्ट्रीट
,, रामकुमार गोयनका, ५ वसाक स्ट्रीट, बड़ा बाजार
,, रामकुमार जालान, कोठी रामचंद्र हनुमानबख्श, ५१।३ स्ट्रैंड रोड
,, रामकुमार भुआलका, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, फर्स्ट फ्लोर
,, रायबहादुर रामदेव चोखानी, कोठी दौलतराम रामदेव, वाराणसी घोष स्ट्रीट
,, रामनाथ कानोड़िया, कोठी लक्ष्मीनारायण कानोड़िया कं०, क्लाइव स्ट्रीट
,, सेठ रामसुंदर कानोड़िया, २९ वंसतल्ला स्ट्रीट
,, रामेश्वर नोपाणी, श्री दौलतरामजी रावतमलजी, १७८ हरिसन रोड
,, विष्णुदास वासिल, ४३ पद्मपुकर रोड, पोस्ट एलगिन रोड
,, विनयकृष्ण रोहतगी, बी० एस्-सी०, कोठी कल्लूबाबू लालचंद, ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट
,, सीताराम सेकसरिया, शुद्ध खादी भंडार, १३२।१ हरिसन रोड

योग—३०

हवड़ा

श्रीयुत मिहरचंद धीमानजी, ११५ बनारस रोड, सलकिया

योग—१

६—बंबई

(सभासदों की संख्या—५)

बंबई

श्रीयुत गोस्वामी महाराज गोकुलनाथ बड़ा मंदिर, ३११ भोईवाड़ा, नं० २
,, घनश्यामदास पोद्दार, कृष्णभवन, वालकेश्वर
,, शुकदेवशरण केदारनाथ भार्गव, कृष्णकुंज, वीसेंट स्ट्रीट, शांताकुंज

श्रीयुत हीरालाल अमृतलाल शाह, बी० ए०, नं० ६९ मेरीन ड्राइव, ४था फ्लोर, ब्लाक नं० १०

योग–४

लोणावला (पूना)

श्रीयुत सी० के० देसाई, (अवसरप्राप्त) आई० सी० एस०, कैवल्यधाम

योग–१

७—बिहारोत्कल

(सभासदों की संख्या—७)

झरिया (जिला मानभूम)

श्रीयुत रामजस अग्रवाल

योग–१

डालमियानगर (शाहाबाद)

श्रीमती रमादेवी जैन

श्रीयुत सेठ रामकृष्ण डालमिया

योग–२

पटना

श्रीयुत सर गणेशदत्त सिंह, के टी०; भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार सरकार

,, डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा, बार-एट-ला, एल् एल-डी०,

,, हरिप्रसाद वर्मा, मोकामाघाट,

योग–३

रानीगंज

श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद झुंझनूवाले, आनरेरी मैजिस्ट्रेट

योग–१

८—मद्रास

(सभासदों की संख्या—×)

९—मध्यप्रदेश-बरार

(सभासदों की संख्या—×)

१०—मध्य भारत

(सभासदों की संख्या—९)

इंदौर

श्रीयुत रामभरोसे तिवाड़ी, १२ तुकोगज साउथ

योग–१

उज्जैन

श्रीयुत मदनमोहन जैन, जीवनकुटी
,, रायबहादुर लालचद सेठी, वाणिज्यभूषण, विनोदभवन
,, सूर्यनारायण व्यास, भारतीभवन, बड़े गणेश
,, साहित्याचार्य, प्रोफेसर, डाक्टर हरि रामचंद्र दिवेकर, एम० ए०, डी० लिट्०

योग–४

ग्वालियर

श्रीयुत राजा खलकसिंहजु देव, खनियाँधाना स्टेट, ग्वालियर रेजिडेंसी

योग–१

धार

श्रीयुत महाराज आनदराव साहब पँवार, धार राज्य
,, कृष्णराव पूणचद्र माडलीक, चीफ इसपेक्टर ग्रामोद्धार, धार राज्य

योग–२

मुलथान (मालवा)

श्रीयुत महाराज भरतसिंह साहब

योग—१

११—मैसूर

(सभासदों की संख्या— ×)

१२—राजपूताना

(सभासदों की संख्या—१३)

अजमेर मेरवाड़ा

श्रीयुत राजा कल्याणसिंह, भिनाय स्टेट
,, रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम० ए०, ढढ्ढों की हवेली, कड़क्का चौक
,, राय बहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालंद, जयपुर रोड

योग—३

उदयपुर

श्रीयुत अंबालाल देरासरी, नागरवाड़ो
,, कुँवर तेजसिंह मेहता, भूतपूर्व मिनिस्टर
,, पुरोहित देवनाथ, मास्टर अव सेरेमनीज़ पुरोहितजी की हवेली

योग—३

काँकरोली (मेवाड़)

श्रीयुत १०८ श्रीगोस्वामी व्रजभूषण शर्मा, काँकरोली महाराज

योग—१

जयपुर

श्रीयुत शुकदेव पांडे, एम० एस-सी०, प्रिंसिपल, बिड़ला इंटर कालेज, पिलानी

योग—१

जोधपुर

श्रीयुत दीवान बहादुर धर्मनारायण काक, सी० आई० ई०, डिप्टी प्राइम मिनिस्टर, जोधपुर राज्य,

योग—१

प्रतापगढ़

श्रीयुत महाराजा महारावत साहब सर रामसिंह, के० सी० एस० आई०,

योग—१

बीकानेर

श्रीयुत सेठ चंपालाल बांठिया, भीनासर,

योग—१

शाहपुरा राज्य

श्रीयुत माननीय महाशय घीसूलाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, जज हाईकोर्ट.

योग—१

सांभर

श्रीयुत कृष्णकुमार पुरोहित, एम० ए०, एल्-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट

योग—१

१३—संयुक्त प्रांत

(सभासदों की संख्या—५१)

आगरा

श्रीयुत कैप्टेन राव कृष्णपालसिंह, कैसल ग्राट,
,, निहालकरण सेठी, सिविल लाइन,
,, प्रोफेसर हरिनाथ टंडन, एम० ए०, संत जान्स कालेज,

योग—३

इलाहाबाद

श्रीयुत कृष्णाराम मेहता, बी० ए०, एल् एल० बी०, लीडर प्रेस
,, ठाकुर नेहपालसिंह, आई० ई० एस०, २१, म्योर रोड

श्रीयुत रायबहादुर भगवतीशरणसिंह, चंद्र भवन, आउटरम रोड
,, मनोहरलाल जुत्शी, एम० ए०, १ वेली रोड
,, सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०, हिंदुस्तानी एकेडमी, संयुक्त प्रांत
,, हरिकेशव घोष, इडियन प्रेस, लि०

योग–६

कानपुर

श्रीयुत सेठ पदमपत सिंहानियाँ, कमला टावर
,, रतनचद कालिया, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट
,, लाला रामरतन गुप्त, बिहारी निवास
,, हरीचंद खन्ना, इंसपेक्टर ओरियंटल-अश्यूरेंस कंपनी, १६।५३ गेंजीज बंक, सिविल लाइन्स

योग–४

कालाकांकर (प्रतापगढ़)

श्रीयुत कुवर सुरेशसिंह,

योग–१

खीरी

श्रीयुत आदित्यप्रकाश मिश्र, डिप्टी कलक्टर

योग–१

गोंडा

श्रीमती पूर्णिमा चाँदमल, ठि० श्री० चाँदमल, आई० सी० एस०

योग–१

गोरखपुर

श्रीयुत सत्यनारायण आर्य, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, श्रीकृष्ण उद्योग इंग्लिश स्कूल, बसतपुर धूसो, डाकखाना तरकुलवा

योग १

ज्वालापुर

श्रीयुत रायबहादुर गंगाप्रसाद, एम० ए०, (अवसरप्राप्त चीफ जज, टेहरी राज्य), वानप्रस्थाश्रम

योग–१

नैनीताल

श्रीयुत रायसाहब डाक्टर भवानीशंकर याज्ञिक, पटवा डोंगर

योग—१

बनारस

श्रीयुत रायबहादुर कमलाकर दुबे, एम० ए०, खजुरी
,, किशोरीरमण प्रसाद, मामूरगंज
,, कृष्णदेवप्रसाद गौड़, एम० ए०, एल० टी०, बड़ी पियरी
,, गोविन्द मालवीय, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एम० एल० ए०, न्यू इंश्योरेंस कं०
,, सेठ गौरीशंकर गोयनका, अस्सी
,, जगन्नाथप्रसाद खत्री, गोलागली
,, ठाकुर त्रिभुवननाथ शिवगोविंद, बार-एट-ला
,, दामोदरदास खंडेलवाल, छोटी गैबी
,, बनारसीप्रसाद सारस्वत
,, ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट, बुलानाला
,, रमेशदत्त पांडे, बी० ए०, बरनापुल
,, रामेश्वरसहाय सिन्हा, बी० ए०, (सुपरिंटेंडेंट शिक्षा विभाग म्युनिसिपल बोर्ड) ६४।१०० हीरापुरा,
,, लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज
,, विश्वनाथप्रसाद, बुलानाला
,, वेणीप्रसाद, रानी कुआँ
,, राय शंभुप्रसाद, ग्राम जगतपुर, पोस्ट रोहनिया,
,, साहित्यवाचस्पति रायबहादुर श्यामसुंदरदास, बी० ए०
,, श्रीशचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल्-एल० बी०, बी० टी०, कालभैरव

योग—१८

बनारस राज्य

श्रीयुत सूर्यप्रसाद शुक्ल, हजारी साहब, रामनगर

योग—१

बरेली

श्रीयुत बलराम शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०, द्वारा कथावाचस्पति श्री राधेश्याम शर्मा, कथावाचक, वानप्रस्थी, राधेश्याम प्रेस

,, साहु रामनारायण लाल, बाँसों की मंडी

योग–२

बुलंदशहर

श्रीयुत रायसाहब, मदनमोहन सेठ, एम० ए०, एल्-एल० बी० अवसरप्राप्त जिला एवं दौराजज, शिवपुरी

योग–१

मथुरा

श्रीयुत क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कंपनी

योग–१

मिर्जापुर

श्रीयुत रामप्रतापजी, मालिक दुकान भैरवमल फतहचंद, बुँदेलखंडी

,, राजा शारदामहेशप्रसाद सिंह शाह, बड़हराधीश, बड़हर, पोस्ट राजपुर

योग–२

मुजफ्फरनगर

श्रीयुत जगदीशप्रसाद, रईस

योग–१

सीतापुर

श्रीयुत ठाकुर रामसिंह ताल्लुकेदार

,, राजा सूरजबख्श सिंह, आनरेरी मुसिफ व मैजिस्ट्रेट, कस्माडा, पोस्ट कमालपुर, जिला

,, सोमेश्वरदत्त शुक्ल

योग–३

सुलतानपुर

श्रीयुत कुमार रणंजय सिंह, भूतपूर्व एम० एल० ए० (केन्द्रीय), अमेठो राज्य, जिला

योग—१

हरदोई

शीयुत व्रजभूषणशरण जेतली, एम० ए०, एल्-एल० बी०, आई० पी० एस०, सुपरिंटेंडेंट पुलिस

योग—१

हाथरस

श्रीयुत रायबहादुर चिरंजीवलाल बागला, रईस, म्युनिसिपल कमिश्नर

योग—१

१४—सिंध

(सभासदो की सख्या— ×)

१५—हैदराबाद (दक्षिण)

(सभासदो की संख्या—१)

श्रीयुत राजा बहादुर विश्वेश्वरनाथ, मेंबर जुडिशल कमिटी

योग १

१६—विदेश

(सभासदो की संख्या — ×)

कुल योग—१२९

समस्त सभासदों की प्रांतक्रम से नामावली

१—असम

(सभासदों की संख्या—×)

२—कश्मीर

(सभासदों की संख्या—२)

जम्मू

श्रीयुत विद्यावाचस्पति श्रीचंद्र शर्मा, तर्कालकार, रघुनाथ स्ट्रीट,

योग—१

बरामुला

श्रीयुत आत्माराम, बी० ए०, बी० एस्-सी० (इँग्लैंड), डिविजनल इंजीनियर, जे० बी० रोड डिविजन।

योग—१

३—दिल्ली

(सभासदों की संख्या—२३)

दिल्ली

श्रीयुत सेठ केदारनाथ गोयनका, कैपिटल म्युजिक हाउस, चाँदनी चौक,
,, नारायण स्वामी, श्रद्धानद बलिदान भवन
,, लाला बनवारीलाल, कोठी भानामल गुलजारीमल, चावड़ी बाजार
,, लाला रघुवीर सिंह, बी० ए०, कश्मीरी गेट
,, रामधन शर्मा, शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०, साहित्याचार्य, ४१८, कटरा नील
,, लक्ष्मीपति मिश्र, मेंबर, फेडरल पब्लिक सर्विस कमीशन, मेटकाफ हाउस
,, शिवदत्त शर्मा, रेलवे क्लियरिंग अकाउंट्स आफिस, बी० बी० एंड सी० आई० सेक्शन, रोशनआरा,

श्रीयुत श्रीराम शर्मा, आर्यसमाज, बिड़ला लाइंस
,, श्रीराम शर्मा, ६३१, कूचा सेठ
,, सुंदरलाल भार्गव, बी० ए०, गली समोसा
,, सुधाकर, एम० ए०, शारदामंदिर लि०, नई सड़क
,, डाक्टर हरदत्त शर्मा, एम० ए०, पी-एच्० डी०, प्रोफेसर, हिंदू कालेज

योग—१२

नई दिल्ली

श्रीयुत अमोलकराम साहनी, एम० ए०, २५०२-११ चौडनपुरा, करीलबाग
,, रायबहादुर काशीनाथ दीक्षित, एम० ए०, डायरेक्टर जनरल आव् आर्कियालॉजी इन इंडिया
श्रीमती कृष्णादेवी झालाना, बी० ए०, ४ औरंगजेब रोड
श्रीयुत ज्ञानचंद आर्य, १७ बाराखंभा रोड
,, दशरथ ओझा, माडर्न स्कूल
,, लाला देशबंधु गुप्त, एम० एल० ए०, ५ कोलिंग रोड
,, नारायणदत्त, १३ बाराखंभा रोड,
,, भरतराम, २२ कर्जन रोड,
,, प्रोफेसर रामदेव, एम० ए०, टोडरमल रोड
,, हंसराज गुप्त, एम० ए०, एल्-एल० बी०, २० बाराखंभा रोड

योग—१०

पानीपत

श्रीयुत जयभगवान जैन, बी० ए०, एल्-एल० बी०, प्लीडर

योग—१

४—पंजाब

(सभासदों की संख्या—३६)

अंबाला

श्रीयुत भैरवलाल मगनलाल जवेरिया, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रोफेसर, जैन कालेज

योग—१

अबोहर

श्रीयुत स्वामी केशवानद, साहित्यसदन

योग–१

अमृतसर

श्रीयुत इंद्रसिंह चक्रवर्ती, प्रीतनगर
,, डाक्टर पैंड़ामल, एम० डी०, ढाव, खटीकाँ
,, महामहोपदेशक, पंजाबभूषण, पंडितराज बुलाकीराम शास्त्री, सांख्य-रत्न, विद्यानिधि, विद्यासागर, विद्यारत्नाकर, विद्यावाचस्पति, महा-मान्य, महामहाध्यापक, आदि आदि, गली भगवतांवाली, चौक, नमकमंडी
,, राधाकृष्ण वाही, बी० ए०, दुर्गेयाना
श्रीमती रामप्यारी खन्ना, ठि० श्री० गुरादित्तॉ खन्ना, चौक, लोहगढ़
श्रीयुत विद्यासागर निराला, साहित्यरत्न, ठि० बाबू सोहनलाल, गली आचार्यां, कम्मोड्योढ़ी
,, हरिशरणानद वैद्य, पजाव आयुर्वेदिक फार्मेसी

योग–७

कुलू

श्रीयुत प्रोफेसर निकोलस रोरिक, नग्गर

योग–१

गुजरानवाला

श्रीयुत अनतराम जैन, बी० ए०, एल्-एल० बी०, श्रीआत्मानद जैन गुरुकुल

योग–१

जालंधर

श्रीमती लज्जावती देवी, प्रिंसिपल, कन्यामहाविद्यालय

योग–१

डिंगा (जिला गुजरात)

श्रीयुत स्वामी वेदानंद तीर्थ, आर्यसमाज मंदिर

योग–१

रावलपिंडी

श्रीयुत वेदप्रकाश अग्रवाल, आत्माराम चंद्रभान कपड़ेवाले, सदर बाजार

योग–१

लायलपुर

श्रीयुत जगद्धर शर्मा गुलेरी, एम० ए०, एल्-एल० बी०, पंजाब, कृषि-महाविद्यालय

योग–१

लाहौर

श्रीयुत महाशय कृष्णजी, बी० ए०, कृष्णभवन, ४१ निस्बेट रोड
,, प्रोफेसर कैलाशनाथ भटनागर, एम० ए०, मेलाराम रोड
,, गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, प्रधान मन्त्री, सनातनधर्मप्रतिनिधि सभा
,, तुलसीदत्त शैदा, कृष्णनगर
,, देवराज सेठी, एम० एल० ए०, लाजपतराय भवन
,, धर्मचंद नारंग, बी० ए०, विशारद, संचालक, हिंदी भवन, अनारकली, अस्पताल रोड
,, नरसिंहलाल शर्मा, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, सनातनधर्म हाईस्कूल
,, निरंजननाथजी श्रीमानजी, ४ कोर्ट स्ट्रीट
,, भगवद्दत्तजी, वैदिक अनुसंधान संस्था, ९ सी, माडल टाउन
,, मूलराज जैन, बी० ए०, प्रभाकर, ठि० डाक्टर बनारसीदास जैन, एम० ए०, पी-एच्० डी०, नेहरू स्ट्रीट, कृष्णनगर
,, डाक्टर रघुवीर एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०, एट फिल, फाउंडर डायरेक्टर, इंटरनेशनल एकेडमी
,, राय बहादुर रामशरणदास
,, लाला लालचंद, असिस्टेंट सेक्रेटरी फाइनेंस, गुरु तेगबहादुर रोड, कृष्णनगर [ग्रीष्म का पता शिमला ईस्ट]

श्रीयुत वितस्ताप्रसाद फ़िदा, बी० ए०, सेकेंड मास्टर, दयालसिंह हाईस्कूल

योग–१४

शहादरा मिल

श्रीयुत ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, विरजानंद आश्रम

योग–१

शेखूपुरा

श्रीयुत रायबहादुर बजोरचंद चोपड़ा, रिटायर्ड सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर, पंजाब इर्रिगेशन

योग–१

शिमला

श्रीयुत गंगादत्त पांडे, प्रधान मंत्री, हिंदीप्रचारिणी सभा
,, रामगोपाल रस्तोगी, हिंदीप्रचारिणी सभा

योग–२

हिसार

श्रीयुत प्रभुलाल वर्मा मेढ़, मंत्री, आर्यसमाज, तोशाम

योग–१

पटियाला रियासत

श्रीयुत मुन्नालाल पाठक, रतनचंद इंजीनियर के घर के पास, नाला जदीद

योग–१

बिलासपुर स्टेट (शिमला)

श्रीयुत अत्तर सिंह मैजिस्ट्रेट, द्वितीय श्रेणी

योग–१

५—बंगाल

(सभासदों की संख्या—६५)

कर्सियांग डी० एच० आर०

श्रीयुत रेवरेंड एस० जे० सी० बुल्के, संत मेरिस कालेज

योग–१

कलकत्ता

श्रीयुत रेवरेंड अयोध्याप्रसाद, बी० ए०, उपदेशक सम्राट् आर्य समाज,
८५ बहूबाजार स्ट्रीट, सूट न० १०

,, पांडे आनंदलाल, 'अटल', ४५।१ आद्य श्राद्धघाट रोड

,, इंद्रचंद्र केजड़ीवाल, फर्म कनीराम हजारीमल

,, कालीप्रसाद खेतान, बार-एट-लॉ, ३ माडले विला गार्डन्स,
पोस्ट बालीगंज

,, सेठ केदारनाथ शास्त्री, १ गौरदास बसाक स्ट्रीट, बड़ाबाजार

,, गांगेय नरोत्तम शास्त्री, गांगेय भवन, १२ आशुतोष दे लेन

,, गिरधरदास अग्रवाल, ३१ पाइकपारा रोड, पोस्ट बेलगछिया

,, गिरधारीलाल नागर, कोठी बलदेवराम बिहारीलाल, ५ कालीकृष्ण
टैगोर स्ट्रीट

,, गुलजारीलाल कानोडिया, ठि० सेठ भगीरथ कानोडिया,
४३ जकरिया स्ट्रीट

,, गोपीकृष्ण कानोडिया, २९ विवेकानंद रोड

,, सेठ घनश्यामदास बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस

,, सेठ छोटेलाल कानोडिया, ५७ बड़तल्ला स्ट्रीट

,, जगन्नाथप्रसाद गुप्त, १२६ चितरंजन एवेन्यु

,, जयनारायणसिंह, ३।४ टर्नर रोड

,, तारकनाथ अग्रवाल, ८० साउथ रोड, इंटाली

,, दामोदरदास खन्ना, १७ वाराणसी घोष स्ट्रीट

,, नंदकिशोर लोहिया, ११२ चितरंजन एवेन्यु

,, नंदलाल कानोडिया, ४७ जकरिया स्ट्रीट

श्रीमती नर्मदा देवी, ठि० बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, ६ ओल्ड
पोस्ट आफिस स्ट्रीट

श्रीयुत नारायणदास वर्मन, ५९ क्लाइव स्ट्रीट

,, पन्नालाल माहेश्वरी, १६ ढाका पट्टी

,, पूरनचंद वर्मन, कोठी डाक्टर एस० के० वर्मन, रासबिहारी एवेन्यु

,, पुरुषोत्तमदास हलवीसिया, ४७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट

,, सेठ सर बदरीदास गोयनका, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट

श्रीयुत सेठ व्रजमोहन बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस

„ व्रजरत्नदास डागा, ठि० रायबहादुर बंशीलाल, अबीरचंद, ४०१ अपर चितपुर रोड

„ बालकृष्ण लाल पोद्दार, ४१।१ ताराचद दत्त स्ट्रीट

„ भानमल खेमका, २९ विवेकानद रोड

„ भुवनेश्वर मिश्र 'भुवन', एम० ए०, विशारद, १ फ्री स्कूल स्ट्रीट

„ मंगतूराम जयपुरिया, २३ विवेकानंद रोड

„ मधुसूदनदास वमन, ५५ क्लाइव स्ट्रीट

„ महावीरप्रसाद अग्रवाल, मत्री, बड़ा बाजार लायब्रेरी, १०।१।१ सैयदसाली लेन

„ म्हालीराम सोनथलिया, कोठी राधाकृष्ण सोनथलिया, कं०, ६५ पथरिया घट्टा स्ट्रीट

„ मूलचद अग्रवाल, विश्वमित्र कार्यालय, १४।१ ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, पोस्ट बहूबाजार स्ट्रीट

„ राधाकृष्ण नेवटिया, मंत्री, बड़ा बाजार कुमारसभा, १५६ हरिसन रोड

„ रामकुमार गोयनका, ५ बसाक स्ट्रीट, बड़ा बाजार

„ रामकुमार जालान, कोठी रामचंद्र हनुमानबख्श, ५१।३ स्ट्रैंड रोड

„ रामकुमार भुवालका, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, फर्स्ट फ्लोर

„ रायबहादुर रामदेव चोखानी, कोठी दौलतराम रामदेव, वाराणसी घोष स्ट्रीट

„ सेठ रामनाथ कानोडिया, कोठी लक्ष्मीनारायण कानोडिया क०, क्लाइव स्ट्रीट

„ रामनारायण सिंह, एम० ए०, बी० एल०, एम० आर० ए० एस०, (लदन), साहित्यरत्न, रिपन कालेज

„ रामसुदर कानोडिया, २९ बंसतल्ला स्ट्रीट

„ रामेश्वर नोपाणी, श्री दौलतरामजी रावतमलजी, १७८ हरिसन रोड

„ वशीधर जालान, कोठी सूरजमल नागरमल, ६१ हरिसन रोड

„ विनयकृष्ण रोहतगी, बी० एस्-सी०, कोठी कल्लूबाबू लालचद, ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट

„ विमलाचरण दे, एडवोकेट, ७८ मसाताला लेन, खिदिरपुर

„ विश्वनाथ सिंह, १२ हरी सरकार लेन, बड़ा बाजार

श्रीयुत विष्णुदास वासिल, ४३ पद्दोपूकर रोड, पोस्ट एलगिन रोड
,, सत्यपाल धवले, बिड़ला बिल्डिंग, ८ मंदिर स्ट्रीट
,, सीताराम सेकसरिया, शुद्ध खादी भंडार, १३२।१ हरिसन रोड,
,, सुदर्शन, बी० ए०, २ चक्रबेरी रोड, साउथ, भवानीपुर
,, डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, सुधर्मा, १६ हिंदुस्तान पार्क, बालीग
,, हर्षचंद्र छागेड़ ओसवाल, ४०।७ ए०, अपर चितपुर रोड

योग–५३

कुमिल्ला

श्रीयुत राशमोहन चक्रवर्ती, सुपरिटेंडेंट, राममाला, छात्रावास

योग–१

चौबीस परगना

श्रीयुत रघुनंदनप्रसाद गुप्त, पोस्ट टीटागढ़ जिला

योग १

दार्जिलिंग

श्रीयुत सदानंदप्रसाद, जलपाईगुड़ी
,, हरनंदन सिंह, ठि० हिमाचल हिन्दी भवन

योग २

नदिया

श्रीयुत नलिनीमोहन सान्याल, एम० ए०, शांतिपुर

योग १

वर्द्धमान

श्रीयुत कालिदास कपूरिया, एम ए०, बी० एल, मोरमहल
,, महाराजाधिराज सर विजयचंद महताब बहादुर, जी० सी० एस० आई०

योग २

मुर्शिदाबाद

श्रीयुत रामस्वरूप पांडे, विशारद, प्रधान मंत्री, श्री बटुकनाथ ग्रंथालय, पोस्ट अजीमगंज

योग १

रामपुर हाट

श्रीयुत एच० सी० गुप्त, आई० सी० एस०, सब डिविजनल अफसर

योग १

हवड़ा

श्रीयुत मिहरचंद धीमानजी, ११५ बनारस रोड, सलकिया
,, श्रीनारायण चोखानी, ८ न्यु घुसुड़ी रोड, श्री हनुमान पुस्तकालय, सलकिया

योग २

६—बंबई

(सभासदों की संख्या—५५)

अहमदाबाद

श्रीयुत ए० बी० ध्रुव, एम० ए०, एल्-एल० बी०, अवसर प्राप्त आई० ई० एस०
,, चैतन्यप्रसाद एम० दीवानजी, पैराडाइज, शाहीबाग
,, मुनि जिनविजयजी, अनेकांत विहार, शांतिनगर, पोस्ट साबरमती
,, जेठालाल जोशी, खाडिया अमृतलाल की पोल
,, मणिभाई गुलाबभाई वहिवचा, स्वामीनारायण मंदिर, टींबापोल
,, रामनारायण विश्वनाथ पाठक, सेठ लालाभाई दलपतभाई कालेज

योग ६

काठियावाड़

श्रीयुत चतुर भाई, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल सोनगढ़

योग १

गुजरात

श्रीयुत मुनि पुण्यविजयजी, सागर का उपाश्रय, मनिआती पाड़ा, पाटण
,, मुनि रमणीक विजय जी सागर का उपाश्रय, मनिआती पाड़ा, पाटण,

योग २

उत्तर गुजरात

श्रीयुत जयशंकर उमाशंकर पाठक, मुकाम व डाकघर अगलोड़, जिला बीजापुर

योग १

पुलगाँव

श्रीयुत नागरमल पोद्दार, पुलगाँव काटन मिल्स,

योग १

पूना

श्रीयुत दत्तो वामन पोतदार, १०८ शनिवार पेठ

योग १

बंबई

श्रीयुत आर० जी० ज्ञानी, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, क्युरेटर आर्कियालाजिकल सेक्शन, प्रिंस ऑव वेल्स म्युजियम
,, प्रोफेसर एस० एच० होरीवाला, २७ कान्वेन्ट एवेन्यु, गोधनदास रोड, शांता क्रूज, बंबई सबर्बन डिस्ट्रिक्टस
,, कुंदनलाल जैन, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव
,, कृष्णलाल वर्मा, ग्रंथ भाडार, माटुंगा
,, बाबा गणेश सावरकर, सावरकर सदन, चेलुस्कर रोड, दादर, १४
,, गोस्वामी महाराज गोकुलनाथ, बड़ा मंदिर, ३ रा भोई वाड़ा, न० २
,, घनश्यामदास पोद्दार, कृष्णभवन, वालकेश्वर
,, जादवजी त्रिक्रमजी, वैद्य, कालबादेवी रोड
,, ठाकरसीदास जैन, मंत्री, श्री ए० पी० दि जैन सरस्वतीभवन, सुखानंद धर्मशाला, ४

श्रीयुत डाक्टर दशरथलाल श्रीवास्तव, हाफकिन इंस्टिट्यूट ऑव सायंस
,, नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव
,, नारायणलाल वंशीलाल, मलाबार हिल
,, प्रेमचंद केडिया, ६१४ द काटन एक्सचेंज, २
,, बी० सी० जैन, प्रिंसिपल, रामनारायण रुइया कालेज, माटुंगा, १९
,, बेगराज गुप्त, ठि० बेगराज रामस्वरूप, कालबादेवी रोड,
,, भानुकुमार जैन, मंत्री, बंबई हिंदी विद्यापीठ, हीराबाग, ४
,, भानुकुमार जैन, मालिक—हिंदी पुस्तक भंडार, हीराबाग, ४
,, डाक्टर मोतीचंद्र चौधरी, एम० ए०, पी-एच० डी० क्युरेटर, आर्ट सेक्शन, प्रिंस ऑव वेल्स म्युजियम
,, मोहनलाल दुलीचंद देसाई, बी० ए०, एल् एल० बी०, वकील हाई कोर्ट, तवावाला बिल्डिंग, लोहारचाल
,, रामप्रताप शुक्ल, विद्यालय प्रेस, विद्याभवन, फणसवाड़ी, २
श्रीमती लीलावती बाई, ठि० र० रु० आविकाश्रम, जुबिली बाग, तारदेव
श्रीयुत शारंगधर शामजी पहिलवान, श्रीगंगाराम छबीलदास, १३१।१३३ मोती बाजार, नं० २
श्रीमती शीला माथुर, मार्फत प्रोफेसर माताप्रसाद डी० एस्-सी०, रायल इंस्टिट्यूट ऑव सायंस
श्रीयुत शुकदेवशरण केदारनाथ भार्गव, कृष्णकुंज, वीसेंट स्ट्रीट शांताक्रूज
,, शूरजी वल्लभदास वर्मा, कच्छ कैसल, सैंढर्स्ट रोड ४
,, सोहनलाल वर्मा, व्यवस्थापक, मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय, कालबा-देवी रोड
,, हरिजा गोविल, ४१ हम्माम स्ट्रीट, फोर्ट
,, हीरालाल अमृतलाल शाह, बी० ए०, नं० ६९, मेरीन ड्राइव, ४ था फ्लोर, ब्लाक नं० १०

योग—२८

लोणावला (पूना)

श्रीयुत सी० के० देसाई, (अवसरप्राप्त) आई० सी० एस०, कैवल्यधाम, जी० आई० पी० आर०

योग—१

शोलापुर

श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०, प्रधानाध्यापक, उपदेशक विद्यालय, आर्यसमाज
,, राजगुरु धुरेंद्र शास्त्री, न्यायभूषण, आर्योपदेशक विद्यालय

योग–२

सूरत

श्रीयुत परमेष्ठीदास जैन, न्यायतीर्थ, मंत्री, हिंदी-प्रचारक मंडल, गांधी चौक
,, शंकरदेव विद्यालंकार, गुरुकुल विद्यामंदिर, सूपा, वाया नवसारी

योग–२

हुबली

श्रीयुत वी० जी० सराफ, सरस्वती विद्यारण्य फ्री लायब्रेरी

योग–१

बड़ोदा राज्य

श्रीयुत अमृतलाल मोहनलाल भोजक, मुकाम पाटण, उत्तर गुजरात
,, आर० बी० महंत, श्री महंत पुस्तकालय, रामगलोलावाला, नं० ६० अलकापुरी
,, ठाकुर खेतसिंह नारायणजी मिश्रण गढ़वी मुकाम मोढेरा, पोस्ट वड़ावली, तालुका चाणस्मा, उत्तर गुजरात
,, पुरुषोत्तमदास बहेचरदास ब्रह्मभट्ट, शिक्षक, मंडाला तालुका, डमोई स्कूल, वाया मीयागाम, गुजरात
,, शांतिप्रिय आत्माराम, आत्माराम रोड
,, हरगोविंददास लालजीभाई, वकील, सावली
,, डाक्टर हीरानंद शास्त्री, एम० ए०, डी० लिट्०, डायरेक्टर ऑव आर्कियालाजी

योग–७

भावनगर राज्य (काठियावाड़)

श्रीयुत वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी, मंत्री, श्री जैन आत्मानंद सभा
,, विजय इंद्र सूरि, ठि० यशोविजय ग्रंथमाला

७—विहारोत्कल

(सभासदों की संख्या—४६)

गया

श्रीयुत गोपालकृष्ण महाजन, मुरारपुर
,, राय बागीश्वरीप्रसाद, किरानीघाट
,, सूर्यप्रसाद महाजन, मन्नूलाल लायब्रेरी

योग–३

चंपारन

श्रीयुत चद्रशेखरधर मिश्र, ग्राम–रतनमाला, डाकघर बगहा
,, डाक्टर मुंशी दयाचंद जालान, साहित्यभूषण, एम० एच० बी०, मोतिहारी
,, रामरक्षपाल संघी, दि एम० पी० शुगर मिल्स् कं० लि०, पोस्ट मझौलिया

योग–३

छपरा (सारन)

श्रीयुत ध्रुवदेव सहाय, ठि० श्री० कपिलदेव सहाय, जमींदार, ग्राम हरदिया, पोस्ट बरहरिया

योग–१

पटना

श्रीयुत केदारनाथ चतुर्वेदी, ११५ ए एक्जिबिशन रोड
,, सर गणेशदत्तसिंह के० टी०, भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार सरकार
,, वंशीधर याज्ञिक, बेतियाहाउस रोड, पोस्ट गुलजार बाग
,, यदुनंदनप्रसाद पांडे, एम० ए०, बी० एड्०, शिक्षक, पटना ट्रेनिंग स्कूल, पोस्ट महेंद्रु
,, देशरत्न डाक्टर राजेंद्रप्रसाद, सदाकत आश्रम
,, रामदहिन मिश्र, ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर

श्रीयुत राय साहब रामशरण उपाध्याय, प्रधानाध्यापक, पटना ट्रेनिंग कालेज, पोस्ट महेंद्रू
,, श्रीराम, बी० ए०, रिपोर्टर, क्वार्टर नं० २०, रोड नं० २९, गर्दनी बाग, पोस्ट अनीसाबाद
,, डाक्टर सच्चिदानंद सिन्हा, बार-एट-लॉ, एल्-एल० डी०
,, हरिप्रसाद वर्मा, मोकामाघाट

योग—१०

पूर्णिया

श्रीयुत गणेशलाल वर्मा, मिडिल स्कूल, रानीगंज, पोस्ट मेरीगंज
,, लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु', एम० ए०, जिला बोर्ड
,, सूर्यनारायण चौधरी, एम० ए०, कठौतिया, पोस्ट काम्फा

योग—३

बिहार शरीफ

श्रीयुत वेणीमाधव अग्रवाल, सेक्रेटरी, कामन रूम, नालंदा कालेज

योग—१

भागलपुर

श्रीयुत सत्येंद्र नारायण, बी० ए०, नया बाजार
,, हरलालदास गुप्त, प्रिंसिपल, टी० एन० जे० कालेज

योग—२

मानभूम

श्रीयुत रामजस अग्रवाल, झरिया
,, महाराजकुमार शंकरीप्रसादसिंह देव, पचकोट

योग—२

राँची

श्रीयुत नथुनी मिश्र, सतूलाल पुस्तकालय
,, फादर पी० शांति नवरंगी, साहित्यरत्न, संत जान्स् स्कूल
,, रामकुमार बजाज, मंत्री सतूलाल पुस्तकालय

श्रीयुत रासविहारी शर्मा, एम० ए०, साहित्यरत्न, सेक्रेटरी, ट्रेनिंग कालेज
,, वेणीमाधव मिश्र राँची जिला स्कूल

योग–५

रानीगंज (ई० आई० आर०)

श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद झुनझुनूवाले, आनरेरी मैजिस्ट्रेट
,, विभूतिप्रसाद शर्मा, साहित्यविशारद, मारवाड़ी सनातन विद्यालय
,, सत्यनारायण शर्मा, विशारद, बोर्डिंग हाउस, मारवाड़ी सनातन विद्यालय

योग–३

शाहाबाद (आरा)

श्रीयुत उमराव तिवारी, हरसू ब्रह्म धाम, पोस्ट दुर्गावती
,, छेदीलाल गुप्त, बी० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, इंगलिश स्कूल, डालमिया नगर
,, निर्मलकुमार जैन, मंत्री जैनसिद्धांतभवन
श्रीमती रमादेवी जैन, डालमियानगर
श्रीयुत सेठ रामकृष्ण डालमिया, डालमिया नगर।
,, लाला रामप्रसाद, मैनेजर, दयानद स्कूल
,, रामसुंदर सिंह, ग्राम धनेछा, पोस्ट दुर्गावती

योग–७

सिंहभूम

श्रीयुत धनीराम बख्शी, हितैषी कार्यालय, पोस्ट चाईवासा

योग–१

हजारीबाग

श्रीयुत रायबहादुर गुरुसेवक उपाध्याय, रामगढ़ राज्य
,, डाक्टर जगन्नाथप्रसाद, एम० डी० एच०
,, नवलकिशोरप्रसाद, एम० ए०, बी० एल०, वकील
,, बद्रीदत्त शास्त्री, साहित्यरत्न, सेंट स्टेनिसलास कालेज, सीतागढ़

श्रीयुत महापंडित राहुल सांकृत्यायन, त्रिपिटकाचार्य, द्वारा—श्री० जेलर, सेंट्रल जेल

योग—५

८—मद्रास

(सभासदों की संख्या—४)

मद्रास

श्रीयुत पी० वी० आचार्य, आल इंडिया रेडियो
,, सत्यनारायण, प्रधान मंत्री, दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागरायनगर

योग—२

ट्रावंकोर राज्य

श्रीयुत ई० वी० रमन नंपूथिरी, ब्रह्मविलास मठ, पेरूरकाडा, त्रिवेंद्रम

योग—१

विजयानगरम् राज्य

श्रीमती डवाजर महारानी साहिबा

योग—१

९—मध्यप्रदेश—बरार

(सभासदों की संख्या—२८)

अमरावती

श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद, मंत्री, भारत हिंदी पुस्तकालय
,, हीरालाल जैन, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रोफेसर, किंग एडवर्ड कालेज

योग—२

खंडवा

श्रीयुत माखनलाल चतुर्वेदी, संपादक 'कर्मवीर', कर्मवीर प्रेस

योग—१

छिंदवाड़ा

श्रीमती जुगुनू बाई, स्वामिनी, सेंट्रल लॉ प्रेस
श्रीयुत बाबूलाल श्रीवास्तव, 'प्रेमी' प्रासिक्यूटिंग सब-इंसपेक्टर
,, रामअधार शुक्ल, आशुकवि, डी० सी० आफिस

योग—३

जबलपुर

श्रीयुत व्याकरणाचार्य कामताप्रसाद गुरु, गढ़ा फाटक
,, रमेशदत्त पाठक, एम० ए०, एल्-एल० बी०, जार्जटाउन
,, ब्योहार राजेंद्र सिंह, एम० एल० ए०, साठिया कुआं
,, रामनाथसिह, ३३, गोरखपुर
,, रायबहादुर लज्जाशंकर झा, शांति कुटीर, गोला बाजार

योग—५

नरसिंहपुर

श्रीयुत द्वारकाप्रसाद पाठक, एम० ए०, एल्-एल० बी०, वकील
,, नीतिराज सिह, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०

योग—२

नागपुर

श्रीयुत करुणाशंकर न० दुबे, मेयो रोड
,, रामनारायण मिश्र, लेक्चरर, एग्रिकल्चरल कालेज, धर्मपेठ
,, विलायती राय कौशल, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, इंसपेक्टर फोन और टेलिग्राफ
,, सरस्वतीप्रसाद चतुर्वेदी, एम० ए०, व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ, संस्कृत के प्रोफेसर, मारिस कालेज

योग—४

बालाघाट

श्रीयुत गंगाशंकर पंड्या, बी० ए०, आनर्स (लंदन), ठि० श्री जी० बी० त्रिवेदी, डिविजनल फारेस्ट अफसर

योग—१

रायगढ़ (बी० एन० आर०)

श्रीयुत रायबहादुर डाक्टर बलदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, डा० लिट्०, दीवान

योग–१

रायपुर

श्रीयुत केदारनाथ वर्मा, मिडिल शाला बसना, पोस्ट बसना

योग–१

वर्धा

श्रीयुत काका कालेलकर
,, सेठ जमनालाल बजाज, ठि० रायबहादुर बच्छराज जमनालाल
,, साहित्यवाचस्पति, डाक्टर, महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी, सेवाग्राम
,, यू० मार्तंडराव शिक्षक, राबर्टसन हाई स्कूल, हींगणघाट

योग–४

विजयराघवगढ़ (वाया कैमोर)

श्रीयुत ठाकुर ब्रजमोहन सिंह, बी० ए०, बैरिस्टर-एट-लॉ,

योग–१

बिलासपुर

श्रीयुत रायबहादुर, साहित्याचार्य, जगन्नाथप्रसाद 'भानु', ठि० जगन्नाथ प्रेस
,, ब्रजभूषण मिश्र, एम० ए०, म्युनिसिपल हाई स्कूल

योग–२

सतना (जबलपुर लाइन)

श्रीयुत शारदाप्रसाद

योग–१

१०—मध्य भारत

(सभासदों की संख्या—५७)

इंदौर

श्रीयुत कमलाशंकर बालकृष्ण मिश्र, एम० ए०, २८ अहल्यापुरा

श्रीयुत गुलाबचंद सुगनचद जैन, जवेरी बाग
,, ज्वालाप्रसाद सिंहल एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रोफेसर, होल्कर कालेज, ८ कोडियागज
,, राय साहब माटूलाल, ३२ तुकोगंज
,, रावबहादुर सरदार माधवराव विनायकराव किबे, सी० आई० ई०, छाउनी
,, रामभरोसे तिवारी, १२ तुकोगज साउथ
,, लक्ष्मण गोविंद लखोटे, निकट—सरदार किबे साहब, सरस्वती निकेतन
,, शकरराव जोशी. तहसीलदार, पोस्ट साबेर, इंदोर राज्य
,, शिवसेवक तिवारी, नं० ४ इतवरिया बाजार, सिटी
,, श्रीनिवास चतुर्वेदी, एम० ए०, प्रोफेसर संस्कृत और हिंदी होल्कर कालेज, मल्हारगंज

योग–१०

उज्जैन

श्रीयुत व्याकरणाचार्य गोपीकृष्ण शास्त्री, सराफा बाजार, श्री मदनमोहन लाल के मदिर के पास
,, डाक्टर दुर्गाशंकर नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय
,, मगलदेव शर्मा, गणेशभवन, मगरमुहाँ
,, मदनमोहन जैन, जीवनकुटी
,, रमाशकर शुक्ल एम० ए०, प्रोफेसर, माधव कालेज, दौलतगज
,, रायबहादुर लालचद सेठी, वाणिज्यभूपण, विनोदभवन
,, श्रीधर शर्मा शास्त्री, साहित्यरत्न, संस्कृताध्यापक, कार्तिक चौक
,, सूर्यनारायण व्यास, भारतीभवन, वड़े गणेश
,, साहित्याचार्य प्रोफेसर डाक्टर हरि रामचंद्र दिवेकर, एम० ए०, डी० लिट्०

योग–९

टीकमगढ़ (ओड़छा राज्य)

श्रीयुत ब० ब्र० फूलचद सोगानी, व्यवस्थापक, श्री वीर दि० जैन विद्यालय, मुकाम पपौरा, पोस्ट
,, बनारसीदास चतुर्वेदी

श्रीयुत लक्ष्मीनाथ मिश्र एम० ए०, एल० टी०, एल्-एल० बी०,
डायरेक्टर, शिक्षाविभाग

योग—३

ग्वालियर

श्रीयुत श्रीमत सरदार आनंदरावजी भाऊ साहब फाल्के, कृष्ण मंदिर
,, एम० बी० गर्द्दे, डायरेक्टर ऑव आर्कियालाजी
,, एन० वी० गोडबोले, विक्टोरिया कालेज, लश्कर
श्रीमती कमला थापन, एम० ए०, कमला राजा गर्ल्स कालेज
श्रीयुत राजा खलकसिंह जू देव, खनियाँधाना स्टेट, रेजिडेंसी
,, गुरुप्रसाद टंडन, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रोफेसर,
विक्टोरिया कालेज
,, त्रिवेणीप्रसाद वाजपेयी, एम० ए०, एल० टी०, साहित्यरत्न,
व्याख्याता, हिंदी और अँगरेजी साहित्य, विक्टोरिया कालेज
,, रईसुद्दौला बहादुर पंचमसिंह साहब, पहाड़गढ़ कोठी, लक्ष्मीगंज
,, कुँवर पृथ्वीसिंह मैजिस्ट्रेट, खनियाँ धाना स्टेट, रेजिडेंसी
,, भास्कर रामचंद्र भालेराव, नायब सूबा, पोस्ट भिंड,
जी० एल० आर०, वाया ग्वालियर
,, राजराजेन्द्र श्रीमत सरदार कर्नल मालोजी नरसिंह राव साहब
शितोले, नरसिंहनिवास
,, राधाकृष्ण जायसवाल विशारद, जैंद्रगंज, लश्कर
,, रामचंद्र श्रीवास्तव 'चंद्र', एम० ए०, एल्-एल० बी०, साहित्यरत्न,
जयाजीप्रताप, लश्कर
,, श्रीमती सरोजनी रोहतगी, स्टेशन रोड

योग—१४

दतिया राज्य

श्रीयुत जुगुलकिशोर वैश्य, अवसरप्राप्त डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर पी० डब्लू०
डी० ग्वालियर राज्य, हाल स्टेट, इंजीनियर

योग—१

धार राज्य

श्रीयुत महाराज आनंदराव पँवार
,, काशीप्रसाद दुबे, धारेश्वर दरवाजा
,, कृष्णराव पूर्णचंद्र माडलीक, चीफ इंसपेक्टर, ग्रामोद्धार
,, गोपालचंद्र सुगंधी, एम० ए०, डिप्टी इंस्पेक्टर आव स्कूल्स्, लाडलेन
,, चिंतामणि बलवंत लेले, इतिहास कचहरी
,, पुरुषोत्तम डबराल, एम० ए०, रासमंडल
,, मेलाराम वर्मा, एम० ए०, प्रिंसिपल, आनंदकालेज
,, शरच्चंद्र भटोरे, अध्यापक, बनियाँ बाड़ी

योग—८

नागोद राज्य (वाया सतना जी० आई० पी० आर०)

श्रीयुत महाराजकुमार लाल भागवेंद्र सिंह जू देव, दीवान

योग—१

बड़वानी (वाया महू)

श्रीयुत महेंद्रनाथ नागर, बी० ए०, साहित्यरत्न, रानीपुर

योग—१

भूपाल राज्य

श्रीयुत ईशनारायण जोशी, शास्त्री, चौक

योग—१

मुल्थान (मालवा)

श्रीयुत महाराज भरतसिंह साहब

योग—१

रतलाम राज्य

श्रीयुत कवि गुलाबशंकर कल्याणजी बोरा, ठि० पड्या चुन्नीलाल केशवलाल सुश्री, श्री सज्जन ब्राह्मण बोर्डिंग
,, रावसाहब चुन्नीलाल एम० श्राफ दीवान
,, नाथूराम शर्मा बी० ए०, असिस्टेंट सेक्रेटरी, स्टेट काउंसिल

योग—३

रीवाँ राज्य

श्रीयुत ठाकुर साहब गोपालशरण सिंह नई गढ़ी, पोस्ट मऊगंज
,, महावीरप्रसाद अग्रवाल एम० ए०, एल्-एल० बी०, दरबार इंटर कालेज
,, रायबहादुर रामशरण मिश्र एम० ए०, डायरेक्टर शिक्षा-विभाग

योग—३

समथर स्टेट (झाँसी)

श्रीयुत विश्वनाथसिंह फूलवान, पोस्ट मोठ

योग—१

सीतामऊ राज्य

श्रीयुत महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंह एम० ए०, एल्-एल० बी०, डी० लिट्०, रघुवीर निवास

योग—१

११—मैसूर

(सभासदों की संख्या—३)

मैसूर

श्रीयुत जो० सच्चिदानंद, १०५५ नजराज, अग्रहर
,, ना० नागप्पा, एम० ए०, ९४४ चामुंडी बढ़ावण
,, हिरण्यमयजी, ठि० हिंदी-प्रचार-सभा

योग—३

१२—राजपूताना

(सभासदों की संख्या १६९)

अजमेर

श्रीयुत राजा कल्याणसिंह भिनाय स्टेट, मेरवाड़ा
,, किशनलाल दुबे, सहायक अध्यापक, हस्बैंड, मेमोरियल हाईस्कूल
,, रावसाहब गोपालसिंह राठोर, खरवा

श्रीयुत महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर, डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा

,, ठाकुर नारायणसिंह, बी० ए०, संपादक, क्षात्रधर्म

,, कुँवर नाहरसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, उदयपुर हाउस, मेयो कालेज

,, पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य, धर्मशिक्षक तथा अँगरेजी के प्रोफेसर, मेयो कालेज

,, रायबहादुर मदनमोहन वर्मा, एम० ए०, सेक्रेटरी, बोर्ड ऑव् हाई स्कूल ऐंड इंटरमीडियट एजुकेशन, अजमेर मेरवाड़ा

,, रामचंद्र शर्मा वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय

श्रीमती रामदुलारी दुबे, गणेशगंज

श्रीयुत रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम० ए०, ढड्ढों की हवेली, कड़क्का चौक

श्रीमती सुशीला भार्गव, फूलनिवास, कचहरी रोड

श्रीयुत दीवान बहादुर हरविलास शारदा, हरनिवास, सिविल लाइंस

,, रायबहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालंद रोड

योग–१४

माउंट आबू

श्रीयुत रोशनलाल झा, राजपुताना एजेंसी आफिस

योग–१

उदयपुर (मेवाड़)

श्रीयुत अंबालाल देरासरी, नागरवाडी

,, उमाशंकर द्विवेदी, "विरही", विरही सदन

,, करनीदानजी दधवाड़िया, खेमपुर की हवेली

,, खवास जोरावरनाथ, भट्याणी चौहट्टा

,, कुँवर तेजसिंह मेहता, भूतपूर्व मिनिस्टर

,, दयाशंकर श्रोत्रिय, संचालक, महिला-मंडल

,, डाक्टर दामोदरलाल शर्मा, एम० ए०, पी-एच डी०, गौतमगली

,, पुरोहित देवनाथ, मास्टर ऑव् सेरेमनीज, पुरोहितजी की हवेली

,, कुँवर फतहलाल मेहता, राय पन्नालाल भवन

रीवाँ राज्य

श्रीयुत ठाकुर साहब गोपालशरण सिंह नई गढ़ी, पोस्ट मऊगंज
,, महावीरप्रसाद अग्रवाल एम० ए०, एल्-एल० बी०, दरबार इंटर कालेज
,, रायबहादुर रामशरण मिश्र एम० ए०, डायरेक्टर शिक्षा-विभाग

योग–३

समथर स्टेट (झाँसी)

श्रीयुत विश्वनाथसिंह फूलवान, पोस्ट मोठ

योग–१

सीतामऊ राज्य

श्रीयुत महाराजकुमार डाक्टर रघुबीरसिंह एम० ए०, एल्-एल० बी०, डी० लिट्०, रघुबीर निवास

योग–१

११–मैसूर

(सभासदों की संख्या—३)

मैसूर

श्रीयुत जो० सच्चिदानद, १०५५ नंजराज, अग्रहर
,, ना० नागप्पा, एम० ए०, ९४४ चामुंडी बढ़ावण
,, हिरण्यमयजी, ठि० हिंदी-प्रचार-सभा

योग–३

१२–राजपूताना

(सभासदों की सख्या १६९)

अजमेर

श्रीयुत राजा कल्याणसिंह भिनाय स्टेट, मेरवाड़ा
,, किशनलाल दुबे, सहायक अध्यापक, हरबेंड, मेमोरियल हाईस्कूल
,, रावसाहब गोपालसिंह राठोर, खरवा

श्रीयुत महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर, डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा
,, ठाकुर नारायणसिंह, बी० ए०, संपादक, क्षात्रधर्म
,, कुँवर नाहरसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, उदयपुर हाउस, मेयो कालेज
,, पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य, धर्मशिक्षक तथा अँगरेजी के प्रोफेसर, मेयो कालेज
,, रायबहादुर मदनमोहन वर्मा, एम० ए०, सेक्रेटरी, बोर्ड ऑव् हाई स्कूल ऐंड इंटरमीडियट एजुकेशन, अजमेर मेरवाडा
,, रामचंद्र शर्मा वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय
श्रीमती रामदुलारी दुबे, गणेशगंज
श्रीयुत रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम० ए०, ढड्ढों की हवेली, कड़क्का चौक
श्रीमती सुशीला भार्गव, फूलनिवास, कचहरी रोड
श्रीयुत दीवान बहादुर हरविलास शारदा, हरनिवास, सिविल लाइंस
,, रायबहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालंद रोड

योग—१४

माउंट आबू

श्रीयुत रोशनलाल झा, राजपुताना एजेंसी आफिस

योग—१

उदयपुर (मेवाड़)

श्रीयुत अंबालाल देरासरी, नागरवाड़ी
,, उमाशंकर द्विवेदी, "विरही", विरही सदन
,, करनीदानजी दधवाड़िया, खेमपुर की हवेली
,, खवास जोरावरनाथ, भट्याणी चौहट्टा
,, कुँवर तेजसिंह मेहता, भूतपूर्व मिनिस्टर
,, दयाशंकर श्रोत्रिय, संचालक, महिला-मंडल
,, डाक्टर दामोदरलाल शर्मा, एम० ए०, पी-एच डी०, गौतमगली
,, पुरोहित देवनाथ, मास्टर ऑव् सेरेमनीज, पुरोहितजी की हवेली
,, कुँवर फतहलाल महता, राय पन्नालाल भवन

श्रीयुत वख्तावरलाल शर्मा, मिशन अस्पताल
श्रीमती मुमताजदेवी, संगीतरत्ना, अमल का काँटा
श्रीयुत रणबहादुर सिंह, एम० ए०, एल० टी०, भूपाल नोबुल्स हाईस्कूल
,, रावबहादुर ठाकुर राजसिंह वेदला
,, रामशंकरजी भट्ट, अध्यक्ष पट्दर्शन, भट्टजी का रावला

योग १४

काँकरोली (मेवाड़)

श्रीयुत गोस्वामी व्रजभूषण शर्मा, काँकरोली महाराज

योग १

कोटा

श्रीयुत गोपीनाथ अग्रवाल, बी० ए०, शिक्षक श्री महाराजकुमार
,, कविराजा दुर्गादानजी, कोटड़ी
,, डाक्टर मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०, पलायथाभवन
,, सेठ मोतीलाल जैन, पोस्ट मँगरोल

योग ४

चिड़ावा

श्रीयुत रामचंद्र शर्मा, 'प्रफुल्ल', श्रीकृष्ण वाचनालय

योग १

जयपुर

श्रीयुत गणेशनारायण सोमाणी, वकील
,, महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, दर्शनाचार्य, पान का दरवाजा, सिटी
,, पुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न, ताजीमी सरदार, राज्य
,, मुकुंद शास्त्री पर्वणीकर, हवामहल के सामने
,, मोतीलाल शर्मा, बालचंद्र प्रेस, सिटी
,, रामकृष्ण शुक्ल, 'शिलीमुख', एम० ए०, महाराजा कालेज
,, रूड़मल शर्मा, बी० ए०, बी० टी०, छज्जूलाल की टाटी, चौकड़ी तोपखाना

श्रीयुत स्वामी लक्ष्मीराम, वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, सगानेर दरवाजा
,, राजश्री ठाकुरसाहब शिवनाथसिंह, मलसीसर भवन
,, शुकदेव पांडे, प्रिंसिपल, बिड़ला इंटरकालेज, पिलानी
,, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण, तहवीलदार का रास्ता

योग ११

जोधपुर

श्रीयुत डाक्टर कल्याणबक्श माथुर, एम० एस्-सी०, डी० फिल०, ९५ रोड १ सरदारपुरा
,, दीवान बहादुर धर्मनारायण काक, सी० आई० ई०, डिप्टी-प्राइम मिनिस्टर, स्टेट
,, रामकर्णजी, मोती चौक
,, साहित्याचार्य विश्वेश्वरनाथ रेऊ, अफसर इंचार्ज, आर्कियालाजिकल डिपार्टमेंट, राज्य
,, शुभकरण बदरीदान कविया, एम० ए०, एल्-एल० बी०, रायपुर की हवेली
,, सोमनाथ गुप्त, एम० ए०, काली गुमटी, सरदारपुरा

योग–६

झालरापाटन

श्रीयुत नवरत्न गिरधर शर्मा, झालावाड़ राजगुरु
,, रायबहादुर सेठ मानिकचंद सेठी, विनोदभवन, सिटी

योग–२

डूंगरपुर स्टेट

श्रीयुत राठोर सूरजमल वागड़िया, पुरातत्त्व विभाग,

योग–१

नवलगढ़

श्रीयुत हरनाथसिंह, डुंडलोद, पोस्ट

योग–१

नाथद्वारा (मेवाड़)

श्रीयुत भट्ट पुरुषोत्तम शर्मा, तैलंग, विद्याविभाग,

योग–१

प्रतापगढ़

श्रीयुत महाराजा महारावत सर रामसिंह, के० सी० एस० आई०,

योग–१

फलोदी

श्रीयुत अनूपचंद झाबख, झावखो की गवाड़,

योग–१

बनेड़ा (मेवाड़)

श्रीयुत रविशंकर देरासरी, बार-एट-ला,

योग–१

ब्यावर

श्रीयुत मुनि ज्ञानसुंदर जी,
,, दीपचद्र अग्रवाल, एलफ पन्नालाल, दि जैन सरस्वतीभवन, नाशियाँ
,, रामेश्वरप्रसाद गुप्त, एम० ए०, चग गेट,

योग–३

बीकानेर

श्रीयुत अगरचद भैरोदान सेठिया, महल्ला मरोठियो का,
,, अबीरचंद भूरा, देशनोक,
,, अयोध्याप्रसाद तिवारी, विशारद, एज्युकेशन बुकडिपो,
,, डॉक्टर अरुणकुमार मजूमदार, एल० एम० एफ० प्रिंस विजयसिंह मेमोरियल जेनरल हास्पिटल फार विमेन एंड चिल्ड्रेन,
,, अविनाशचंद्र, एल० एस० एम० एफ०, डिस्पेसरी, गंगा शहर,
,, आनदप्रकाश बी० एस्-सी०, सब हेड टी० बी० सेक्शन, रेलवे आडिट आफिस

श्रीयुत डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव एम० ए०, पी०-एच० डी०, डी० लिट्०, प्रोफेसर, डूँगर कालेज

,, मुंशी इब्राहीमखाँ ममेजा, श्रीगंगाशहर रोड, पेशकार, तहसील सदर

,, ईश्वरदयालजी, वकील, हाईकोर्ट

,, ऊधोदास, हिंदी-प्रभाकर, रेलवे स्टोर

,, एम० एन० तोलानी, प्रिंसिपल, डूँगर कालेज

,, क० मोहनलाल बोहरा, सहायक अध्यापक, स्टेट स्कूल

,, कन्हैयालाल कोचर, बी० ए०, एल्-एल० बी०, अध्यापक, कोचरों का चौक

,, कस्तूरचंद व्यास, माधवनिवास, चूनगर चौक

,, कानदान शर्मा, साहित्यप्रभाकर, आबकारी विभाग

,, केवलचद्र शर्मा, बी० ए०, एल्-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट, आचार्यों का चौक

,, केशवप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल्-एल० बी०, डिस्ट्रिक्ट जज

,, केशवानंद शर्मा, बी० एस्-सी०, बी० सी० ई०, महकमा तामीरात

,, खुशहालचंद डागा, ठि० श्रीराजा विश्वेश्वरदयाल डागा, सी० आई० ई०

,, गंगादास बारठ, अध्यापक, स्टेट हाई स्कूल, चूरू

,, गजराज ओझा, एम० ए०, एल्-एल० बी०, तहसीलदार, रतनगढ़ स्टेट

,, गुलाबसिंह वर्मा, क्लर्क, रेलवे स्टोर्स

,, डॉक्टर गोपालसिंह, एल० एम० एस० एच०, गोपाल मेडिकल हाल, गंगाशहर

,, गोपीनाथ तिवारी, एम० ए०, मुख्य हिंदीअध्यापक, एस० एम० हाईस्कूल

,, गोवर्द्धनलाल पाडे, सूरसागर के पास 'रामनिवास', तहसीलदार सदर

,, गौरीशंकर आचार्य, बी० ए०, हेडमास्टर, बी० के० विद्यालय

,, चंद्रधर इस्सर, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट

,, चंद्रशेखर शास्त्री, वैद्यराज, चद्रशेखर फार्मेसी

,, चंद्रसिंह, विशारद, डूँगर कालेज होस्टेल

श्रीयुत सेठ चंपालाल बांठिया, भीनासर

,, चेतनदास खत्री, भीनासर

,, छगनलाल गुलगुलिया, देशनोक

श्रीमती छोटाबाई, प्रधानाध्यापिका, स्वर्गीय श्री हमीरमल बांठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

श्रीयुत छोटूलाल सुराना, पुरानी लाइन, गंगाशहर

,, जगन्नाथ ओझा, सारस्वत, वैद्यभूषण, गंगाशहर

,, जगन्नाथजी रामदेव विश्वकर्मा, पुरानी लाइन, गंगाशहर

,, जतनलाल बैद, भीनासर

,, जयप्रकाश गुप्त, क्लर्क, रेलवे दफ्तर

,, मुंशी जलालखाँ, कल्लर, सर्किल पुलिस इंसपेक्टर, लूनकरनसर

,, जसवंतसिंह सिंगवी, बी० ए०, एल्-एल० बी०, प्राइम मिनिस्टर साहब की कोठी

,, जीवनमल जोशी, वकील, सुजानगढ़

,, कुँवर दर्शनसिंह सेंगर, महकमा खास

,, डाक्टर दिगपालसिंह राठौर, एल० एम० पी०, एल० पी० एच०, हेल्थ अफसर, ३१ पोकर्स क्वार्टर्स, रानी बाजार

,, देवदमन गोस्वामी आबकारी विभाग

,, डाक्टर धनपतराय, इंचार्ज, चैरिटेबल एलोपैथिक डिस्पेसरी, मेहता चौक

,, स्वामी नरोत्तमदास, एम० ए०, शातिआश्रम, पावर हाउस के पास

,, नाथूराम खड्गावत, खड्गावतो की गवाड़

,, कुँवर प्रतापसिंह सेंगर, बड़े पोस्ट आफिस के पास

,, प्रयागदत्त कट्टा, गिरानी, सुनारो की गवाड़

,, ठाकुर पूर्णसिंह, बी० ए०, असिस्टेंट इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, शिक्षाविभाग

,, फतहचंद गुलगुलिया, देशनोक

,, फाल्गुन गोस्वामी, गोस्वामी चौक

श्रीमती बसंताबाई, सहायक अध्यापिका, स्व० श्री हमीरमल बांठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

श्रीयुत भँवरलाल खत्री, देशनोक

श्रीयुत भँवरलाल नाहटा, ठि० श्रीशंकरदान नाहटा, नाहटों की गवाड़

,, भँवरलाल वैद्य, हेडक्लर्क, कस्टम्स् डिपार्टमेंट

,, भँवरलाल सुराना, वैद, देशनोक

,, भगवानदत्त शर्मा, बी० ए०, अध्यापक, स्टेट मिडिल स्कूल, राजलदेसर

,, भीष्मदेव शर्मा, अध्यापक, चोपड़ा स्टेट स्कूल, गंगाशहर

,, भैरवदान खत्री, बी० ए०, डिप० पी० ई०, डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स,

श्रीमती मथुराबाई, सहायक अध्यापिका, स्व० श्री सेठ हमीरमल बाँठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

श्रीयुत महंत मनोहरदास, कबीरमंदिर, देशनोक

,, मनोहरलाल, फार्मेसी इंचार्ज, जनाना अस्पताल

,, मालचंद शर्मा, द्वितीयाध्यापक, श्री जैन श्वेतांबर पाठशाला, नए कुएँ के पास

,, मूलचंद मूँधड़ा, देशनोक

,, मेघजी भत्तूराम विश्वकर्मा, भीनासर

,, मेहरचंदजी, अध्यापक, स्टेट स्कूल, हनुमानगढ़ फोर्ट

,, वैद्यभूषण मोहनलाल कोठारी, देशनोक

,, मोहनसिंह ठीकेदार, स्टेशन रोड, श्री डूँगर कालेज के सामने

,, यशराज कट्टा, सराफा बाजार

,, ठाकुर युगुलसिंह खीची, एम० ए०, एल्-एल० बी०, बार एट लॉ, डी० पी० एड (लंदन), रोशनीघर के पास

,, रघुवरदयाल गोयल, वकील हाईकोर्ट, मुहल्ला गोलछान

,, रामकृष्ण मलिक, बी० ए०, पर्सनल असिस्टेंट टु चीफ इंजीनियर, पी० डब्लू० डी०

,, सेठ रामगोपालजी मोहता

,, रामचंद्र० रघुवंशी अखंडानंद, संचालक, अध्यात्ममंडल, लोको दफ्तर

,, रामप्रताप भैरूँदान मेढ़, क्षत्रिय स्वर्णकार, पुरानी लाइन, गंगाशहर

,, रामबख्श मूँधड़ा, देशनोक

,, रामलौटनप्रसाद वर्मा, विशारद, अध्यापक, श्रीशार्दूल हाई स्कूल

,, ठाकुर रामसिंह, एम० ए०, डाइरेक्टर जनरल ऑव एजुकेशन

श्रीयुत लक्ष्मीनारायण मूँधड़ा, बी० ए०, देशनोक
श्रीमती लाड़वती देवी, धर्मपत्नी श्री शंभूदयालजी, अध्यापक, स्टेट मिडिल स्कूल, भीनासर
श्रीयुत वल्लभ गोस्वामी, गोस्वामी चौक
,, विद्याधर शास्त्री, एम० ए०, प्रोफेसर, डूँगर कालेज
,, वैद्य शंकरदत्त शर्मा, शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, मोहता धर्मार्थ चिकित्सालय तथा आयुर्वेद विद्यालय
,, शंभूदयाल सक्सेना, साहित्यरत्न, सेठिया कालेज
,, श्रीनारायणजी, वैद्य, शास्त्री
,, श्रीराम शर्मा, बी० ए० (इलाहाबाद), असिस्टेंट हेड मास्टर, वा० नो० हाई स्कूल
,, शेरसिंह, एम० ए०, एल्-एल० बी०, जज, हाईकोर्ट
श्रीमती सरस्वती देवी शर्मा, विद्याविनोदिनी, धर्मपत्नी डाक्टर जयशंकरजी, वैद्य विशारद, मोहता अस्पताल, मोहता चौक
श्रीयुत सुंदरलाल शर्मा, बी० ए०, पर्सनल असिस्टेंट टु दि प्रिंसिपल, जनाना मेडिकल ऑफिसर
,, सूबेदारसिंह शर्मा, हेडक्लर्क, जनाना अस्पताल
,, सूर्यप्रसाद शर्मा, बी० ए०, रानी बाजार, गुरुद्वारे के पास
,, सूर्यमल माठोलिया, हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़
,, हनुमानदत्त शर्मा, वकील, पो० सुजानगढ़,
,, हरिरत्न वर्मा, बी० ए०, अध्यापक स्टेट मिडिल स्कूल, राजलदेसर
,, महंत हरिहर गिर, डेरा रामनगर,

योग–९६

बूँदी

श्रीयुत राणावत महेंद्रसिंह, चीफ रेवेन्यु अफसर, स्टेट,
,, राज्य कवि राव शत्रुसाल जी,

योग–२

भरतपुर

श्रीयुत प्रभुलाल गुप्त, अध्यापक, वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल, भुसावर राज्य,

श्रीयुत प्रेमनाथ चतुर्वेदी, बी० ए०, ब्राह्मणों का मुहल्ला, सिटी

योग—२

भीलवाड़ा (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुर चन्द्रनाथ माथुर, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट

योग—१

मारवाड़

श्रीयुत पुरुषोत्तमदास पुरोहित, बी० ए०, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, बलोत्रा

योग—१

राजकोट

श्रीयुत ए० एल० स्वादिया, क्युरेटर, वाट्सन म्युजियम

योग—१

बड़ी रूपाहेली (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुर साहब चतुरसिंहजी, राजस्थान

योग—१

शाहपुरा

श्रीयुत माननीय महाशय घीसूलाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, जज, हाईकोर्ट, रियासत

योग—१

साँभर

श्रीयुत कृष्णकुमार पुरोहित एम० ए०, एल्-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट

योग—१

१३—संयुक्त प्रांत

(सभासदों की संख्या ५२८)

अलमोड़ा

श्रीयुत चिंतामणि तिवारी, मुहल्ला कनौली

श्रीयुत नारायणदत्त जोशी, गवर्नमेंट इंटर कालेज
,, मक्खनलाल, एम० एस्-सी०, गवर्नमेंट इंटरमीडियट कालेज
,, विश्वंभरदत्त भट्ट, एम० ए०, गवर्नमेंट इंटर कालेज
,, हीरावल्लभ तिवारी, ठि० श्री मक्खनलाल, एम० एस्-सी०, गवर्नमेंट इंटर कालेज

योग–५

अलीगढ़

श्रीयुत गोकुलचंद शर्मा, एम० ए०, साहित्यसदन
,, फूलचंद मिश्र, आनरेरी मैजिस्ट्रेट, श्यामनगर
,, मुरलीमनोहर गुप्तारा, एम० ए० (प्रयाग), एम० ए० (आक्सन), धर्मसमाज इंटर कालेज

योग–३

आगरा

श्रीयुत अंबिकाचरण शर्मा, एम० ए०, हिंदी विभाग, सत जास कालेज
,, अमूल्यरत्न प्रभाकर, प्रभाकरभवन, राजामंडी
,, कैप्टेन राव कृष्णपालसिंह, कैसल ग्राट
,, गुलाबराय, एम० ए० (आगरा), गोमतीभवन
,, चिरंजीलाल शर्मा पालीवाल, भैरवबाजार
,, जीवनचंद तात्लुकेदार, एम० ए०, पुस्तकाध्यक्ष, सत जास कालेज
,, टीकमसिंह तोमर, लेक्चरर हिंदी, बलवंत राजपूत कालेज
,, निहालकरण सेठी, सिविल लाइन
,, महेंद्र जैन, मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा
,, ठाकुर रामसिंह, बी० ए०, असिस्टेंट कमिश्नर इन्कमटैक्स, विहारी-निवास, टुंडला, जिला
,, विश्वंभरदयाल शांडिल्य, एम० ए०, लेक्चरर इन हिंदी, आगरा कालेज
,, ठाकुर वेणीमाधवसिंह, एम० एस्-सी०, असिस्टेंट इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स
,, प्रोफेसर हरिहरनाथ टंडन, एम० ए०, सत जास कालेज

योग–१३

आजमगढ़

श्रीयुत अलगूराय शास्त्री, एम० एल० ए०, डाकखाना अमिला, जिला
,, त्रिवेणीप्रसाद साहु, महल्ला मातवरगंज, शहर
,, दुक्खीसिंह, प्रधानाध्यापक, अपर प्राइमरी स्कूल, बकवल, मऊ नाथभंजन
,, लाल परीखासिंह, ग्राम बकवल, पोस्ट मऊ, जिला
,, प्यारेलाल, आजिज, एम० ए०, एल० टी०, अजमतगढ़ पैलेस
,, मुंशी महेंद्रलाल श्रीवास्तव, हेडमास्टर, एम० ए० बी० स्कूल, मऊ नाथभंजन
,, राजकुमार सिंह, सुरजपुर
,, रामावतार मिश्र, बी० ए०, एल्-एल० बी०, ग्राम बस्ती, पोस्ट रामपुर, जिला
,, राय रासबिहारीलाल, गुरुटोला
,, रायसाहब विंध्येश्वरीप्रसाद सिंह, डिप्टी कलेक्टर
,, हरकृष्णदास सर्राफ, आसिफगंज
,, हरिहरप्रसादजी, जज

योग—१२

इटावा

श्रीयुत कालीदत्त मिश्र, सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड
,, चौधरी कृष्णगोपाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट
,, महादेवप्रसाद, एडवोकेट
,, राजाराम मुख्तार
,, रामनारायण चतुर्वेदी, एम० ए०, एल० टी०, साहित्यरत्न, गवर्नमेंट इंटर कालेज
,, रायबहादुर विश्वंभरनाथ, रघुनाथभवन, छिपैटी
,, शारदाप्रसाद, जसवंतनगर, जिला
,, सूरजप्रसाद भर्थना, जिला

योग—८

इलाहाबाद

श्रीयुत अमरनाथ झा, एम० ए०, वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय
श्रीमती इंदुमती तिवारी, एम० ए०, ४ बी बैंक रोड
श्रीयुत कृष्णचंद्र एम० ए०, एल्-एल० बी०, सिविलजज
,, कृष्णाराम मेहता, बी० ए०, एल्-एल० बी०, लीडर प्रेस
,, कुँवरकृष्ण सुखिया, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल
,, राय बहादुर कौशलकिशोर बी० ए०, 'अवध', ३ लाउथर रोड
,, गुर्ति सुब्रह्मण्यम्, विशारद, दारागंज
श्रीमती कुमारी चंद्रावती त्रिपाठी, एम० ए०, १६ बैंक रोड
श्रीयुत आयुर्वेदपंचानन जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, २ सम्मेलनमार्ग
,, तारकेश्वरनाथ वर्मा, मुख्तार, हँडिया
,, महामाननीय डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, एम० ए०, एल्-एल० डी०, के-टी०, डी० सी० एल०, १८ अलबर्ट रोड
,, चौधरी धर्मसिंह, बी० ए०, एल० टी०, नं० १ बेली रोड, नया कटरा
,, डाक्टर धीरेंद्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्० (पेरिस), अध्यक्ष हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय
,, नंददुलारे वाजपेयी, एम० ए०, इंडियन प्रेस
,, ठाकुर नेहपालसिंह, आई० ई० एस०, २१ म्योर रोड,
,, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन एम० ए०, एल्-एल० बी० (अध्यक्ष प्रांतीय असेंबली, संयुक्त प्रांत, लखनऊ), १० क्रास्थवेट रोड
,, बाबूराम अवस्थी, एम० ए०, बी० एस्-सी०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट हाईकोर्ट, ३२ ए० एलगिन रोड
,, डाक्टर बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्, २४ चैथम लाइन
,, रायबहादुर ब्रजमोहन व्यास, इक्जिक्यूटिव अफसर, म्युनिसिपल बोर्ड
,, भगवतीप्रसाद, हिंदू महिला विद्यालय, कैनिंग रोड
,, रायबहादुर बाबू भगवतीशरणसिंह, चंद्रभवन, आउटरम रोड
,, मनोहरलाल जुत्शी, एम० ए०, १ बेली रोड
श्रीमती रत्नकुमारी, ठि० डाक्टर सत्यप्रकाश, डी० एस्-सी०, डी० बेली रोड

श्रीयुत राजेंद्रसिंह गौड़, एम० ए०, सी० टी०, अध्यापक, डी० ए० वी० हाईस्कूल

,, डाक्टर रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, अध्यापक हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

,, राय रामचरण अग्रवाल, एम० ए०, एल् एल० बी०, विशारद, बड़ी कोठी, दारागंज

,, रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर

,, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, एम० ए०, डी० एस्-सी०, १०६, लूकरगंज

,, लक्ष्मीधर वाजपेयी, संपादक, तरुणभारत ग्रंथावली, दारागंज

,, विष्णुदत्त भार्गव, १६ कैनिंग रोड

,, वेंकटेशनारायण तिवारी, एम० ए०, एम० एल० ए०, कीटगंज

,, शक्तिधर शर्मा गुलेरी, एम० ए०, संस्कृतविभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

,, शालिग्राम पेशकार, ७६६, कटरा

,, शिवदयाल जायसवाल, नं० ११५, नखासकोना

,, रायसाहब श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए० (लंदन), संयुक्त प्रांत के शिक्षाप्रसाराध्यक्ष, दारागंज

,, श्रीराम भारतीय, एम० ए०, स्थायी मंत्री, अखिल भारतीय सेवासमिति, १५, कचहरी रोड

,, श्रीराम वाजपेयी, १ चैथम लाइंस

,, सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०, हिंदुस्तानी एकेडमी, संयुक्त प्रांत

,, सत्याचरण, एम० ए०, बी० टी०, प्रधानाध्यापक डी० ए० वी० हाईस्कूल

,, सद्गोपाल, एम० एस्-सी० (टैक), १० बैंक रोड

,, सुरेंद्रनाथ तिवारी, आफिस ऑव असिस्टेंट इंसपेक्टर जनरल रेलवे पुलीस

श्रीमती कुमारी सुशीलकुमारी वर्मा, ठि० रायसाहब श्री अवधनारायण, असिस्टेंट इंजीनियर, नं० ४२, कैनिंग रोड

श्रीयुत हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस लि०

,, हरिराम अग्निहोत्री, इनकम टैक्स अफसर

श्रीयुत रायबहादुर हिम्मतसिंह के० माहेश्वरी, केसर भवन, १८ पार्क रोड

योग–४५

उन्नाव

श्रीयुत कृष्णदत्त त्रिपाठी, साहित्यरत्न, ठि० श्री हजारीलाल आश्रम, मौरावाँ
,, जयनारायण कपूर, बी० ए०, एल्-एल० बी०, वकील, प्रधान मंत्री, हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, जिला
,, शिवदुलारे त्रिपाठी, मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, मौरावाँ, जिला

योग–३

एटा

श्रीयुत रामदत्त भारद्वाज, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एल० टी०, ए० वी० पी० हाई स्कूल कासगंज
,, वासुदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, साहित्यरत्न, हिंदी अध्यापक, गवर्नमेंट हाईस्कूल

योग–२

कनखल

श्रीयुत विष्णुदत्त वैद्य
,, सोमदत्त मिश्र पुरीय

योग–२

कानपुर

श्रीयुत अयोध्यानाथ शर्मा, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज
,, एन० बी० भारद्वाज, नयागंज
,, ठाकुर कन्हैयासिंह, बी० ए०, इनकम टैक्स अफसर
,, कालिकाप्रसाद धावन, सेक्रेटरी, गयाप्रसाद पुस्तकालय, सरस्वती-भवन, मेस्टन रोड
,, कुंजबिहारी लाल श्रीवास्तव, ए० बी० म्युनिसिपल, हाई स्कूल, नवाबगंज
,, केशवचंद्र शुक्ल, डिप्टी कलक्टर

ुत चद्रशेखर पाडे, एम० ए०, प्रोफेसर, सनातनधर्म कालेज, नवाबगंज
दुर्गाप्रसादजी, डिप्टी कलक्टर
नारायणदास बाजोरिया, ठि० श्री जगन्नाथ बिजराजजी, कूपरगंज
सेठ पद्मपत सिहानिया, कमला टावर
परमेश्वरदीन मिश्र, एम० ए०, बी० एस-सी०, एल्-एल० बी, एडवोकेट हाईकोर्ट, श्री० पं० देवाचरण मिश्र, रिटायर्ड पुलीस इंसपेक्टर के सुपुत्र, कछियाना मुहाल, मोतीमुहाल सड़क, सिटी
परिपूर्णानद वर्मा, शास्त्री, कमला टावर
ब्रजलाल शर्मा बी० ए०, एल० टी०, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट, परेड
बालस्वरूप चतुर्वेदी, अवसरप्राप्त डिप्टी कलक्टर, ७० स्वरूपनगर
मन्नीलाल नेवटिया, काहू कोठी
माधवप्रसाद पाडे, एस० सी०, रिटायर्ड डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, प्रेमनगर
मुंशीराम शर्मा, एम० ए०, आर्यनगर
रतनचंद कालिया, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट
लाला रामरतन गुप्त, बिहारी निवास
लक्ष्मीकात त्रिपाठी, एम० ए०. पटकापुर
मती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मजु', विद्या विभाग, नवाबगंज
युत श्यामसुंदरलाल शुक्ल, रिटायर्ड डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, रामबाग, सीसामऊ
, संग्रामप्रसाद, सब डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड
, सत्यनारायण पाडेय, एम० ए०, हिंदी के लेक्चरर, सनातनधर्म कालेज
, सद्गुरुशरण अवस्थी, एम० ए०, प्रेममंदिर
, हरीचद खन्ना, इंसपेक्टर, ओरियंटल अश्यूरेंस कंपनी, १६।५२ गैंजीज बंक, सिविल लाइन
, हीरालाल खन्ना, एम० एस्-सी०, प्रिंसिपल, बी० एन० एस० डी० कालेज

ाग–२७

खीरी

ीयुत अनमोलकराम अवस्थी, एम० ए०, लखीमपुर

श्रीयुत आदित्यप्रकाश मिश्र, डिप्टी कलक्टर
,, नानकरामजी, एक्साइज इंस्पेक्टर, निघासन
,, संकठाप्रसाद बाजपेयी, लखीमपुर
,, सूरजनारायण दीक्षित, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट, लखीमपुर

योग–५

गढ़वाल

श्रीयुत तोताराम थपल्याल, ग्राम गगोलीसैण, डाकघर पोखरी खेत, जिला
,, दौलतराम जुयाल, ग्राम झवाणासार, पोस्ट दोगड्डा, जिला
,, शालिग्राम वैष्णव, शान्तिसदन, कर्णप्रयाग

योग–३

गाजीपुर

श्रीयुत रायबहादुर घनश्यामदास, रिटायर्ड कलक्टर
,, भागवत मिश्र, बी० ए०, एल् एल० बी०, ऐडवोकेट

योग–२

गोंडा

श्रीमती पूर्णिमा चाँदमल, ठि० श्री चाँदमल आई० सी० एस०

योग–१

गोरखपुर

श्रीयुत अत्रिमुनिमल्लजी, एम० ए०, एल्-एल० बी०, राजादरवाजा, पडरौना
,, रायसाहब आद्याप्रसाद, बी० ए०, एल् एल० बी०, ऐडवोकेट, रईस, बसंतपुर, जिला
,, एस० एल० पांडेय, हेडमास्टर, किंग एडवर्ड हाई स्कूल, देवरिया, जिला
,, कामेश्वरीप्रसाद नारायणसिंह, पोस्ट सलेमगढ़
,, कुँवरबहादुर एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रिंसिपल, डी० बी० इंटर कालेज

श्रीयुत ठाकुर गिरिजाशंकर सिनहा, एम० ए०, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट, देवरिया, जिला

,, घनश्यामनारायणदास, १२६ कसया रोड, नोटीफाइड एरिया
,, चिंतामणि, डिप्टी कलेक्टर
,, जगन्नाथप्रसाद, एम० ए०, एल्-एल० बी०, देवरिया, जिला
,, त्रिगुणानंद मिश्र, ग्राम बकुची, पोस्ट सतराव
,, देवीप्रसाद मालवीय, अलीनगर
,, नदकिशोरसिह, पडरौना राज्य, जिला
,, परमहसमल्लसिंह, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, वकील
,, प्रागध्वजसिंह, वकील, एम० एल० ए०, देवरिया
,, पुरुषोत्तमदास रईस
,, प्यारेलाल गर्ग, डिप्टी डाइरेक्टर ऑव एग्रिकल्चर
,, वालमुकुन्द गुप्त, एम० ए०, साहित्यरत्न, बालमुकुंद इंटर कालेज
,, सेठ विट्ठलदास, डिप्टी कलेक्टर
,, रायवहादुर मधुसूदनदास
,, महातम राव, बुकसेलर, रेती चौक
,, परमहंस बाबा राघवदास, परमहंसाश्रम, बरहज, जिला
,, राजनाथ पांडेय, एम० ए०, प्रोफेसर, संत ऐंड्रूज कालेज
,, राय साहब राजेश्वरीप्रसाद, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट
,, रामनारायण तिवारी, अलीनगर
,, सेठ रामप्रसाद भालोठिया, पोस्ट सिसवाबाजार, जिला
,, विंध्येश्वरीनारायणचंद्र एम० ए०, एल् एल० बी०, बसंतपुर, जिला
,, शशिभूषण गुप्त, मार्फत श्री इंदुभूषण गुप्त, न्यू बिल्डिंग, गोलघर
,, सत्यनारायण आर्य, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, श्रीकृष्ण उद्योग इंगलिश स्कूल, बसंतपुर धूसी, पोस्ट तरकुलवा, जिला
,, सद्गुरुप्रसाद, चौधरी बलदेवप्रसाद रोड
,, सरयूप्रसादसिंह, एम० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर, उदितनारायण हाई स्कूल, पडरौना
,, सूर्यप्रसाद मिश्र, विशारद, वकील, देवरिया, जिला
,, हरिहरप्रसाद दुबे, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट
,, हीरानद पाठक, रीडर, कलक्टरेट

श्रीयुत होतीलाल, ओवरसियर, देवरिया, जिला

योग—३४

ज्वालापुर

श्रीयुत रायबहादुर गंगाप्रसाद, एम० ए०, (अवसरप्राप्त चीफ जज-टेहरी राज्य) वानप्रस्थ आश्रम

योग—१

जौनपुर

श्रीयुत भगवतीप्रसाद सिंह, एम० ए०, डिप्टी कलेक्टर
,, रायबहादुर राजनारायण मिश्र, बी० ए०, मैनेजर, स्टेट
,, कुँवर श्रीपालसिंह, सिंगरामऊ राज्य, जिला
,, श्रीराम उपाध्याय, ऐडवोकेट

योग—४

झाँसी

श्रीयुत कालिकाप्रसाद अग्रवाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट, मानिक चौक
,, मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव
,, श्यामबिहारी शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, ५९, लक्ष्मणगंज
,, हीरालाल शास्त्री, हेड पंडित, मैकडानेल हाईस्कूल

योग—४

देहरादून

श्रीयुत अमरनाथ, वैद्य शास्त्री, वनस्पति औषधालय
,, आनंदस्वरूप सिनहा, एम० ए०, एल० टी०, डी० ए० वी० कालेज
,, ए० डी० बनर्जी, प्रिंसिपल, डी० ए० वी० कालेज
,, कृष्णदेव शर्मा, डी० ए० वी० कालेज
,, गुरुप्रसाद शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष, श्री महात्मा खुशीराम पब्लिक लाइब्रेरी
श्रीमती चंद्रावती लखनपाल, एम० ए०, बी० टी०, प्रिंसिपल, महादेवी-कन्या पाठशाला
,, जयदेवी घिल्डियाल, बी० ए०, १४, डफरिन रोड

श्रीमती धनवती देवी, २, हरद्वार रोड
श्रीयुत सत निहालसिंह, जर्नलिस्ट
श्रीमती मनोरमा खास्तगीर, एम० ए०, मार्फत श्री खास्तगीर, अध्यापक, दून स्कूल
श्रीयुत सेठ रामकिशोर, मोहनी भवन
,, रामचद्रजी, रिटायर्ड सबडिविजनल अफसर, धीराजभवन, लक्ष्मण चौक
,, लक्ष्मणदेव, ठि० लाला झब्बालाल सर्राफ, धामावाला बाजार
श्रीमती लीलावती झँवर, एम० ए०, बी० टी०, कानपुर रोड
,, विद्यावती सेठ, आचार्या, कन्या गुरुकुल, राजपुर रोड
श्रीयुत साधूराम महेद्र, प्रिंसिपल, साधूराम हाईस्कूल
श्रीमती सावित्री गुप्ता, एम० ए०, सिद्धातशास्त्री, महादेवी कन्या पाठशाला
श्रीयुत हरनारायण मिश्र, विद्यामदिर
,, लाला हुकुमचंद पुरी, ई० ए० सी० फारेस्ट, नं० १, हरद्वार रोड
श्रीमती हेमतकुमारी चौधरानी, ८ चंद्र रोड, डालनवाला

योग–२०

प्रतापगढ़ (अवध)

श्रीयुत ठाकुर लालकुमारसिंह, कालाकाँकर
,, सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशगृह, कालाकाँकर
,, कुँवर सुरेशसिंह, कालाकाँकर

योग–३

नैनीताल

श्रीयुत तुलाराम वर्मा, न० २० बड़ा बाजार
,, रायसाहब डाक्टर भवानीशंकर याज्ञिक, पटवा डोगर
,, ठा० राजनारायणसिंह, आई०एफ०एस०, डिविजनल फारेस्ट अफसर

योग–३

फर्रुखाबाद

श्रीयुत महेश्वर, बी० ए०, भारतीय पाठशाला

श्रीयुत रामनाथ शर्मा, एम० ए०, एल्-एल बी०, मुंसिफ, कायमगंज

योग–२

फैजाबाद

श्रीयुत आचार्य नरेंद्रदेव, एम० ए०, एम० एल० ए०
,, राजरूप ओझा, बी० ए०, एल्-एल० बी, अकाउंटंट, म्युनिसिपल बोर्ड आफिस
,, रामस्वरूप, एम० ए०, बी० टी०, विशारद, होवार्ट हाई स्कूल, टाँडा, जिला
,, श्रीराम मिश्र, ऐडवोकेट, श्रीनिकेतन

योग–४

बदायूँ

श्रीयुत गौरीशंकरप्रसाद वर्मा, मु० कानूनगोयान
श्रीमती मालतीदेवी, ठि० पं० शिवकुमार डिडन, एम० ए०, एल्-एल० बी०, सिविल लाइन

योग–२

बनारस

श्रीयुत अंबिकादत्त उपाध्याय, एम० ए०, आचार्य, अस्सी
,, अंबिकाप्रसाद श्रीवास्तव, बी० ए०, मैनेजिंग डाइरेक्टर, भारती बीमा कंपनी, दारानगर
,, डाक्टर अचलविहारी सेठ, कमच्छा
,, अमरनाथ जेतली, शास्त्री, ब्रह्मनाल
,, अमरनाथ मेहरोत्रा, नीची ब्रह्मपुरी
,, अमरेशप्रसाद सिंह, संकटमोचन
,, राय साहब डाक्टर कैप्टन अयोध्याप्रसाद मिश्र, भदैनी
,, साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', संकटहरण
,, अवधविहारीलाल, बी० ए०, एल्-एल० बी०, ६५।१३४, बड़ी पियरी
,, अशोकजी एम० ए०, ११, बुलानाला
,, आमोदकुमार वर्मा, चौखंभा

श्रीयुत इक़बालनारायण गुर्टू, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रो-वाइस चांसलर, हिंदू विश्वविद्यालय

„ उदित मिश्र, ग्राम कुंडी, पोस्ट बड़ागाँव

„ उमाशंकरजी, १५०, दारानगर

„ कन्हैयालाल, ब्रह्मपुरी फुलवाई, चौखंभा

„ कमलनाथ अग्रवाल, काशी पेपर स्टोर्स, सिद्धमाता की गली, बुलानाला

„ रायबहादुर कमलाकर दुबे, एम० ए०, खजुरी

श्रीमती कमलाकुमारीजी, भूतपूर्व आनरेरी महिला मैजिस्ट्रेट, ५।५, चेतगंज

श्रीयुत कांतानाथ पांडे, एम० ए०, अध्यापक, हरिश्चंद्र कालेज

„ कालीचरणसिंह, गवर्नमेंट पेंशनर, ग्राम फुलवरिया, काली पलटन, बनारस कैंट

„ काशीनाथ उपाध्याय, एम० ए०, साहित्यरत्न, सराय गोवर्द्धन

„ काशीराम, एम० ए०, संस्कृत पाठशालाओं के अवसरप्राप्त निरीक्षक, मीरघाट

„ किशोरीरमणप्रसाद, मामूरगंज, काशी

„ कविराज कृष्णचंद्र शर्मा, कालभैरव

„ राय कृष्णजी, पांडेपुर

„ राय कृष्णदास, रामघाट

„ कृष्णदास अग्रवाल, सुँड़िया

„ कृष्णदेवप्रसाद गौड़, एम० ए०, एल० टी०, बड़ी पियरी

„ कृष्णलाल जालान, सुखलाल साहु गेट,

„ कृष्णानंद एम० ए०, बी० टी०, ३।१७८, अर्दली बाजार

„ के० एन० वांचू, आई० सी० एस०, जिला एवं दौरा जज

„ केशवप्रसाद मिश्र, भदैनी

„ खेदनलाल, एम० एल० ए० (केंद्रीय), चेतगंज

„ गंगाशंकर मिश्र, एम० ए०, गंगातरंग, नगवा

„ गणेश रामचंद्र भागवत, ९।१२, पत्थरगली, कालभैरव

„ गयाप्रसाद ज्योतिषी, एम० ए०, प्राच्य विद्या-विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

„ गरीबदास, ठीकेदार, काशी स्टेशन, ईस्ट इंडियन रेलवे

श्रीयुत गिरधरलाल व्यास, कमच्छा
,, डाक्टर गिरवरसिह, जी० पी० वी० सी०, वेटरेनरी सर्जन
,, गिरिजाशंकर गौड़, विशारद, २०८, बड़ी पियरी
श्रीमती ज्ञानवती त्रिवेदी, गुप्ता गार्डन, लका
श्रीयुत गुप्तेश्वरसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, कबीरचौरा
,, गुरुशरणलाल श्रीवास्तव एम० ए०, एल्-एल० बी०, मुंसिफ
,, बाबू गोवर्द्धनदास गुप्त [प्रधानाचार्य संकेत लिपि-विद्यालय, ना० प्र० सभा], कोदई चौकी
,, राय गोविंदचंद्र, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, एम० एल० ए०, कुशस्थली
,, गोविंद मालवीय, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एम० एल० ए०, न्युइंश्योरेंस कंपनी
,, गौरीनंदन उपाध्याय, बी० ए०, एल्-एल० बी०, वकील, बाँसफाटक
,, सेठ गौरीशकर गोयनका, अस्सी
,, चद्रबली पांडेय, एम० ए० ठि० मुंशी महेशप्रसाद आलिम फाजिल, नगवा
,, चंद्रभाल बी० एस्-सी०, एम० एल० सी०, शातिसदन, सिगरा
,, चंद्रमौलि सुकुल, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा
,, ठाकुर जगदीशप्रसादसिह एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रिंसिपल, उदयप्रताप क्षत्रिय कालेज
,, जगन्नाथप्रसाद खत्री, गोलागली
,, रायबहादुर जगन्नाथप्रसाद मेहता, एम० बी० ई०, चेयरमैन, म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस
,, जगन्नाथप्रसाद शर्मा, एम० ए०, औरंगाबाद
,, आयुर्वेदाचार्य जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी, एम० ए०, अस्सी
श्रीमती कुमारी जनक कौल, राजघाट स्कूल
श्रीयुत जमुनादत्त सनवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय कार्यालय
,, जयकृष्णदास, कालभैरव
,, जयचंद्र नारंग, विद्यालंकार, भदैनी
,, जयेंद्रनारायण सिन्हा, ३।१७८, अर्दलीबाजार
" ज्योतिभूषण गुप्त, सेवा उपवन

श्रीयुत जीवनदास अग्रवाल, प्रधानाध्यापक, अग्रवाल महाजनी पाठशाला

,, ठाकुरदास ऐडवोकेट, राजादरवाजा

,, ठाकुरप्रसाद शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०, मलदहिया

,, ठाकुर त्रिभुवनप्रसाद शिवगोविंद, बार.एट लॉ

,, त्रिवेणीदत्त द्विवेदी, बेनिया बाग

,, गोस्वामी दामोदरलालजी, बुलानाला

,, दामोदरदास खडेलवाल, छोटी गैबी

,, ठाकुर दिलीपनारायणसिंह, एम० ए०, १२०, छोटी पियरी

,, दीनानाथ निगम, बी० ए०, एल्-एल० बी०, तेलियाबाग

,, द्वारिकादास, म्युनिसिपल कमिश्नर, २६ गोविन्दजी नायक

,, देवेद्रचद्र विद्याभास्कर, विद्याभास्कर बुकडिपो

,, धनराज सुदन, नोरा कंपनी, राजा कटरा, चौक

,, नंदगिरि कांतानाथ शास्त्री तैलग, टेढ़ी नीम

,, पं० नदलाल भारद्वाज, बी० ए०, एल० टी०, अध्यापक डी० ए०वी० कालेज

,, नवरंगसिंह, दूकान इडियन प्रेस, चौक

,, नागेश उपाध्याय, एम० ए०, भदैनी

,, निष्कामेश्वर मिश्र, बी० ए०, एल० टी०, लाहोरी टोला

,, पद्माकर द्विवेदी, खजुरी

,, पद्मनारायण आचार्य, एम० ए०, अस्सी

श्रीमती पाद्मनी देवी कलमकर (यमुना देवी मंजूरकर), महिला विद्यालय, हिंदू विश्वविद्यालय

श्रीयुत डाक्टर परमात्माशरण, प्रो० इतिहास-विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

,, डाक्टर प्रतापनारायण राजदान, पी-एच० डी०, हेडमास्टर सेंट्रल हिंदू स्कूल

,, प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिह, प्रताप पार्क, हिंदू विश्वविद्यालय

,, प्राणनाथजी, ६।१३८ गणित विभाग, हिदू विश्वविद्यालय

,, डाक्टर प्राणनाथ विद्यालकार, डी० एस्-सी० (लदन), पी० एच० डी० (वियना), प्रो० एशट मिडिल ईस्ट हिस्टरी एड ऐ टिक्विटीज, हिदू विश्वविद्यालय

,, पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, ब्रह्माघाट

श्रीयुत प्यारेलाल श्रीवास्तव, बी० ए०, 'कामिल' आनरेरी मैजिस्ट्रेट,
सी १२।५, औरंगाबाद

,, बजरंगबली गुप्त, जालपादेवी
,, बटुकनाथ शर्मा, एम० ए०, कालभैरव
,, बनारसीप्रसाद सारस्वत
,, बलदेव उपाध्याय, एम० ए०, राखालभवन, दूधविनायक
,, राजा बलदेवदास बिरला, लालघाट
,, बलदेवप्रसाद मिश्र, १५ शकरकंद की गली
,, बलदेव वैद्य, ग्राम तथा डाकघर, बड़ागाँव
,, बलराम उपाध्याय, ऐडवोकेट, बड़ी पियरी
,, डाक्टर ब्रजमोहन, एम० ए०, पी-एच० डी०, एल्-एल० बी०,
हिंदू विश्वविद्यालय
,, ब्रजमोहन केजरीवाल, नंदनसाहु लेन
,, ब्रजमोहनदास, बी० ए०, सिगरा
,, बा० ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल् एल बी० ऐडवोकेट, बुलानाला
,, ब्रजलाल सब्बरलाल, पोस्टमास्टर, सदर पोस्ट आफिस
,, बाँकेबिहारीलाल, बी० एस्-सी०, एल० टी०, सिद्धमाता की गली
,, बाबूराव विष्णु पराड़कर, प्रधान संपादक 'आज', ज्ञानमंडल
,, बिट्ठलदास नागर, दामोदरदासजी बल्लभदासजी, सूत टोला
,, बिहारीलाल विश्वकर्मा, हंसतीर्थ तालाब
,, बाबू बैजनाथ केडिया, अध्यक्ष हिंदी पुस्तक एजेंसी, चौक
,, राय भगवतीप्रसाद, ग्राम जगतपुर, पोस्ट रोहनियाँ
,, डाक्टर भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट्०, भूतपूर्व एम० एल० ए०
(केंद्रीय) सिगरा
,, भगवानप्रसाद, अवसरप्राप्त डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स्, ग्राम
भड़िलाई, पोस्ट शिवपुर
,, डाक्टर भोलानाथसिंह, डी० एस्-सी०, इरविन प्रोफेसर ऑव
ऐग्रिकल्चर, युनिवर्सिटी प्रोफेसर ऑव प्लांट फिजियालॉजी, हेड
ऑव दि इंस्टिट्यूट ऑव ऐग्रिकल्चरल रिसर्च, डीन ऑव दि
फैकल्टी ऑव टेकनालाजी, हिंदू विश्वविद्यालय

श्रीयुत डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, एम० ए०, डी० फिल० (आक्सन),
प्रिंसिपल, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज

,, मंगलाप्रसादसिंह, जमींदार, मंगलभवन, भेलूपुर

,, साहित्यवाचस्पति महामना मदनमोहन मालवीय, हिंदू विश्वविद्यालय

,, मदनमोहन शास्त्री, शक्करकंद गली

,, महादेवलाल सराफ, फार्मेसी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

,, माधोप्रसाद खन्ना, थियासाफिकल सोसायटी

,, ठाकुर मार्कंडेय सिंह, एम० ए०, साहित्यरत्न, अध्यापक, उदयप्रताप क्षत्रिय कालेज

,, मुकुंददेव शर्मा, मारफत पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', संकटहरन

,, मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन

,, मोहनलाल गुप्त, एम० ए०, रामप्रसाद बिल्डिंग, चेतगंज

,, लाल रत्नाकरसिंह, डिप्टी कलेक्टर

,, रमापति शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, अध्यापक बेसेंट (थियासॉफिकल) स्कूल

,, रमेशदत्त पांडे, बी० ए०, वरनापुल

,, डाक्टर राजेंद्रनारायण शर्मा, सराय गोवर्द्धन

,, राजेश्वरीदयाल सिनहा, बी० ए०, २१।६६, कमच्छा

,, राय साहब राजेश्वरीप्रसाद, गवर्नमेंट प्लीडर

,, राधेकृष्णदास, शिवाला घाट,

,, बाबू रामचंद्र वर्मा, ३ सरस्वती फाटक

,, रामचरन पांडे, क्वींस कालेज

,, रामनारायण मिश्र, बी० ए०, अवसरप्राप्त पी० ई० एस०, कालभैरव

,, रामनारायण मेहरोत्रा, लाहौरी टोला,

,, रामन्योछावरलाल, ईश्वरगंगी

,, रामप्रसाद जौहरी, ४०।५२, सुतही इमली

,, रामबिहारी शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, प्रो० क्वींस कालेज

,, रामशंकरलाल, वकील, दारानगर,

,, रामशंकरलाल नैपाली, चौखंभा,

,, रामशरणलाल मुख्तार, रामनिवास, तेलियाबाग

श्रीयुत ठाकुर रामाधारसिंह, वकील, विश्वेश्वरगंज

,, रामेश्वरसहाय सिनहा, [सुपरिंटेंडेंट, शिक्षा-विभाग, म्युनिसिपल बोर्ड], ६४।१०० हीरापुरा

,, लक्ष्मण नारायण गर्दे, पत्थरगली, रतनफाटक

,, चौधरी लक्ष्मीचंद्र, भारतेंदुभवन, चौखंभा

,, लक्ष्मीनारायण मिश्र, 'सचय', १।१८२ असी संगम

,, लल्लीप्रसाद पांडेय, इंडियन प्रेस लि०

,, लालचंद खत्री, कोठी, पूरनचंद, हरनारायण, रानीकुआँ

,, लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज

,, वंशगोपाल झिंगरण, एम० एस-सी०, बी० एड०, प्रोफेसर टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा

,, वाचस्पति उपाध्याय, एम० ए०, भदैनी

,, विजयकृष्ण, ११०, खजुरी

,, विद्याभूषण मिश्र, एम० ए०, एल्-एल० बी०, मामूरगंज

,, विमलानंदन प्रसाद, आनरेरी मुंसिफ, दारानगर

,, विश्वनाथप्रसाद, बुलानाला

,, विश्वनाथप्रसाद भार्गव, ठिकाना बाबू मनोहरलाल भार्गव, जतनबर

,, विश्वेश्वरनाथ जेतली, २१।१०३, कमच्छा

,, वेणीप्रसाद, रानी कुँआ

,, वेणीप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल० टी०, अध्यापक, हरिश्चंद्र कालेज

,, राय शंभूप्रसाद, ग्राम जगतपुर, पोस्ट रोहनियाँ

,, शशिशेखरानंद गैरोला, इंजीनियरिंग कालेज, हिंदू विश्वविद्यालय

,, शांतिप्रिय द्विवेदी, सहायक संपादक, 'कमला', कमला कार्यालय

,, शारदाप्रसाद, कोठी, किशोरीलाल मुकुंदीलाल, विश्वेश्वरगंज

,, राय साहब ठाकुर शिवकुमारसिंह, बैजनत्था

,, शिवनाथ झारखंडी, एम० ए०, एम० एस्०-सी०, पटनी टोला

,, शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन,

,, शिवमंगलसिंह 'सुमन', एम० ए०, मार्फत श्री डाक्टर दुबे, ग्लास टेकनालॉजी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

श्रीमती शिवरानी देवी, सरस्वती प्रेस, रामकटोरा

श्रीयुत श्यामनारायणसिंह, बी० ए०, एल् एल० बी०, मध्यमेश्वर

श्रीयुत साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर श्यामसुंदर दास, बी० ए०,
१४।१११, टेढ़ी नीम

,, राय श्रीकृष्णजी, पाडेपुर
,, श्रीकृष्ण पंत, ललिताघाट
,, श्रीनाथ शाह, दुर्गाकुंड
,, श्रीनिवास शाह, दुर्गाकुंड
,, श्रीशचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल्-एल० बी०, बी० टी०, कालभैरव
,, संकठाप्रसाद गुप्त, कोठी, श्री छोटेलाल वामनदास, सुँड़िया
,, सतराम, काशी ग्रामोफोन स्टोर्स, बुलानाला
,, संपूर्णानंद, बी० एस्-सी०, एल० टी०, एम० एल० ए०, भूतपूर्व
शिक्षामंत्री, संयुक्त प्रांत, जालपा देवी,
,, सच्चिदानंद भारतीय एम० ए०, एल्० टी०, सहायक अध्यापक,
सेंट्रल हिंदू स्कूल
,, राय सत्यव्रत, लहरतारा
,, सहदेवसिंह, ऐडवोकेट, वड़ी पियरी
,, साँवलजी नागर, सेंट्रल हिंदू स्कूल
,, सीताराम, रजिस्ट्रेशन क्लर्क
,, सीताराम चतुर्वेदी, एम० ए०, एल् एल० बी०, बी० टी०, प्रोफेसर
टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा
,, सीताराम मिश्र, बी० ए०, बी० टी०, सेंट्रल हिंदू स्कूल, कमच्छा
श्रीमती हीराकुमारी जैन, व्याकरण-न्याय-सांख्यतीर्थ, न्यु० ई० २,
हिंदू विश्वविद्यालय

योग–१८३

बरेली

श्रीयुत ओ३म्प्रकाश मित्तल, गंगापुर,
,, कृष्णकुमारलाल सक्सेना, (स्वर्गवासी बाबू शिवकुमारलाल, सब इंसपेक्टर पुलिस के सुपुत्र), निकट पत्थरवाली हवेली, मुहल्ला भूड़
,, गुणानंद जयाल, अध्यापक, बरेली कालेज,
,, दिनेशचंद्र, एम० ए०, टि० मकान न० ११३, ख्वाजा कुतुब

श्रीयुत ठाकुर रामाधारसिंह, वकील, विश्वेश्वरगंज
,, रामेश्वरसहाय सिनहा, [सुपरिंटेंडेंट, शिक्षा-विभाग, म्युनिसिपल बोर्ड], ६४।१०० हीरापुरा
,, लक्ष्मण नारायण गर्दे, पत्थरगली, रतनफाटक
,, चौधरी लक्ष्मीचंद्र, भारतेंदुभवन, चौखंभा
,, लक्ष्मीनारायण मिश्र, 'सचय', १।१८२ असी सगम
,, लल्लीप्रसाद पाडेय, इडियन प्रेस लि०
,, लालचंद खत्री, कोठी, पूरनचद, हरनारायण, रानीकुआँ
,, लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिग कालेज
,, वंशगोपाल झिगरण, एम० एस-सी०, बी० एड०, प्रोफेसर टीचर्स ट्रेनिग कालेज, कमच्छा
,, वाचस्पति उपाध्याय, एम० ए०, भदैनी
,, विजयकृष्ण, ११०, खजुरी
,, विद्याभूषण मिश्र, एम० ए०, एल्-एल० बी०, मामूरगंज
,, विमलानंदन प्रसाद, आनरेरी मुंसिफ, दारानगर
,, विश्वनाथप्रसाद, बुलानाला
,, विश्वनाथप्रसाद भार्गव, ठिकाना बाबू मनोहरलाल भार्गव, जतनबर
,, विश्वेश्वरनाथ जेतली, २१।१०३, कमच्छा
,, वेणीप्रसाद, रानी कुँआ
,, वेणीप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल० टी०, अध्यापक, हरिश्चंद्र कालेज
,, राय शंभूप्रसाद, ग्राम जगतपुर, पोस्ट रोहनियाँ
,, शशिशेखरानद गैरोला, इजीनियरिंग कालेज, हिंदू विश्वविद्यालय
,, शातिप्रिय द्विवेदी, सहायक सपादक, 'कमला', कमला कार्यालय
,, शारदाप्रसाद, कोठी, किशोरीलाल मुकुंदीलाल, विश्वेश्वरगज
,, राय साहब ठाकुर शिवकुमारसिह, बैजनत्था
,, शिवनाथ झारखडी, एम० ए०, एम० एस्०-सी०, पटनी टोला
,, शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन,
,, शिवमगलसिंह 'सुमन', एम० ए०, मार्फत श्री डाक्टर दुबे, ग्लास टेकनालॉजी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

श्रीमती शिवरानी देवी, सरस्वती प्रेस, रामकटोरा
श्रीयुत श्यामनारायणसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, मध्यमेश्वर

श्रीयुत साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर श्यामसुंदर दास, बी० ए०,
१४।१११, टेढ़ी नीम

,, राय श्रीकृष्णजी, पाडेपुर
,, श्रीकृष्ण पंत, ललिताघाट
,, श्रीनाथ शाह, दुर्गाकुंड
,, श्रीनिवास शाह, दुर्गाकुंड
,, श्रीशचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल्-एल० बी०, बी० टी०, कालभैरव
,, संकठाप्रसाद गुप्त, कोठी, श्री छोटेलाल वामनदास, सुँड़िया
,, संतराम, काशी ग्रामोफोन स्टोर्स, बुलानाला
,, संपूर्णानंद, बी० एस्-सी०, एल० टी०, एम० एल० ए०, भूतपूर्व
शिक्षामंत्री, संयुक्त प्रांत, जालपा देवी,
,, सच्चिदानंद भारतीय एम० ए०, एल्० टी०, सहायक अध्यापक,
सेंट्रल हिंदू स्कूल
,, राय सत्यव्रत, लहरतारा
,, सहदेवसिंह, ऐडवोकेट, बड़ी पियरी
,, साँवलजी नागर, सेंट्रल हिंदू स्कूल
,, सीताराम, रजिस्ट्रेशन क्लर्क
,, सीताराम चतुर्वेदी, एम० ए०, एल् एल० बी०, बी० टी०, प्रोफेसर
टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा
,, सीताराम मिश्र, बी० ए०, बी० टी०, सेंट्रल हिंदू स्कूल, कमच्छा
श्रीमती हीराकुमारी जैन, व्याकरण-न्याय-सांख्यतीर्थ, न्यु० ई० २,
हिंदू विश्वविद्यालय

योग–१८३

बरेली

श्रीयुत ओश्मप्रकाश मित्तल, गंगापुर,
,, कृष्णकुमारलाल सक्सेना, (स्वर्गवासी बाबू शिवकुमारलाल, सब इंसपेक्टर पुलिस के सुपुत्र), निकट पत्थरवाली हवेली, मुहल्ला भूड़
,, गुणानंद जयाल, अध्यापक, बरेली कालेज,
,, दिनेशचंद्र, एम० ए०, टि० मकान नं० ११३, ख्वाजा कुतुब

श्रीयुत बलराम शर्मा, एम० ए०, एल् एल० बी०, द्वारा पं० राधेश्याम शर्मा, कथावाचक, राधेश्याम प्रेस
,, भोलानाथ शर्मा, एम० ए०, अध्यापक, बरेली कालेज
,, ठाकुर रामकिंकर सिंह, पी० सी० एस०, केन इंसपेक्टर
,, साहु रामनारायणलाल, बाँसे की मंडी
,, साहित्याचार्य विद्येंद्र शास्त्री, पंचतीर्थ, २७६, कुँअरपुर
,, शंकरसहाय सक्सेना, प्रोफेसर, बरेली कालेज
,, श्रीधर पंत, शास्त्री, एम० ए०, एल० टी०, प्रोफेसर, बरेली कालेज, साहूकारा

योग–११

बलिया

श्रीयुत गणेशप्रसाद, एम० ए०, हिंदी अध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल
,, ठाकुरदास अग्रवाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, वकील
,, परशुराम चतुर्वेदी, वकील
,, राजासिंह, तहसीलदार, राज बड़ागढ़, पोस्ट रेवती, जिला
,, शिवप्रसादसिंह, बी० टी० सी०, विशारद, अध्यापक, मिडिल स्कूल रेवती, रेलवे स्टेशन रेवती, जिला
,, श्यामसुंदर उपाध्याय, सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड
,, सीताराम पांडे, प्रधानाध्यापक, मिडिल स्कूल भीमपुरा, पोस्ट औराई कलाँ, जिला
,, हरिकृष्ण राय, साहित्यरत्न, हेडमास्टर, ग्राम वाजिदपुर, पोस्ट दलन छपरा, जिला

योग–८

बस्ती

श्रीयुत नरसिंह नारायण मिश्र, वैद्य, नगर राज्य, पोस्ट नगर, जिला

योग–१

बाँदा

श्रीयुत कन्हैयालाल मिश्र, आर्योपदेशक, ठि० श्री महावीरप्रसाद, ठीकेदार, अर्दली बाजार

श्रीयुत मूलचंद जैन, एम० ए०, एल् एल० बी०, करवी

योग–२

बारावंकी

श्रीयुत गोपालचंद्र सिंह, एम० ए०, एल्०-एल० बी०, विशारद, मुंसिफ

योग–१

बुलंदशहर

श्रीयुत केशवराम, अनूपशहर

,, घमंडीलाल शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, विशारद, पद्मसिह गेट, खुर्जा

,, जगनलाल गुप्त, मुख्तार, माल व फौजदारी

,, सर जीवनलाल चौवे, खजाची, इंपीरियल वैक

,, त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी, विज्ञानाध्यापक, जे० ए० एस० स्कूल, खुर्जा, जिला

,, राय साहव मदनमोहन सेठ, एम० ए०, एल्-एल० बी०, अवसर-प्राप्त जिला एवं दौरा जज, शिवपुरी

,, महेशचद्र गर्ग, एम० ए०, ग्राम एवं डाकघर पहासू, जिला

योग–७

मथुरा

श्रीयुत आर० सी० भार्गव, प्रधानाध्यापक, किशोरीरमण कालेज

,, कामेश्वरनाथ, एम० ए०, प्रभाकर प्रेस

,, क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कंपनी

श्रीमती गायत्रीदेवी गुप्त, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल

श्रीयुत गोपालदत्त शर्मा, प्रधानाध्यापक, श्री गोवर्द्धनलाल हिंदी विद्यापीठ

,, जवाहरलाल चतुर्वेदी, कूवावाली गली

,, मदनमोहन नागर, क्युरेटर, कर्जन म्युजियम

,, मोहनवल्लभ पंत, एम० ए०, वी० टी०, लेकचरर, किशोरीरमण इंटरकालेज

,, रघुनाथदास भार्गव, वी० ए०, एल्-एल० वी०

,, रायवहादुर राधारमण, रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर, हैंपियरनगर

श्रीयुत रामनिवास पोद्दार,
श्रीमती रामप्यारी देवी, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल
श्रीयुत रामसिंह पाठक, गोवर्द्धन
श्रीमती शकुंतला भार्गव, प्रधानाध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल
श्रीयुत सत्येंद्र, एम० ए०, ए० टी० सी०, गली कानूनगोयान, रामदास की मंडी
श्रीमती कुमारी स्नेहलता कक्कड़, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल
श्रीयुत लाला हीरालाल, श्यामकाशी प्रेस

योग—१७

मिर्जापुर

श्रीयुत महंत परमानंद गिरि, मुहल्ला गुसाईं टोला, कोठी महंतजी
,, प्रमथनाथ भट्टाचार्य, वेलेस्लीगंज
,, रामप्रतापजी, मालिक दूकान भैरवमल फतहचंद, बुंदेलखंडी
,, वासुदेव उपाध्याय, गाँव बजहा, डाकघर कछवां, जिला
,, राजा शारदा महेशप्रसादसिंह शाह, बड़हराधीश, बड़हर,
पोस्ट राजपुर, जिला

योग—५

मुजफ्फरनगर

श्रीयुत गोविंदविहारी शोरावाल, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज
,, बाबू जगदीशप्रसाद, रईस

योग—२

मुरादाबाद

श्रीयुत केदारनाथ 'बेकल', बी० ए०, एल० टी०, गवर्नमेंट हाईस्कूल, अमरोहा
,, केशवचंद्र, ठिकाना लाला लछमनदास मथुरादासजी, गंज
,, गंगाशरण, शर्मा, 'शील', एम० ए०, एस० एस० इंटर कालेज, चंदौसी
,, तोताराम गुप्त, काँठ

योग—४

मेरठ

श्रीयुत आनंदस्वरूप दुबलिश, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, वकील

श्रीमती कमलादेवी भटनागर, ठि० बाबू चंद्रस्वरूप भटनागर, सब-रजिस्ट्रार
श्रीयुत साहित्यरत्न कृष्णानंद पंत, एम० ए०, प्रोफेसर, मेरठ कालेज
,, चैतन्यप्रकाश, विद्यार्थी, खादी भंडार
,, पृथ्वीनाथ सेठ, शांतिनिकेतन
,, बालमुकुंद शास्त्री, सेवामंदिर देवनागरी इंटर कालेज
,, मुरारीलाल शर्मा, अध्यापक, सेवा मंदिर देवनागरी इंटर कालेज
,, चौधरी रघुवीर नारायणसिंह, एम० एल० ए० (केंद्रीय), असोडा, पोस्ट हापुड़
,, शांतिस्वरूप अग्रवाल, प्रधानाध्यापक, कमर्शल ऐंड इंडस्ट्रियल हाई स्कूल, हापुड़

योग–९

मैनपुरी

श्रीयुत पातीराम ज्ञानीराम, सिरसागंज
,, बृजमोहनलाल मदनलाल, सिरसागंज
,, बाबूराम बिल्थरिया, साहित्यरत्न, सिरसागंज, जिला
,, रघुराज सिंह, मौजा उखरेंड, पो० भदान, जिला
,, राधामोहन फरसैया, सर्राफ ऐंड ब्रास मर्चेंट, मुकाम सिरसागंज, जिला
,, रुस्तमसिंह रघुवीरसिंह, सिरसागंज
,, सुनहरीलाल शर्मा, एम० ए०, विशारद, हेडमास्टर डी० ए० वी० स्कूल, सिरसागंज
,, सूरजभान, सिरसागंज

योग–८

रायबरेली

श्रीयुत राजा जगन्नाथबख्श सिंह, ताल्लुकेदार, रहवाँ, जिला
,, शिवनारायणलाल, विशारद, वैजनाथाश्रम, ग्राम और पोस्ट बछरावाँ, जिला

योग–२

लखनऊ

श्रीयुत डाक्टर अवध उपाध्याय, डी० एस-सी०, प्रोफेसर, गणित विभाग, लखनऊ यूनिवर्सिटी

श्रीयुत ए० जी० शिरफ, आई० सी० एस०, मेंबर रेवेन्यू बोर्ड,
बोडस् क्वार्टर्स

,, एन० सी० मेहता, आई० सी० एस०, एजुकेशन सेक्रेटरी,
युक्तप्रांतीय सरकार

,, राव साहब एस० एल० आर० खेर, इनकमटैक्स कमिश्नर

,, कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर कालीचरण
हाई स्कूल

,, काशीनाथ गुप्त, एल-एल० बी० (फाइनल), २० महमूदाबाद होस्टेल

,, त्रिभुवननारायण सिंह, नेशनल हराल्ड आफिस,

,, दीनदयाल गुप्त, एम०ए०, एल्-एल० बी०, हिंदी के लेक्चरर, लखनऊ
विश्वविद्यालय

,, डाक्टर पन्नालाल, आई० सी० एस०, डी० लिट्०, ऐडवाइजर टु द
यू० पी० गवर्नमेंट

,, डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, डी० लिट०,
हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

,, ब्रह्मदेव वाजपेयी, ३९ मेजर बैंक्स रोड

,, बालकृष्ण पांडे, प्रिंसिपल, कान्यकुब्ज इंटर कालेज

,, बालकृष्णराव, आई० सी० एस०, अंडरसेक्रेटरी, इन्फर्मेशन
डिपार्टमेंट, यू० पी० गवर्नमेंट

,, बैजनाथसिंह, एम० ए०, बी० टी०, नैशनल हाई स्कूल

श्रीमती मनीबाई शाह, युनिटी लाज

श्रीयुत माधवशरण, ५१८ नरही

,, रामवीरविहारी सेठ, रिसालदार बाग

,, विद्यासागर भटनागर, मौसमबाग, सीतापुर रोड

,, वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, क्युरेटर, प्रांतीय अजायबघर

,, शंकरदयाल शर्मा, १०१, महमूदाबाद होस्टेल,

,, श्रीधरसिंह, एम० ए०, गवर्नमेंट जुबिली इंटरमीडियट कालेज

,, रावराजा डाक्टर श्यामविहारी मिश्र, एम० ए०; रायबहादुर,
१०५ गोलागंज

,, रायबहादुर शुकदेवविहारी मिश्र; गोलागंज

श्रीयुत सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नारियलवाली गली, हाथीखाना,
भूसामंडी

,, रायसाहब डाक्टर सूरजप्रसाद श्रीवास्तव, असिस्टेंट डाइरेक्टर
पब्लिक हेल्थ, युक्तप्रांत

,, हरिश्चंद्र, आई० सी० एस०, सेक्रेटरी टु द गवर्नमेंट युक्तप्रांत,
जुडिशल डिपार्टमेंट

योग–२६

वृंदावन

श्रीयुत दानविहारीलाल शर्मा, संपादक, 'नाम-माहात्म्य'

योग–१

सहारनपुर

श्रीयुत वागीश्वर, पुस्तकालयाध्यक्ष, गुरुकुल काँगड़ी, जिला

,, वागीश्वर विद्यालंकार, उपाध्याय, गुरुकुल काँगड़ी, जिला

,, वेदव्रत, मंत्री, आर्य समाज, गुरुकुल काँगड़ी, जिला

योग–३

सीतापुर

श्रीयुत अनिरुद्धसिंह, नीलगाँव

श्रीमती कुमारी इंद्रमोहिनी सिन्हा, ठि०-श्री एम० एम० सिन्हा, डिप्टी कमिश्नर

श्रीयुत कन्हैयालाल महेंद्र, एम० ए०, एल् एल० बी०, वकील, मोतीबाग

,, कृष्णविहारी मिश्र, गधौली सिधौली

,, गजाधरप्रसाद मेहरोत्रा, कोठी और पोस्ट, बिसवाँ

,, ठाकुरप्रसाद शर्मा, हिंदी साहित्य सभा, लालबाग

,, वैद्य मधुसूदन दीक्षित, शास्त्री, मृत्युंजय औषधालय

,, ठाकुर रामसिंह, ताल्लुकेदार

,, राजा सूरजबख्श सिंह, आनरेरी मुंसिफ व मैजिस्ट्रेट, कस्माडा,
पोस्ट कमालपुर, जिला

,, सोमेश्वरदत्त शुक्ल

योग–१०

सुल्तानपुर

श्रीयुत दिनकरप्रकाश जोशी, कुडवार
,, महेशप्रसाद, प्रधानाध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल
,, कुमार रणजयसिंह, भूतपूर्व एम० एल० ए० (केंद्रीय), अमेठी राज, जिला
,, शेषमणि त्रिपाठी, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, सब डिप्टी इंसपेक्टर ऑव् स्कूल्स

योग–४

हरद्वार

श्रीयुत रामेश्वरदयाल निगम, हेडमास्टर, म्युनिसिपल हाई स्कूल
, महंत शांतानंदनाथ, श्रीश्रवणनाथ ज्ञानमंदिर पुस्तकालय
,, हरिहरप्रसाद मिश्र, भागीरथी पुस्तकालय

योग–३

हरदोई

श्रीयुत ठाकुर अर्जुनसिंह, आनरेरी स्पेशल मैजिस्ट्रेट, जमींदार, मौजा तुर्तीपुर, जिला
,, राय साहब जिनेश्वरदास, स्पेशल मैनेजर, कोर्ट ऑव् वार्ड्स
,, ब्रजभूषणशरण जेतली, एम० ए०, एल्-एल० बी०, आई० पी०एस०, सुपरिंटेंडेंट पुलीस
,, सेठ वंशीधर, मैनेजिंग डाइरेक्टर, लक्ष्मी शुगर ऐंड ऑयल मिल्स
,, शिरोमणिसिंह चौहान, एम० एस्-सी०, विशारद, सब-रजिस्ट्रार, बिलग्राम

योग–५

हाथरस

श्रीयुत रायबहादुर चिरंजीलाल बागला, रईस, म्युनिसिपल कमिश्नर

योग–१

बनारस राज्य, रामनगर

श्रीयुत खानबहादुर सैयद अली जामिन, चीफ सेक्रेटरी, बनारस राज्य

श्रीयुत कल्पनाथ सहाय, अध्यापक, स्टेट हाई स्कूल
,, सरदार झारखंडीप्रसाद नारायणसिंह, किला
,, वल्लभनाथ दुबे, फोर्ट
,, व्रजनाथ, बी० कॉम०, मैनेजर, बनारस स्टेट बैंक
,, विनोदविहारी सेन राय, प्रधानाध्यापक, मेस्टन हाई स्कूल
,, सूर्यप्रसाद शुक्ल, हजारी साहब

योग—७

१४—सिंध

(सभासदों की संख्या—२)

सक्खर

श्रीयुत स्वामी हरिनामदास उदासीन, श्री साधुबेला तीर्थ

योग—१

हैदराबाद

श्रीयुत टोपनलाल शर्मा, वैद्यरत्न, मुखो की गली

योग—१

१५—हैदराबाद (दक्षिण)

(सभासदों की संख्या—५)

उस्मानाबाद

श्रीयुत मोतीलाल हीराचंद गांधी, मुकाम और पोस्ट

योग—१

सिकंदराबाद

श्रीयुत चि० म० वीरभद्र शास्त्री तैलंग, ४२६८, सजनलाल स्ट्रीट

योग—१

हैदराबाद

श्रीयुत राजा नरसिंह राजबहादुर, चशीराजा ड्यौढ़ी, बारागली, हुसैनी आलम
,, राजाबहादुर विश्वेश्वरनाथजी, मेंबर जुडिशल कमिटी

श्रीयुत सत्यनारायण लोया, बी० ए०, एल्-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट, रेजिडेंसी रोड

योग—३

१६—विदेश

(सभासदों की संख्या—१३)

अफ्रिका

मारिशस

श्रीयुत के० एम० भगत, मंत्री स्कूल विभाग, हिंदी-प्रचारिणी सभा, मोताई लोंग

योग—१

केनिया कालोनी (ब्रिटिश ईस्ट अफ्रिका)

श्रीयुत रणधीर विद्यालंकार, पोस्ट बक्स २४३, नैरोबी
" रमनभाई जे० पटेल, द्वारा एक्सप्रेस ट्रांसपोर्ट को० लि०, पोस्ट बक्स ४३३, नैरोबी
" सत्यपाल, पोस्ट बक्स २४३, नैरोबी

योग—३

युगांडा

श्रीयुत दयालजी भीमभाई देसाई, पोस्ट न० ७१, जिंजा

योग—१

अमेरिका

बोस्टन

श्रीयुत डा० आनंद के० कुमारस्वामी, डी० एस-सी० (लंदन) कीपर ऑव दी इंडियन सेक्शन, म्यूजियम ऑव फाइन आर्ट्‌स

योग—१

एशिया

मस्केत

श्रीयुत विश्राम जे० पटेल, मस्केत, अरेबिया, परशियन गल्फ

योग–१

बर्मा

श्रीयुत डाक्टर ओ३म्प्रकाश, एम० बी० बी० एस०, ओकीन,
पो० कामायुत
रंगून

योग–१

यूरप

इँगलैंड

श्रीयुत रेवरेंड ई० ग्रीव्ज, नं० १, दो लाइन्स, हार्निओल्ड रोड, मालवर्न

,, टी० ग्राहम वेली महोदय, २३६ निदर स्ट्रीट, लंदन नं० ३
,, रेवरेंड जे० चैडविक जैक्सन, बीथल २, आइलैंड क्लोज, हेलशम रोड, पोलगेट, सरे

योग–३

पोलैंड

श्रीयुत स्तेफेन स्ताशक प्रोफेसर ऐट दी युनिवर्सिटी, एलवाव

योग–१

रूस

श्रीयुत प्रोफेसर ए० वारानिकफ, व्लाचिन स्ट्रीट, १ एफ/लाग ६, लेनिनग्राद,
यू० एस० एस० आर०

योग–१

संवत् १९९७ के अंतिम तीन मास में सं० १९९८ के लिये बने साधारण सभासदों की नामावली

श्रीयुत अमरनाथ काक, बी० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट, श्रीनगर (काश्मीर)

,, ए० चंद्रहासन, एम० ए०, हिंदी के लेक्चरर, महाराजा कालेज, इर्नाकुलम, कोचीन (मद्रास)

,, एस० एन० तिवारी, बी० ए०, एल्० टी०, अध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल, बालाघाट, सी० पी० बरार

,, ऋषिराम आचार्य, बी० ए०, आचार्य, दयानंद ब्राह्म विद्यालय, लाहौर

,, कालीप्रसाद मिश्र, दशाश्वमेध नं० १७।१०, बनारस

,, कृष्णगोपाल शर्मा, नेनवाँ, बूँदी स्टेट, बूँदी (राजपूताना)

श्रीमती कृष्णकुमारी धवले, 'विशारद', नालंदा विद्यापीठ, पो० नालंदा, जि० पटना

श्रीयुत चंद्रभानजी रायजादा, वकील, अमेठी (सुल्तानपुर), अवध

,, चेतराम शर्मा, आर्यकन्या गुरुकुल, राजवाड़ी, पोरबंदर (काठियावाड़)

,, छोटूभाई सुथार, बी० एस्-सी०, विशारद, भारती विद्या-मंदिर, नदियाद, बी० बी० आर०

,, जगदीशचंद्र जोशी, नंदन कानन, हैवलक रोड, लखनऊ

,, जगमोहनलाल चतुर्वेदी, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, ७० जीरा, सिकंदराबाद, हैदराबाद रियासत, दक्षिण

,, द्वारकाप्रसाद, इंजीनियर, डालमियानगर, शाहाबाद

,, धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, शास्त्री, प्रो० जैक्सन होस्टल, पटना कालेज, पटना

,, डाक्टर नारायणसिंह, बहुबाजार, टीटागढ़, चौबीस परगना

,, प्रकाशचंद्र गुप्त, एम० ए०, प्रो० संत जान्स कालेज, आगरा

,, प्यारेलाल मल्होत्रा, नं० १ मलानी रोड, त्यागरायनगर, मद्रास

,, बनवारी सिंह, क्षत्रिय इंटर कालेज, जौनपुर

,, भोलानाथ मिश्र, एम० ए०, डिप० एड्० (वेल्स्), मछरहट्टा, जौनपुर

,, मनमोहनलाल, बी० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट, जकाती महल्ला, बरेली

श्रीयुत मनोरंजनप्रसाद, एम० ए०, प्रिंसिपल, राजेंद्र कालेज, छपरा, बिहार
,, रायबहादुर माधोराम संड, जतनबर, बनारस
,, मुकुंद नायक, विशारद, [पो० दलसिंगसराय (दरभंगा)]
वर्तमान पता—६० लेक रोड, बालीगंज, कलकत्ता
,, मैनबहादुरसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, क्षत्रिय इंटरकालेज, जौनपुर
,, रंगलाल जाजोरिया, भारत बिल्डिंग्स, माउंट रोड, मद्रास
,, रघुनाथसाह गुप्त, पोस्ट टीटागढ़, जि० चौबीस परगना, बंगाल
,, राजरोशनराय शर्मा, कीनीसन जूट मिल्स्, पो० टीटागढ़,
जि० चौबीस परगना
,, राजाराम पांडेय, बी० ए०, एल० टी०, क्षत्रिय कालेज, जौनपुर
,, कुँवर राजेंद्रसिंह, मैनेजर कुर्री सुदौली राज, जिला रायबरेली
(अवध)
,, रामगोपाल संघी, रेड हिल्स, नामपल्ली, हैदराबाद (दक्षिण)
,, रामनाथ शर्मा, रिटायर्ड इंस्पेक्टिंग आफिसर फारेस्टस्, ग्वालियर
,, रामनाथ सिंह, क्षत्रिय इंटर कालेज, जौनपुर
,, रामबालक शास्त्री, प्रधान संस्कृताध्यापक, जयनारायण हाई स्कूल,
बनारस
,, राममूर्ति सिंह बी० एस्-सी०, एल-एल० बी०, वकील, जौनपुर
,, लक्ष्मीनारायण गुप्त, हैदराबाद सिविल सर्विस, बेगम पेठ,
हैदराबाद (दक्षिण)
,, लक्ष्मीनारायण गुप्त, जुवेलर, बाकरगंज, पो० बाँकीपुर, पटना
,, वंशीधर विद्यालंकार, वेस्टर्न टाकी के पीछे, काचीगुड़ा,
हैदराबाद (दक्षिण)
,, विंध्येश्वरीप्रसाद, शास्त्री, रसायन आश्रम, जगदल (कचहरी रोड),
चौबीस परगना (बंगाल)
,, विट्ठलनाथ कपूर, मछरहट्टा, जौनपुर
,, विनयसिंह देवड़ा, एम० ए०, गलथनी, ऐरनपुरा रोड,
मारवाड़ (जोधपुर)
,, विनायकराव विद्यालंकार, बैरिस्टर, जायबाग, हैदराबाद (दक्षिण)
,, विश्वेश्वर नारायण बिजूर, बी० एस्-सी, एल० टी०,
गणपति हाईस्कूल, मंगलौर

श्रीयुत विष्णुदत्त पांडेय, ७ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, शं० दा० चितले, राष्ट्रभाषा-विशारद, एम० ए०, बी० टी०, हिंदी प्रचार सघ, पुणें

,, सतूलाल,कोठो, जौहरीमल गणेशदास, कटरा आलूवालियाँ, अमृतसर

,, सीताराम गुप्त, (प्रो० गवर्नमेंट कालेज) कृष्णनगर, लाहौर

,, सूर्यप्रताप, आशाकुंज, हैदराबाद (दक्षिण)

,, हरिदत्त डेवरानी, गाँव नवसीन, पो० डाँडामंडी, जि० गढ़वाल

,, हरेकृष्ण चतुर्वेदी, हेडमास्टर, अमेठी (सुल्तांपुर) अवध

योग–४९

संवत् १९९८ के प्रारंभ से अब तक (१ वैशाख १९९८ से ९ श्रावण १९९८) बने सभासदों की नामावली

मान्य—

श्रीमती महादेवी वर्मा, एम० ए०, महिला-विद्यापीठ, इलाहाबाद

श्रीयुत वेंकटेशनारायण तिवारी, एम० ए०, एम० एल० ए०, कीडगंज, इलाहाबाद

विशिष्ट—

श्रीयुत सेठ जुगुलकिशोर बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, राजा पन्नालाल बंशीलाल पीती, बेगमबाजार, हैदराबाद (दक्षिण)

,, रा० ब० राजा ब्रजनारायणसिंह, पड़रौना राज, पो० पड़रौना, जिला गोरखपुर

,, लक्ष्मीनिवास बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

स्थायी—

श्रीयुत कमलाप्रसादसिंह, श्यामपोखर स्ट्रीट, कलकत्ता

,, कृष्णकुमार बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

,, जगन्नाथप्रसाद, एम० ए०, एल्-एल० बी०, देवरिया, जिला गोरखपुर

,, जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य, अस्सी, बनारस

,, प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिंह, प्रताप पार्क, हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस

,, प्यारेलाल गर्ग, डिप्टी डायरेक्टर ऑव् ऐग्रिकल्चर, गोरखपुर

श्रीयुत भगवतीप्रसादसिंह, एम० ए०, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, जौनपुर

,, आनरेब्ल राजा युवराजदत्त सिंह साहब, एम० सी० एस० ऑव् ओयल ऐंड कैमरा इस्टेट, ओयलनरेश, पो० ओयल, जिला खेरी (अवध)

,, रामचंद्र शर्मा वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय, अजमेर

,, लक्ष्मीनारायण पोद्दार, १६।१ हरिसन रोड, बागड़ बिल्डिंग, कलकत्ता

,, सेठ वंशीधर, मेनेजिंग डायरेक्टर, लक्ष्मी शूगर ऐंड आयल मिल्स्, हरदोई

,, महाराजकुमार शंकरीप्रसादसिंह देव, पंचकोट, मानभूम

,, सुंदरीप्रसाद, रईस, स्पेशल मैजिस्ट्रेट, चौक, जौनपुर

,, रायबहादुर सूर्यप्रसाद, ऐडवोकेट, दुलहिनजी की कोठी, बनारस

,, हरिश्चंद्र, आई० सी० एस०, युक्त प्रांतीय सरकार के शिक्षा-विभाग के सेक्रेटरी, लखनऊ

साधारण—

श्रीयुत रायबहादुर केदारनाथ खेतान, एम० एल० सी०, पडरौना, जिला गोरखपुर

,, ठाकुर जमुनाप्रसादसिंह, इनकमटैक्स अफसर, कानपुर

,, वैजनाथ बाथ्र, बी० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर, नार्मल स्कूल, फैजाबाद

,, रामभरोसे सेठ, अवसरप्राप्त पी० ई० एस०, डी० ए० बी० कालेज, बनारस

,, वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, क्युरेटर-प्राविंशल म्यूजियम, लखनऊ

,, विष्णु शर्मा भारतीय, मुकाम बक्सरियों, शाहजहाँपुर, युक्त प्रांत

,, महाराज वीरेंद्रशाहजू देव बहादुर, राज्य जगम्मनपुर, पो० जगम्मनपुर, जि० जालौन

,, सहदेवसिंह, ऐडवोकेट, बड़ो पियरी, बनारस

,, राय हरेकृष्ण, सिगरा, बनारस

,, 'अज्ञेय', पोस्ट बक्स ६२, दिल्ली

,, कृपालसिंह रावत, श्रेणी १०, डी० ए० वी०, कालेज, देहरादून

,, कृष्णटोपण लाल शर्मा, काव्यतीर्थ, वैद्यविशारद, मुखी की गली, हैदराबाद, सिंध

श्रीयुत मुनि कांतिसागरजी, श्रीजैन श्वेतांबर मंदिर, सिवनी, सी० पी०
,, काशीप्रसाद सिंह, श्रीमान् राजा साहब आवागढ़ के हाउस होल्ड कंट्रोलर, आवागढ़, एटा
,, काश्यपकृष्ण शर्मा, डिप्टी कलक्टर, बनारस
,, गोपालदास, डी० ए० वी० स्कूल, ९५ बिगन्डेट स्ट्रीट, रंगून, बर्मा
,, गोपीचंद कछवाहा, क्लार्क लोको आफिस, बीकानेर
,, जगीरसिंह, एम० ए०, छोटी गैबी, बनारस
,, जगतनारायणलाल, हेड ट्रेन एग्जामिनर, ई० आई० आर०, मुगलसराय, जिला बनारस
,, जनार्दन शर्मा, पोस्ट मास्टर, उदयरामसर, बीकानेर
,, जयशंकर दुबे, खजुरी, बनारस
,, जयश्री पांडेय, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, वकील, बड़ी पियरी, बनारस
,, छेदीप्रसाद, आयुर्वेदाचार्य, वैद्यशास्त्री, श्रीकल्याण औषधालय, मुगलसराय, जिला बनारस
,, तोलाराम चोपडा, ठि० श्री० भैरूंदान ईश्वरचंद्र चोपड़ा, गंगाशहर, बीकानेर
,, द्वारकानाथ तिवारी, मछरहट्टा, जौनपुर
,, देवीनारायण, एम० ए०, एल-एल० बी०, साक्षी विनायक, बनारस
,, कुँवर प्रियानंदप्रसादसिंह, एम० ए०, एल्-एल० बी०, भुतही इमली, बनारस
,, बुद्धप्रकाश, लाल भगतराम बिल्डिंग, सरस्वती प्रेस, मेरठ
,, डॉक्टर भगतराम, आई० एम० डी०, रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर्स, बीकानेर
,, भगवानदीन शुक्ल, तालुकेदार, मुकाम शाहपुर, जिला बेतूल, सी०पी०
,, महावीरसिंह गहलोत, बी० ए०, मेरती दरवाजा, जोधपुर
,, महालचंद वैद, भीनासर, बीकानेर
,, महेशलाल आर्य, पो० बिहारशरीफ, पटना, बिहार
,, मोतीलाल, हेडमास्टर, प्राइमरी स्कूल मुगलसराय, जिला बनारस
,, मोतीलाल मेनारिया, एम० ए०, मगनेरघाट, उदयपुर (मेवाड़)
,, राधाकृष्ण चतुर्वेदी, डिप्टी सुपरिंटेंडेंट, सेंट्रल जेल, बीकानेर

श्रीयुत राधारमण पाडेय, व्याकरणाचार्य, अध्यापक, गवर्नमेंट इंटर कालेज, फैजाबाद
„ रामकृष्ण आचार्य (कलकती), म्युनिसिपल कमिश्नर, आनरेरी मैजिस्ट्रेट एंड मुंसिफ सदर, आचार्यों का चौक, कलकतिया बिल्डिंग, बीकानेर
„ रामेश्वरदयालजी, डिप्टी कलक्टर, फैजाबाद
„ लक्ष्मीदास, सत्ती चबूतरा, बनारस
„ विश्वेश्वरजी, सिद्धांतशिरोमणि, दर्शनाचार्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृंदावन, मथुरा
„ श्यामबहादुर सिंह, मारवाड़ी सम्मेलन, कालबा देवी, बंबई
„ शिवानद तिवारी, बी० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर, गुर्जर पाठशाला, बनारस
„ सत्यनारायण द्विवेदी, बी० ए०, हेडमास्टर, स्टेट स्कूल, नोहर, बीकानेर
„ हरदेव पाडेय, कानूनगो, पो० मुगलसराय, जिला बनारस
„ हीरालाल ओलक, एम० ए०, हिंदी और संस्कृत के अध्यापक, डी० ए० वी० कालेज, शोलापुर

निःशुल्क—

श्रीयुत काशीप्रसाद मिश्र, आयुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ, विश्वनाथ फार्मेसी, सुंदरदास बाग, बनारस
„ माधवशरण, ५१२, नरही, लखनऊ
„ रघुवरदयाल मिश्र 'मान', हेडमास्टर, मिडिल स्कूल विधूना, जिला इटावा
„ श्रीराम भारतीय, अखिल भारतीय सेवा समिति बिल्डिंग्स, इलाहाबाद

योग—७२

संशोधन

सेठ रामगोपाल आर्य, मऊनाथ भजन, आजमगढ स्थायी सभासद हैं। खेद है इनका नाम स्थायी सभासदों की सूची में भूल से नहीं आ सका।

—

परिशिष्ट ५

सभा के संरक्षक

[चुनाव के क्रम से]

१—श्रीमान् जनरल हिज हाइनेस महाराजाधिराज राजराजेश्वर नरेंद्र-शिरोमणि महाराज श्री गंगासिंह बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० सी० वी० ओ०, जी० बी० ई०, के० सी० बी०, ए० डी० सी०, एल्-एल० डी०, बीकानेर-नरेश।

२—श्रीमान् हिज हाइनेस महाराज गुलाबसिंह जू देव बहादुर, रीवाँ नरेश।

३—श्रीमान् हिज हाइनेस सवाई महेंद्र महाराजाधिराज सर वीरसिंह जू देव बहादुर, के० सी० एस० आई०, ओड़छा-नरेश।

४—श्रीमान् हिज हाइनेस महाराजा साहब सर भूपालसिंह बहादुर, के० सी० आई० ई०, जी० सी० एस० आई०, उदयपुर-नरेश।



परिशिष्ट ६

सभा के संस्थापक

सभा के संस्थापकों में से इस समय भी सभा को सदैव की भांति सँभालने मे तत्पर सभासद—

श्रीयुत रायबहादुर साहित्य-वाचस्पति बा० श्यामसुंदरदास, बा० ए०

श्रीयुत पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०, पी० ई० एस० (अवसरप्राप्त)

श्रीयुत रायसाहब ठाकुर शिवकुमार सिंह (अवसरप्राप्त डिप्टी इंस्पेक्टर ऑव स्कूल्स)



परिशिष्ट ७

सभा से संबद्ध संस्थाएँ

(१) नागरीप्रचारिणी सभा, मैनपुरी।
(२) ,, ,, ,, बुलंदशहर।
(३) ,, ,, ,, बहराइच।
(४) ,, ,, ,, भगवानपुर रत्ती, पो० इमरीतपुर,
जिला मुजफ्फरपुर।
(५) ,, ,, ,, गोंडा।
(६) हिन्दी हितैषिणी सभा, सहारनपुर।
(७) सुहृद् संघ, मुजफ्फरपुर।
(८) बालक संघ, विष्णुपुर, पटना।
(९) प्रसाद-परिषद्, काशी।
(१०) हिन्दी साहित्य भवन, धरफरी, मुजफ्फरपुर।
(११) स्वयसेवक पुस्तकालय, छपरा।
(१२) साहित्यसदन, माँझी, सारन।
(१३) हिन्दी प्रचार मंडल, आर्यकुमार सभा, बदायूँ।
(१४) मस्कत और मत्रा नागरीप्रचारिणी सभा, अरब, फारस की खाड़ी।
(१५) हिन्दी साहित्य सदन, सहसराम।
(१६) हिन्दीप्रचारिणी सभा, जम्मू।
(१७) बाल नागरीप्रचारिणी सभा, पुण्यार्क, पो० पंडारक, (पटना)।
(१८) हिन्दी हितैषिणी सभा, लालगंज, मुजफ्फरपुर।
(१९) हिन्दी प्रचारिणी सभा, लालगंज, मुजफ्फरपुर।

परिशिष्ट ८

स्थायी निधियों का विवरण

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
१—देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला			
इम्पीरियल बैंक के ७ हिस्से	३५००)	१०३६२॥)	६३०)
" " १४ हिस्से	१७५०)	७५०)	
दाता—स्वर्गवासी मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ, जोधपुर। इसके ब्याज से ऐतिहासिक पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं।			
२—बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१२०००)	७२५८=)	४२०)
दाता—बारहट बालाबख्शजी, जयपुर। इसके ब्याज से राजपूतों और चारणों की रची हुई डिंगल और पिंगल भाषा की पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं।			
३—जोधसिंह पुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१६००)	१५८०)=	५६)
दाता—स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह, उदयपुर। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के रचयिता को २००) पुरस्कार दिया जाता है।			
४—रत्नाकर पुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	३२००)	२२२३=)७	११२)
दाता—बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष			

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
सर्वोत्तम ब्रज-भाषा काव्य के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।			
५—बटुकप्रसाद पुरस्कार गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—रायबहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष सर्वोत्तम शिक्षाप्रद मौलिक नाटक या उपन्यास के लिये २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१७००)	१०१९=)॥	५९॥)
६—डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—पंडित रामनारायण मिश्र, बी० ए०, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष विज्ञान-विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१६००)	१०४८)	५६)
७—राजा बिड़ला पुरस्कार गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—राजा बलदेवदास बिड़ला। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष अध्यात्मतत्त्व, योगशास्त्र, सदाचार, नीति, मनोविज्ञान आदि विषयों के सर्वोत्तम ग्रंथ के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१६००)	१०२१≡)	५६)
८—सुधाकर पदक तथा ग्रीव्ज पदक गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट सुधाकर पदक के दाता—बाबू गौरीशंकर प्रसाद एडवोकेट काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जाता है।	२००)	१८८॥-)	७)

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
ग्रीव्स पदक के दाता—पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०। इसके ब्याज से भी एक पदक प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है।			
९–द्विवेदी पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी। इसके ब्याज से सर्वोत्तम हिंदी ग्रंथ के रचयिता को प्रति वर्ष स्वर्णपदक दिया जाता है।	१६००)	११९०)।।।	५६)
१०–शंभूरत्नस्मारक निधि			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय बाबू जयशंकर प्रसाद। इसके ब्याज से साहित्य-परिषद तथा गोष्ठी के अधिवेशन किये जाते हैं।	१३००)	९०८।।≡)	४५।।)
११–शिवलाल मेहरोत्रा निधि			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता–बाबू गंगाप्रसाद खत्री। इसके ब्याज से कला-भवन के लिये वस्तुएँ खरीदी जायँगी।	१००)	६१।।)	३।।)
१२–बलदेवदास पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—बाबू व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल० बी०, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जायगा।	१००)	९९≡)४	३।।)

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक मूल्य
१३–रायबहादुर डा० हीरालाल स्वर्णपदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१०००)	१००१)	३५)
दाता—स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल। इसके ब्याज से प्रति दूसरे वर्ष एक स्वर्ण-पदक, पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, इंडोलॉजी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध के रचयिता को दिया जायगा।			
१४–राधाकृष्णदास पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	९९≡)४	३॥)
दाता—बाबू शिवप्रसाद गुप्त। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य-पदक दिया जायगा।			
१५–गुलेरीपदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥।–)॥।	३॥)
दाता—श्री जगद्धर शर्मा गुलेरी।			
१६–रेडिचे-पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥।–)१०	३॥)
फुटकर चंदे से।			

नोट—निधि ०१ का रुपया इंपीरियल बंक के हिस्सों में लगा है और शेष के स्टाक सर्टिफिकेट ट्रेजरर चैरिटेबल एंडाउमेंट फंड्स, युक्तप्रांत के पास जमा हैं।

परिशिष्ट ६

१ वैशाख से ३० चैत्र १९९७ तक २५) या अधिक दान देनेवाले सज्जनों की नामावली

प्राप्ति-तिथि	दाता का नाम	धन	प्रयोजन
१२ वैशाख	श्री सुधीरकुमार वसु	२५)	श्री रामप्रसाद समादर कोष
२६ "	श्री काशीप्रसाद, काशी श्री किशोरीलाल मकुंदीलाल, काशी	२५)	कलाभवन
२७ "	मेहता श्री फतहलाल साहब, उदयपुर	४००)	"
" "	" " "	१००)	स्थायी कोष
२८ "	श्रीमती रामदुलारी दुबे, अजमेर	१००)	"
१६ मार्गशीर्ष	" " "	१०००)	रुक्मिणीदेवी ग्रंथमाला
इस वर्ष चार किश्तों में	युक्तप्रांतीय सरकार	१०००)	पुस्तकालय
	" "	२०००)	हिन्दी हस्त-लि० पुस्तकों की खोज
१३ ज्येष्ठ	श्री सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन	१००)	स्थायी कोष
१३ आषाढ़ ८ चैत्र	श्री सेठ घनश्यामदास बिड़ला, दिल्ली	४५०)	कलाभवन
७ श्रावण	श्री घनश्यामदास पोद्दार, बबई	१०१)	स्थायी कोष
" "	श्री नंदकिशोर लोहिया, कलकत्ता	१०१)	" "
१७ "	श्री भागीरथ कानोडिया, "	१५०)	कलाभवन
२० "	श्री राय कृष्णदास जी, काशी	५०)	"
२६ भाद्रपद २६ पौष	श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया, कलकत्ता	६००)	"
२६ भाद्रपद	" " "	४००)	कूप निर्माण
२७ भाद्रपद	श्री मुरारीलाल केडिया, काशी	५०)	मूर्ति मंदिर

प्राप्ति-तिथि	दाता	प्राप्त धन	प्रयोजन
५ आश्विन	श्री रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, अजमेर	१००)	स्थायी कोष
१९ ”	श्री रत्नचंद कालिया, कानपुर	१००)	”
२६ ”	श्री हरीचंद खन्ना, कानपुर	१००)	”
” ”	श्री रायबहादुर रामदेव चोखानी, कलकत्ता	१००)	नागरी-प्रचार
२९ ”	श्री डा० सच्चिदानंद सिन्हा, पटना	१००)	स्थायी कोष
३० ”	श्री कुँवर सुरेश सिंह कालाकाँकर	१००)	”
३० ”	राय कृष्णदासजी के द्वारा	१००)	कलाभवन
१ कार्तिक	श्री सेठ जुगलकिशोर बिड़ला, नई दिल्ली	२५०)	”
११ कार्तिक	श्री म० कृष्ण जी, बी० ए०, लाहौर	१००)	स्थायी कोष
१६ ,,	श्री प्रो० अमरनाथ झा, प्रयाग	५०)	श्रीरामप्रसाद-समादर कोष
१८ ,,	श्री सेठ पदमपत सिंहानिया, कानपुर	१००)	स्थायी कोष
४ मार्गशीर्ष	श्री कप्तान राव कृष्णपाल सिंह, आगरा	१००)	”
१२ ”	श्री सेठ चंपालाल बाँठिया, बीकानेर	१०१)	”
२२ ,,	श्री० एन० सी० मेहता, आई० सी० एस०, लखनऊ	२५)	श्रीरामप्रसाद-समादर कोष
१९ पौष	श्री महाराजकुमार डा० रघुबीरसिंह एम० ए०, डी० लिट्, सीतामऊ	४०१)	नागरीप्रचार
” ”	” ” ” ”	१००)	स्थायी कोष
२३ ”	श्री डा० अमूल्यचरण उकील, कलकत्ता	२५)	फुटकर
२४ ”	श्री लाला बनवारीलाल, काशी	१००)	नागरीप्रचार
१ माघ	श्री सतीशकुमार, बरेली	१०१)	”
” ”	श्री लाला लालचंद, लाहौर	१००)	स्थायी कोष
” ”	श्री शिवप्रसादजी गुप्त, काशी	१५१)	श्रीरामप्रसाद समादर कोष

प्राप्ति-तिथि	दाता का नाम	धन	प्रयोजन
७ माघ	श्री राय रामचरण अग्रवाल, प्रयाग	२५)	श्री रामप्रसाद समादरकोष
” ”	श्री राय रामकिशोर अग्रवाल, प्रयाग	३०)	”
९ ”	श्री प्रो० हरि रामचंद्र दिवेकर, उज्जैन	१००)	स्थायी कोष
११ ”	श्री साहु रामनारायण लाल, बरेली	१००)	”
१८ ”	श्री राय गोविंदचंद, काशी	१००)	श्री रामप्रसाद समादरकोष
३० ”	श्री भरतराम, दिल्ली	१००)	स्थायी कोष
५ फाल्गुन १५ चैत्र	श्री प्यारेलाल गर्ग, गोरखपुर	२००)	डाक्टर महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली
२० फाल्गुन	श्री रामेश्वरसहाय सिन्हा, काशी	१००)	स्थायी कोष
२७ फाल्गुन ११ चैत्र	म्युनिसिपलबोर्ड, बनारस	३६०)	पुस्तकालय
३ चैत्र,	श्रीमती रमाबाई जैन, डालमिया-नगर	१००)	स्थायी कोष
७ ”	श्री शुकदेवशरण केदारनाथ भार्गव, बंबई	१००)	स्थायी कोष
१९ ”	श्री प्रो० लालजीराम शुक्ल, काशी	१००)	”
२६ ”	श्री गोपीकृष्ण कानोडिया, कलकत्ता	२००)	कलाभवन
२६ ”	श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़, काशी	१००)	स्थायी कोष
		योग १०७७१)	

——

परिशिष्ट १०

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय-व्यय का लेखा

१ वैशाख १९७ से ३० चैत्र १९९८ तक

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
गत वर्ष की बचत	५७४७॥-)२		हिन्दी पुस्तकों की खोज, यु०प्रा०	१३०१।॥)।	
हिन्दी पुस्तकों की खोज, यु०प्रा०	२०२०)		साहित्य परिषद्	५७।=)॥	
साहित्य परिषद्	४८॥-)११		पदक तथा पुरस्कार	×	×
पदक तथा पुरस्कार	४७२)११		देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		३०७॥≡)॥
देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		१०८१॥≡)	बालाबक्स रा० चा० पु० मा०		१८४५=)।
बालाबक्स रा० चा० पु० मा०		५१० ॥)	सूर्यकुमारी पुस्तकमाला		२८८०।≡)१०½
सूर्यकुमारी पुस्तकमाला		१५६६।॥)॥	देव पुरस्कार ग्रंथावली		१४१।=)।
देव पुरस्कार ग्रंथावली		६१६॥-)॥	रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला		१।॥=)
रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला		१०००)			
महेन्दुलाल गर्ग विज्ञान ग्रं०मा०		२००)			

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
मालती माला		६१।।।-)।।	मालती माला		५-)।।
पुस्तकालय	२४३१।)११		पुस्तकालय	३०७६।।।)७½	
कलाभवन	२३८३=)।।।	३८।।≡)।।=	कलाभवन	२७६५।-)।।	
हिन्दी संकेत लिपि विद्यालय	६३।।।)२	१≡)	हिन्दी संकेत लिपि विद्यालय	६९।≡)।।	७।-)
नागरी प्रचार	७४१-)		नागरी प्रचार	६२३।।।)।	
सभासदों का चन्दा	२२४१।।=)।		पत्रिका तथा पुस्तकों का प्रकाशन		५८२१-)।।।
पुस्तकों की बिक्री		६८६२।।-)।।।	कार्यालय का वेतन	२६५४।-)।।।	
सूरसागर		१२३।-)	सूरसागर		२।-)।।।
रूपनिघंटु		१०।)।	रूपनिघंटु		३१।≡)।।।
हरिश्चन्द्र ग्रंथावली		१०४)।।।	हरिश्चन्द्र ग्रंथावली	×	×
फुटकर	२४७।।।-)१०		फुटकर	९१०।।)।	
विशेष आय	५४६)।		डाक व्यय	७६२।)।	
स्थायी कोष	३४०७।=)१०		स्थायी कोष	८५७५।।।)११	
कवियों के चित्र तथा परिचय	×	×	कवियों के चित्र तथा परिचय	११।≡)।।	
स्थायी ग्राहक		४)	रामप्रसाद समादर कोष	९१२।।।)।।।	
अमानत	१९९३।।।-)१०½		भवन निर्माण कोष	१४४।=)	

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
रामप्रसाद समादर कोष	४८६=)१		कर्मचारियो की जमानत	२२=)	१२॥≡)
भवन निर्माण कोष	४७०॥=)॥।		हिन्दी पुस्तको की खोज, दिल्ली		
पुस्तकालय अमानत	२१५)				
कर्मचारियो का प्रा० फंड	३३१।≡)४				
सभा की स्वर्ण-जयन्ती	४)				
	२३८५८।-)६½	१२५२६।)४½		१७९१९≡)६½	११०७०॥=)½½
				२८९९०=)२	
			बचत	७३६४॥।)	
	३६३८४॥=)२			३६३८४॥=)२	

बचत का व्योरा—

९१।।।=)।। रोकड़ सभा में
४३५।-)५ इलाहाबाद बंक चलता खाता नं० १
३६।।)११ ,, ,, ,, ,, नं० २
१०५-)५ ,, ,, सेविंग बंक प्रकाशन
५६)।। ,, ,, ,, ,, पुस्तकालय-अमानत
८५) ,, ,, ,, ,, शिवलाल मेहरोत्रा निधि
२६७।।)। पो० आ० ,, ,, सभा
१४२७।।।-)१ ,, ,, ,, ,, चैरिटेबुल ए० ट्रस्ट फंड
४०४।=)११ ,, ,, ,, ,, कलाभवन
३≡)२ ,, ,, ,, ,, पुस्तकालय
८७४।-)= ,, ,, ,, ,, प्राविडेंड फंड
३७९।।।-)।। ,, ,, ,, ,, भवननिर्माण कोष
३६७।।।=)।।। ,, ,, ,, ,, स्थायी कोष
।।-)४ ,, ,, ,, ,, खोज
१९।।।=)। ,, ,, ,, ,, संकेत लिपि
६८) ,, ,, ,, ,, कवियों के चित्र, परिचय
९९८) ,, ,, ,, ,, श्रीमती रुक्मिणी तिवारी ग्रंथमाला
८३५।।)१ बनारस बंक ,, ,, जमानत
७००) ,, ,, ,, ,, स्थायी कोष
१९०।।)। सेंट्रल बंक ,, ,, देव पुरस्कार ग्रंथावली
२१७।) ,, ,, ,, ,, जमानत
२००) पो० आ० ,, ,, डा० महेंदुलाल गर्ग वि० ग्रं०

७३६४।।)

खातों का ब्योरा

…१९६७ का व्यय	सं० १९९७ तक की बचत	स… का
।)६	×	१२
×	१२५१।=)५	
।≡)६	७७२४।।-)१०½	
=)।	१८९।।।-)४	
।≡)१०½	४३८०)११½	
=)।	६८७।≡)६	
)	६६८=)	
×	२००)	
।।)११	१०६८।।।)१०	
=)६	६३।)६	
।।-)	×	९
×	८५)११	
।)६	×	१
।।।)	×	६
	५)२	
=)	३७६।।-)१½	
×	४)	
×	१७७)	
×	६७५४।≡)६	
	५५२।=)।	
×	८८८।।-)६	
४।।=)७½	×	
=)२		
।।।)		
४।।।=)२	२६२३६।।≡)८½	

परिशिष्ट १२

ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, यू० पी०, की विज्ञप्ति

Reproduced from U P Government Gazette, Pt 1, page 189 dated 12th April, 1941.

Education Department

MISCELLANEOUS.

9th April, 1941

IN THE MATTER OF THE NAGRI PRACHARINI SABHA ENDOWMENT TRUST FUND, BENARES

No A-99/XV-336-39 - Whereas appplication has been made to the Provincial Government by the Secretary, Nagri Pracharini Sabha, Benares, being the person acting in the administration of the trust specified in the heading, that the additional funds consisting of the securities for money specified in the margin be vested under the designation of the said trust

3½ percent Government Promissory notes of 1865—

(1)	No S P C 88-A 1865 for Rs	400
(2)	No S P C 100-A/1865 for Rs	500
(3)	No S P C. 82-A/1865 for Rs	2,100
	Total Rs,	3,000

in the Treasurer of Charitable Endowments, United Provinces, to be applied in trust upon the terms contained in Appendix C, mentioned in paragraph 4 of the scheme of administration of the trust issued with this department notification no 4139 XV-336-39, dated the 5th January, 1940

It is hereby ordered under sub-section (1) of section (4) of the Charitable Endowments Act, 1890 (VI of 1890), that the securities hereinbefore mentioned be, and they hereby are, vested in the said Treasurer of Charitable Endowments upon the terms aforesaid

N C Mehta, Secretary

परिशिष्ट १३

ट्रेजरर, चैरिटेबल एन्डाउमेंट्स, यू० पी० के पास जमा किया हुआ सभा का धन

The total value of securities vested under the designation of the Nagri Pracharini Sabha Endowment Trust Fund in the Treasurer of Charitable Endowments, U P

Purpose	Government Order	Amount of Endowment	
		Rs	
1 Prizes and Medals	No 1139/XV-336-39, dated 5th January, 1940	12,900 -	
2. Organization of lectures, literary entertainments, etc	do	1,300 -	
3 Publication Fund (Barahat Bala-baksha)	do	12,000 -	
4 Permanent Fund	(1) do	(1) 5,800 -	13,000
	(2) No A-2399 XV-336-39, dated 3rd July, 1940	(2) 4,200 -	
	(3) A-997/XV-336-39, dated 9th April, 1941	(3) 3,000 -	

Total Rs 39,200/-

परिशिष्ट १४

इंपीरियल बैंक के शेयर

Register	Certificate No	Share Nos	Date	Amount of each share	Amount paid up for each share	Total amount paid up	Remarks
				Rs	Rs	Rs	
Bombay	P 520	180975 to 180988 [Fourteen shares]	29-12-1921	500	125	1,750	
Do	929	52988 to 52994 [Seven shares]	12-1-1922	500	500	3,500	

Total Rs 5,250

परिशिष्ट १५

स्थायी कोष में जमा धन

Permanent Fund

(1) Government Securities	—	Rs 13,000/-
(2) Benares Bank	—	700/-
(3) P O Savings Bank	—	367/14/9
	Total Rs	14,067/14/9

संवत् १९९७ के अंत में प्रांत-क्रम से प्रत्येक प्रांत में सभा के सभासदों की संख्या

कश्मीर	२	मध्य भारत	५७
दिल्ली	२३	मैसूर	३
पंजाब	३६	राजपूताना	१६९
बंगाल	६५	संयुक्त प्रांत	५२९
बंबई	५५	सिंध	२
बिहारोत्कल	४६	हैदराबाद	५
मद्रास	४	विदेश	१३
मध्यप्रदेश बरार	२८		१०३७*

इनमें महिला सभासदों की संख्या ४७ है।

---

* विवरण के प्रथम पृष्ठ पर सभासदों की कुल संख्या १०३२ दी गई है। परंतु सूची में १०३७ नाम हैं, और यही संख्या ठीक समझनी चाहिए। १०३२ सं० भूल से छप गई है।

सभा की नई प्रकाशित पुस्तकें

भारतीय मूर्तिकला

(लेखक—श्री राय कृष्णदास)

इस पुस्तक मे मोहे जो दड़ो के समय से लेकर आज तक की भारतीय मूर्तिकला का वर्णन बड़ी सरल भाषा मे किया गया है। साथ ही इस कला के सौंदर्य की विशेषताएँ एव तात्त्विक व्याख्या भी दी गई है। अपने ढंग की हिंदी ही मे नहीं समस्त भारतीय भाषाओ मे यह पहली पुस्तक है। पृष्ठ-संख्या २३९+१३, ३९ चित्र तथा मैटर के साथ अनेक रेखा-आकृतियाँ। मूल्य १), विशिष्ट संस्करण १।)।

भारत की चित्रकला

(लेखक—श्री राय कृष्णदास)

यह तथा भारतीय मूर्तिकला सबद्ध प्रकाशन है। इसमे अपने देश की महान् चित्रकला का अथ मे इति तक का इतिहास, सौंदर्य-निरीक्षण एवं उसके मर्म की बाते तो हैं ही, साथ ही लेखक ने लगभग ३० बरस के अपने गभीर अध्ययन का सारांश भी दिया है जिसमे भारतीय चित्र-कला के इतिहास-विषयक कई महत्त्वपूर्ण नई बातो का उद्‌घाटन हुआ है और उन पर नया प्रकाश पड़ा है। यह भी अपने ढग की हिंदी ही मे नही समस्त भारतीय भाषाओ मे पहली पुस्तक है। पृष्ठसंख्या १८०+१६, चित्रसख्या २७ (सादे)+१ (रंगीन) मैटर के साथ अनेक रेखा-आकृतियाँ। मूल्य १), विशिष्ट सस्करण १।)।

बाल-मनोविज्ञान

(लेखक—प्रो० लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०)

आजकल बालको की शिक्षा और सुधार के लिये बाल-मनोविज्ञान का ज्ञान कितना आवश्यक है यह बतलाने की आवश्यकता नही। ठोंक-पीटकर बालको को पढ़ाने और दुरुस्त करने का समय अब बहुत पीछे चला गया। अब सभी बुद्धिमान् लोग समझने लगे है कि बालको को ठोकने-पीटने के बदले हमे उनकी स्वाभाविक प्रवृत्तियो का पता लगाना चाहिए। उन्ही प्रवृत्तियो का अनुसरण करके हम उन्हे बड़े से बड़ा आदमी बना सकते हैं। बाल-मनोविज्ञान मे बड़ी सरल और सुबोध भाषा मे लेखक ने बालको की प्रवृत्तियो का विश्लेषण करके उन्हे समझाया है। पृष्ठसख्या २६०, मूल्य १।)

भाषा का प्रश्न

(लेखक--श्री चंद्रबली पांडे, एम० ए०)

आज-कल हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी के झगड़े के कारण भाषा की समस्या बहुत ही जटिल हो गई है। किंतु लेखक ने कई लेख लिखकर इस पुस्तक में इस प्रश्न को बहुत अच्छी तरह सुलझाया है। पृष्ठसंख्या १८८; मूल्य ॥।)

मुगल बादशाहों की हिंदी

(लेखक—श्री चंद्रबली पांडे, एम० ए०)

इस पुस्तक में लेखक ने सप्रमाण सिद्ध किया है कि मुसलमान बादशाह हिंदी से प्रेम करते थे और हिंदी में रचना भी करते थे। पृ० सं० १०४, मूल्य ।।)

मुल्क की जबान और फाजिल मुसलमान (उर्दू में)

(संपादक—शाह साहब नासिरुद्दीनपुरी)

इस पुस्तक में नागरी लिपि और हिंदी भाषा के संबंध में मुसलमान विद्वानों की सम्मतियाँ संगृहीत की गई हैं। मूल्य ।=)

रघुनाथरूपक गीताँ रो

(संपादक—श्री महताब चंद खारैड़, विशारद)

डिंगल-भाषा के महाकवि मंछ (मनसाराम) का यह प्रसिद्ध ग्रंथ १८८३ वि० में लिखा गया था। इसमें रामचंद्रजी की कथा का बड़ा कवित्वपूर्ण वर्णन है और यह डिंगल-भाषा का अत्यंत प्रामाणिक रीतिग्रंथ भी है। खारैड जी ने डिंगल छंदों का हिंदी में शब्दार्थ और भावार्थ देकर इस ग्रंथ का बड़ी योग्यता के साथ संपादन किया है। आरंभ में पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण की लिखी हुई महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पृष्ठ-संख्या ३६०, सजिल्द, मूल्य २)।

मोहें जो दड़ो

(लेखक—श्री सतीशचंद्र काला, एम० ए०)

मोहें जो दड़ो अर्थात् 'मुर्दों का टीला' सिंधु प्रांत में एक बहुत प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ की खोदाई में मिली हुई वस्तुओं से भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है जिसका वर्णन इस पुस्तक में है। पृ० सं० २००, मू० २)

मुद्रक—श्री अपूर्वकृष्ण बसु, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस-ब्रांच।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

(स्थापित सं० १९५० वि०)



उनचासवाँ वार्षिक विवरण

सं० १९९८

विषय-सूची

पृष्ठ

वार्षिक विवरण १-६२

परिशिष्ट

१—पुस्तक दाताओं की नामावली ६३

२—पुस्तकालय में आनेवाली पत्र-पत्रिकाओं की सूची ... ६६

३—खोज विभाग द्वारा प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों की सूची ७०

४—सभा के संस्थापक ७१

५—सभा के संरक्षक ७१

६—सभा से संबद्ध संस्थाएँ ७२

७—स्थायी निधियों का विवरण ७३

८—सं० १९९८ में सभा को २५) या अधिक दान देनेवाले सज्जनों की नामावली ७७

९—सं० १९९८ के आय-व्यय का लेखा ८१

१०—आरंभ से स० १९९८ तक सभा के खातों का लेखा ... ८४

११—ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, यू० पी० के पास जमा किया हुआ सभा का धन ८५

१२—इंपीरियल बैंक के हिस्से ८५

१३—स्थायी कोष में जमा धन ८५

१४—सभासदों की नामावली ८६

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

का

उनचासवाँ वार्षिक विवरण

परिशिष्ट १४ में निम्नोक्त सभासदों के पहले उनकी सभासद-श्रेणी का उल्लेख छूट गया है। पाठक कृपया सुधार लें।

पृष्ठ	नाम	श्रेणी
१२५	श्री अमरनाथ झा	मान्य
१३५	श्री केशवप्रसाद मिश्र	मान्य
१४०	श्री राय शंभुप्रसाद	स्थायी
१४८	श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल (हजारी साहब)	स्थायी
१५०	डा० आनंद के० कुमारस्वामी	मान्य

ना. प्रेस, काशी.

का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष कुल १७७ सभासदों की वृद्धि हुई। आशा है कि सदस्य-संख्या में वृद्धि का जो क्रम पिछले कई वर्षों से चल रहा है, वह कृपालु सज्जनों के प्रयत्न से वर्षानुवर्ष चलता रहेगा।

इस वर्ष सभा को अपने जिन १५ सदस्यों का वियोग-दुःख सहन करना पड़ा, उनमें सभा के मान्य सभासद सेठ जमनालाल बजाज, विशिष्ट सभासद वर्द्धवान के महाराजाधिराज सर विजयचद महताब बहादुर, स्थायी सभासद श्री मदनमोहन जैन, प० चेत्रपाल शर्मा तथा प० जगन्नाथप्रसाद शर्मा वाजपेयी के निधन से सभा को विशेष क्षति उठानी पड़ी। सभा को इन सभी स्वर्गगत सभासदों की मृत्यु का हार्दिक दुःख है और वह उनके परिजनों के प्रति आंतरिक समवेदना प्रकट करती है एव ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह मृतात्माओं को सद्गति दे।

३—पदाधिकारी तथा प्रबंध समिति के सदस्य

२१ वैशाख १९९८ को सभा के ४८वें वार्षिक अधिवेशन में इस वर्ष के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए थे—

सभापति—रायबहादुर पं० कमलाकर द्विवेदी, एम० ए०।

उपसभापति—(१) प० रामनारायण मिश्र, बी० ए०, पी० ई० एस० (अवसर-प्राप्त)।

„ (२) पं० रमेशदत्त पांडेय, बी० ए०।

प्रधान मंत्री—पं० लल्लीप्रसाद पांडेय।

साहित्य मन्त्री—पं० पद्मनारायण आचार्य, एम० ए०।

अर्थ मन्त्री—बाबू जीवनदास।

उक्त वार्षिक अधिवेशन में प्रबंध समिति के निम्नलिखित सदस्य चुने गए थे—

सं० १९९८ से सं० २००० तक के लिये

बाबू कृष्णदेवप्रसाद गौड़, काशी। श्री राय कृष्णदास, काशी। पं० वंशगोपाल झिंगरन, काशी। पं० विद्याभूषण मिश्र, काशी। श्रीमती कमलाकुमारी, काशी। डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, लखनऊ। प० अयोध्यानाथ शर्मा, कानपुर। प० रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, अजमेर। पुरोहित हरिनारायण शर्मा, जयपुर। स्वामी हरिनामदास उदासीन, सक्खर (सिंध)। पं० दशरथ ओझा, नई दिल्ली। श्री सत्यनारायण लोया, हैदराबाद (दक्षिण)। श्री जी० सच्चिदानंद, मैसूर।

सं० १९९८ से सं० १९९९ तक के लिये

बाबू राधेकृष्णदास, काशी । श्री सहदेव सिंह ऐडवोकेट, काशी । श्री राय सत्यव्रत, काशी । श्री कृष्णानंद, काशी । पं० चंद्रबली पांडे, काशी । रायबहादुर श्री रामदेव चोखानी, कलकत्ता । डा० सच्चिदानंद सिनहा, पटना । पं० जगद्धर शर्मा गुलेरी, लायलपुर । पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी प्रयाग । पं० भोलानाथ शर्मा, बरेली । श्री अगरचंद नाहटा, सिलहट । बाबू मूलचंद अग्रवाल, कलकत्ता । बाबू लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु', पूर्णियाँ ।

सं० १९९८ के लिये

बाबू मुरारीलाल केडिया, काशी । पं० केशवप्रसाद मिश्र, काशी । बाबू ठाकुरदास, ऐडवोकेट, काशी । रायसाहब ठाकुर शिवकुमार सिंह, काशी । बाबू ब्रजरत्नदास, ऐडवोकेट, काशी । श्री दत्तोवामन पोतदार, पूना । श्री व्योहार राजेंद्रसिंह, जबलपुर । श्री सरदार माधवराव विनायकराव किबे, इंदौर । पं० श्यामसुंदर उपाध्याय, बलिया । पं० श्रीचंद्र शर्मा, जम्मू । डा० हीरानंद शास्त्री, बड़ोदा । श्री ना० नागप्पा, मैसूर । श्री पी० बी० आचार्य, मद्रास ।

आय-व्यय निरीक्षक—बाबू गुलाबदास नागर ।

किंतु गत वर्ष चुनाव के कुछ ही दिनों बाद श्री वंशगोपाल झिंगरन अपने कार्यवश काशी से बाहर चले गये, फलतः नियम ५१ के अनुसार वे समिति की सदस्यता से पृथक् हो गए । साधारण सभा के २५ ज्येष्ठ के अधिवेशन में उनके स्थान पर पं० रामबहोरी शुक्ल सर्व सम्मति से प्रबंध समिति के सदस्य चुने गए ।

४—आर्यभाषा-पुस्तकालय

गत वर्ष पुस्तकालय की आय २४३१।)११ थी और व्यय ३०७६।।।)७½ था । इस वर्ष ३२५१≡)। आय हुई जिसमें १०००) प्रांतीय सरकार से, ३६०) म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस से, १६९१≡)। सहायकों के वार्षिक चंदे तथा फुटकर दान से और एक एक सौ रुपया विशेष दान श्री सेठ लक्ष्मीनिवास बिड़ला तथा श्री सेठ कृष्णकुमार बिड़ला से प्राप्त हुआ । इस वर्ष व्यय ३३४६।।≡)।।।

हुआ, जिसमें १३०२।≈)।।। पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में, १३५१।≈)। वेतन में, २१६।≈) रोशनी में, ७२) आलमारी आदि बनवाने में, १७६।≡)। छपाई मे, ३१।।।≡)।।।≈ जिल्दबंदी के सामान में लगा तथा १९६)।।≈ फुटकर कामों में व्यय हुआ।

गत वर्ष पुस्तकालय के सहायकों की संख्या ११७ थी, इस वर्ष १४२ रही। इस वर्ष पुस्तकालय के नियम १४ के अनुसार बहुत से सहायकों के नाम सहायक श्रेणी से पृथक् करने पड़े, जिसका सभा को खेद है।

गत वर्ष १८४ पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं। इस वर्ष ६१ पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का आना बंद हो गया और १३ नई पत्र पत्रिकाएँ आने लगीं। इस प्रकार इस वर्ष पुस्तकालय में कुल १३६ पत्र पत्रिकाएँ आती रहीं।

गत वर्ष पुस्तकालय के हिंदी विभाग में १५९०० मुद्रित पुस्तकें थीं। इस वर्ष ४०५ नई पुस्तकें आई। अब इस विभाग में मुद्रित पुस्तकों की संख्या १६३०५ है।

गत वर्ष पुस्तकालय के हस्तलिखित-विभाग मे ८३५ पुस्तकें थीं। इस वर्ष १० पुस्तकें आई। अब ८४५ हस्तलिखित पुस्तके हैं।

द्विवेदी-संग्रह तथा रत्नाकर-संग्रह मे पत्र पत्रिकाओं के अतिरिक्त क्रमशः २७७३ तथा ११८९ पुस्तकें है।

इस वर्ष पंडित रामनारायण मिश्र जी ने कृपापूर्वक अपनी संगृहीत पुस्तकों का संपूर्ण संग्रह द्विवेदी और रत्नाकर संग्रह की भाँति सुरक्षित रखने तथा उपयोग मे लाने के लिये सभा को दे दिया है। इसके लिये सभा उनकी विशेष कृतज्ञ है।

गत वर्ष अँगरेजी विभाग में २४१५ पुस्तकें थीं। इस वर्ष ५१ नवीन पुस्तके आई। अब इस विभाग मे २४६६ पुस्तकें है। इनके अतिरिक्त संस्कृत, मराठी, बँगला, गुजराती, उर्दू, गुरुमुखी आदि की भी अनेक पुस्तकें है।

इस वर्ष पटियाला दरबार की कृपा से 'गुरु शब्द रत्नाकर' नामक (गुरुमुखी का विश्वकोश) एक बहुमूल्य ग्रंथ प्राप्त हुआ है। इसके लिये सभा उक्त दरबार की कृतज्ञ है।

गत वर्ष सभा ने पुस्तकालय की दाशमिक-वर्गीकृत नवीन सूची

छपने के लिये तैयार कर ली थी। परंतु अनेक कठिनाइयों के कारण वह छापी न जा सकी। इस वर्ष की नवीन प्राप्त पुस्तकों को उस सूची मे मिला कर उसे पुनः छपने के लिये तैयार करना है।

इसके अतिरिक्त अँगरेजी, हस्तलिखित, बँगला आदि पुस्तकों की सूची भी उक्त पद्धति के अनुसार तैयार करनी है।

वस्तुत: वर्गीकरण और संख्यांकन का कार्य अधिक व्यय और श्रम-साध्य है। इसे समय से पूर्ण करने के लिये धन की विशेष आवश्यकता है। पुस्तकालय का कार्य सपूर्ण रूप से नवीन पद्धति के अनुसार चलाने के लिये विशेष प्रकार के उपकरणों की भी आवश्यकता है जिसके लिये धन अपेक्षित है। पुस्तकालय में स्थान की सकीर्णता दिनों दिन बढती जा रही है। सभा इस ओर श्रीमानों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करते हुए आशा करती है कि उनकी कृपा से स्थान की कमी बहुत शीघ्र पूरी हो जायगी और पुस्तकालय सुचारु रूप से जनता की सेवा करने में समर्थ होगा।

इस वर्ष पुस्तकालय २९४ दिन और वाचनालय ३४१ दिन खुला रहा। नित्य पढनेवालों की औसत संख्या इस वर्ष १२० रही। सहायकों ने ४००० पुस्तकें पढीं।

पिछले साल की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय के अन्वेषक विद्यार्थियों ने पुस्तकालय से समुचित लाभ उठाया।

जिन व्यक्तियों तथा सस्थाओं ने इस वर्ष पुस्तकालय के लिये पुस्तकें तथा पत्र पत्रिकाएँ आदि दीं, उनमें इडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, दरबार साहित्य कमेटी, अमृतसर, श्रीमान् राजा सत्यानंद जी और श्री कमलनाथ अग्रवाल, काशी के नाम विशेष उल्लेखनीय है। सभा इन सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस वर्ष श्री पं० श्रीशचद्र शर्मा पुस्तकालय के निरीक्षक रहे।

५— हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज

इस वर्ष खोज का कार्य मथुरा तथा बलिया जिलों एव प्रयाग तथा काशी नगरों मे होता रहा। प्रथमोक्त दो जिलों में श्री दौलतराम जुयाल ने तथा उत्तरोक्त नगरों में श्री महेशचद्र गर्ग ने कार्य किया। प्रयाग का कार्य प० देवीदत्त शुक्ल जी की तथा बलिया का कार्य

पं० परशुराम चतुर्वेदी जी की देखरेख में हुआ। उक्त सज्जनों ने खोज के कार्य को सुचारु रूप से चलाने में जो अमूल्य सहायता प्रदान की है, उसके लिये सभा उनकी चिर-ऋणी रहेगी। आप लोगों के अथक परिश्रम तथा सहयोग से ही खोज का कार्य इतनी सरलता तथा शीघ्रता के साथ समाप्त हो सका है।

इस वर्ष काशी तथा प्रयाग नगरों में १३० ग्रंथों के विवरण लिए गए जिनमें १० के रचयिता अज्ञात हैं, १२ संग्रह-ग्रंथ हैं, ९ ऐसे है जो दो बार प्राप्त हुए हैं और शेष ९९ विभिन्न ग्रंथकारों की कृतियाँ हैं। मथुरा तथा बलिया में ११३ ग्रंथों के विवरण लिए गए। इन ग्रंथों की काल-विभाग के अनुसार तालिका नीचे दी जाती है :—

शताब्दी	१५वीं	१६वीं	१७वीं	१८वीं	१९वीं	अज्ञात	योग
ग्रंथ संख्या (काशी और प्रयाग)	×	२	१०	३	२५	९०	१३०
ग्रंथ संख्या (मथुरा और बलिया)	२	१	६	९	३	९२	११३

ये ग्रंथ विषयों के अनुसार इस प्रकार हैं—

(क) काशी तथा प्रयाग के.—

(१) भक्ति—७८; (२) धर्म उपदेश—५; (३) जीवनी-वार्त्ता—९; (४) रीति—१२; (५) पिंगल—२; (६) प्रेमकाव्य—२; (७) गाथा तथा प्रशस्ति काव्य—३; (८) नीति और राजनीति—४; (९) संगीत—१; (१०) शालिहोत्र—१; (११) ज्योतिष—१; (१२) कोष—१; (१३) सूफी काव्य—७; (१४) फुटकर—४। योग १३०

सूचना:—उपरिलिखित तालिका में "भक्तों की वार्त्ता" तथा अन्य जीवन-संबंधी रचनाएँ 'जीवनी-वार्त्ता' के अंतर्गत रखी गई हैं। काव्यों के भी दो प्रकार के संग्रह प्राप्त हुए हैं। इनमें से भक्ति संबंधी 'भक्ति' के अंतर्गत तथा शुद्ध काव्य संबंधी 'फुटकर' के अंतर्गत रखे गए है। समस्त ग्रंथों में वैष्णव भक्तों की पदावलियों की संख्या सबसे

अधिक है जिनमें से कुछ, जैसे 'उत्सव माला', 'नित्त कीर्त्तन' विभिन्न कवियों की रचनाओं से संकलित किये गए पदों के संग्रह हैं, और कुछ, जैसे 'व्यास वानी' कवि विशेष की रचनाओं के संग्रह हैं। निम्न-लिखित ग्रंथ अधिक महत्वपूर्ण है :—

नित्तकीर्त्तन, कीर्त्तन के पद, उत्सवमाला, व्यास वानी, गदाधर भट्ट की वानी, गोविंद प्रभु की बानी, केवलराम वृंदावन जीवन की पदावली, गोविंद स्वामी की पदावली, सूरसागर, हरिदास की वानी, भागवतदास कृत रामकठाभरण, जगराम जैन का पद संग्रह, बलिहारी का पद-संग्रह, हित धृंदावन का पद संग्रह, नागरीदास के पद, हित भजनदास की बानी और वल्लभ रसिक की वानी ।

कहीं कहीं किसी ग्रंथ को 'रीति' अथवा 'भक्ति' के अंतर्गत रखते समय भी विचार करना पड़ा है। यह कठिनाई श्रीकृष्ण के चरित्र की व्यापकता के कारण उपस्थित हुई है। उनके चरित्र में शृंगार और भक्ति दोनों का समाहार मिलता है। उदाहरणार्थ दिनेश पाठक ने यद्यपि अपनी 'रसिक संजीवनी' को अपने युगल-उपास्य का गुणगान कहा है—

"श्रीराधा राधारवन के किये यथा गुन गान।
भई रसिक संजीवनी हरि भगतन की खान॥"

तथापि उनके ग्रंथ का विषय 'रीति' ही है। इसी प्रकार भागवतदास के 'रामरसायन' और सूर के 'दृष्टिकूट' को 'पिंगल' तथा 'रीति' के अंतर्गत रखा गया है।

शेष ग्रंथ 'फुटकर' के अंतर्गत रखे गए हैं। इनमें साधारण तथा महत्त्वपूर्ण दोनों कोटि के ग्रंथ आ गए हैं। इस श्रेणी के अंतर्गत वही महत्त्वपूर्ण ग्रंथ समाविष्ट हुए है जिनका स्वतंत्र वर्गीकरण कठिन जान पड़ा है, जैसे नरहरि के कवित्त।

दखिनी के सूफी ग्रंथों को एक अलग श्रेणी में रखा गया है, क्योंकि विषय और भाषा, अंतर और वाह्य, दोनों दृष्टियों से इनकी स्वतंत्र सत्ता है।

प्राय. ये सभी अमूल्य तथा अप्राप्य ग्रंथ हैं। इनमें से कुछ के तो रचयिता ऐसे हैं जो खोज की दृष्टि से बिलकुल नवीन हैं और जिनका काव्य भी उच्च कोटि का है, जैसे भागवतदास, केवलराम

वृंदावन जीवन, बलिहारी, भजनदास तथा जगराम जैन। काव्य की दृष्टि से भी प्रथम तीन का स्थान ऊँचा है।

अन्य काव्य ग्रंथों में भाषा दशम स्कंध (नंददास); कबीर की माझयौ; दादू की बानी; मंडन कृत रस-रत्नावली; भागवतदास कृत भागवत चरित्र, सूर्यपुराण तथा तत्वबोध; गुमान मिश्र कृत अलंकार-दर्पण; मनीराम कृत पातशाही कवित्त, जैत कृत मुअज्जमशाह के कवित्त, नरहरि के कवित्त; दिलेराम कृत अलंकार-दीपक; जीवनघन कृत सुरतांत लीला; मुरलीधर मिश्र कृत शृंगारसार और महाराज रामसिंह कृत रस-शिरोमनि भी साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

इस बार खोज में काव्यों के अतिरिक्त गद्य के निम्नलिखित महत्वपूर्ण ग्रंथ भी प्राप्त हुए हैं—

(१) वार्त्ता (वल्लभाचार्य का वैष्णवों के आचार-विचारों पर प्रवचन)।
(२) चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता (दो प्रतियां)।
(३) लल्लूलाल कृत राजनीति।
(४) हितोपदेश (सं १८६८ वि० का ब्रजभाषा गद्य)।
(५) नारदनीति (,, ,, ,,)।
(६) यदुनाथ शुक्ल कृत पचांग दर्शन।

प्रयाग विश्वविद्यालय के डाक्टर एम० एच० सैयद के यहाँ से दखिनी भाषा के ग्रंथों के, जो सब सूफियों की कृतियाँ हैं, विवरण लिए गए हैं। दखिनी भाषा का अर्थ प्राय: पुरानी उर्दू समझा जाता है। विवरण-प्राप्त ग्रंथों मे प्राचीन उदाहरण सामने न आ सकने के कारण उक्त अर्थ की यथार्थता पर विचार करने का अवसर न मिल सका, किंतु प्राप्त सामग्री के आधार पर विचार करने पर यही निश्चय दृढ़ होता है कि दखिनी भाषा अपने मूल और प्राचीन रूप में दिल्ली, अंबाला, मेरठ, रामपुर, आदि क्षेत्रों में बोली जानेवाली खड़ी बोली ही है। दक्षिण के तत्कालीन मुसलमान राजवंश का अरबी-फारसी के अतिरिक्त यदि किसी देश भाषा से भी परिचय था तो वह खड़ी बोली से ही थी। इस कारण राजवर्ग तथा शिष्ट समुदाय का उससे अपना संबध स्थापित करने के लिये उत्सुक होना सर्वथा स्वाभाविक था। इस प्रकार अरबी और फारसी मे दीक्षित

होकर, दक्षिण के नवीन एवं सर्वथा भिन्न वातावरण में पलकर, अनेक आंतरिक एवं बाह्य प्रभावों से रंजित होकर खड़ी बोली 'दखिनी' के नाम से अभिहित हुई। दखिनी और खड़ी बोली में मूलतः कोई भेद नहीं है।

(ख) मथुरा तथा बलिया के :—

(१) भक्ति—११; (२) अध्यात्म तथा दर्शन—५०; (३) धार्मिक—२; (४) पुराण—४; (५) पौराणिक आख्यान—४; (६) कथा-कहानी—१; (७) नीति और उपदेश—२; (८) काव्य—८; (९) शृंगार—७; (१०) रीति—२; (११) संगीत—१; (१२) जीवन-चरित्र—२; (१३) स्तोत्र तथा माहात्म्य—९; (१४) स्वरोदय—३; (१५) वैद्यक—१; (१६) शालिहोत्र—३; (१७) विविध—३; योग—११३

इनमे से ८९ ग्रंथ ऐसे हैं जिनका अब तक कोई विवरण नहीं लिया गया था और तीस ग्रंथ ऐसे है जो विशेष महत्वपूर्ण हैं। विवरण लिए गए ग्रथों में अधिकांश अध्यात्म-विषयक हैं, जिनके रचयिताओं में बावरी साहिबा, बीरू साहब, बुल्ला साहब, गुलाल साहब, भीखा साहब, देवकीनदन साहब, शिवनारायण स्वामी, गोसाईं धरनीदास तथा बाबा नवनिधिदास विशेष उल्लेख-योग्य हैं। बावरी साहिबा से लेकर देवकीनदन साहब तक के संत एक ही परंपरा के हैं, जिनका शृंखलाबद्ध परिचय प्राप्त हुआ है। संत साहित्य में इनकी कृतियाँ विशेष महत्वपूर्ण हैं। शिवनारायण स्वामी तथा उनके गुरु दुखहरण जी का विस्तृत वृत्त प्राप्त हुआ है। बलिया के पं० परशुराम जी चतुर्वेदी, एम० ए०, एल-एल० बी० के अनुशीलन द्वारा गोसाईं धरनीदास जी के विषय में बहुत सी ज्ञातव्य बातें प्रकट हुई हैं। ये उच्च कोटि के संत जान पड़ते हैं। बाबा नवनिधिदास का भी जीवन वृत्त ज्ञात हुआ है। इनकी 'मंगलगीता' उल्लेखनीय है। अन्य प्रकार की रचनाओं मे निम्नलिखित महत्वपूर्ण हैं—

(१) सेवकराम कृत बाग-विलास—ऐतिहासिक रचना, जो काशी-नरेश के वंश से संबध रखती है।

(२) नवाब ईसवी खाँ कृत रसचंद्रिका—सं० १८०९ की बिहारी-सत-

सई की उत्तम टीका जिसमें दोहे अकारादि क्रम से रखे गए हैं।

(३) भृगुपति कृत सुदामा-चरित्र—निर्माणकाल अज्ञात है, लिपि-काल सं० १८०३। खड़ी बोली मे की गई रचना।

(४) गद्य के तीन ग्रंथ—(१) नासियत नामा (२) सर्व सिद्धांत श्रीराम मोक्ष परिचय तथा (३) बैताल पचीसी—यद्यपि लेखक ने इसकी भाषा को उर्दू बोली कहा है, तथापि वह वास्तव में हिंदी ही है। इसे देखने पर यह अनुमान किया जा सकता है कि आधुनिक उर्दू देश-भाषा के प्रकृत स्वरूप से कितनी दूर जा पड़ी है।

जिन महानुभावों ने इस वर्ष सभा को हस्तलिखित ग्रंथ प्रदान किए हैं, सभा उन सबका भूरि भूरि धन्यवाद करती है। कुछ लोगों से अच्छे ग्रथ बदले में धन देकर प्राप्त किए जा सकते हैं। किंतु सभा के पास इस काम के लिये युक्त प्रांतीय सरकार की दी हुई सहायता के अतिरिक्त कोई निधि नहीं है। यदि देश के धनी-मानी और ज्ञान-भंडार की रक्षा की आवश्यकता तथा उपयोगिता समझनेवाले विद्या-प्रेमी सज्जन इस काम में सभा की सहायता करने की कृपा करें तो अनेक ऐसे दुर्लभ ग्रंथ अब भी बचाए जा सकते हैं जिनके नष्ट हो जाने से हमारी भाषा और संस्कृति पर घोर प्रहार होगा।

सभा ने इस वर्ष कुछ ग्रंथों की प्रतिलिपि प्राप्त कर मूल ग्रंथों के न मिलने की कमी अंशतः पूरी की है। बंबई के प्रिंस आव वेल्स संग्रहालय के कला-विभाग के अध्यक्ष डाक्टर मोतीचंद्र के सौजन्य से सूरदास (अष्टछापवाले सूरदास से भिन्न) कृत 'नल-दमन' की प्रतिलिपि हुई है। श्री दौलतराम जुयाल के प्रयत्न से बलिया के चिट बड़ागाँव के महंत श्री राजाराम जी ने कृपाकर अपने हस्तलिखित ग्रंथों की चार जिल्दे, जिनमे कुल ३४ पुस्तकें हैं, प्रतिलिपि कराने के लिये सभा को भेज दी है; तथा श्री महेशचंद्र गर्ग के उद्योग से प्रयाग से भी कुछ ग्रंथों की प्रतिलिपि मिल गई है। जिन सज्जनों ने इस कार्य मे सभा की सहायता की है, सभा उनकी कृतज्ञ है।

इस वर्ष खोज का जो काम हुआ है, उससे पहले की भाँति यही अनुभव हुआ है कि क्या गाँव और क्या नगर, सर्वत्र हस्तलिखित

ग्रंथों की दशा बहुत ही शोचनीय है। वर्षो से धूप के दर्शन न होने के कारण उनके वेठनों पर सीड, दीमकों और झींगुरों ने अधिकार कर लिया है। विरले ही ग्रंथ सुरक्षित दशा मे मिलते है। एक ही ग्रंथ के पन्नों का अनेक वेठनों मे पाया जाना तो सामान्य बात है। इससे बहुधा बहुत परिश्रम करने पर भी उनको क्रम से लगा सकना असभव हो जाता है। ग्रंथ-स्वामी प्रायः मोहवश ग्रंथों को इस दशा में भी अपने पास से हटने नहीं देना चाहते। यह जानते हुए भी कि उनका नष्ट होना प्रायः संभव है, वे कम से कम अपने जीवन-काल में उन्हे छोडना नहीं चाहते। ऐसी ही कठिनाइयाँ अन्वेपकों को प्रायः नित्य झेलनी पडती हैं। यदि उन्हे विद्या-व्यसनी सज्जनों का सहारा न मिला करे तो उन्हे अपना उद्देश्य पूरा करने मे अभीष्ट सफलता न मिले। इसी लिये सभा इस वर्ष के इन सहायकों की विशेप रूप से अनुगृहीत है तथा इन सबका धन्यवाद करती है।

(१) श्री राय कृष्णदास जी, काशी।
(२) बा० बालकृष्णदास जी (बल्ली बाबू), चौखभा, काशी।
(३) पं०रामकृष्ण जी शुक्ल, प्रयाग।
(४) आचार्य श्री राधाकृष्ण जी गोस्वामी, बिहारी जी का मदिर, प्रयाग।
(५) आचार्य श्री गोपीकृष्ण जी गोस्वामी, बिहारीजी का मदिर, प्रयाग।
(६) बा० शालग्राम जी वर्मा, कटरा, प्रयाग।
(७) प० देवीदत्त जी शुक्ल, 'सरस्वती'-सपादक, प्रयाग।
(८) प० परशुराम जी चतुर्वेदी, एम० ए०, एल-एल० बी०, बलिया।
(९) प० श्यामसुंदर जी उपाध्याय, सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, बलिया।
(१०) प० जानकीनाथ जी त्रिपाठी, जुबिली सस्कृत कालेज, बलिया।
(११) श्री गणेशप्रसाद, एम०ए०, अध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल, बलिया।
(१२) ठा० शिवप्रसाद सिंह जी, मिडिल स्कूल, रेवती, बलिया।
(१३) ठा० रामयादी सिह जी, रेलवे गार्ड, भीमपुरा, बलिया।
(१४) श्री हरिकृष्ण राय जी, मिडिल स्कूल, दलन छपरा, बलिया।
(१५) प० सूर्यनारायण चतुर्वेदी, बघाँव, पोस्ट सहतवार, बलिया।
(१६) ठा० सूरजनारायण सिंह जी, एम० एल० ए०, बलिया।
(१७) ठा० सहजानद सिंह जी, चेयरमैन, शिक्षाविभाग, बलिया।

(१८) श्री भगवानदास जी, आनरेरी मजिस्ट्रेट, रसड़ा, बलिया।
(१९) श्री गुलाबचद जी, स्थान व पोस्ट रसड़ा, जिला बलिया।
(२०) श्री मातादीन जी श्रीवास्तव, हेडमास्टर, अगरेजी मिडिल स्कूल, रसडा, जिला बलिया।
(२१) ठा० चद्रभान सिंह जी, ग्राम व पोस्ट रतसड, जिला बलिया।
(२२) श्री भुवनेश्वरराय जी, सुरही, पोस्ट कोरटाडीह, बलिया।
(२३) पं० रघुनदन उपाध्याय, अवसर-प्राप्त डिप्टी कलक्टर, ग्राम सरइयाँ, पोस्ट कोरंटाडीह, जिला बलिया।
(२४) श्री जगन्नाथ प्रसाद जी, ग्राम व पोस्ट गडवार, जिला बलिया।
(२५) प० शुभनारायण तिवारी, सिहाकुड, पोस्ट हल्दी, बलिया।

इनके अतिरिक्त सभा युक्तप्रातीय सरकार तथा उसके शिक्षा-विभाग के परामर्शदाता डाक्टर पन्नालाल, सी० आई० ई०, आई० सी० एस०, एव डाइरेक्टर श्री जे० सी० पावेल-प्राइस, आई० ई० एस० का विशेष रूप से आभार स्वीकार करती है, जिनकी कृपा से प्राप्त २०००) की आर्थिक सहायता के विना सभा खोज का यह महत्त्वपूर्ण काम करने मे समर्थ ही न हो सकती।

सभा को आशा है कि प्रातीय सरकार इस कार्य की महत्ता का अनुभव करके इस वार्षिक सहायता मे पर्याप्त वृद्धि करेगी, जिससे यह और भी सुचारु रूप से चल सके।

इस वर्ष पं० विद्याभूषण मिश्र, एम० ए०, एल एल० बी० खोज-विभाग के निरीक्षक तथा पं० रामबहोरी शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, संयुक्त निरीक्षक रहे।

६—भारत-कलाभवन

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी कलाभवन निरंतर प्रगति-शील रहा, किंतु वह प्रगति किसी प्रकार संतोषजनक नहीं कही जा सकती। कलाभवन का कार्यक्षेत्र जितना व्यापक है, और उसे अखिल भारतीय कला-केंद्र बनाने के लिये उसकी जैसी प्रगति आव-श्यक है, उसके हिसाब से यह प्रगति बहुत ही मथर और सीमित

रही। कलाभवन के समुचित विकास के लिये एक स्थायी और विपुल आय की बड़ी आवश्यकता है। अभी तो हम आकाशी वृत्ति पर रह रहे है। प्रातीय सरकार पिछले दो वर्षों से २५००) वार्षिक देने लगी है। एतदर्थ हम आभारी हैं। किंतु एक तो यह सहायता बहुत थोड़ी है, दूसरे स्थायी भी नहीं। आशा है कि सरकार का ध्यान शीघ्र ही इस ओर जायगा और हमारी अड़चनें स्थायी रूप से दूर कर दी जायँगी।

आर्थिक कठिनाई के साथ साथ कलाभवन मे स्थान का भी बहुत संकोच है। उसके वर्तमान संग्रह के समुचित प्रदर्शन के लिये सभाभवन पूरा का पूरा मिले तो काम चले। हमारे यहाँ नित्य नई चीजें बढ़ती जाती हैं। इस वर्ष पुरातत्व-विभाग ने मोहे जो दड़ो से निकली वस्तुओं का एक अच्छा सेट कलाभवन को दिया है। इनके प्रदर्शन के लिये श्री गोपीकृष्ण कानोडिया ने आठ मूल्यवान अल-मारियाँ बनवा दी हैं। शीघ्र ही उनमे ये चीजें प्रदर्शित होंगी।

पिछले दो वर्षों मे राजघाट की खुदाई से जो वस्तुएँ प्राप्त हुईं, स्थानाभाव से उनका प्रदर्शन नहीं हो रहा है। उनके लिये एक बड़ा कमरा बनवाना आरभ कर दिया गया था, किंतु आर्थिक अड़चन के कारण वह इस वर्ष पूरा न हो सका।

गत वर्ष राजघाट की खोदाई मे गहरवार महाराज गोविंदचद्र-देव का कार्तिक पूर्णिमा सवत ११९७ का, बड़े आकार के दो पत्रों का, एक ताम्र-शासन प्राप्त हुआ था, जो परीक्षा के लिये पुरातत्व-विभाग में दिल्ली चला गया था। उक्त विभाग के अध्यक्ष ने अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा, उसे भारत-कलाभवन मे भेज देने की कृपा की है।

इस वर्ष कलाभवन पहाडी शैली के चित्रों का सग्रह बढ़ाने मे विशेष दत्त-चित्त रहा। पहाड़ी शैली मे पिछले एक हजार वर्ष की चित्रकला अपनी सब से ऊँची उड़ान पर पहुँची है, और एक ऐसी सस्था मे जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय चित्रशाला होना है, इस शैली के चित्रों का बढ़िया से बढ़िया और पूरा पूरा सग्रह होना चाहिए। यद्यपि समय अन्य दृष्टियो से अनुपयुक्त है, किंतु इस कार्य के लिये सर्वोत्तम समय यही है, क्योंकि युद्ध के कारण विदेशी टूरिस्टों का आना बद हो गया

है और अच्छे चित्रों का मिलना अपेक्षाकृत सुलभ हो गया है। इस परिस्थिति से कलाभवन ने लाभ उठाया है। इस वर्ष पहाडी शैली के ८१३ चित्र लिए जा चुके हैं। आशा है कि आगामी वर्ष यह संग्रह बहुत विस्तृत और उत्कृष्ट हो जायगा। इस कार्य के लिये आर्थिक सहायता देनेवालों में मुख्य है—महाराजकुमार, सैलाना (मध्य भारत), सर बद्रीदास गोएनका, सी० आई० ई०, श्री घनश्यामदास बिड़ला और मेहता श्री मुरारीलाल जी।

इस वर्ष कलाभवन ने डा० भगवान्दास की एक प्रतिमा बनवाने का आयोजन किया है। यह प्रतिमा संगमरमर या कांस्य की होगी। कुमारी इंदुमती साठे (श्री जे० एल० साठे, आई० सी० एस० की कन्या) ने इस कार्य को आरंभ कर दिया है। आगामी वर्ष यह संपन्न हो जायगा। इसमें २०००) से अधिक व्यय होगा। आशा है कि डा० भगवान्दास ऐसे महान् व्यक्तित्व की प्रतिमा के लिये यह रकम कलाभवन शीघ्र ही एकत्र कर ले सकेगा।

इस वर्ष कलाभवन के दर्शकों की संख्या १०००० के लगभग रही। हर्ष है कि हमारे दर्शकों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। शिक्षालयों के विद्यार्थी भी अब प्रायः कलाभवन का मनोयोग से निरीक्षण करने लगे है। विशिष्ट दर्शकों मे ये नाम उल्लेखनीय हैं—श्री श्रीप्रकाश, श्री रविशंकर महाशंकर रावल, श्री राधाकृष्ण जालान, श्री प्रफुल्लकुमार सरकार, सर बद्रीदास गोएनका, सी० आई० ई०, श्री मूलचंद्र अग्रवाल, रायबहादुर श्री रामदेव चोखानी तथा श्री जगन्नाथ अहिवासी।

इस वर्ष कलाभवन के सहायक संग्रहाध्यक्ष श्री विजयकृष्ण ने पटना, लाहौर और लखनऊ के संग्रहालयों तथा खुदाबख्श पुस्तकालय (पटना) की अमूल्य पुस्तकों का अध्ययन किया। राजघाट की वस्तुओं पर साप्ताहिक 'इलस्ट्रेटेड वीक्ली अव इंडिया' (बंबई), 'हिंदू' (मद्रास) तथा 'विश्ववाणी' (प्रयाग) में सचित्र लेख लिखे और पहाड़ी चित्रों के संग्रह-कार्य में अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करके भी बड़ा परिश्रम किया। इसके लिये वे साधुवाद के पात्र है।

कलाभवन के सामने इस समय सबसे महत्व का कार्य प्रचार का है। जनता मे कला की अभिरुचि उत्पन्न किए बिना, संग्रहालय

की उपयोगिता कुछ भी नहीं है। इस प्रकार के प्रचार-कार्य के लिये कलाभवन की सचित्र सूची का प्रकाशन, यहाँ के चित्रों आदि की प्रतिकृति का प्रकाशन, कला सबधी एक पत्र का प्रकाशन तथा शिक्षा-क्रम में कला को स्थान दिलाना आवश्यक है। इन सबके लिये धन अपेक्षित है। हम आशा करते हैं कि देश का ध्यान शीघ्र ही इस ओर जायगा जिससे हम इस आयोजन को सुसंपन्न कर पावेगे।

इस वर्ष भी श्री राय कृष्णदास कलाभवन के संग्रहाध्यक्ष रहे। वे तो इसके जन्मदाता और प्राण हैं ही; उन्हे धन्यवाद देने के लिये हमारे पास शब्द नहीं हैं।

७—नागरीप्रचारिणी पत्रिका

सभा की इस मुखपत्रिका का यह ४६वाँ वर्ष यथेष्ट सफलता से पूरा हुआ है। अपने ४३वें वर्ष से पत्रिका व्यापक उद्देश्यों के अनुसार पाँच निश्चित स्कंधों से समन्वित जिस रूप में निकलने लगी है, उसका इस वर्ष भी पूर्ण निर्वाह हुआ है; यद्यपि कागज की महँगी के कारण पत्रिका के पृष्ठों में कुछ कमी कर देनी पड़ी, ९६ पृष्ठों के ही अक निकालने पड़े। हमे सतोष है कि सामग्री की दृष्टि से पत्रिका के मान और उपयोगिता की पूरी रक्षा हुई है।

पत्रिका का सपादक मडल इस वर्ष इस प्रकार रहा:—

श्री केशवप्रसाद मिश्र	श्री वासुदेवशरण अग्रवाल
श्री पद्मनारायण आचार्य	श्री कृष्णानद (सपादक)

इस वर्ष पत्रिका में १५ लेख, ५ चयन, ४२ समीक्षाएँ, १९ विविध टिप्पणियाँ और सभा की त्रैमासिक प्रगतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

लेखों में ये विशेष उपादेय हैं.—

१—वाल्मीकि और उनका काव्य रामायण [लेखक—श्री राय कृष्णदास]

२—मूल रामचरितमानस की छद-सख्या और विषयानुक्रमणी
[लेखक—श्री शभुनारायण चौबे]

३—ईरानी सम्राट् दारा का शूपा से मिला हुआ शिलालेख
[लेखक—श्री वासुदेवशरण अग्रवाल]

४—शब्दांक अर्थात् संख्यासूचक शब्द संकेत
[लेखक—श्री अगरचंद नाहटा]
५—सुर्जनचरित महाकाव्य [लेखक—श्री दशरथ शर्मा]
६—भारतीय सृष्टिक्रम विचार [लेखक—श्री संपूर्णानंद]

विविध टिप्पणियों में ये विशेष उपयोगी हैं:—

१—पारिभाषिक-शब्द-संग्रह [लेखक—श्री कृ]
२—प्रादेशिक वाङ्मयों के पचास वर्षों का इतिहास [लेखक—श्री कृ]
३—स्वर्गीय द्विवेदी जी के कागद-पत्तर [लेखक—श्री ल० पांडेय]
४—विक्रम संवत् के प्रामाणिक इतिहास का महत्त्व
[लेखक—श्री परमात्माशरण]
५—पचांग शोध [लेखक—श्री संपूर्णानंद]
६—सम्मेलन की महत्त्वपूर्ण घोषणा [लेखक—श्री कृ]

८—नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला

इस माला में योग्य विद्वानों द्वारा संपादित प्राचीन कवियों और लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित होती हैं। माला के ३२वें ग्रंथ, सूरसागर का प्रकाशन सात संख्याओं के बाद द्रव्याभाव के कारण बंद कर देना पड़ा था, पर इस वर्ष इसके लिये पं० राधेश्याम वानप्रस्थी के उद्योग से हैदराबाद के श्रीमान् राजा पन्नालाल वंशीलाल पीती से आर्थिक सहायता मिली, जिससे ८वीं संख्या प्रकाशित हुई। शेष संख्याओं के प्रकाशन के लिये द्रव्य की यथेष्ट सहायता प्राप्त होने पर पूरा ग्रंथ उसी सुंदर रूप में प्रकाशित करने का विचार है। आशा है हिंदी-प्रेमी श्रीमान् इस ओर ध्यान देंगे और अपने साहित्य के इस अनमोल ग्रंथ-रत्न के प्रकाशन में सभा की सहायता करने की कृपा करेंगे।

९—मनोरंजन पुस्तकमाला

इस वर्ष इस माला में श्री राय कृष्णदास और पं० पद्मनारायण आचार्य द्वारा संपादित 'नई कहानियाँ' नामक वर्तमान युग की उत्कृष्ट कहानियों का एक प्रतिनिधि-संग्रह प्रकाशित हुआ। यह इस माला की ५४वीं पुस्तक है।

१०—प्रकीर्णक पुस्तकमाला

इस वर्ष इस माला के अंतर्गत श्री संपूर्णानंद लिखित 'भारतीय सृष्टिक्रम-विचार' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। लेखक ने इस विषय का गभीर अध्ययन किया है और इस पुस्तक का प्रणयन पाश्चात्य विचारधारा को दृष्टि में रखते हुए इस शैली से किया है कि यह गूढ़ विषय सर्वसाधारण को भी बोधगम्य हो सके। इसके अतिरिक्त "गोस्वामी तुलसीदास" का पुनर्मुद्रण सभा अपने व्यय से करा रही है। आशा है यह भी शीघ्र प्रकाशित हो जायगा। इसी माला के अंतर्गत प्रकाशित पं० कामताप्रसाद गुरु लिखित हिंदी-व्याकरण की सजिल्द प्रतियाँ भी समाप्त हो गई थीं। किंतु व्याकरण की कुछ संख्याएँ सभा में रक्खी थीं और प्रथम तथा तृतीय संख्याओं की प्रतियाँ छपाकर व्याकरण की कुछ प्रतियाँ पूरी कर ली गई हैं।

११—कोशों का संशोधन

इधर बहुत दिनों से बहुत से हिंदी-प्रेमियों को और स्वयं सभा को भी इस बात की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी कि हिंदी-शब्द-सागर और संक्षिप्त हिंदी-शब्द-सागर का संशोधन हो। इन कोशों के लिये आज से तीस-बत्तीस वर्ष पहले शब्द-संग्रह हुआ था। इस बीच में हजारों नए शब्द हिंदी में प्रचलित हुए हैं और दिन पर दिन नए शब्द बनते तथा बढ़ते चले जा रहे हैं। इसी लिये सभा ने गत वर्ष ही संक्षिप्त शब्द सागर के संशोधन का कार्य बा० रामचंद्र वर्मा को सौंपा था। प्रायः एक वर्ष के परिश्रम से वर्मा जी ने उसमें बहुत से उपयोगी संशोधन और परिवर्तन किए हैं और हजारों नए शब्द बढ़ाए हैं। परंतु संक्षिप्त शब्द-सागर के नए संस्करण के मुद्रण में कुछ पहले ही हाथ लग गया था, जिससे अगले संस्करण में वे सब संशोधन और परिवर्तन नहीं आ सकेंगे। तो भी सभा ने विचार किया है कि प्रायः तीन या साढ़े तीन हजार के लगभग जो नए शब्द चुने गए हैं, वे सब अर्थ सहित अगले संस्करण में परिशिष्ट के रूप में

दे दिए जायँ ; इसके बाद फिर जो संस्करण होगा, उसमें सब संशोधन और परिवर्तन भी सम्मिलित कर दिए जायँगे। इससे संक्षिप्त शब्द-सागर की उपयोगिता और भी बढ़ जायगी। यह भी आयोजन किया गया है कि अब संक्षिप्त शब्द सागर का प्रत्येक संस्करण संशोधित, परिवर्त्तित और परिबर्द्धित हुआ करेगा; और हर संस्करण में बराबर नए शब्द बढ़ते रहेंगे। इस समय छोटे कोशों में संक्षिप्त शब्द-सागर को जो सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है, वह इस योजना से सदा बना रहेगा; और वह हिंदी-प्रेमियों के लिये सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

इसके सिवा सभा ने हिंदी-शब्द-सागर का भी संशोधन कराना निश्चित किया है। आजकल कागज के अभाव के कारण यह आशा नहीं रह गई है कि इधर साल दो साल के अन्दर उसके खंडों का पुनर्मुद्रण हो सकेगा। इसी लिये कोश के संशोधन के लिये यही सबसे अधिक उपयुक्त अवसर समझा गया है। आशा है कि दो तीन वर्षों में शब्द सागर का पूरा पूरा संशोधन हो जायगा और उसमें आठ दस हजार नए शब्द भी बढ़ाए जा सकेंगे। इस संशोधन, परिवर्तन और परिवर्द्धन का काम भी बा० रामचंद्र वर्मा ने ही अपने ऊपर लिया है। कोश के सहायक संपादकों में अब केवल वर्मा जी ही बच रहे हैं और वे कोश-संबंधी अपनी पूरी जानकारी और अनुभव का प्रयोग शब्द-सागर के संशोधन में करेंगे। कोश के व्युत्पत्तिवाले अंश में जो दोष और भूलें रह गई हैं, उनके सुधार का काम पं० केशवप्रसाद जी मिश्र और पं० पद्मनारायण आचार्य एम० ए० को दिया गया है। आशा की जाती है कि ये दोनों महानुभाव भी अपना कार्य बहुत ही सुचारु रूप से और शीघ्र ही संपादित करेंगे; और इस प्रकार शीघ्र ही शब्द सागर का भी पूर्ण रूप से संशोधित, परिवर्तित और परिवर्द्धित संस्करण हिंदी-प्रेमियों की सेवा में उपस्थित किया जा सकेगा। इस संबंध में हिंदी-प्रेमियों से प्रार्थना है कि यदि वे कोश के संशोधन आदि के संबंध में कोई सूचना देना चाहें या कोश में बढ़ाने के लिये कुछ नये शब्द भेजना चाहें तो सभा के मंत्री के पास भेजकर सभा को अनुगृहीत करें।

१२—सूर्यकुमारी पुस्तकमाला

शाहपुराधीश श्रीमान् महाराज उम्मेदसिंह जी ने अपनी स्वर्गीया धर्मपत्नी श्रीमती सूर्यकुमारी देवी की स्मृति में सभा को धन देकर इस माला के प्रकाशन की व्यवस्था की थी। इसके लिये शाहपुरा दरबार से सभा को कुल १९९८४) प्राप्त हुए थे।

गत वर्ष इस माला में "हिंदी साहित्य का इतिहास" का जो संशोधित और प्रवर्द्धित संस्करण छपा था, वह इस वर्ष समाप्त हो गया। उसके पुनर्मुद्रण का प्रबंध किया जा रहा है और आशा है, पुस्तक शीघ्र प्रकाशित हो जायगी। स्व० पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कृतियों का संग्रह 'गुलेरी-ग्रंथ' के नाम से प्रकाशित करने का सभा निश्चय कर चुकी है। पर कुछ अंश छप जाने पर गत वर्ष स्व० गुलेरी जी के पुत्र, पं० योगेश्वर शर्मा गुलेरी ने इस संबंध में कुछ आवश्यक विषयों पर पत्रव्यवहार आरंभ कर दिया जिससे इसकी छपाई रोक देनी पड़ी। खेद है, इस वर्ष भी इस पुस्तक के संबंध में कुछ निर्णय नहीं हो पाया, अतएव आगे की छपाई रुकी रही। स्व० गुलेरी जी और सभा के बीच जो घनिष्ट संबंध रह चुका है, उसे ध्यान में रखते हुए, आशा है, पं० योगेश्वर शर्मा गुलेरी अपने पिता जी के ग्रंथों को सभा द्वारा प्रकाशित किए जाने की अनुमति देकर उसे गौरवान्वित करेंगे।

इस वर्ष माला के आय-व्यय का हिसाब इस प्रकार है—

आय	व्यय
४३८०)११= बचत	६) अकबरी दरबार के पुरस्कार मद्धे
१९६७॥=) बिक्री	८॥≡)। फुटकर
६३४७॥=)११=	१४४।=) गुलेरी-ग्रंथ की छपाई
	८।≡) कागज
	१२५७॥)। रायल्टी

३-) जिल्द बंदी
२४५॥≡)। कार्यालय व्यय
१६७४)॥।
४६७३॥=)२= बचत
६३४७॥=)११=

१३—देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला

जोधपुर-निवासी स्व० मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ की दी हुई निधि से इस माला में ऐतिहासिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। इस वर्ष इस माला में श्री सतीशचंद्र काला लिखित 'मोहें जो दड़ो' तथा 'सिंधु सभ्यता' नामक १५ वीं पुस्तक प्रकाशित हुई।

इस वर्ष माला के आय-व्यय का ब्योरा इस प्रकार है—

७७२४॥-)१०= गत वर्ष की बचत
६३०) इंपीरियल बंक के शेयरों का मुनाफा
११६॥≡) इनकम टैक्स का फिरता
५६९॥।-)॥। पुस्तकों की बिक्री और रायल्टी

९०४१=)॥=

१४) मोहें जो दड़ो का प्रूफ संशोधन
१४५॥।)॥ मोहें जो दड़ो के लिये कागज
४०-)। मोहें जोदड़ो के मुखपृष्ठ के चित्र और ब्लाक की बनवाई
२२०॥।) मोहें जो दड़ो की छपाई
१४०।-)≥ जिल्दबंदी
१५) फुटकर
२७।)॥। रायल्टी
१६४॥-) कार्यालय व्यय
७६७॥।)॥=
८२७३।=) बचत
९०४१=)॥=

१४—बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला

जयपुर के स्वर्गीय बारहट बालाबख्श जी की दी हुई निधि से इस माला में राजपूतों और चारणों की लिखी डिंगल और पिंगल भाषाओं

की पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इस माला की नवीं पुस्तक राज-रूपक की छपाई प्राय: समाप्त हो गई है और आशा है, पुस्तक शीघ्र प्रकाशित हो जायगी। इस माला का कार्य सुचारु रूप से सपन्न करने में विद्यावयोवृद्ध पुरोहित हरिनारायण शर्मा जी ने सभा को निरतर सत्परामर्श और सहयोग देते रहने की कृपा की है। उनकी इस कृपा के बिना इस माला का कार्य ऐसी उत्तमता से सपन्न कर सकना सभव नहीं था। एतदर्थ सभा उन्हे हृदय से धन्यवाद देती है।

इस वर्ष माला के आय-व्यय का हिसाब निम्नलिखित है—

आय		व्यय	
१८९।॥–)४	गत वर्ष की बचत	१८३।≡)॥	राजरूपक के लिए कागज
४१३)॥	सरकारी कागज का ब्याज	७७॥)	कार्यालय व्यय
		११॥≡)॥	फुटकर
६५॥=)	इनकम टैक्स का फिरता	२७२॥≡)	
१४१।=)।	पुस्तकों की बिक्री और रायल्टी	५३७≡)१	बचत
८०९॥=)१		८०९॥=)१	

१५—देव पुरस्कार ग्रंथावली

ओड़छा की वीरेंद्र केशव साहित्य परिषद् ने उक्त ग्रथावली के नाम से उच्च कोटि की साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित करने के लिये सभा को १०००) प्रदान किया था। इस ग्रंथावली में इस वर्ष कोई नवीन ग्रथ नहीं प्रकाशित हुआ।

ग्रंथावली के आय व्यय का इस वर्ष का ब्योरा नीचे लिखे अनुसार है—

आय		व्यय	
६८७≡)॥।	गत वर्ष की बचत	१६०॥)	जिल्दबदी
१॥≡)	ब्याज	२७१॥–)।	रायल्टी
४४७॥≡)॥।	पुस्तकों की बिक्री	५६=)॥।	कार्यालय व्यय
		३)॥	फुटकर
		४९१॥)॥	
		६४५।=)	बचत
११३६॥=)॥		११३६॥=)।	

१६—श्री महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली

युक्त प्रांत के कृषि विभाग के भूतपूर्व डिप्टी डाइरेक्टर और कानपुर कृषि महाविद्यालय के वर्तमान आचार्य श्री प्यारेलाल गर्ग ने हिंदी के पुराने और प्रतिष्ठित लेखक अपने स्वर्गीय पिता डाक्टर महेंदुलाल गर्ग की स्मृति में उन्हीं के नाम से उक्त ग्रंथावली प्रकाशित करने के लिये सभा को १०००) प्रदान करने का निश्चय किया था। इसमें से ५००) इस वर्ष प्राप्त हो चुका है। शेष ५००) भी आशा है, दाता से शीघ्र मिल जायगा और इस ग्रंथावली का आगामी वर्ष से आरंभ हो जायगा।

१७—श्रीमती रुक्मिणी तिवारी पुस्तकमाला

सभा के पुराने सदस्य, अजमेर के स्वर्गवासी रायसाहब पं० चंद्रिका-प्रसाद तिवारी की सुपुत्री श्रीमती रामदुलारी दुबे ने अपनी स्वर्गीया माता की स्मृति में उनके नाम से महिलाओं और शिशुओं के लिये उपयोगी एक पुस्तकमाला निकालने के निमित्त सभा को २०००) प्रदान किया है। इस माला में उपयुक्त पुस्तकों का प्रकाशन अब शीघ्र आरंभ होगा।

इस वर्ष आय-व्यय का हिसाब निम्नलिखित है—

९९८≈) गत वर्ष की बचत	१।।।≈) बट्टा बट्टा
१०००) दान	१९९६।) बचत
१९९८≈)	१९९८≈)

१८—श्री रामविलास पोद्दार स्मारक ग्रंथमाला

नवलगढ़ (राजपूताना) की श्री रामविलास पोद्दार स्मारक समिति ने अपने द्वारा संचालित श्री रामविलास पोद्दार स्मारक ग्रंथमाला का प्रबंध इस वर्ष से सभा को सौंप दिया है। इस ग्रंथमाला के संचालन के लिये उक्त समिति ने दस वर्ष तक सभा को २००) वार्षिक सहायता देना स्वीकार किया है, जिसमें से ४००) सभा को प्राप्त हो चुका है। इस ग्रंथमाला में समिति द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकें भी बिक्री के लिये सभा में आ गई हैं—

(१) संस्कृत साहित्य का इतिहास भाग १, ले० श्री कन्हैयालाल पोद्दार
(२) संस्कृत साहित्य का इतिहास भाग २, ले० ,, ,,
(३) अमर जीवन की ओर, अनु० श्री शिवप्रसाद सिंह विश्वेन

इनकी बिक्री से जो आय होगी, वह भी इसी ग्रंथमाला की उन्नति में लगाई जायगी।

इस वर्ष इस माला में जो आय व्यय हुआ उसका हिसाब निम्नलिखित है—

४००) दान	।≡) पुस्तकों का सगड़ भाड़ा
	३९९॥-) बचत
	४००)

१६—साहित्य-गोष्ठी

स्वर्गीय बाबू जयशंकर प्रसाद ने ९००) की जो निधि साहित्य-परिषद् के लिये सभा को दान दी थी, उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह गोष्ठी स्थापित की गई है। इस गोष्ठी का यह एकादश वर्ष है। इसके द्वारा साहित्यानुरागियों को समय समय पर स्थानीय तथा बाहर के अनेक विद्वानों एवं सुकवियों के व्याख्यान तथा रचनाएँ सुनने के अवसर मिलते हैं। गोष्ठी को अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाने के ध्येय से सं० १९९४ से इसी के अंतर्गत 'प्रसाद'-व्याख्यानमाला की आयोजना की गई है, जिसमें विभिन्न अवसरों पर विद्वानों द्वारा सुबोध व्याख्यान हुआ करते हैं।

गोष्ठी की ओर से इस वर्ष १४ श्रावण को ससमारोह तुलसी-जयंती मनाई गई। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कथावाचक और रामायण के मर्मज्ञ पं० प्यारेलाल मिश्र की कथा हुई, जिसमें उन्होंने मानस का एक स्थल लेकर गोसाईं जी की काव्य प्रतिभा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। १७ भाद्र को लाहौर के पं० उदयशंकर भट्ट के कविता-पाठ का आयोजन किया गया। भट्ट जी प्रतिभा-संपन्न उदीयमान कवि और नाटककार हैं। उस दिन पानी-बूँदी होते हुए भी काव्य-रसिकों की यथेष्ट उपस्थिति रही। आरंभ में सभा की ओर से श्री

कृष्णानंद ने उनका स्वागत किया। तत्पश्चात् भट्ट जी ने हिंदी काव्य की आधुनिक प्रगति पर अपने विचार प्रगट किए। तदुपरांत उन्होंने अपनी चुनी हुई उत्कृष्ट रचनाएँ सुनाईं जिन्हें श्रोताओं ने बहुत पसंद किया। ४ कार्तिक को डा० मंगलदेव शास्त्री के सभापतित्व में गोष्ठी की ओर से कालिदास-जयती का आयोजन किया गया। हिंदी के प्रसिद्ध कवि और सभा के उत्साही सदस्य प० गागेय नरोत्तम शास्त्री ने १० माघ को गोष्ठी के अतर्गत एक बृहद् कवि-सम्मेलन निमत्रित किया, जिसमे समागत कवियों और कवियित्रियों का पुष्पादि द्वारा स्वागत किया गया। उस दिन काशी में अन्यत्र दूसरे आयोजन होते हुए भी श्रोताओं और आमत्रित कवियों एव कवियित्रियों की पर्याप्त उपस्थिति रही।

सभा के जन्मदाता रायबहादुर साहित्य वाचस्पति बाबू श्यामसुंदरदास जी बी० ए० को काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय ने इस वर्ष बसंत के दिन हुए अपने रजत जयती महोत्सव के विशेष उपाधिदान समारंभ में 'डाक्टर' की उपाधि से सम्मानित किया। इस उपलक्ष में बाबू साहब को बधाई देने के लिये ३० माघ को गोष्ठी ने एक समादरोत्सव का आयोजन किया जिसमें बाबू साहब को समागत सज्जनों ने सभा की ओर से बधाई अर्पित की। २८ फाल्गुन को हिंदी के ख्यातनामा कवि पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी' सभा मे पधारे और उन्होंने अपनी रसस्निग्ध काव्यधारा से श्रोताओं का मनोरजन किया।

इस वर्ष 'प्रसाद'—व्याख्यान-माला मे व्याख्यान देनेवाले सज्जनों के नाम और उनके विषय निम्नलिखित हैं—

(१) श्री कृष्णानद आचार्य—हठयोग के आसन और वध
(२) श्री विंदु जी (वृंदावन-निवासी)—रामायण की कथा
(३) प्राणाचार्य कविराज प्रताप सिंह—मनुष्य का आदर्श आहार
(४) श्री मथुराप्रसाद दीक्षित—रासो की प्रामाणिकता
(५) कुमारी सुप्ति सिनहा—प्राचीन भारतीय गणित का इतिहास
(६) डा० परमात्माशरण—हिंदू और मुस्लिम वास्तु-कला मे अलकरण
(७) श्री श्रीकृष्ण व्यंकटेश पुणताबेकर—तत्त्वशिक्षा
(८) श्री शिवकुमार शास्त्री (गोरखपुर-निवासी)—योग

(९) श्री भगवानदास सिडनी—लिपि-सुधार

(१०) श्री चडीप्रसाद—मानमंदिर और अनुभूत प्रयोग

२०—पुरस्कार और पदक

उत्तम और मौलिक ग्रंथकर्ताओं को नियमानुसार जो पुरस्कार और पदक सभा दिया करती है, उनकी निधियों का विवरण परिशिष्ट ७ में दिया गया है। ये निधियाँ ट्रेजरर, चैरिटेबल एडाउमेंट्स, सयुक्त प्रांत के पास जमा कर दी गई है और उनके ब्याज से ये पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं।

जिस प्रकार ये पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं, उसका विवरण निम्नलिखित है—

राजा बलदेवदास बिड़ला पुरस्कार—श्रीमान् राजा बलदेवदास बिडला की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार सं० १९९७ से प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। १ माघ १९९३ से २९ पौप १९९७ तक की पुस्तकों पर विचार हो रहा है। अगला पुरस्कार १ माघ १९९७ से २९ पौप २००१ तक प्रकाशित अध्यात्म, योग, सदाचार, मनोविज्ञान और दर्शन के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिये दिया जायगा।

बटुकप्रसाद पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार स्वर्गवासी राय बहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री की दी हुई निधि से सर्वोत्तम मौलिक उपन्यास या नाटक के लिये इस वर्ष से प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। १ माघ १९९४ से २९ पौप १९९८ तक की प्रकाशित रचनाओं पर विचार हो रहा है। अगला पुरस्कार १ माघ १९९८ से २९ पौप २००२ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (१)—स्वर्गवासी श्री जगन्नाथदास रत्नाकर की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार व्रजभाषा के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिये इस वर्ष से प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। १ माघ १९९४ से २९ पौप १९९८ तक की प्रकाशित पुस्तकों पर विचार किया जा रहा है। अगला पुरस्कार १ माघ १९९८ से २९ पौप २००२ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००२ में दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (२)—यह दूसरा रत्नाकर पुरस्कार भी २००) का है। यह पुरस्कार व्रजभाषा के सदृश हिंदी की अन्य भाषाओं (यथा डिंगल, राजस्थानी, अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी आदि) की सर्वोत्तम रचना अथवा सुसंपादित ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ १९९५ से २९ पौष १९९९ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० १९९९ में दिया जायगा।

डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार— पं० रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार विज्ञान-विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ पर प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ १९९६ से २९ पौष २००० तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००० में दिया जायगा।

जोधसिंह पुरस्कार—उदयपुर के स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ सं० २००१ से २९ पौष सं० २००५ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००५ मे दिया जायगा।

विनायक नंदशंकर मेहता पुरस्कार—हिंदी के परम भक्त और भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक स्वर्गवासी श्री विनायक नंदशंकर मेहता की स्मृति में एक पुरस्कार दिए जाने का निश्चय हुआ है। पर इसकी व्यवस्था के लिये धन अपेक्षित है। यथेष्ट द्रव्य प्राप्त होते ही यह पुरस्कार दिया जाने लगेगा। स्व० मेहताजी के इष्ट-मित्रों और हिंदी-प्रेमियों से अनुरोध है कि वे इसके लिये धन से सभा की सहायता करें।

डा० हीरालाल स्वर्णपदक—स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल की दी हुई निधि से एक स्वर्णपदक सभा द्वारा पुरातत्व, मुद्राशास्त्र, इंडालोजी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध पर प्रति दूसरे वर्ष दिया जायगा। यह पदक १ वैशाख १९९४ से ३० चैत्र १९९७ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक वा निबंध पर दिया जानेवाला था,

किंतु योग्य पुस्तक के अभाव में नहीं दिया जा सका। अब नियमानुसार बचत के रुपयों का उपयोग इस विषय के लेख अथवा पुस्तक के प्रणयन में किया जायगा। अगला पदक १ वैशाख ९८ से ३० चैत्र १९९९ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक या निबंध पर सं० २००० में दिया जायगा।

द्विवेदी स्वर्णपदक—स्वर्गीय आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की प्रदान की हुई निधि से प्रति वर्ष यह स्वर्णपदक हिंदी में सर्वोत्तम पुस्तक के रचयिता को दिया जाता है। निर्णायकों की सर्व सम्मति से इस वर्ष यह पदक श्री राय कृष्णदास जी को "भारत की चित्रकला" नामक उनकी पुस्तक पर दिया जायगा।

सुधाकर पदक—स्वर्गीय बाबू गौरीशंकरप्रसाद ऐडवोकेट की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक बटुकप्रसाद पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

ग्रीव्ज पदक—श्री पं० रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह रौप्यपदक डा० छन्नूलाल पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

राधाकृष्णदास पदक—बाबू शिवप्रसाद गुप्त की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० १ पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

बलदेवदास पदक— बाबू व्रजरत्नदास वकील की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० २ प्राप्त करनेवाले सज्जन को दिया जाता है।

गुलेरी पदक—स्वर्गीय पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी की स्मृति में पं० जगद्धर शर्मा गुलेरी की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक जोधसिंह पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

रेडिचे पदक—स्व० रेडिचे महोदय बनारस के कलक्टर थे तथा सभा के प्रत्येक कार्य मे सोत्साह सहयोग प्रदान करते थे। सभा-भवन के लिये वर्तमान भूमि उन्हीं की कृपा से प्राप्त हुई थी। उनकी स्मृति में यह पदक बिड़ला पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

२१—संकेत-लिपि विद्यालय

काशी नगर में अन्यत्र इस विषय की शिक्षा के लिये विद्यालय खुल जाने तथा विशेषत. शिक्षित विद्यार्थियों को काम न मिलने के कारण सभा के सकेत-लिपि विद्यालय का कार्य इस समय कुछ दिनों के लिये स्थगित कर दिया गया है। आवश्यकता हुई तो सभा भविष्य में पुनः विद्यालय चलाने का प्रबंध करेगी।

२२—संबद्ध संस्थाएँ

सभा की संबद्ध सस्थाओं में से, जिनके कार्य-विवरण समय से प्राप्त हुए हैं, वे नीचे दिए जाते हैं। सबद्ध सस्थाओं की सूची परिशिष्ट ६ में दी गई है।

नागरीप्रचारिणी सभा, मैनपुरी—इस वर्ष इस सभा ने अपने आस-पास के कई स्थानों मे उत्सव किए जिनमें हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार के संबध मे अनेक विद्वानों के भाषण हुए। विभिन्न स्थानों में इस सभा द्वारा शाखाएँ स्थापित की गईं, जिससे प्रचार-कार्य सुगमता और अधिक उत्तमता से किया जा सके।

नागरीप्रचारिणी सभा, भगवानपुर रत्ती, पो० अमृतसर, जि० मुजफ्फरपुर—गत पद्रह वर्षों से यह सभा ग्रामीणों मे हिंदी-प्रचार का कार्य कर रही है। इस वर्ष ९, १० और ११ अक्टूबर को इस सभा ने बरेली-निवासी कथावाचस्पति प० राधेश्याम कथावाचक के सभापतित्व मे अपना वार्षिकोत्सव मनाया, जिसमे हिंदुस्तानी के विरोध मे प्रस्ताव स्वीकृत हुए। इस सभा के वाचनालय तथा पुस्तकालय में इस वर्ष पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ यथापूर्व आती रहीं और पाठकों ने उनका यथेष्ट उपयोग किया। यथावसर विभिन्न साहित्यिकों की जयतियाँ भी मनाई गई। इस वर्ष इस सभा के खोज-विभाग ने वैशाली से कई उत्तम प्रस्तर-मूर्तियाँ प्राप्त कीं। ७ हस्तलिखित ग्रथ भी प्राप्त किए गए।

सुहृद सघ, मुजफ्फरपुर—सघ ने सात वर्ष पूरे कर अब आठवे मे प्रवेश किया है। इस अल्प काल मे ही संघ ने अपनी

साहित्यिक सेवाओं के द्वारा यथेष्ट ख्याति अर्जित कर ली है। इस वर्ष सघ के पुस्तकालय मे ३०० नवीन पुस्तके आई और १५७३ पुस्तकें पाठकों को पढ़ने के लिये दी गई। वाचनालय विभाग मे ३५ विभिन्न पत्र पत्रिकाएँ इस वर्ष आती रहीं और प्रतिदिन उनसे लाभ उठाने-वालों की औसत सख्या ४७ रही। हिंदी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के लिये सघ की ओर से एक परीक्षा-विभाग खोला गया है, जिसमें इस वर्ष परीक्षार्थियों के लाभार्थ विभिन्न विद्वानों के व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया। साहित्यिक समारोह की व्यवस्था एवं जनता में हिन्दी-प्रचारार्थ समय समय पर उत्सवादि के प्रबध के लिये सघ ने एक साहित्य गोष्ठी बनाई है। इस गोष्ठी के अतर्गत इस वर्ष काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के सभापति राय बहादुर प० कमलाकर द्विवेदी तथा भारतीय इतिहास परिषद् के मत्री पं० जयचद्र विद्यालङ्कार के सभापतित्व मे की गई सभाएँ यथेष्ट सफल रहीं। कचहरी के काम काज हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि मे करने के लिये सघ ने इस वर्ष वकीलों, मुख्तारों और अन्य कार्य-कर्ताओं से विचार-विनिमय किया। आशा है, सघ के प्रयत्न से इस विभाग में शीघ्र ही हिंदी को यथोचित सम्मान प्राप्त होगा। ग्रामीणों में हिंदी-प्रचार और निरक्षरता निवारण के उद्देश्यसे सघ ने आसपास के कई गाँवो में पुस्तकालय स्थापित किये है। विगत १४ और १५ मार्च को हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति और प्रयाग-विश्व-विद्यालय के वाइसचांसलर पं० अमरनाथ झा के सभापतित्व मे सघ ने अपना ७ वाँ वार्षिकोत्सवब हुत धूमधाम से मनाया।

सघ के वर्तमान मत्री श्री नीतीश्वरप्रसाद सिंह उत्साही और परिश्रमी नवयुवक हैं और संघ की उन्नति मे निरंतर सलग्न रहते हैं। सघ की इस सफलता पर सभा उन्हे तथा उनके सहयोगियों को बधाई देती है।

'प्रसाद'-परिषद्, काशी—परिषद् अब अपना चतुर्थ वर्ष समाप्त कर पचम वर्ष मे प्रवेश कर रही है। अन्य वर्षों की भाँति इस वर्ष भी परिषद् ने अपने समस्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये दृढ़ता से अग्रसर होते हुए अनेक योजनाओ को कार्यान्वित किया। परिषद् की अनेक

योजनाओं में से एक योजना यह भी है कि वह हिंदी के विभिन्न स्थानों एवं मतों के साहित्यिकों में सपर्क स्थापित करने और इस प्रकार हिंदी की विभिन्न समस्याओं पर सामयिक दृष्टि से विचार करने तथा उससे लाभ उठाने के लिये एक समिति बनाए जिसमें शिष्ट साहित्यिक मनोरंजन के अतिरिक्त तात्कालिक महत्व के प्रश्नों पर भी विचार-विनिमय हो। परिषद् को इस कार्य मे हिंदी-प्रेमियों का आर्थिक एव बौद्धिक सहयोग अपेक्षित है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये परिषद् ने इस वर्ष एक नया स्वरूप ग्रहण किया। हर्ष का विषय है कि परिषद् के नवीन सभापति का पद श्री सपूर्णानद जी (भूतपूर्व शिक्षा मत्री, युक्तप्रात) ने, जो गत कई वर्षों से परिषद् के मान्य सभासद भी है, ग्रहण किया है। आपके व्यक्तित्व से परिषद् के जीवन को नवीन स्फूर्ति मिली है।

काशी-विश्वविद्यालय की रजत-जयती के अवसर पर विश्वबधु महात्मा गांधी ने जो नगरी लिपि और हिंदी भाषा की ओर जनता और विश्वविद्यालय का ध्यान आकृष्ट किया, उसपर परिषद् ने प्रसन्नता प्रकट की; किंतु परिषद् को खेद है कि स्वय महात्मा जी की छाया मे पलनेवाले पत्र 'हरिजन' के पते आद्यन्त रोमन लिपि और आंग्ल भाषा मे लिखे जाते हैं।

काशी-विश्वविद्यालय ने परिषद् के मान्य सभासद रायबहादुर बा० श्यामसुंदर दास जी का डी० लिट्० की उपाधि देकर जो सम्मान किया है, उसपर परिषद् ने प्रसन्नता प्रकट की।

इस वर्ष परिषद् की विशेषता उसकी वे साहित्यिक गोष्ठियाँ हैं जिनमे परिषद् के सदस्यगण अपना निवध पाठ करते रहे। इस विश्वयुद्ध के कारण अभी इन निवधों का पुस्तक रूप में प्रकाशन नहीं हो सका है, परंतु आशा है कि समय अनुकूल आने पर परिषद् अपना यह कार्य अवश्य करेगी। इस वर्ष के अन्य अधिवेशनों मे नवीन सभापति के स्वागत मे किया गया अधिवेशन तथा होलिकोत्सव अपना विशेष महत्व रखते हैं।

हिंदी साहित्य भवन, धरफरी, मुजफ्फरपुर—गत २१ वर्षों से यह सस्था ग्रामवासियों में अपनी भाषा और लिपि के प्रति रुचि उत्पन्न

करने और उसके प्रचार में संलग्न है। इस वर्ष भवन के सदस्यों की संख्या १३७ रही। भवन के पुस्तकालय से इस वर्ष ४५० पुस्तकें पढ़ने को दी गईं और लगभग १०० नवीन पुस्तकें खरीदी गईं। वाचनालय विभाग से १७६१ पाठकों ने लाभ उठाया। भवन ने हिंदी साहित्य सम्मेलन और रामायण-प्रसार समिति, गोरखपुर की परीक्षाओं की व्यवस्था भी अपने यहाँ की है, जिनमे इस वर्ष ४७ परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। हिंदुस्तानी का विरोध तथा रेडियो की भाषा में सुधार करने के लिये इस वर्ष भवन ने यथेष्ट प्रयत्न किया। समय समय पर भवन के द्वारा विभिन्न साहित्यिकों की जयंतियाँ मनाई गईं जिनसे प्रचार-कार्य में पर्याप्त सहायता मिली। इस वर्ष से भवन ने हिंदी की हस्तलिखित पुस्तकों की खोज का कार्य भी आरंभ कर दिया है।

हिंदी प्रचारिणी सभा, जम्मू—काश्मीर सरकार से राज्य मे हिंदी माध्यम द्वारा शिक्षा देने की स्वीकृति मिल जाने के कारण इस वर्ष इस सभा का प्रधान उद्योग इसी दिशा में रहा। अनेक कठिनाइयों के रहते हुए भी यह सभा अपने प्रचार-कार्य मे मनोयोगपूर्वक संलग्न रही; और आशा है, उक्त स्वीकृति से सभा को उत्तरोत्तर संतोषजनक सफलता प्राप्त होगी। हिंदी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के प्रचारार्थ भी यह सभा इस वर्ष उद्योगशील रही और जम्मू प्रांत में कुछ केंद्र स्थापित किए गए। राज्य मे उर्दू में तार भेजने का प्रबंध है, पर हिंदी में इसकी कोई व्यवस्था नहीं है, जिसका कारण अधिकारियों की ओर से हिंदी मे तार भेजने की प्रणाली का अभाव बताया जाता है। हिंदी की तार प्रणाली की उपलब्धि अथवा उसके निर्माण के लिये उद्योग किया जा रहा है और उसके सुलभ होने पर, आशा है, तार-विभाग में भी हिंदी को स्थान मिल जायगा। इस वर्ष भी अपनी विभिन्न शाखाओं से सभा को अपनी उद्देश्य-पूर्ति में यथापूर्व पर्याप्त सहयोग और सहायता मिलती रही।

बाल नागरीप्रचारिणी सभा, पुण्यार्क, पो० पंडारक (पटना)—इस सभा के केवल पुस्तकालय विभाग का विवरण प्राप्त हुआ है। इस वर्ष इसके कुल ६३ सभासद रहे, पुस्तकालय में १०१४ पुस्तकें रहीं तथा ९ सामयिक पत्र पत्रिकाएँ आती रहीं। ४०० पुस्तकें

पुस्तकालय से बाहर गईं, तथा पुस्तकालय में आकर पढ़नेवालों की संख्या ६७८१ रही ।

देवनागरी परिषद्, धामपुर (यु० प्रां०)—वसंत पचमी, सं० १९९८ वि० को परिषद् का प्रथम वर्ष समाप्त हुआ। इस वर्ष ३५ वार्षिक सदस्य बने। परिषद् की इस वर्ष कुल १२ बैठकें हुईं, जिनमें हिंदी प्रचार संबधी योजनाओं पर विचार हुआ। हिंदी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं का केंद्र स्थापित करने का भी प्रयत्न किया गया, पर सफलता नहीं मिली। इस वर्ष परिषद् के तत्वावधान में हिंदी विद्यापीठ (विहार) का केंद्र स्थापित हुआ एवं १० परीक्षार्थियों ने परीक्षाओं के लिये आवेदनपत्र भेजे। सम्मेलन के अवोहर अधिवेशन में भी परिषद् की ओर से एक प्रतिनिधि भेजा गया। गत वसत पंचमी को परिषद् के प्रथम वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर हिंदी-प्रचार सबधी प्रस्ताव स्वीकृत हुए और एक कवि सम्मेलन भी हुआ।

नागरीप्रचारिणी सभा, सैदपुर (गाजीपुर)—पिछले वर्ष जनगणना के अवसर पर जब सैदपुर में हिंदी दिवस मनाया गया था, तभी यहाँ के नागरिकों का यह विचार हुआ था कि राष्ट्र भाषा के प्रचार के लिये यहाँ एक नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना की जाय। तदनुसार अक्टूबर, १९४१ मे इस सभा की स्थापना हुई। उद्घाटन समारोह में काशी से पं० रामनारायण मिश्र तथा 'हिंदी'-संपादक प० चद्रबली पांडेय, एम० ए० ने पधारने की कृपा की थी जिनके कारण यह समारोह विशेष आकर्षक और उत्साहवर्द्धक रहा। अब तक सभा के १२० सदस्य बन चुके हैं। स्थानीय टाउन-एरिया दफ्तर के कार्य अब तक उर्दू लिपि में होते थे, किंतु सभा के प्रयत्न से अब वहां नागरी लिपि का व्यवहार होने लगा है। अपने जीवन के अल्प काल में ही सभा ने व्याख्यान, सभा, कवि दरबार इत्यादि सुरुचिपूर्ण आयोजनों द्वारा यथेष्ट ख्याति एवं सफलता प्राप्त की है। इसका श्रेय सभा के सुयोग्य सभापति श्री शिवशंकर सिंह बी० ए०, बी० टी०, विशारद तथा प्रधान मत्री श्री दयाशकर श्रीवास्तव 'निठुर' को है जो बड़ी लगन से सभा की सेवा कर रहे हैं।

२३—स्थायी कोष

इस वर्ष सभा के स्थायी कोष में जो आय-व्यय हुआ। उसका ब्योरा इस प्रकार है—

आय		व्यय	
१०९८॥)१०	गत वर्ष की बचत	३८७१)११	गवर्नमेंट स्टाक सार्टिफिकेट ४०००) अंकित मूल्य का क्रय किया गया
४८५॥≈)॥	स्टाक सर्टिफिकेट तथा पोस्ट आफिस से ब्याज	५।≈)॥	बक बट्टा
३६।–)	इनकम टैक्स का फिरता	३८७६।≡)५	
१२१।–)॥	साधारण सभासदों के चदे का २०वाँ अश	२०६२)५	बचत
४१९६–)॥	स्थायी सभासदों का चदा	५९३८॥≡)१०	
५९३८॥≡)१०			

२४—आय-व्यय

इस वर्ष के आय-व्यय का लेखा परिशिष्ट ९ में दिया गया है। उससे विदित होता है कि ७३९४॥।) गत वर्ष की बचत थी और ४०८२४।)॥ इस वर्ष की आय हुई। इस वर्ष कुल व्यय ३२७८६।)८ हुआ।

इस वर्ष आय का अनुमान २३८३०॥) किया गया था और व्यय का २८०९२॥); किंतु आय और व्यय दोनों ही अनुमान से अधिक हुए। इस वर्ष भी श्रीमती रामदुलारी दुबे ने श्रीमती रुक्मिणी तिवारी ग्रंथमाला के लिये १०००) तथा श्री प्यारेलाल गर्ग ने श्री महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली के लिये ३००) दान दिया। कलाभवन के लिये इस वर्ष ४६४४।–)११ चदा मिला, जिसमें २५००) सरकारी सहायता सम्मिलित है। बम्बई की श्री रामविलास पोद्दार स्मारक समिति ने ४००) नगद तथा लगभग १०००) अंकित मूल्य के अपने प्रकाशन श्री रामविलास स्मारक पोद्दार ग्रंथमाला के लिये दान दिये। अर्द्धशताब्दी के लिये श्री जुगुलकिशोर बिड़ला ने ५००), श्रीमान राजा बहादुर ब्रजनारायण सिंह (पडरौना) ने ५००), श्रीमती रमा

जैन ने ५००) तथा श्री गोपीकृष्ण कानोडिया ने २५) दान दिया। इनमे पहले दो सज्जनों का एक एक सौ रुपया स्थायी सदस्यता के चदे में जमा हो गया। इस वर्ष भी अनुमान से अधिक स्थायी सदस्य बने, जिससे स्थायी कोष में भी वृद्धि हुई। हैदराबाद के श्रीमान राजा पन्नालाल वंशीलाल पीती ने ५००) सूरसागर की ८ वीं सख्या प्रकाशित करने के लिये दान दिया। इसमें से १००) उनकी स्थायी सदस्यता का चदा जमा हुआ। पुस्तकों की बिक्री अनुमान से ७७९३।)। अधिक हुई। नागरी-प्रचार के लिये ४८९) दान मिला।

इस वर्ष स्थायी कोष मे ४०००) अकित मूल्य का स्टाक सर्टिफिकेट क्रय किया गया। कलाभवन के लिये मोहें जो दड़ो की वस्तुएँ प्राप्त करने में ३००) राजघाट की खोदाई में प्राप्त वस्तुएँ क्रय करने मे ३३०) प्राचीन कॉंगड़ा चित्र और रामायण चित्रावली क्रय करने के १५४२) तथा मूर्तिमदिर के ऊपर कमरा बनवाने में ७५०) व्यय हुआ। सूरसागर का आठवाँ अक प्रकाशित करने में ४४५।=)॥= व्यय हुआ। कुआँ बनवाने मे ४१७≡)॥ व्यय हुआ। इस कुएँ में बाहर की ओर से भी पानी लेने का स्थान तथा जगत राय बहादुर सेठ रामदेव चोखानी जी ने अपने धन से बनवा देने की कृपा की है। पुस्तकें अधिक प्रकाशित होने तथा कागज की महँगी के कारण सब मालाओं तथा सभा की पुस्तकों की छपाई में अधिक व्यय हुआ। इन सब कारणों से व्यय भी अनुमान से अधिक हुआ जो अनिवार्य था। इस बात का ध्यान रखा गया कि आय से अधिक व्यय न हो। अत में १५४३२॥।)१ की बचत रही। इस वर्ष के अंत में १४३०७।)१॥ का ऋण रह गया। गत वर्ष २०२७७॥।)११ का ऋण था। इस वर्ष ५९७०॥)९॥ ऋण चुकाया गया। शेष ऋण की पूर्ति अत्यंत आवश्यक है, जो आशा है, धनी मानी उदार सज्जनों की कृपा से शीघ्र हो जायगी। बाजार में केवल इडियन प्रेस का लगभग ३०००) देना है। आशा है, यह शीघ्र ही चुक जायगा। कलाभवन का प्रबंध स्वीकार करते समय सभा ने ६००) वार्षिक व्यय करने का निश्चय किया था। गत १३ वर्षों से यह अत्यावश्यक व्यय बराबर होता रहा है। सभा यह धन बराबर अपने पास से देती रही है और सभा के इस धन की पूर्ति भी शीघ्र हो जानी चाहिए।

अब कलाभवन को एककालीन सरकारी सहायता भी मिल जाती है, जिससे आशा है, भविष्य मे इस मद के ऋण मे कोई वृद्धि न होगी। सूरसागर के संपादन तथा अपूर्ण प्रकाशन मे लगभग १००००) सभा का व्यय हो गया है, जिससे यह कार्य स्थगित कर देना पड़ा है। इस कार्य को अति शीघ्र पूरा करने की आवश्यकता है, जिससे फँसी हुई पूँजी निकल आवे। आशा है, सहृदय सज्जन इस ओर ध्यान देगे। जिन उदार दानी सज्जनों ने उपर्युक्त सहायता प्रदान की है, उन सबको सभा हार्दिक धन्यवाद देती है।

२५—हिंदी-प्रचार

सभा द्वारा देश के विभिन्न भागों मे समय समय पर प्रचारार्थ प्रतिनिधि मडल भेजे जाते हैं। सभा के सभापति रायबहादुर प० कमलाकर द्विवेदी जी ने इस वर्ष मुजफ्फरपुर, भागलपुर आदि जिलों की यात्रा की। वहाँ उन्होंने सभाएँ कीं और भाषणों द्वारा लोगों को उत्साहित किया। कई स्थायी सभासद बनाए। मुजफ्फरपुर के सुहृद सघ ने उनका बहुत सुदर स्वागत किया और हिंदी-प्रचारार्थ तथा हिंदुस्तानी के विरोध में बड़ा उत्साह प्रदर्शित किया। सभा के उपसभापति प० रामनारायण मिश्र जी ने अपनी काश्मीर, सीमाप्रात, दोहरीघाट, सैदपुर और नदगज की यात्राओं मे हिंदी-प्रचार का बहुत अच्छा कार्य किया। सैदपुर मे मिश्र जी ने नागरीप्रचारिणी सभा का उद्घाटन किया। इस यात्रा मे पं० चद्रबली पाँड़े जी की उपस्थिति से वहाँ की जनता को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला। इतने अल्पकाल मे ही उक्त सभा ने अपने टाउन एरिया के कार्यालय मे उर्दू के स्थान पर हिंदी को प्रतिष्ठित करा दिया है।

अबोहर के साहित्य-सदन ने इस बार बहुत धूमधाम से अपने यहाँ तुलसी-जयती का आयोजन किया। इसी अवसर पर वहाँ एक हिंदी सम्मेलन भी आमन्त्रित किया गया था। तुलसी-जयती के सभापति सभा के परम हितैषी प० राधेश्याम कथावाचस्पति तथा हिंदी सम्मेलन के सभापति प० रामनारायण मिश्र (सभा के उपसभापति) थे। इन सज्जनों ने वहाँ हिंदी प्रचार के सबध में प्रभावशाली भाषण दिए। 'हिंदी' पत्रिका के सपादक, प० चद्रबली पाँड़े

जी भी अबोहर गए थे। उनके व्याख्यान से जनता बहुत प्रभावित हुई और हिंदी भाषा तथा नागरी लिपि का अधिकाधिक व्यवहार करते रहने में बड़ा उत्साह दिखाया। पाँड़े जी इस बार आगरा में होने-वाले प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन मे भी उपस्थित हुए। अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के ३०वे अधिवेशन मे सम्मिलित होने के लिये सभा से इस वर्ष बाबू सपूर्णानद जी भेजे गए। देवरिया में होनेवाले जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में सभा की ओर से बाबू कृष्णदेव प्रसाद गौड़ ने बहुत ही उत्तमता पूर्वक सभा का प्रतिनिधित्व किया। सभा इन सब महानुभावों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती है।

२६—सभा की अर्द्धशताब्दी और महाराज विक्रमादित्य की द्विसहस्राब्दी

सभा ने अर्द्धशताब्दी की तैयारी अभी से आरभ कर दी है। यह निश्चय हुआ है कि अर्द्धशताब्दी की रिपोर्ट चार जिल्दों मे प्रकाशित हो। पहली जिल्द मे गत पचास वर्षों के सभा के कार्यों और हिंदी की उन्नति का विवरण और तत्सबधी आवश्यक सूचनाएँ रहेगी। इस भाग की विस्तृत रूपरेखा इस वर्ष की नागरीप्रचारिणी पत्रिका के द्वितीय अंक में प्रकाशित हुई है। दूसरी, तीसरी और चौथी जिल्दों मे क्रमशः कलाभवन तथा आर्य भाषा पुस्तकालय की सूची और खोज मे प्राप्त हस्तलिखित ग्रथों का सक्षिप्त विवरण रहेगा। बाबू रामचंद्र वर्मा तथा बाबू ब्रजरत्नदास जी ने रिपोर्ट का पहला भाग कृपाकर तैयार कर देना स्वीकार किया है। एतदर्थ सभा उनकी अनुगृहीत है।

सभा ने यह भी विचार किया है कि अर्द्धशताब्दी के अवसर पर देश की विभिन्न भाषाओं के पारिभाषिक शब्दों का सग्रह किया जाय और अधिकारी विद्वानों की एक समिति बुलाई जाय जो सम्मिलित और सघटित रूप से भारतीय वाङ्मय की सुव्यवस्थित उन्नति के लिये समान वैज्ञानिक शब्दावली निश्चित करे।

अपनी अर्द्धशताब्दी के साथ ही सभा महाराज विक्रम की द्विसहस्राब्दी भी मनाएगी। इस सबध मे सभा ने यह निश्चय किया है

कि विक्रम संवत् के महत्व को ध्यान में रखते हुए इस अवसर पर उसके वास्तविक मूल और इतिहास का यथासाध्य निर्णय करके उनका निष्कर्ष प्रकाशित कराने का यत्न किया जाय। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिये जो उपसमिति बनी है, उसके संयोजक डा० परमात्मा-शरण, एम० ए०, पी एच० डी० चुने गए हैं, जिन्होंने बहुत ही तत्परता और योग्यतापूर्वक यह कार्य आरंभ कर दिया है।

बाबू संपूर्णानंद जी के प्रस्ताव पर सभा ने महाराज विक्रम की द्विसहस्राब्दी मनाने के साथ पंचांग-शोध का कार्य भी हाथ में लेने का निश्चय किया है। पंचाग का महत्व यों तो सभी देशों में है; पर भारत में, जहाँ फलित ज्योतिष पर लोगों का अधिक विश्वास है, इसका विशेष महत्व है। किंतु भारतीय पंचागों मे इस समय जो व्यतिक्रम आ गया है, उसपर सभी दृष्टियों से विचार करने तथा पचांग शोधन की योजना को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से बाबू सपूर्णानद जी के सयोजकत्व में एक उपसमिति बनाई गई है जिसमे पाश्चात्य और पौर्वात्य ज्योतिष के अधिकारी विद्वान् है। सभा इस उपसमिति के सभी विद्वानों, विशेषतः उसके सयोजक बाबू सपूर्णानद जी को हृदय से धन्यवाद देती है जिन्होंने बहुव्यस्त होते हुए भी पचाग शोध समिति का कार्य-सचालन कृपाकर स्वीकार किया है।

अबतक अर्द्धशताब्दी के आयोजन के लिए श्री सेठ जुगुल-किशोर बिड़ला, श्रीमान् राजा बहादुर ब्रजनारायण सिंह (पड़रौना) तथा श्रीमती रमादेवी जैन (डालमियानगर) से पाँच पाँच सौ रुपए की सहायता प्राप्त हुई है। सभा इन महानुभावों की कृतज्ञ है। आशा है, देश के सभी श्रीमान द्रव्य से सभा की सहायता कर इस आयोजन को सभा की प्रतिष्ठा और गौरव के अनुरूप सपन्न करने मे योग देने की कृपा करेंगे।

एक दानी सज्जन से इसलिये सभा को ५००) का वचन मिला है कि सभा की अर्द्धशताब्दी के लिये एक अलग अस्थायी विभाग खोला जाय, जिससे शीघ्रतापूर्वक और व्यवस्थित रूप मे अर्द्धशताब्दी के कार्यों का सचालन किया जा सके। सभा उनकी इस कृपा के लिये आभारी है।

२७—'हिंदी' (मासिक पत्रिका)

हिंदी भाषा और नागरी लिपि के प्रचार तथा उनपर अनेक दिशाओं से होनेवाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष आक्रमणों से उनकी रक्षा करने के उद्देश्य से सं० १९९७ से अपने तत्त्वावधान में सभा यह मासिक पत्रिका प्रकाशित कराती है। इसके संपादक, मुद्रक और प्रकाशक पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए० हैं। इस वर्ष के अंत तक इसके दूसरे भाग की चार संख्याएँ प्रकाशित हुईं। इस अल्पकाल में ही अपनी सेवाओं द्वारा 'हिंदी' ने यथेष्ट लोकप्रियता प्राप्त की है, जिसका श्रेय उसके यशस्वी संपादक एवं उन अनेक सज्जनों को है जिन्होंने समय समय पर उपयुक्त लेख, समाचार, सूचनाएँ आदि भेजकर इस कार्य में उनका हाथ बँटाया है। सभा उन सभी सज्जनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है और आशा करती है कि वे आगे भी सभा पर ऐसी ही कृपा बनाए रहेंगे।

भारत में 'हिंदी' का वार्षिक मूल्य केवल ॥) है, जिसके कारण आरंभ से ही इसके प्रकाशन में घाटा रहा है। 'हिंदी' की ग्राहक-संख्या दिनोंदिन बढ रही है और उसके साथ ही घाटे की रकम में भी उसी अनुपात से वृद्धि हो रही है। निरंतर घाटा उठाकर 'हिंदी' को चलाए चलना शक्य नहीं है। इस वर्ष कलकत्ते के श्रीमान सेठ लक्ष्मीनिवास बिडला ने 'हिंदी' के लिये ५००) प्रदान करने की कृपा की। सभा उनकी अनुगृहीत है। 'हिंदी' की उपयोगिता और आवश्यकता देश के अन्य श्रीमानों के समक्ष उपस्थित करती हुई सभा आशा करती है कि वे इस कार्य में धन से सहायता प्रदान कर सभा को हिंदी की अधिकाधिक सेवा करने का अवसर देंगे।

इंडियन प्रेस 'हिंदी' पत्रिका का मुद्रण बिना मूल्य करता है। प्रेस की इस सहायता से ही 'हिंदी' का प्रकाशन संभव हो सका है। सभा उसके प्रति विशेष कृतज्ञता प्रकट करती है और आशा करती है कि आगे भी उसकी यह सहायता सभा को सुलभ होगी।

'हिंदी' के प्रथम वर्ष के आय-व्यय तथा उसपर होनेवाले घाटे का ब्योरा इस प्रकार है—

आय		व्यय	
२)	अमानत (श्रीमती सरस्वती गुप्ता)	२७≡)॥।=	फुटकर
१२१०.≡)	चदा (प्रथम वर्ष)	४५१॥=)।	डाक व्यय
१०८)	चदा (द्वितीय वर्ष)	२३।–)॥।	छपाई
३००)	विशेष सहायता (प्रथम वर्ष)	७२२॥।=)	कागज़
५००)	,, ,, (द्वितीय वर्ष)	४२५॥≡)।	वेतन
१६५)	प० चंद्रबली पांड़े	५०९।≡)।	सभा
५)४	फुटकर	२१६०॥)४॥	
		१२९॥।=)११॥	बचत
२२९०।≡)४		२२९०।≡)४	

बचत का ब्योरा

१२४॥–)७ पोस्ट आफिस सेविंग बंक
५।–)४॥ रोकड़ सभा में
१२९॥।=)११॥

घाटे का हिसाब

देना (द्वितीय वर्ष के लिये)		पावना (जमा)	
२)	श्रीमती सरस्वती गुप्ता	५०९।≡)।	सभा में
१०८)	द्वितीय वर्ष का चदा	१२४॥–)७	पो० आ० से० बंक
१६५)	पं० चद्रबली पाँड़े	५।–)४॥	रोकड़ सभा मे
५००)	विशेष सहायता (द्वितीय वर्ष)	६२९।=)२॥	
		१३५॥–)९॥	घाटा
७७५)		७७५)	

२८—अनुशीलन विभाग

सभा की प्रबध समिति ने अपने २९ आषाढ़ १९९८ के अधिवेशन मे निश्चय किया कि सभा में श्री राय कृष्णदास जी की अध्यक्षता में एक अनुशीलन विभाग खोला जाय जिसमें विद्वानों को अध्ययन करने के लिये पूर्ण सुविधा दी जाय। इस विभाग में विमर्श के लिये पुस्तकालय के हस्तलिखित विभाग की समस्त पुस्तकें तथा अँगरेजी और अन्य भाषाओं के आकर ग्रंथ भी रक्खे जायँगे।

सभा में समय समय पर बाहर से अध्ययन के लिये विद्वान् आया करते हैं। उनके ठहरने का सभाभवन में समुचित प्रबंध न होने के कारण उन्हें बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती है। ऐसे विद्वानों के ठहरने के लिये सभा में एक उपयुक्त अतिथिशाला का होना नितांत आवश्यक है। सभा के पास भूमि है। देश के उदार श्रीमानों से प्रार्थना है कि वे यहाँ ऐसी एक धर्मशाला बनवाने में सभा की सहायता करें।

२६—हिंदी की प्रगति

(१) अदालतों में नागरी-प्रचार

सभा आरंभ से ही बराबर अनेक प्रकार के उपायों से इस बात का प्रयत्न कर रही है कि इस प्रांत की अदालतों में नागरी को उसका उचित स्थान मिले—नागरी लिपि का पूरा पूरा प्रचार हो। परंतु बहुत ही खेद की बात है कि देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा की इतनी अधिक उन्नति और प्रचार होने पर भी इस प्रांत के न्यायालयों में नागरी का बहुत ही कम प्रवेश हो सका है। और इसका सारा उत्तरदायित्व उन वकीलों आदि पर ही है जिनके हाथ में अदालतों का काम है। विशेषतः नई पीढ़ी के वकीलों का तो यह और भी प्रधान कर्त्तव्य है कि वे अदालतों का सारा काम नागरी में ही किया करें। यह एक ऐसा विषय है कि अब इसकी अधिक उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः सभा इस प्रांत के वकीलों और विशेषतः नये वकीलों, मुख्तारों आदि से प्रार्थना करती है कि वे इस ओर पूरा पूरा ध्यान दें। आवश्यकता केवल इस बात की है कि प्रारंभिक कठिनाइयों का ध्यान छोड़कर एक बार सारे प्रांत में एक साथ ही इसके लिये पूरा पूरा प्रयत्न आरंभ कर दिया जाय। जहाँ एक बार यह कार्य चल पड़ेगा, वहाँ फिर इसकी गति आपसे आप बढ़ती जायगी। आशा है कि इस प्रांत के वकील सभा की इस प्रार्थना पर उचित ध्यान देंगे और इसके लिये शीघ्र ही कोई संघटित उद्योग आरंभ करेंगे। सभा इस बात का भी विचार कर रही है कि अपनी अर्द्धशताब्दी के अवसर पर इसके लिए एक प्रांत-व्यापी प्रयत्न और आंदोलन आरंभ करे।

(२) चित्रपट

सिनेमा देखने हिंदू-मुसलमान, धनी और साधारण स्थितिवाले, सभी जाते है। अतः सिनेमा की भाषा भी बोलचाल की होनी चाहिए। सिनेमा यद्यपि एक व्यवसाय है, फिर भी वह लोगों की रुचि और शिक्षा दीक्षा मे सुधार करने का बहुत अच्छा साधन है।

भारतवर्ष की लोकवाणी हिंदी है—यह तो सर्वमान्य है; किंतु खेद है कि चलचित्रों के लोकप्रिय और लोकोपयोगी क्षेत्र मे भी सांप्रदायिक कुप्रवृत्ति अपना काम कर रही है। फलत: एक ओर हमारे चलचित्रों का कला-पक्ष जहाँ उत्तरोत्तर समुन्नत हो रहा है, भाषा-सबधी बेढगी नीति के कारण दूसरी ओर उसके द्वारा हमारे परंपरागत सास्कृतिक पक्ष की उससे कहीं अधिक हानि होने की आशका हो रही है। इधर 'अमर-ज्योति' 'विद्यापति', 'देवदास', 'सत तुकाराम' जैसे थोडे से कलात्मक चित्रों ने लोक-रुचि को परिमार्जित करने मे यद्यपि अच्छी ख्याति अर्जित की है, तथापि बहुसख्यक चित्रों की भाषा आज भी वैसी ही विकृत बनी है। ऐसे चित्रों के सवाद यदि देश, काल और पात्र का यथोचित विचार करते हुए रखे जायँ तो उन्हे अनायास और भी लोकप्रिय बनाया जा सकता है। अतएव चित्रों को सफल बनाने के लिए एक ओर जहाँ उत्कृष्ट अभिनय की आवश्यकता है, दूसरी ओर उससे कहीं अधिक आवश्यकता इस बात की है कि पात्रों के कथनोपकथन दर्शकों के कान मे खटके नहीं, अपितु अभिनीत दृश्यों के साथ सीधे हृदयस्थ हो रहे। 'भरत-मिलाप' जैसे धार्मिक चित्र में भी दशरथ, कौशल्या और लक्ष्मण आदि पात्रों ने 'अधिकार' के स्थानपर 'अख्तियार' शब्द का व्यवहार किया है। महाराज दशरथ भरत की वर्षगाँठ पर उन्हे आशीर्वाद देते हुए 'सालगिरह' शब्द का प्रयोग करते है। अपनी माता के प्रति भरत की यह उक्ति—"माँ, तैने मेरे कलेजे पर वार किया है"—हमें अस्त व्यस्त कर देती है और उस स्थल की सारी चारुता पर पानी फिर जाता है। ऐसे धार्मिक चित्र की जब यह गति है तो 'पुकार' और 'ताजमहल' जैसे मुगलकालीन घटना को लेकर निर्माण किए गए चित्रों की क्या

सभा में समय समय पर बाहर से अध्ययन के लिये विद्वान् आया करते है। उनके ठहरने का सभाभवन में समुचित प्रबंध न होने के कारण उन्हें बडी कठिनाई उठानी पडती है। ऐसे विद्वानों के ठहरने के लिये सभा मे एक उपयुक्त अतिथिशाला का होना नितांत आवश्यक है। सभा के पास भूमि है। देश के उदार श्रीमानों से प्रार्थना है कि वे यहाँ ऐसी एक धर्मशाला बनवाने में सभा की सहायता करें।

२६—हिंदी की प्रगति

(१) अदालतों में नागरी-प्रचार

सभा आरंभ से ही बराबर अनेक प्रकार के उपायों से इस बात का प्रयत्न कर रही है कि इस प्रांत की अदालतों में नागरी को उसका उचित स्थान मिले—नागरी-लिपि का पुरा पूरा प्रचार हो। परंतु बहुत ही खेद की बात है कि देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा की इतनी अधिक उन्नति और प्रचार होने पर भी इस प्रांत के न्यायालयों में नागरी का बहुत ही कम प्रवेश हो सका है। और इसका सारा उत्तरदायित्व उन वकीलों आदि पर ही है जिनके हाथ मे अदालतों का काम है। विशेषतः नई पीढ़ी के वकीलों का तो यह और भी प्रधान कर्त्तव्य है कि वे अदालतों का सारा काम नागरी में ही किया करें। यह एक ऐसा विषय है कि अब इसकी अधिक उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः सभा इस प्रात के वकीलों और विशेषतः नये वकीलों, मुख्तारों आदि से प्रार्थना करती है कि वे इस ओर पूरा पूरा ध्यान दें। आवश्यकता केवल इस बात की है कि प्रारंभिक कठिनाइयों का ध्यान छोड़कर एक बार सारे प्रांत मे एक साथ ही इसके लिये पूरा पूरा प्रयत्न आरंभ कर दिया जाय। जहाँ एक बार यह कार्य चल पड़ेगा, वहाँ फिर इसकी गति आपसे आप बढ़ती जायगी। आशा है कि इस प्रांत के वकील सभा की इस प्रार्थना पर उचित ध्यान देंगे और इसके लिये शीघ्र ही कोई सघटित उद्योग आरंभ करेंगे। सभा इस बात का भी विचार कर रही है कि अपनी अर्द्धशताब्दी के अवसर पर इसके लिए एक प्रांत-व्यापी प्रयत्न और आंदोलन आरंभ करे।

(२) चित्रपट

सिनेमा देखने हिंदू-मुसलमान, धनी और साधारण स्थितिवाले, सभी जाते है। अतः सिनेमा की भाषा भी बोलचाल की होनी चाहिए। सिनेमा यद्यपि एक व्यवसाय है, फिर भी वह लोगों की रुचि और शिक्षा-दीक्षा मे सुधार करने का बहुत अच्छा साधन है।

भारतवर्ष की लोकवाणी हिंदी है—यह तो सर्वमान्य है; किंतु खेद है कि चलचित्रों के लोकप्रिय और लोकोपयोगी क्षेत्र मे भी साम्प्रदायिक कुप्रवृत्ति अपना काम कर रही है। फलत' एक ओर हमारे चलचित्रों का कला-पक्ष जहाँ उत्तरोत्तर समुन्नत हो रहा है, भाषा-संबधी बेढगी नीति के कारण दूसरी ओर उसके द्वारा हमारे परंपरागत सांस्कृतिक पक्ष की उससे कही अधिक हानि होने की आशंका हो रही है। इधर 'अमर-ज्योति' 'विद्यापति', 'देवदास', 'सत तुकाराम' जैसे थोड़े से कलात्मक चित्रों ने लोक-रुचि को परिमार्जित करने मे यद्यपि अच्छी ख्याति अर्जित की है, तथापि बहुसंख्यक चित्रों की भाषा आज भी वैसी ही विकृत बनी है। ऐसे चित्रों के सवाद यदि देश, काल और पात्र का यथोचित विचार करते हुए रखे जायँ तो उन्हे अनायास और भी लोकप्रिय बनाया जा सकता है। अतएव चित्रों को सफल बनाने के लिए एक ओर जहाँ उत्कृष्ट अभिनय की आवश्यकता है, दूसरी ओर उससे कहीं अधिक आवश्यकता इस बात की है कि पात्रों के कथनोपकथन दर्शकों के कान मे खटके नहीं, अपितु अभिनीत दृश्यों के साथ सीधे हृदयस्थ हो रहे। 'भरत-मिलाप' जैसे धार्मिक चित्र में भी दशरथ, कौशल्या और लक्ष्मण आदि पात्रों ने 'अधिकार' के स्थानपर 'अख्तियार' शब्द का व्यवहार किया है। महाराज दशरथ भरत की वर्षगांठ पर उन्हे आशीर्वाद देते हुए 'सालगिरह' शब्द का प्रयोग करते है। अपनी माता के प्रति भरत की यह उक्ति—"माँ, तैंने मेरे कलेजे पर वार किया है"—हमें अस्त-व्यस्त कर देती है और उस दृश्य की सारी चारुता पर पानी फिर जाता है। ऐसे धार्मिक चित्र की जब यह गति है तो 'पुकार' और 'ताजमहल' जैसे मुगलकालीन घटना को लेकर निर्माण किए गए चित्रों की क्या

अवस्था होगी, इसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है। इन चित्रों के निर्माताओं को यह भी ध्यान रखना चाहिए था कि यद्यपि चित्रों के कथाभाग मुगलकालीन इतिहास से लिए गए हैं, तथापि उनका निर्माण आजकल की जनता के लिए किया जा रहा है, अतएव उनकी भाषा सबके लिये सुबोध और सरल होनी चाहिए। विषय के अनुसार भाषा में भेद भाव रखना एक बात है और सम्प्रदाय विशेष को संतुष्ट करने के लिये भाषा-विशेष के शब्दों की संख्या का लेखा-जोखा रखना दूसरी बात है। यदि हमारे प्रत्येक कार्य में सांप्रदायिक मनोवृत्ति टाँग अड़ाती रहेगी तो कबतक काम चलेगा? बेमेल खिचडी भाषा से न तो दर्शकों को संतोष होगा और न खेल ही अच्छा जमेगा। अतः सुरुचि का ध्यान रखकर सिनेमावालों को भाषा की रक्षा की ओर सचेष्ट रहना चाहिए। व्यवसायी से बात मनवा लेना ग्राहक के हाथ में होता है। यदि दर्शक मंडली अच्छी भाषा के लिए सिनेमा-कंपनीवालों पर दबाव डाले तो बेढंगी भाषा के बंद होने में विशेष विलंब न लगेगा।

(३) रेडियो

रेडियो इस युग का एक अलौकिक चमत्कार है। घर बैठे देश-विदेशों के समाचार सुन लीजिए। फिर अपने देश के विभिन्न प्रांतों के समाचार, संगीत और संवाद आदि सुनना तो साधारण बात है। दूसरे देशों के प्रचारक भारत को अपना संदेश सुनाने के लिये हमारी बोली का उपयोग करते हैं। भारत के विभिन्न रेडियो-स्टेशनों में समाचार सुनानेवाले हिंदी-भाषी बहुत कम हैं। यही बात भारत के बाहर भी कई देशों मे है। अतः इनकी भाषा भारत के विस्तृत क्षेत्रों मे बोली जानेवाली हिंदी नहीं होती। इस संबंध में श्री मुरलीधर दिनोदिया ने 'विशाल भारत' में ठीक ही लिखा था—"क्या बोलने-समझनेवालों की संख्या और क्या श्रोताओं का अनुपात, प्रत्येक दृष्टि से अन्य भाषाओं की तुलना मे हिंदी का ही पलड़ा भारी रहता है। किंतु रेडियो की भाषा का अटपटापन अपनी चिरपरिचित बेढंगी रफ्तार के साथ जारी है। ये रेडियोवाले हिंदी के नाम से जो चीज पेश करते हैं, वह यदि हिंदी है तो उर्दू किसे

कहा जाय ? रेडियोवालों से न हिंदीवाले प्रसन्न हैं, न उर्दूवाले। ये 'वदेशी', 'देशभगत', 'दक्खन', पच्छम', 'बीच पूरब', 'दूर पूरब', 'जुमश्रा', 'इकतसादी' आदि विचित्र शब्दों की खिचड़ी पकाते हैं। 'झटानी' श्रेणी के ५-७ शब्द भी इन्होंने गढ़ लिए है .....।"

भारत सरकार के प्रचार विभाग के अधिकार मे ही रेडियो है; और वही उस 'भारतीय समाचार' का भी प्रभु है जो उक्त सरकार के प्रिंसिपल इन्फार्मेशन अफसर द्वारा दिल्ली से प्रकाशित अगरेजी पाक्षिक समाचार पत्र 'इडियन इन्फार्मेशन' का हिंदी रूपातर है। 'भारतीय समाचार' की भाषा मँजी हुई हिंदी और शैली विषयानुकूल होती है। इसकी नए शब्दों ग्रहण करने की नीति हिंदी सस्कारो से सबद्ध रहती है। एक ओर सरकार के 'समाचार' की ऐसी भाषा होती है कि उसकी प्रशसा किए बिना नहीं रहा जाता, और दूसरी ओर' रेडियो-विभाग हिंदी क साथ अत्याचार किया करता है। यह दुरंगी देखकर कौन न कहेगा कि सरकार का एक ही विभाग दो प्रकार के खेल युगवत् खेल रहा है।

गत वर्ष रेडियो-विभाग ने हिंदी-उर्दू के कलाकारों और वक्ताओं का जो लेखा प्रकाशित किया था, उससे पता लग गया था कि किस भाषावालों का पक्षपात किया जा रहा है। ऐसा कोई लेखा इस वर्ष उक्त विभाग से प्राप्त नही हो सका, फिर भी रेडियो के नियमित श्रोताओं की समझ में उस विभाग की नीति में कोई विशेष अतर नही हुआ। हाँ, भाषा कुछ सरल हो गई है। सुनते हैं कि भारतीय रेडियो की हिंदुस्तानी की अपेक्षा अभारतीय देशों की हिंदुस्तानी कुछ सरल होती है। इस दिशा मे सुधार करने के लिये सगठित प्रयत्न होना चाहिए। रेडियो प्रेमी लोग यदि उस विभाग की भाषा सुधारने और दैनिक प्रोग्राम ठीक करने के लिए प्रबल आन्दोलन करें तो सुधार होना कठिन नहीं। रेडियो की भाषा तो ऐसी होनी चाहिए जिसे पढे बेपढ़े, स्त्रियाँ और बालक सभी समझ सकें।

(४) सम्मेलन को बधाई

दैनिक 'भारत' (८ मार्च, सन् १९४२) मे यह समाचार प्रकाशित हुआ कि कौंसिल आफ स्टेट ने हिंदी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) को

देश भर में प्रकाशित हिंदी की सभी पुस्तकों की एक एक प्रति प्रदान करना स्वीकार किया है। इस सफलता के लिये सम्मेलन को बधाई है। आशा है, इसे भारत-सरकार स्वीकार करेगी।

(५) पंजाब मे हिंदी

पजाब मे हिंदी को जीने के लाले पड़े हुए हैं। वहाँ न्यायालयों में तो उसे कभी स्थान मिला ही नहीं। स्कूलों और कालेजों में से भी उसे निकाला जा रहा है। वहाँ हिंदू कन्याओं तक को उर्दू पढने पर विवश किया जा रहा है। वहाँ सब से पहले हिंदी के पाँव जमाने का प्रश्न है। पजाब में जनता पजाबी भाषा बोलती है, स्कूलो मे उर्दू पढ़ाई जाती है, काम अँगरेजी में करना पडता है और प्रेम है हिंदी से। पजाबी हतोत्साह नहीं हुए है। हिंदी-प्रचार के प्रयास पजाब मे बहुत दिन से जारी है। सिक्खों के पूज्य गुरुओं के समय तक तो वहाँ विशुद्ध हिंदी का ही अखड राज्य था। इसका प्रमाण है उनकी वाणी। पंजाब से अनेक पत्र-पत्रिकाएँ भी हिदी मे निकल चुकी हैं। दैनिक 'हिंदी-मिलाप' आज भी बड़ी शान से निकल रहा है।

"पजाब की देवियों ने हिंदी की लाज रखी है। जितनी लड़कियाँ पंजाब विश्वविद्यालय की हिदी परीक्षा में बैठती हैं, उनकी आधी भी उर्दू-परीक्षाओं मे नही बैठतीं। पंजाब ने उच्च कोटि की कवयित्रियाँ उत्पन्न की है। वहाँ के कहानी लेखको का हिंदी ससार मे विशेष स्थान है। वहाँ के कई लेखकों ने इतिहास की उत्तम पुस्तके लिखी हैं।"

ये वाक्य अबोहर मे हुई साहित्य परिषद के स्वागताध्यक्ष के हैं। जब वहाँ कवि और लेखक है, पत्र निकलते है और लड़कियाँ अधिक संख्या मे हिंदी मे परीक्षा देती हैं, तब वहाँ हिंदी की प्रगति पर्याप्त क्यो नहीं हो रही है? उक्त भाषण में ही इसका उत्तर है—"कुछ लोग ऐसे हैं जो पजाब मे हिंदी-प्रचार का विरोध इस आशका से करते है कि हिंदी की उन्नति से पजाबी भाषा की अभिवृद्धि मे बाधा पड़ेगी।" किंतु हिंदी तो पजाबी भाषा की हित काक्षिणी ही है। कोई यह नहीं चाहता कि पजाबी के आसन पर हिंदी अधिकार कर ले। अतः प्रांतीय व्यवहार और राष्ट्रीय कार्य के लिये हिंदी का सीखना प्रत्येक पजाबी बालक के लिये अनिवार्य होना चाहिए। बिना इसके हमारी एकसूत्रता की रक्षा सभव नहीं।

पजाब मे हिंदी-प्रचार के एक नए मार्ग का निर्देश श्री ए० सयाल के इन वाक्यों से मिलता है—

"पजाब मे मुसलमानों को वास्तव मे हिंदी से उतना विद्वेष नहीं है, जितना कि दकियानूसी लोग समझते है।······ हमे साम्प्रदायिकता की भावना को अपने मन से दूर करना होगा। मुझे सदैव ऐसा लगा है कि हमारे कालेज की मुसलमान लड़कियाँ इस प्रतीक्षा में रहती थीं कि कब उन्हे हिंदी पढ़ने का सुयोग प्राप्त हो। कालेज मे जब हमने 'हिंदी-साहित्य-परिषद' की स्थापना की तो कई एक मुसलमान लड़कियाँ भी उसकी सदस्याएँ बनीं।

"लाहौर के महिला कालेज के यूनियन ने इस बात का निश्चय किया कि कालेज से साम्प्रदायिकता का भूत भगाने के लिये मुसलमान लड़कियों को हिंदी और हिंदू लड़कियों को उर्दू पढ़ाने का प्रबध किया जाय। हिंदी वर्णमाला से भले प्रकार परिचय कराने में कोई तीन दिन से अधिक समय न लगा। प्रति दिन छात्राओं को हिंदी के दस प्रचलित शब्द और उनका प्रयोग बता दिया जाता था। ग्रीष्मावकाश में हमने परस्पर हिंदी मे पत्र लिखने की व्यवस्था की। मुसलमान लड़कियों के हिंदी पत्र की शैली से उर्दू की महक अवश्य आती है, पर भाषा बहुत सुदर और मँजी हुई है।

"हिंदू-मुसलमान एकता का सूत्र भाषा मे है, और यह कार्य लड़कियाँ जिस योग्यता से कर सकती हैं, पुरुष नही कर सकते।" अतः हमे यह प्रयत्न करना चाहिए कि पजाब की प्रत्येक मुसलमान लड़की हिंदी से परिचित हो जाय।

"हाल ही मे सयुक्तप्रात, दिल्ली, बिहार और पजाब मे प्रकाशित पुस्तकों की जो तालिकाएँ प्रकाशित हुई है, उनसे साफ जाहिर हो रहा है कि हिंदी का प्रकाशन भारत की सभी प्रातीय भाषाओं से आगे बढ़ता जा रहा है। दस वर्ष पहले जिस सयुक्त प्रात में ५० प्रति शत उर्दू और ५० प्रति शत हिंदी की पुस्तकें छपती थीं, उसी सयुक्त प्रात मे अब केवल १० प्रति शत उर्दू और ९० प्रति शत हिंदी की पुस्तकें छप रही है। दिल्ली सरीखे उर्दू के गढ मे अँगरेजी की पुस्तकों के बाद हिंदी की पुस्तकों का ही नबर है, और उर्दू का पाँचवाँ है। पजाब मे

हिंदी और पजाबी का यह किस्सा है कि आगामी दस वर्षों में यदि उर्दू पजाब से विदा हो जाय तो कोई अचरज नहीं।......आज के जो लोकप्रिय संगीत है, वे हिंदी और सस्कृत प्रधान हिंदी में हैं।"

पजाब के न्यायालयों में अभी हिंदी का प्रवेश सभव न हो तो उतनी चिंता नहीं, जितनी आवश्यकता उसके स्कूल-कालेजों से निकाले जाने के प्रयत्न को विफल करने की। कन्याओं को भी उर्दू पढाने के लिये विवश करने का प्रयास दृढता से रोका जाय। विश्वास है कि 'साहित्य-सदन' अबोहर, के कर्मठ तपस्वी स्वामी केशवानद जी तथा डाक्टर रघुवीर प्रभृति के सहयोग से पजाब ऐसा प्रयत्न करेगा जिससे हिंदी के मार्ग में कांटे न बिछने पावेंगे। जिस प्रात मे अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन इस वर्ष सफलतापूर्वक हुआ और जिसने अगले वर्ष के लिये भी सोत्साह निमत्रण दिया है, उसमे हिंदी-प्रचार की प्रगति अवश्य होगी। आशा है, वहां की जनता सतर्क होकर इस दिशा मे प्रयत्न करेगी।

अमृतसर के 'सर्व हिंद सिख मिशन' की ओर मे जो गुरुग्रथ साहब सन् १९३७ मे नागरी लिपि में प्रकाशित हुआ है, उसकी भूमिका मे लिखा है—"यह बात किसी से छिपी नहीं है कि भारत में आज हिंदी का क्षेत्र बढ रहा है। कोई समय था कि यह संयुक्तप्रात बिहार और मध्य प्रात के कुछ हिस्सों मे ही सीमित थी। किंतु आज हिंदी को भारत की जातीय भाषा होने का गौरव प्राप्त हो चुका है। बहुत समय से यह आवश्यकता अनुभव की जा रही थी कि जगतगुरु नानकदेवजी महाराज की दिव्य वाणी हिंदी भाषा में हो, जिससे सारे भारतवासी समान रूप से इसका लाभ प्राप्त करे।" यह शुभ लक्षण है। सिखों के उत्साह से पंजाब मे हिंदी की उन्नति अवश्यभावी है।

(४) संथालों मे देवनागरी

सथाल लोग अपने को 'होड़' और अपनी भाषा को 'होडरड' कहते हैं। सथाल नाम तो दूसरों का रखा हुआ है। ईसाई प्रचारकों ने रोमन लिपि मे सथाली भाषा की पुस्तके छापकर पहले-पहल सथालियों में शिक्षा-प्रचार किया था। इससे संथाल लोग रोमन के अभ्यस्त हो गए हैं और देवनागरी को कठिन समझने लगे है।

बिहार की सरकार और वहाँ के सरकार-परस्त लोग संथालों की लिपि रोमन रहने देने के पक्ष मे हैं। बिहार प्रांत का अधिकांश कारोबार हिंदी के द्वारा चलता है, अतएव देवनागरी का पक्ष अधिक प्रबल हो जाता है। बिहार की निरक्षरता निवारिणी समिति ने भी गत जून ४० मे रोमन लिपि मे संथाली भाषाओं की पुस्तकें प्रकाशित करने का निश्चय करके जो सर्वथा अदूरदर्शितापूर्ण और अवैज्ञानिक ढग से कार्य करने का विचार किया, उसका विरोध होना स्वाभाविक था। इस संबंध मे सबसे अधिक आंदोलन मुजफ्फरपुर के सुहृद-संघ ने किया। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख और वक्तव्य प्रकाशित करके संघ ने देवनागरी लिपि को ही संथालियों की शिक्षा का माध्यम रखने के लिए जो प्रयत्न किया है, उससे इस आंदोलन को पर्याप्त बल मिला, और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं एव कार्यकर्त्ताओं का ध्यान संथालियों की समस्या की ओर आकर्षित हुआ।

बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य-सम्मेलन ने फरवरी १९४१ मे एक प्रचारक नियुक्त किया जो गाँव गाँव में घूमकर संथालों को हिंदीप्रेमी बनाने लगा। फिर सम्मेलन ने कतिपय योग्य व्यक्तियों को संथाली भाषा तथा नागरी लिपि मे पुस्तके लिखने के लिये नियुक्त किया। छोटे दर्जे से लेकर प्रवेशिका परीक्षा तक की पुस्तकें तैयार कराने की योजना सम्मेलन के हाथ मे है। मई १९४१ तक तीन पुस्तके छप भी गई थीं और दो छप रही थीं। सम्मेलन ने यह ठोस काम हाथ में लेकर बहुत स्तुत्य कार्य किया है। सभा उसकी सफलता चाहती है। हिंदी के शुभचिंतकों को बिहार प्रांतीय सम्मेलन के इस कार्य में हाथ बँटाना चाहिए।

ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा संथालों मे जोरों से कार्य होते देख आर्यसमाज का ध्यान भी इधर आकर्षित हुआ। बिहार प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा के सहयोग से रघुनाथपुर, मुँगेर और झरिया मे तीन केंद्र स्थापित करके सुव्यवस्थित रूप से प्रचार कार्य कर रही है। रघुनाथपुर मे एक पाठशाला भी खोली गई है। अब तक २२ संथाली विद्यार्थी विभिन्न गुरुकुलों मे शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजे जा चुके हैं। पटना के कलक्टर श्री इन्दू० जी०

आर्चर संथाली लोक-गीतों को तथा संथाली भाषा की पाठ्य पुस्तकों को नागरी लिपि में छपवाने का सदुद्योग कर रहे हैं।

(७) रियासतें

हैदराबाद—हैदराबाद राज्य में इधर कुछ वर्षों से ऐसी चेष्टाएँ हो रही हैं जिनसे भारत की साधारण जनता का क्षुब्ध होना स्वाभाविक है। आर्यसमाजियों के धार्मिक कृत्यों में अदूरदर्शिता से लगाई गई रोक के कारण जो परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी, उसे बदलने के लिये आर्यजनता ने अपने पौरुष से रियासत को विवश किया। रियासत ने उसी प्रकार का एक और दुराग्रह अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन पर रोक लगा कर किया। विश्वास तो नहीं होता, किंतु पता लगा है कि उस्मानिया युनिवर्सिटी में एक वाद-विवाद (डिबेट) के अवसर पर हिंदी बोलनेवाले छात्रों पर अकारण ही रोक लगा दी गई; यद्यपि वाद-विवाद समिति ने अपनी नियमावली में किसी भाषा में बोलने पर रोक नहीं लगाई थी। इन बातों से सिद्ध होता है कि वहाँ का शासनसूत्र ऐसे लोगों के हाथ है जो बीसवीं शताब्दी मे रहकर भी अंधकार युग के स्वप्न देखते हैं। यदि हैदराबाद राज्य में सम्मेलन का अधिवेशन सम्पन्न होता तो वहाँ की जनता की जानकारी, योग्यता और विद्या में वृद्धि होती। जिस उर्दू भाषा को प्रोत्साहन देने पर रियासत तुली हुई है, उससे निकट संपर्क स्थापित करने की सुविधा प्राप्त होती और जो लोग हिंदीवालों का स्वागत करना चाहते थे, उनकी भी मनस्तुष्टि हो जाती। इस कार्य से वहाँ के शासन का सुयश ही बढ़ता। यदि हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय में ऊँची कक्षाओं में संस्कृत लेनेवाले मुसलमान छात्रों की अधिकता है तो यह सभा के लिये बड़े संतोष की बात है। जिस रियासत मे हिंदी आंदोलन को रोकने की पूरी पूरी चेष्टा की जाती हो, वहाँ के लिये यह बहुत शुभ सूचना है।

हिंदी-भाषी जनता इस राष्ट्रीय अपमान को चुपचाप न सह लेगी और हिंदी को उसका प्राप्य स्थान दिला कर ही शांत होगी।

कश्मीर—दूसरी ओर कश्मीर है, जहाँ की जनता की भाषा है कश्मीरी, ढोल बज रहे हैं उर्दू के। यदि पढ़नेवाले हिंदी पढ़ना चाहते हैं

तो उर्दू के हिमायती ऐसी चालें चलते हैं जिससे हिंदीवालों की कठिनाइयाँ बढ़ती है, मेल जोल में अंतर पड़ता है। उचित तो यह है कि जो हिंदी पढ़ना चाहते है, उनके लिये सुविधा कर दी जाय। यही मनुष्यता का तकाजा है। सो यह न करके व्यर्थ की हलचल मचाई जाती है। जो उर्दू नहीं पढ़ना चाहता, वह ऐसी चालों से तो और भी हिंदी पढ़ने के लिये प्रोत्साहित होगा।

ग्वालियर—"हैदराबाद और भोपाल में उर्दू इसलिये राज्य-भाषा होनी चाहिए कि वहाँ के शासकों की भाषा उर्दू है; और कश्मीर में उर्दू इसलिए राज्य-भाषा होनी चाहिए कि वहाँ के बहुसख्यक संप्रदाय के नेताओं को उर्दू से प्रेम है. और ग्वालियर में उर्दू इसलिये राज्य-भाषा होनी चाहिए कि वहाँ के राजा और पाँच प्रतिशत प्रजा की भाषा उर्दू होते हुए भी वहाँ के कुछ सांप्रदायिक नेता उर्दू की हिमायत करते और आंदोलन करने की धमकी देते है।" उद्धृत अंश 'जीवन' पत्र से लिया गया है। बात यह है कि ग्वालियर की राज्य-भाषा लिखी तो नागरी लिपि में जाती थी, पर उसका रूप ऐसा होता था कि हिंदीवाले उसे समझ न पाते थे—वह कठिन उर्दू होती थी। ग्वालियर राज्य के कानूनों और शासन-कार्यालयों की हिंदी समझना हँसी-खेल न था। इस कठिनाई को दूर करने के लिये ग्वालियर रियासत का ध्यान बहुत समय से आकृष्ट किया जा रहा था। धन्यवाद है ग्वालियर-नरेश श्रीमत जीवाजी राव महाराज को जिन्होंने कृपापूर्वक हिंदी भाषा की शैली को स्वीकार कर लिया है। आशा है, अब श्रीमत की सरकार प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी और रूढ़िवादी लोगों के अनुचित आंदोलन से न दबेगी और अब तक प्रजा के साथ जो अन्याय होता रहा है उसकी पुनरावृत्ति न होने देगी।

(८) हिंदी-हिंदुस्तानी

इस वर्ष अबोहर में होनेवाले हिंदी साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व के संबध मे जो हलचल रही, उससे स्पष्ट हो गया कि हिंदी और हिंदुस्तानी के संबध में देश के विचार क्या हैं। सभापति निर्वाचन के समय सामयिक पत्रों में प्राय कुछ कटु वातावरण उत्पन्न हो जाता है और प्रांत विशेष के सम्मान का प्रश्न खड़ा

कर दिया जाता है। इस निर्वाचन के समय इस समस्या के लिये स्थान ही न था। वास्तव में यह निर्वाचन हिंदी बनाम हिंदुस्तानी का था; और स्पष्ट है कि देश की बड़ी विभूतियों के हिंदुस्तानी के पक्ष में रहने पर भी जनता ने हिंदी को ही अपनाया। सभापति-निर्वाचन के अनंतर डा० राजेंद्रप्रसाद जी के उस प्रस्ताव की धूम मची जिसके स्वीकृत हो जाने पर राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्यालय साहित्य-सम्मेलन से स्वाधीन रहकर स्वेच्छा से कार्य करता। यह प्रस्ताव ऐसे अवसर पर जनता के सम्मुख आया, जब हिंदुस्तानी का पक्ष निर्बल हो चुका था। यदि इस प्रस्ताव को राजेंद्र बाबू उदारतापूर्वक वापस न ले लेते, तो अबोहर सम्मेलन में विषम परिस्थिति उत्पन्न हो जाने की आशंका थी। किंतु सुयोग से यह संकट टल गया।

हिंदी-हिंदुस्तानी के संबंध में देश में प्रबल मतभेद हैं; और यह निःसंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी बोलनेवाली जनता का बहुमत हिंदी के पक्ष में है। इस मतभेद को कम करके मध्य मार्ग निकालने के लिये श्री संपूर्णानंद जी ने काशी में कतिपय साहित्यिकों के सहयोग से यह सुझाव पेश किया कि हिंदुस्तानी के पक्ष-समर्थक डा० राजेंद्रप्रसाद और श्री काका कालेलकर आदि को उनकी सुविधा के अनुसार काशी बुलाया जाय; और एक सभा आमंत्रित करके उसकी सम्मति से ऐसा मार्ग निकाला जाय, जिससे पारस्परिक शंकाओं का निवारण होकर हिंदी का प्रचार और साहित्य का निर्माण निर्बाध रूप से हो। इस संबंध में श्री संपूर्णानंद जी को डा० राजेंद्र प्रसाद जी ने सूचना दी थी कि उनको काशी आने में गर्मी की ऋतु में सुविधा होगी। यद्यपि गर्मी की ऋतु के पहले ही उन्हें काशी आना पड़ा, तथापि बीमारी के कारण उनसे प्रस्तावित बातचीत नहीं हो पाई। फिर भी कलकत्ते में हुए पूर्व भारत राष्ट्रभाषा-प्रचार-सम्मेलन के अध्यक्ष-पद से उन्होंने जैसी भाषा में अपने विचार व्यक्त किए, उससे स्पष्ट है कि वे उसी हिंदी के पक्ष में हैं जिसका आदर बहुसंख्यक हिंदी-भाषी जनता में है। अबोहर-सम्मेलन से लौटने पर काका साहब ने सभा में आने की कृपा कर अपना दृष्टिकोण विस्तृत रूप से समझाया, और उसी भाषा को हिंदी-हिंदुस्तानी कहा जिसका उपयोग अधिकांश हिंदी जनता करती

है। अबोहर-सम्मेलन ने 'हिंदी' के साथ 'हिंदुस्तानी' शब्द रखना अस्वीकृत कर दिया है। काका साहब का आग्रह हिंदुस्तानी के पक्ष मे है। उनका कहना है कि यदि कुछ लोग हिंदुस्तानी के नाम पर हिंदी के रूप को परिवर्तित कर डालते है तो इसमे हमारा क्या अपराध। अवश्य ही काका साहब ऐसे प्रयत्न का विरोध यह समझकर नहीं करते कि इसका अधिकार एक मात्र उन्हींने नहीं ले रखा है। डा० राजेंद्रप्रसाद या श्री काका कालेलकर जैसी भाषा लिखते है, उससे हिंदीवालों को सतोप है; परंतु उनके नाम पर स्थान-विशेषों मे जैसी भाषा का प्रचार करने का उद्योग होता है और जैसी भाषा में पुस्तकों का प्रणयन होता है, उससे हिंदी का मार्ग कंटकाकीर्ण हो जाता है और ऐसी चेष्टा की उपेक्षा हिंदीवाले नहीं कर सकते। हाँ, यदि ऐसे उद्योग का सबल विरोध काका साहब या राजेंद्रप्रसाद जी की ओर से यथासमय कर दिया जाता तो हिंदी-जगत को चिंता न होती। किंतु यदि उल्लिखित चेष्टा का विरोध हिंदी-जगत करता है, तो एक ऐसे समुदाय के विरोध का डर दिखाया जाता है जो समझौते के लिये उत्सुक नहीं है। जिनकी लिपि पृथक् है, जो अभारतीय व्याकरण का अनुशासन मानते हैं, उनसे समझौते की आशा के दुर्बल आधार पर कोटि-कोटि जनता की सुगठित भाषा को सुधार के नाम पर किंभूत किमाकार बना डालने से किस लाभ की आशा है? हिंदी तो हिंदवासियों की भापा है—उसका व्यवहार हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई सभी करते हैं। उसमे सभी सम्प्रदायवालों ने रचना की है और आज भी कर रहे है।

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य-सम्मेलन ने अबोहर मे अपने ३०वें अधिवेशन में हिंदी और हिंदुस्तानी शब्दों के प्रयोग के विपय मे अपनी नीति का बहुत महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण किया है। वह इस घोपणा के रूप में है:—

" 'हिंदी' और 'हिंदुस्तानी' शब्दों के प्रयोग के बारे में हिंदी साहित्य-सम्मेलन और उसकी समितियों की, विशेषकर उसकी राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति की, क्या नीति है, इस विपय में कुछ भ्रम उपस्थित हुआ है और कथनोपकथन प्रकाशित हुए है, इसलिये अपनी नीति का स्पष्टीकरण करने के हेतु सम्मेलन निम्नलिखित घोपणा करता है—

"(१) प्रारंभ से ही सम्मेलन ने अपनी भाषा और राष्ट्र भाषा को हिंदी कहा है और उस भाषा तथा नागरी लिपि की उन्नति और प्रचार ही उसका उद्देश्य रहा है। द्वितीय हिंदी साहित्य-सम्मेलन में जो पहली नियमावली प्रयाग में स्वीकृत हुई, उसमें तथा उसके पश्चात अब तक जितने संशोधन उस नियमावली में हुए, उन सबसे यह प्रकट है कि सम्मेलन की भाषा का नाम हिंदी है। यद्यपि साहित्यिक अथवा प्रचार की दृष्टि में और स्थानों की विभिन्नता के कारण उसके रूप में शब्दावली का कुछ अंतर होना स्वाभाविक है।

"(२) वास्तव मे उर्दू भी हिंदी से उत्पन्न अरबी-फारसी मिश्रित एक रूप है। 'हिंदी' शब्द के भीतर ऐतिहासिक दृष्टि से उर्दू का समावेश है, किंतु उर्दू की साहित्यिक शैली, जो थोड़े से आदमियों में सीमित है, हिंदी से इस समय इतनी विभिन्न हो गई है कि उसकी पृथक् स्थिति सम्मेलन स्वीकार करता है और हिंदी की शैली से उसे भिन्न मानता है।

"(३) 'हिंदुस्थानी' या 'हिंदुस्तानी' शब्द का प्रयोग मुख्यकर इसलिये हुआ करता है कि वह देशी शब्द-व्यवहार से प्रभावित हिंदी-शैली तथा अरबी-फारसी शब्द व्यवहार से प्रभावित उर्दू-शैली दोनों को एक शब्द से एक समय मे निर्देश करे। कांग्रेस, हिंदुस्तानी ऐकेडेमी और कुछ गवर्नमेंट-विभागों मे इसी अर्थ मे इसका प्रयोग हुआ है और होता है। कुछ लोग इस शब्द का प्रयोग इस प्रकार की भाषा के लिये भी करते हैं जिसमे हिंदी और उर्दू शैलियों का मिश्रण हो।

"इस प्रकार निश्चित अर्थों मे 'उर्दू' और 'हिंदुस्तानी' शब्दों का प्रचलन है। इस विषय मे सम्मेलन का कोई विरोध नहीं है। किंतु सम्मेलन साहित्यिक और राष्ट्रीय दोनों दृष्टियों से, अपने और अपनी समितियों के काम मे हिंदी-शैली का और उनके लिये 'हिंदी' शब्द का ही व्यवहार और प्रचार करता है।

"(४) राष्ट्रीय सजगता के विस्तार और राष्ट्रीय भावना के उत्थान के साथ साथ हिंदी का राष्ट्रीय रूप दिन-दिन विकसित हो रहा है। भिन्न भिन्न प्रांतों से आए हुए तथा भिन्न भिन्न प्रभावों से उत्पादित नए शब्दों का भी उसमें धीरे धीरे स्वभावतः समावेश होगा। जीवित,

क्रियाशील तथा हिंदी की सार्वभौमिक प्रतिनिधि-संस्था के कर्त्तव्य-पालन मे सम्मेलन इस विकास का आवाहन और स्वागत करता है।

"(५) राष्ट्रभाषा होने के कारण प्राचीन समय से हिंदी सब प्रांतीय भाषाओं की बड़ी बहिन है; उसके और उसकी छोटी बहिनों के स्वरूपों मे माता का अमर सौंदर्य छलकता है। बहिने एक दूसरे के रूप में अपना रूप भी देखती है। उनका आपस का प्रेम स्वाभाविक है। बड़ी बहिन छोटी बहिनों के अधिकार सुरक्षित रखती है। उसका घर सब बहिनों के लिये खुला है और उसके घर में ही सब बहिनों को आपस में मिलने और मिलकर राष्ट्रोपासना करने की सुविधा है।

"सच्ची राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित सब देशभक्तों से सम्मेलन अनुरोध करता है कि राष्ट्रीय उत्थान, संघटन और एकीकरण में भाषा की शक्ति का अनुभव कर राष्ट्र भाषा हिंदी के प्रयोग और प्रचार मे निष्ठा और दृढ़ता से सलग्न हों।"

हिंदू-विश्वविद्यालय की रजत-जयती के अवसर पर माननीय टडन जी ने भी सभा मे पधार कर हिंदी-हिंदुस्तानी के सबध मे अबोहर-सम्मेलन के स्पष्ट निश्चय पर प्रकाश डाला और इस सबध में सम्मेलन की स्थिति स्पष्ट की।

राष्ट्रभाषा के स्वरूप के सबध मे बगाल के प्रसिद्ध मनीषी डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का यह मत विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है और इसी के समर्थक वीर सावरकर जी भी हैं। संस्कृत को छोडकर हिंदी राष्ट्र भाषा नहीं बन सकती। संस्कृत के अनत ज्ञान-भडार को छोड़कर अरब के शरणापन्न होना, हमारे पूर्वजों की गौरवमयी स्मृति का अपमान करना होगा—आत्महत्या होगी। सस्कृत-शब्द-विहीन हिंदी की अपेक्षा शुद्ध और सरलीकृत हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा होने के लिये अधिक योग्य होगी।

हिंदी किसी प्रातीय भाषा का आसन कभी छीनती नहीं। प्रांतीय भाषाएँ अपने अधिकार-क्षेत्र मे फले-फूले, हिंदी विभाषा-भाषी क्षेत्रों मे अतः प्रातीय भाषा के रूप मे स्वीकृत हुई है। इस दशा मे उससे प्रातीय भाषाओं के सघर्ष की आशका नहीं। उसका कार्यक्षेत्र ही पृथक् है। झगड़े का विषय है राष्ट्रभाषा-पद की प्राप्ति,

और यह पद ऐसी ही भाषा को मिल सकता है, जिसके बोलने और समझनेवालों की संख्या सारे देश मे सबसे अधिक हो और जो सरलता से शीघ्र सीखी और सब प्रातों मे समझी जा सके।

(९) अन्य हिंदी प्रचारिणी संस्थाएँ

इस वर्ष भी देश की विभिन्न संस्थाएँ यथापूर्व हिंदी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि के प्रचार और उन्नति में संलग्न रहीं। संबद्ध संस्थाओं के अतिरिक्त प्रयाग के अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, मद्रास की दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आगरा की नागरी प्रचारिणी सभा, जौनपुर की श्री गीता साहित्य कुटीर, अबोहर के साहित्य सदन, सिरसा की श्री बाल अमर समिति, गुवाहाटी की असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, नौगांव के राष्ट्रभाषा विद्यालय, कलकत्ता की पूर्वभारत राष्ट्रभाषा-प्रचार सभा, कटक की उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, इंदौर की मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, कोटा की श्री भारतेंदु समिति तथा हैदराबाद की हिंदी प्रचार सभा के कार्य-विवरण सभा को प्राप्त हुए हैं। स्थानाभाव से इन सब के कार्यों का अलग अलग उल्लेख शक्य नहीं है। आज देश भर में हिंदी के लिये जो जागृति लक्षित हो रही है, और हिंदी का सम्मान जो दिनोदिन बढता जा रहा है, उसका अधिकांश श्रेय देश की इन विभिन्न संस्थाओं को ही है जिन्होंने हमारे कंधे से कंधा मिलाकर हिंदी का संदेश देश के कोने कोने में पहुँचाया है।

(१०) हिंदी की प्रकाशित पुस्तकों की संख्या

सन् १९४१ में विभिन्न प्रातों मे प्रकाशित हिंदी और उर्दू पुस्तकों की संख्या नीचे दी जाती है—

प्रांत	अवधि	हिंदी	उर्दू
युक्त प्रांत—	३१ मार्च को समाप्त होनेवाले त्रिमास मे	३२६	४८
	३० जून ,, ,, ,,	३८९	८२
	३० सितंबर ,, ,, ,,	२७७	५०
	३१ दिसंबर ,, ,, ,,	२७०	३८

पंजाब—३१ मार्च को समाप्त होनेवाले त्रिमास में				७५	२०२
३० जून	,,	,,	,,	५७	२५४
३० सितंबर	,,	,,	,,	८२	३६८
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	२७	१६१
अजमेर-मेरवाड़ा—३१ मार्च		,,	,,	२०	×
३० जून	,,	,,	,,	२०	×
३० सितंबर	,,	,,	,,	१२	×
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	२९	×
बिहार—३१ मार्च	,,	,,	,,	९	×
३० जून	,,	,,	,,	१२	×
३० सितंबर	,,	,,	,,	१२	×
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	१४	×
बंगाल (सन् १९३९) ३१ मार्च		,,	,,	२९	२
३० जून	,,	,,	,,	६८	४
३० सितंबर	,,	,,	,,	४३	११
३१ दिसंबर	,,	,,	,,	२४	२

सन् १९४० ई० तथा १९४१ ई० के हिंदी-उर्दू के प्रांतीय प्रकाशनों का प्रतिशत ब्योरा—

प्रांत	१९४०-हिंदी	१९४१-हिंदी	१९४०-उर्दू	१९४१-उर्दू
युक्त प्रांत	·८८२	·६१	·१	·१०३
पंजाब	·१८९	·१३३	·८११	.५४
अजमेर-मेरवाड़ा	·९७६	·८६	·२४	×
बिहार (सन् १९३९)	×	·४३	×	·००२३
बंगाल (सन् १९३९)	×	·०२३	×	×

उल्लिखित तालिका से यह प्रकट होता है कि संयुक्त प्रांत में सन् १९४० की अपेक्षा १९४१ ई० में हिंदी के प्रकाशनों में ह्रास और उर्दू के प्रकाशनों में वृद्धि हुई है। इस ओर हमें विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पंजाब प्रांत में सन् १९४० की अपेक्षा १९४१ ई० में

उर्दू के प्रकाशनों में ह्रास हुआ है। इस प्रांत में हिंदी के प्रचार तथा व्यवहार के लिये हमें और शक्ति लगानी चाहिए।

(११) हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

देश में अनेक संस्थाएँ हैं जो हिंदी भाषा और साहित्य संबंधी परीक्षाएँ अथवा अन्य विषयों की परीक्षाएँ हिंदी माध्यम द्वारा लिया करती है। उनमें कुछ सरकारी हैं, जैसे विश्वविद्यालयों, विद्यालयों और शिक्षा बोर्ड तथा सरकारी शिक्षाविभाग की परीक्षाएँ कुछ गैर-सरकारी परीक्षाएँ हैं जो हिंदी साहित्य सम्मेलन, द० भा० हिं० प्र० सभा तथा गुरुकुल आदि संस्थाओं द्वारा ली जाती हैं। इनके अतिरिक्त भी अनेक परीक्षण संस्थाएँ हैं। इन परीक्षाओं में सम्मिलित होनेवाले विद्यार्थियों के आँकड़ों से देश में हिंदी प्रचार की प्रगति का बहुत कुछ अनुमान किया जा सकता है। सभा ने विभिन्न संस्थाओं से अपने अपने अद्यतन आँकड़े भेजने का अनुरोध किया था, पर खेद है, इस वर्ष कई संस्थाओं का उत्तर नहीं प्राप्त हो सका। जिनके आँकड़े आ गए हैं, उनकी परीक्षाओं में सम्मिलित होनेवाले हिंदी और उर्दू के परीक्षार्थियों की संख्या इस तालिका से प्रकट होती है—

हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

प्रांत	परीक्षण-संस्थाएं सरकारी	परीक्षण-संस्थाएं गैर सरकारी	परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
दिल्ली	दिल्ली विश्वविद्यालय	×	बी० ए०	१३६	२३८
			इंटर०	२७६	४५३
पंजाब	पंजाब विश्वविद्यालय	×	भिन्न भिन्न	१४६१५	२४२७८
बंगाल	ढाका विश्वविद्यालय	×	बी० ए०	×	५
बंबई	बंबई विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	×	१०
			बी० ए०	×	३१
			इंटर०	१६	५५१
			मैट्रिक	१२४	७४६
	×	हिंदी विद्यापीठ	भिन्न भिन्न	१३६३	×
मद्रास	×	दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा	भिन्न भिन्न	१५७१०	×
मध्यप्रांतबरार	नागपुर विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	२४	८
			बी० ए०	६६	२९
			इंटर०	१७०	७८

प्रांत	परीक्षक संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
	हाईस्कूल परीक्षाबोर्ड	×	हाईस्कूल	१५८४	३६५
	×	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	भिन्न भिन्न	१४०७५	×
मैसूर	मैसूर विश्वविद्यालय	×	बी०ए०,बी०एस-सी०	५	२७
			इंटर०	१०	१०४
युक्तप्रांत	प्रयाग विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	३५	१०
			बी० ए०	१८६	४३
	आगरा विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	१५२	५७
			बी० ए०	५१५	२२६
	हाईस्कूल और इंटर परीक्षा बोर्ड	×	इंटर०	१८०७	११२४
	प्रांतीय शिक्षा विभाग		हाईस्कूल	१००५३	६८६१
		×	वर्नाक्यूलर फा०	२८२६५	१७६४७
			स्पे० वर्ना०	१३३	१८२
			विशेष योग्यता	४०५०	१५६८

प्रांत	परीक्षण संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
	×	हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग	भिन्न भिन्न	३४१५	×
	×	गीता तथा रामायण परीक्षा-समिति, बरहज	रामायण, गीता	१३२८३	×
	×	ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, हरिद्वार	भिन्न भिन्न	४०	×
राजपूताना, मध्यभारत, ग्वालियर, अजमेर	हाईस्कूल और इंटर० परीक्षाबोर्ड	×	इंटर०	५७१	६६
			हाईस्कूल	३६५६	७३८
सिंध	सिंध हिंदी विद्यापीठ, सक्खर	×	हिंदी विज्ञ	१८०	×
			योग	११४६७८	५५४७७

३०—शोक-प्रकाश

अत्यंत शोक है कि इस वर्ष हिंदी और संस्कृत के प्रकांड पंडित डाक्टर सर गंगानाथ झा भी हमारे बीच में उठ गए। उनके न रहने से हमारी जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं। इंदौर के श्री श्रीनिवास चतुर्वेदी के निधन से हमारी भाषा और साहित्य को गहरा धक्का लगा है। मिर्जा अजीम बेग चगताई हिंदी के उन इने गिने मुसलमान साहित्य सेवियों में थे, जिनकी रचनाओं ने हमारे साहित्य की यथेष्ट श्रीवृद्धि की है, एवं हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सौहार्द स्थापित करने में बहुत सहायता पहुँचाई है। इनके शोकार्त्त कुटुंबियों के प्रति सभा समवेदना प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह गतात्माओं को सद्गति दे।

३१—धन्यवाद

अनेक विघ्न-बाधाओं के रहते हुए भी सभा के विभिन्न विभागों ने इस वर्ष जो साफल्य लाभ किया, उसका श्रेय सभा के विभाग-मंत्रियों और अध्यक्षों को है, जिनके कृपापूर्ण सहयोग के बिना इस वर्ष का कार्य इतने सुचारु रूप से करना संभव नहीं था। सभा के सभापति राय बहादुर पं० कमलाकर द्विवेदी जी ने बड़ी ही लगन और परिश्रम के साथ इस वर्ष सभा की सेवा की। आपके स्वर्गीय पिता महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी जी वर्षों सभा के सभापति रहे, और उन्होंने अपने कार्य काल में बहुत ही योग्यतापूर्वक सभा का संचालन किया था। पं० कमलाकर जी सुयोग्य पिता के सुयोग्य पुत्र हैं। सभा के प्रति उनमें आत्मीयता का भाव होना सर्वथा स्वाभाविक है। सं० १९९५ में जब सभा का प्रतिनिधि मंडल मेवाड़ गया था, तब आप वहाँ के रेवेन्यू मिनिस्टर थे। यह आपही के परिश्रम और प्रभाव का फल था कि महाराणा जी ने सभा का संरक्षक होना स्वीकार किया और सभा को राज्य की ओर से २०००) की सहायता प्राप्त हुई तथा अनेक व्यक्तियों ने सभा का विशिष्ट और स्थायी सभासद होना स्वीकार किया। आपकी मुजफ्फरपुर यात्रा का उल्लेख अन्यत्र हो चुका है। आप ही के प्रयत्न से इस वर्ष वहाँ के कतिपय सज्जन सभा के स्थायी सभासद हुए हैं। उनकी सेवाओं के प्रति आंतरिक कृतज्ञता प्रकट करती हुई सभा आशा करती है कि उनका कृपापूर्ण

सहयोग सभा को निरंतर इसी भाँति प्राप्त होता रहेगा। कलाभवन के प्राण श्रीमान राय कृष्णदास जी ने अहर्निश प्रयत्न करके इस वर्ष उसकी जो गौरववृद्धि की है, तदर्थ वे विशेष धन्यवादार्ह है। साहित्य-मत्री प० पद्मनारायण आचार्य और अर्थमत्री बा० जीवनदास ने अपने अपने विभागों का कार्य जिस उत्तमत्ता से सपन्न किया, उसके लिये इन दोनो सज्जनों को साधुवाद है। आय-व्यय निरीक्षक बाबू गुलाबदास नागर की भी सभा विशेष अनुगृहीत है, जिन्होंने अत्यत मनोयोगपूर्वक सभा के हिसाब-किताब को जाँच की है। खोज-विभाग के निरीक्षक पं० विद्याभूषण मिश्र तथा सयुक्त-निरीक्षक प० रामबहोरी शुक्ल ने खोज का कार्य सुचारु रूप से सपन्न कराने की जो कृपा की है, तदर्थ उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना सभा अपना आवश्यक कर्त्तव्य समझती है। नागरीप्रचारिणी पत्रिका के संपादक-मडल, विशेषतः उसके सपादक श्री कृष्णानद जी ने बहुव्यस्त और रुग्ण होते हुए भी उसकी मर्यादा और प्रतिष्ठा की रक्षा और वृद्धि के लिये जिस परिश्रम और योग्यता के साथ अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया, उसके लिये सभा उन्हे हृदय से धन्यवाद देती है। सभा के प्रचार-मत्री और 'हिंदी' के सपादक प० चद्रबली पाँड़े, आर्यभाषा पुस्तकालय के निरीक्षक प० श्रीशचद्र शर्मा, 'प्रसाद व्याख्यान माला' के सयोजक बाबू कृष्णदेव प्रसाद गौड़ तथा भवन-निर्माण विभाग के अध्यक्ष श्री रामभरोसे सेठ जी ने अपने अपने विभागों का कार्य सुचारु रूप से सपन्न किया है। इसके लिये सभा आंतरिक कृतज्ञता प्रकट करती है।

सभा के उपसभापति प० रामनारायण मिश्र जी की सेवाओं का तो सक्षेप रूप मे भी उल्लेख करना यहाँ सभव नहीं है। सभा की कल्याण-कामना उनके जीवन मे ओतप्रोत है। सभा का ऐसा कोई विभाग नही, जिसकी ओर उनकी दृष्टि न रही हो अथवा जिसने उनके सत्परामर्श से लाभ न उठाया हो। उनके जैसे कर्मठ व्यक्ति को जितना भी धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा है।

श्रीमन्महाराजकुमार डा० रघुवीरसिंह जी ने सभा के सरक्षकों की वृद्धि के लिये इस वर्ष जिस उत्साह से परिश्रम किया, उसके लिये सभा हृदय से उनका आभार स्वीकार करती है। श्री गोपालानद पुरी एव श्री शीतलप्रसाद दुबे की भी सभा अनुगृहीत है, जिन्होंने निःस्वार्थ रूप से

इस वर्ष कार्यालय के काम में हाथ बँटाया। गत वर्ष श्री सोमेश्वर शुक्ल ने स्व० प० महावीरप्रसाद द्विवेदी प्रदत्त पत्र सग्रह की सूची बनाने की जो कृपा की थी, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। खेद है, गत वर्ष के विवरण मे उनका नामोल्लेख नहीं हो सका।

वीकानेर की जनता मे जाग्रति एव सभा के प्रति सद्भाव उत्पन्न करने में पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी श्री रामलोटन प्रसाद जी ने खुले दिल से जो प्रयत्न किया, उसके लिये सभा उनका विशेष रूप से आभार स्वीकार करती है। वहाँ सभा के सदस्य बढाने और सभा के प्रति वहाँ की जनता मे प्रेम उत्पन्न करने मे निम्नोक्त उत्साही सदस्यों ने जो श्रम और चेष्टा की, तथा अध्यापक श्री रामलोटन प्रसाद जी को साहाय्य प्रदान किया, उसके लिये सभा इन सब सज्जनों की अनुगृहीत है। विश्वास है कि ये सभी सज्जन भविष्य में इसी प्रकार सभा के हित-साधन में दत्तचित्त रहने की कृपा करेंगे।

(१) श्री अयोध्याप्रसाद तिवारी, (२) श्री विद्याधर जी शास्त्री, (३) श्री सुदरलाल शर्मा, (४) श्री केशवप्रसाद गुप्त, (५) श्री डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, (६) श्री पूर्णचंद्र गर्ग, (७) श्री रघुवरदयाल गोयल, (८) श्री ईश्वरदयाल जी, (९) श्री वैद्य श्रीनारायण जी शास्त्री, (१०) वैद्यभूषण श्री मोहनलाल कोठारी, (११) श्री जनार्दन शर्मा, (१२) वैद्यराज श्री चद्रशेखर जी शास्त्री, (१३) श्री नथमल्ल बणोट, (१४) श्री भीष्मदेव शर्मा, (१५) श्रीमती छोटाबाई, प्रधानाध्यापिका, (१६) आयुर्वेदाचार्य श्री शकरदत्त शर्मा, (१७) श्री भँवरलाल वैद, (१८) श्री डा० भगतराम, (१९) श्री मुंशी इब्राहीम खाँ, (२०) श्री इद्रचद्र शास्त्री, (२१) श्री ऊधोदास, (२२) श्री क० मोहनलाल बोहरा, (२३) श्री रावतमल कोचर, (२४) श्री बनवारीलाल अग्रवाल, और (२५) साहित्यरत्न श्री शंभूदयाल सक्सेना।

प्रबंध समिति की ओर से

लक्ष्मीप्रसाद पांडेय

प्रधान मंत्री

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

परिशिष्ट १

जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकादि द्वारा इस वर्ष सभा के पुस्तकालय की सहायता की है, अकारादि क्रम से उनकी नामावली—

श्री अंबिकाचरण जी कविराज, काशी	१
,, अचलप्रताप न्यायी, जोधपुर	१
,, अभयानंद स्वामी, काशी	२
,, आर० वी० जोशी, काशी	१
,, पुरातत्व-विभाग, जयपुर	१
,, पुरातत्व-विभाग, जोधपुर	१
,, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली	९
,, इंडियन प्रेस लि०, इलाहाबाद	३०
,, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद	₹
,, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, बंबई	१
,, कमलनाथ अग्रवाल, काशी	१३
,, कांतानाथ पांडेय, काशी	४
,, कुंजलाल रत्न, झाँसी	१
,, कृष्णगोपाल आयुर्वेदिक औषधालय, कालेडा	२
,, खेतसिंह नारायण जी गढ़वी, मोढेरा	१
,, गवर्नमेंट प्रेस, कलकत्ता	२
,, गीता प्रेस, गोरखपुर	१०
,, गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर	१
,, गोपालचंद्र सिंह, बाराबंकी	५
,, गोपालसिंह, बदनोर	१
,, महामहोपाध्याय राय बहादुर डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा	२
,, चंद्रशेखरधर शर्मा, बगहा	१
,, चीफ खालसा दीवान, अमृतसर	१८
,, लाला जम्बूप्रसाद प्रकाशचंद्र, ननौता	१
,, कुँअर जगदीश सिंह गहलोत, जोधपुर	१
,, जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य, प्रयाग	१

श्री जयेंद्रराय भगवानलाल, अहमदाबाद १
,, ज्ञानस्वरूप सिंह अखौरी, काशी १
,, तुलसीदत्त "शैदा", लाहौर ३
,, त्रिवेणीशंकर काशिव, दमोह १
,, दरबार साहित्य कमिटी, अमृतसर २२
,, दशरथ ओझा, दिल्ली ५
,, दूरकाल हीरकोत्सव समिति, अहमदाबाद १
,, देवनारायण वकील, काशी १
,, धर्मवल्लभ दास, राजकोट १
,, नंदलाल पेंशनर, इलाहाबाद १
,, आचार्य नरेंद्रदेव, काशी १
,, नरोत्तमदास रस्तोगी, लखनऊ १
,, नवयुग प्रकाश, नागपुर १
,, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ १
,, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ८
,, पंजाब आयुर्वेदिक फारमेसी, अमृतसर ४
,, पटियाला दरबार ४
,, पद्मनारायण आचार्य, काशी ३
,, परिपूर्णानंद पैन्यूली 'नंद', मसूरी १
,, प्रवासीलाल वर्मा, काशी २
,, बच्चन, इलाहाबाद ६
,, राजा बलदेवदास बिड़ला, काशी २
,, बुलाकीराम शास्त्री, बार-ऐट-ला, हफीजाबाद १
,, भगवतशरण उपाध्याय, लखनऊ ४
,, भारतधर्म महामंडल, बनारस ५
,, भारतवासी प्रेस, इलाहाबाद ८
,, भारत सरकार, नई दिल्ली ६
,, डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, काशी १
,, महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पूना २
,, ठा० महेंद्र सिंह, डिप्टी कलक्टर, हरदोई १

श्री माहेश्वरी विद्यालय, कलकत्ता	१
,, मुरलीधर सिंह, आरा	१
,, मूलचंद चोपड़ा, काशी	१
,, मोहनलाल आर्य, अजीतमल	४
,, डा० रघुवीर, लाहौर	१
,, महाराजकुमार डा० रघुवीरसिंह, सीतामऊ	४
,, राघवेंद्र शर्मा त्रिपाठी, गोनी	२
,, राज पब्लिशिंग हाउस, बुलंदशहर	१
,, राजेश्वर दीक्षित, जबलपुर	२
,, रामगोपाल गुप्त, कानपुर	१
,, रामचंद्र वर्मा, काशी	३
,, रामदास जी महंत, बड़ौदा	१
,, रामनारायण शर्मा कामदार, बागली	१
,, रामनारायण यादवेंदु, आगरा	२
,, राम रघुवीरशरण रामनाथ, मुरादाबाद	१
,, रामस्वरूप व्यास	१
,, लीडर प्रेस, इलाहाबाद	८
,, विज्ञान परिषद, इलाहाबाद	५
,, विद्या विभाग, काँकरोली	२
,, विनयकुमार सरकार, कलकत्ता	१
,, महामहोपाध्याय डाक्टर वी० स्वामीनाथ अय्यर, मद्रास	१
,, शारदादेवी मिश्र, गाडरवारा	१
,, शिक्षा विभाग, बिलासपुर स्टेट, बिलासपुर	१
,, शुभकरण बदरीदान, जोधपुर	१
,, रायबहादुर डा० श्यामसुंदरदास, काशी	१
,, श्रीपद वद्योपाध्याय, लखनऊ	१
,, श्रीराम शर्मा, कलकत्ता	१
,, संपूर्णानंद, काशी	२
,, संयुक्तप्रांतीय सरकार, प्रयाग	७
,, सत्यव्रत भट्टाचार्य, प्रयाग	६
,, राजा सत्यानंदप्रसाद सिंह, काशी	१३

श्री सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली	६
,, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली	१
,, स्वामी हरनामदास जी, सक्खर (सिंध)	२
,, हरीनारायण नानोडट स्वामी, बंबई	१
,, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई	७
,, हिंदी टाइम टेबुल प्रेस, बनारस	९
,, हिंदी पुस्तक एजेंसी, बनारस	१
,, हिंदी प्रचारिणी सभा, जम्मू	१
,, हिंदी विद्यापीठ, देवघर	५
,, हिंदी विद्यापीठ, बंबई	२
,, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	१२

गत वर्ष श्री द्वारिकाप्रसाद सेवक ने कृपापूर्वक युगांतर, शांति, महिला, विश्वमित्र, विशालभारत, नागरीप्रचारिणी पत्रिका, वाणी, जागरण, हरिजन-सेवक, भविष्य, काव्य-कलाधर, वेदोदय, कल्पवृक्ष, आदि पत्र-पत्रिकाओं का अपना संपूर्ण संग्रह सभा को प्रदान किया था। इससे अनेक पत्रों की अधूरी फाइल अब पूरी हो गई है। इस कृपा के लिये सभा श्री द्वारिकाप्रसाद की अनुगृहीत है। खेद है, गत वर्ष के विवरण में आपका नामोल्लेख नहीं हो सका।

परिशिष्ट २

पत्र-पत्रिकाएँ जो इस वर्ष सभा के पुस्तकालय में आती रहीं—

दैनिक

आज, काशी	२०)
आर्यावर्त, पटना	१२)
जागृति, कलकत्ता	१८)
प्रताप, कानपुर	२०)
भारत, इलाहाबाद	१८)
लोकमान्य, कलकत्ता	१८)
वर्त्तमान, कानपुर	१८)
विश्वमित्र, कलकत्ता	१८)
वीर अर्जुन, दिल्ली	१८)

अर्द्धसाप्ताहिक

केसरी (मराठी)	८)

साप्ताहिक

अभिनय, कलकत्ता	३॥)

आज, काशी	५)
आर्य, कांगडी	३॥)
आर्यभानु, नागपुर	४=)
आर्यमार्तंड, अजमेर	२॥)
आर्यमित्र, आगरा	३॥)
कर्मवीर, खडवा	३॥)
गुजराती पच, अहमदाबाद	३॥)
गृहस्थ, गया	२)
चित्रप्रकाश, दिल्ली	६)
जयाजी प्रताप, ग्वालियर	२)
जागृति, कलकत्ता	३॥)
जैन सदेश, आगरा	३॥)
तिरहुत समाचार, मुजफ्फरपुर	४)
देशदूत, इलाहाबाद	४)
न्याय, इलाहाबाद	३)
प्रताप, कानपुर	४)
भारत, इलाहाबाद	४)
मारवाड़ी समाचार, जोधपुर	३॥)
राजस्थान, अजमेर	५)
लोकमान्य, कलकत्ता	३॥)
विश्वमित्र, कलकत्ता	४)
शखनाद, कानपुर	२)
शुभचिंतक, जबलपुर	३॥)
श्रीवेंकटेश्वर समाचार, बंबई	२॥)
समय, जौनपुर	२)
समाज सेवक, कलकत्ता	३)
सिद्धांत, काशी	३)
सैनिक, आगरा	३।)
स्वतंत्र, झाँसी	४)
हरिजन सेवक, अहमदाबाद,	५)
हिंदी केसरी, बनारस	२)
हिंदी मिलाप, लाहौर	३॥)
हिंदी स्वराज्य, खंडवा	३॥)
हिंदू, दिल्ली	३॥)

पाक्षिक

इडियन इनफारमेशन (अँगरेजी), नई दिल्ली	
क्षत्रियमित्र, बनारस	२)
बनारस म्युनिसिपल गजट, बनारस	॥=)
भारतीय समाचार, नई दिल्ली	
मधुकर, टीकमगढ़	२)
हमारी जबान (उर्दू), दिल्ली	१)

मासिक

अग्रवाल सदेश, बनारस	३)
अभिनय, कलकत्ता	३)
आगामी कल, खंडवा	४)
आनद, उरई	२।)
आरती, पटना	५)
आर्यमहिला, बनारस	५)
इडियन पी० ई० एन० (अँगरेजी), बबई	३)
इडियन थियोसोफिस्ट, बनारस	२)
उदय, उदयपुर	३)
कन्नौज समाचार, कन्नौज	१)
कल्पवृक्ष, उज्जैन	२॥)
कल्याण, गोरखपुर	४≡)
कहानी, बनारस	३)
किशोर, पटना	३)
किसान, पटना	३)
केशरी, गया	२)
जीवनसखा, इलाहाबाद	३)

जीवन साहित्य, नई दिल्ली १॥)
झुनझुना, आगरा २)
दीपक, अबोहर २॥)
धन्वंतरि, अलीगढ़ ४॥)
धर्मदूत, सारनाथ १॥)
नई तालीम, वर्धा १)
नोंकझोंक, आगरा ३)
परलोक, भिवानी २॥)
प्रदीप, मुरादाबाद ५)
प्रभात, दिल्ली ३)
बालक, लहेरियासराय ३)
बालसखा, इलाहाबाद २॥)
बालहित, उदयपुर २)
ब्रजभारती, मथुरा २)
भूगोल, इलाहाबाद ३)
माधुरी, लखनऊ ६॥)
मेलमिलाप, बाँकीपुर २)
यादवेश, बनारस १)
राजपूत, आगरा २)
राष्ट्रभाषा समाचार, वर्धा ॥=)
विज्ञान, इलाहाबाद ३)
विशालभारत, कलकत्ता ६)
विश्वमित्र, कलकत्ता ६॥)
विश्ववाणी, इलाहाबाद ६)
वीणा, इंदौर ४)
वैदिकधर्म, औंध ५)
शनिवारेर चीठी (बगला), कलकत्ता ३)
शिक्षण अने साहित्य (गुजराती), बंबई २)
शिक्षा सुधा, मुरादाबाद ३)

संगीत, हाथरस ३)
सचित्र संसार, इलाहाबाद ३।)
सन्मार्ग, बनारस २)
सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग १॥)
सरस्वती, इलाहाबाद ४)
सर्वोदय, वर्धा ३)
साधना, आगरा ३)
सार्वदेशिक, दिल्ली ३)
साहित्य संदेश, आगरा २)
सुकवि, कानपुर ५)
सुधा, लखनऊ ५)
सुधानिधि, प्रयाग २)
सेवा, इलाहाबाद १॥)
हंस, बनारस ४)
हल, इलाहाबाद ५॥)
हिंदी, बनारस ॥)
हिंदी पत्रिका, नई दिल्ली २)
हिंदी प्रचार समाचार, मद्रास २)
हिंदी शिक्षण पत्रिका, बंबई १॥)

त्रैमासिक

इंडियन ज्याग्रफिकल जर्नल अव यूनिवर्सिटी (अँगरेजी), मद्रास ८)
इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली, (अँगरेजी), कलकत्ता ६॥)
उर्दू (उर्दू), नई दिल्ली ७)
एनल्स अव दी ओरिएंटल रिसर्च (अंग्रेजी) मद्रास, ४)
एनल्स आव दी भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (अँगरेजी), पूना
एनल्स अव दी श्रीवेंकटेश्वर

ओरिएंटल इंस्टिट्यूट (अँगरेजी), तिरुपति
ओरिएटल कालेज मेगजीन (अँगरेजी), लाहौर
कर्नाटक हिस्टारिकल रिव्यू (अँगरेजी), धारवाड़ ३)
क्वार्टरली जर्नल अव मिथिक सोसायटी (अँगरेजी), बबई ५)
चारण, जोधपुर
जर्नल आव दी आंध्र हिस्टारिकल रिसर्च सोसायटी (अँगरेजी), राजामुंद्री ८॥)
जर्नल आव दी ग्रेटर इडिया सोसायटी (अँगरेजी), कलकत्ता ४॥)
जर्नल अव दी तेलगू एकेडेमी (तेलगू), मद्रास
जर्नल अव दी बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी (अँगरेजी), बनारस
जनल अव दी बिहार ऐंड ओड़िसा रिसर्च सोसायटी (अँगरेजी), पटना २०)
जर्नल अव दी यूनिवर्सिटी अव बांबे (अगरेजी), बबई १२)
जैन वैद्य (अँगरेजी), लाहौर
जैन सिद्धात भास्कर (अगरेजी-हिंदी), आरा ५)
नागरीप्रचारिणी पत्रिका, काशी १०)
पूना ओरिएटलिस्ट (अँगरेजी), ६)
बुद्धिप्रकाश (गुजराती), अहमदाबाद १॥)
बुलेटिन अव दी डेकन कालेज रिसर्च इस्टिट्यूट(अँगरेजी), पूना ६)
ब्रह्मविद्या, अद्यार
भारतीय इतिहास सशोधक मडल (मराठी), पूना ३)
महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका (मराठी), पूना ३)
विश्वभारती, (अग्रेजी) शांतिनिकेतन ६)
साहित्य परिषद् पत्रिका (बँगला), कलकत्ता
हारवर्ड जर्नल अव एशियाटिक स्टडीज(अँगरेजी), केंब्रिचूसेट
हिंदी विश्वभारती, शांतिनिकेतन ६)
हिंदुस्तानी, इलाहाबाद ४)

चतुर्मासिक

जर्नल आव इडियन हिस्ट्री (अँगरेजी), कलकत्ता १०)

अर्द्धवार्षिक

जर्नल अव दी बांबे ब्रांच अव दी रायल एशियाटिक सोसायटी (अँगरेजी), बबई
बुलेटिन अव दी स्कूल अव ओरिएटल स्टडीज (अँगरेजी), लदन

परिशिष्ट ३

प्रयाग क्षेत्र से प्राप्त हस्तलेखों की सूची

	ग्रंथ	रचयिता	दाता
(१)	रामचद्रिका	केशवदास	पं० रामकृष्ण शुक्ल,सूरजकुड,
(२)	भक्तमाल	नाभादास	,, प्रयाग
(३)	भक्तचरितावली	×	प० देवीदत्तशुक्ल,सपादक'सरस्वती',
(४)	कृष्णकीर्त्तन	×	,, प्रयाग
(५)	फुटकर कवित्त	×	,,
(६)	फुटकर कवित्त	गंगाराम	,,
(७)	बारहमासा	,,	,,
(८)	राम रहस्य	रामचरण	,,
(९)	अनुराग सागर	कबीर	,,
(१०)	शिवसागर	महाराज दलेलसिंह	,,

बलिया क्षेत्र से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों की सूची

	ग्रंथ	रचयिता
(१)	भक्ति जयमाल	शिवाराम बाबा
(२)	रामायण (अयोध्या,लका और उत्तरकांड)	गो० तुलसीदास
(३)	रामायण	,, ,,
(४)	,, (बालकाड और उत्तर कांड)	,, ,,
(५)	,, (अरण्य, किष्किधा, सुदर लका तथा उत्तर काड)	,, ,,
(६)	,, (बाल काड)	,, ,,
(७)	विनयपत्रिका और (८) दोहावली	,, ,,
(९)	सुदामा चरित्र और (१०) अलंकार ग्रंथ	हलधर
(११)	रामचद्रिका	केशवदास
(१२)	चाणक्य राजनीति (सस्कृत)	चाणक्य
(१३)	रसचंद्रिका (बिहारी सतसई की टीका)	नवाब ईसवी खाँ
(१४)	शब्दावली	विरंच गुसाईं
(१५)	बैताल पच्चीसी	
(१६)	राजनीति	लल्लू लाल (लालकवि)
(१७)	रामजन्म कथा और दानलीला	सूरजदास

(१८)	छप्पैरामायण	गो० तुलसीदास
	सुदामा चरित्र	हलधर
	अर्जुनगीता	भुआल (जन भुआल)
(१९)	वदी कथा	
	वीजक या वारह भगत की कथा	
	संत उपदेश और संताखरी	शिवनारायण स्वामी
	अर्जुन गीता या रामरतन गीता	रसजानि

परिशिष्ट ४

सभा के संस्थापक

सभा के संस्थापकों में से इस समय भी सभा को सदैव की भाँति सँभालने में तत्पर सभासद—

श्रीयुत रायबहादुर साहित्य वाचस्पति डा० श्यामसुदरदास, बी० ए०, डी० लिट्०

श्रीयुत प० रामनारायण मिश्र, बी० ए०, पी० ई० एस० (अवसरप्राप्त)

श्रीयुत रायसाहब ठाकुर शिवकुमार सिंह (अवसरप्राप्त डिप्टी इस्पेक्टर अव स्कूल्स)

परिशिष्ट ५

सभा के संरक्षक

[चुनाव के क्रम से]

१—श्रीमान् हिज हाइनेस जनरल महाराजाधिराज राजराजेश्वर नरेंद्रशिरोमणि महाराजा श्री गंगासिंह बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० सी० वी० ओ०, जी० बी० ई०, के० सी० बी०, ए० डी० सी०, एल एल० डी०, बीकानेर-नरेश।

२— श्रीमान् हिज हाइनेस महाराजा गुलाबसिंह जू देव बहादुर, रीवाँ नरेश।

३—श्रीमान् हिज हाइनेस सवाई महेंद्र महाराजाधिराज सर वीरसिंह जू देव बहादुर, के० सी० एस० आई०, ओड़छा-नरेश।

४—श्रीमान् हिज हाइनेस महाराणा साहब सर भूपालसिंह बहादुर, के० सी० आई० ई०, जी० सी० एस० आई०, उदयपुर (मेवाड) नरेश।

परिशिष्ट ६

संबद्ध संस्थाएँ

(१) नागरीप्रचारिणी सभा, मैनपुरी
(२) नागरीप्रचारिणी सभा, बुलंदशहर
(३) नागरीप्रचारिणी सभा, बहराइच
(४) नागरीप्रचारिणी सभा, भगवानपुर रत्ती, पो० अमृतपुर, जिला मुजफ्फरपुर
(५) नागरीप्रचारिणी सभा, गोंडा
(६) हिंदी हितैषिणी सभा, सहारनपुर
(७) सुहृद संघ, मुजफ्फरपुर
(८) बालक संघ, विष्णुपुर, पटना
(९) प्रसाद परिषद्, बनारस
(१०) हिंदी साहित्य भवन, धरफरी, मुजफ्फरपुर
(११) स्वयंसेवक पुस्तकालय, छपरा
(१२) साहित्यसदन माँझी, सारन
(१३) हिंदी प्रचार मंडल, बदायूँ
(१४) नागरीप्रचारिणी सभा, मस्केत और मत्रा
(१५) हिंदी साहित्य सदन, सहसराम
(१६) हिंदी प्रचारिणी सभा, जम्मू
(१७) बाल नागरीप्रचारिणी सभा, पुण्यार्क, पो० पंडारक (पटना)
(१८) हिंदी हितैषिणी सभा, लालगंज (मुजफ्फरपुर)
(१९) हिंदी प्रचारिणी सभा, लालगंज (मुजफ्फरपुर)
(२०) देवनागरी परिषद्, धामपुर
(२१) नागरीप्रचारिणी सभा, सैदपुर (गाजीपुर)

परिशिष्ट ७

स्थायी निधियों का विवरण

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
१—देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला			
इंपीरियल बैंक के ७ हिस्से	३५००)	१०३६२॥)	६३०)
,, ,, १४ हिस्से	१७५०)	१७५०)	
दाता—स्वर्गवासी मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ, जोधपुर। इसके ब्याज से ऐतिहासिक पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं।			
२—बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१२०००)	७२५१=)	४२०)
दाता—बारहट बालाबख्श जी, जयपुर। इसके ब्याज से राजपूतों और चारणों की रची हुई डिंगल और पिंगल भाषा की पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं।			
३—जोधसिंह पुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१६००)	१५८०)८	५६)
दाता—स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह, उदयपुर। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के रचयिता को २००) पुरस्कार दिया जाता है।			
४—रत्नाकर पुरस्कार			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	३२००)	२२२३-)७	११२)
दाता—बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष			

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
सर्वोत्तम ब्रज-भाषा काव्य के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।			
५—बटुकप्रसाद पुरस्कार गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—रायबहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री, काशी। इसके व्याज से प्रति चौथे वर्ष सर्वोत्तम शिक्षाप्रद मौलिक नाटक या उपन्यास के लिये २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१७००)	१०१४=)॥	४९॥)
६—डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—पंडित रामनारायण मिश्र, बी० ए०, काशी। इसके व्याज से प्रति चौथे वर्ष विज्ञान-विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१६००)	१०४८)	४१)
७—राजा बिड़ला पुरस्कार गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—राजा बलदेवदास बिड़ला। इसके व्याज से प्रति चौथे वर्ष अध्यात्मतत्व, योगशास्त्र, सदाचार, नीति, मनोविज्ञान आदि विषयों के सर्वोत्तम ग्रंथ के रचयिता को २००) का पुरस्कार दिया जाता है।	१६००)	१०२१≡)	४६)
८—सुधाकर पदक तथा ग्रीव्ज पदक गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट सुधाकर पदक के दाता—बाबू गौरीशंकर प्रसाद ऐडवोकेट, काशी। इसके व्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जाता है।	२००)	१४४॥-)	७)

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षि आ
ओव्ज पदक के दाता—पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०। इसके व्याज से भी प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जाता है।			
९—द्विवेदी पदक गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी। इसके व्याज से सर्वोत्तम हिंदी ग्रंथ के रचयिता को प्रति वर्ष स्वर्णपदक दिया जाता है।	१९००)	११६०)।।।	५९)
१०—शंभूरत्नसमारक निधि गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय बाबू जयशंकर प्रसाद। इसके व्याज से साहित्य-परिषद तथा गोष्ठी के अधिवेशन किए जाते है।	१३००)	६०४।।।=)	४२।।)
११—शिवलाल मेहरोत्रा निधि गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—बाबू गंगाप्रसाद खत्री। इसके व्याज से कला भवन के लिये वस्तुएँ खरीदी जायँगी।	१००)	६१।।)	३।।)
१२—बलदेवदास पदक गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—बाबू ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल-एल० बी०, काशी। इसके व्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जायगा।	१००)	६६=)३	३।।)

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
१३—रायबहादुर डा० हीरालाल स्वर्णपदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१०००)	१००१)	३५)
दाता—स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल। इसके ब्याज से प्रति दूसरे वर्ष एक स्वर्ण-पदक पुरातत्व, मुद्राशास्त्र, इंडोलॉजी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध के रचयिता को दिया जायगा।			
१४—राधाकृष्णदास पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	९९≡)५	३॥)
दाता—बाबू शिवप्रसाद गुप्त। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य-पदक दिया जायगा।			
१५—गुलेरी पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥–)॥।	३॥)
दाता—श्री जगद्धर शर्मा गुलेरी।			
१६—रेडिचे पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥–)१०	३॥)
फुटकर चंदे से।			

सूचना - निधि स० १ का रुपया इंपीरियल बैंक के हिस्सो मे लगा है और शेष के स्टाक सर्टिफिकेट ट्रेजरर चैरिटेबल एंडाउमेट फंड्स, युक्तप्रांत के पास जमा है।

परिशिष्ट ८

१ वैशाख से ३० चैत्र १९९८ तक २५) या अधिक दान देने वाले सज्जनों की नामावली

प्राप्ति-तिथि	दाता का नाम	धन	प्रयोजन
२ वैशाख	श्रीमती रामदुलारी दुबे, अजमेर	१०००)	रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला
४ ,,	श्री कमलाप्रसाद सिंह, कलकत्ता	१०१)	स्थायी कोष
६ ,,	श्री रामचंद्र शर्मा वैद्य, अजमेर	१००)	,,
१९ ,,	श्री राजा पन्नालाल वंशीलाल, हैदराबाद	५००)	१००) ,, ४००) सूरसागर
२१ ,,	श्री लक्ष्मीनारायण पोद्दार, कलकत्ता	१००)	स्थायी कोष
२६ ,,	प्रांतीय सरकार	२५००)	कलाभवन
३० ,, १० आषाढ़ २४ भाद्रपद	श्री प्यारेलाल गर्ग, गोरखपुर	३००)	महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली
२६ ज्येष्ठ २१ मार्गशीर्ष	श्री सेठ लक्ष्मीनिवास बिड़ला, कलकत्ता	१०००)	१००) स्थायी कोष २५०) नागरी प्रचार १००) पुस्तकालय ५०) कलाभवन ५००) हिंदी
२६ ज्येष्ठ	श्री कृष्णकुमार बिडला, कलकत्ता	२००)	१००) स्थायी कोष १००) पुस्तकालय
९ आषाढ़	श्री राजा युवराजदत्तसिंह जू देव, ओयल-नरेश, लखनऊ	१००)	स्थायी कोष
२३ ,,	श्री रायबहादुर बाबू सूर्यप्रसाद, काशी	१००)	,,

प्राप्ति-तिथि	दाता का नाम	धन	प्रयोजन
२५ आषाढ़	श्री जगन्नाथप्रसाद वकील गोरखपुर	१००)	स्थायी कोष
२८ ,,	श्री हरिश्चंद्र, आई० सी० एस०, नैनीताल	१००)	,,
३२ ,, / ३ श्रावण	स्वर्गीय प० जगन्नाथ-प्रसाद पचभैया, काशी	१५०)	कलाभवन
३२ आषाढ़	सेठ रामेश्वरलाल गनेरीवाला, कलकत्ता	५०)	,,
३२ ,,	आयुर्वेदाचार्य प० जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी, एम० ए०, काशी	१००)	स्थायी कोष
२ श्रावण	प्राणाचार्य कविराज प्रताप सिंह, काशी	१००)	,,
२ ,,	सेठ जुगुलकिशोर बिड़ला, कलकत्ता	५००)	१००) ,, ४००) अर्द्ध शताब्दी प्रकाशन
५ ,,	श्री भगवतीप्रसाद सिंह, एम० ए०, जौनपुर	१००)	स्थायी कोष
५ ,,	सुंदरीप्रसाद रईस, जौनपुर	१००)	,,
८ ,,	श्रीमान् रायबहादुर राजा ब्रजनारायणसिंह पड़रौना राज्य, गोरखपुर	५००)	१००) ,, ४००) अर्द्ध शताब्दी प्रकाशन
९ ,,	श्री महाराजकुमार शंकरीप्रसाद सिंह देव, मानभूम	१००)	स्थायी कोष
१० ,,	म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस	२००)	कलाभवन
२३ ,,	श्री मंत्री, साहित्यासदन, अबोहर	५१)	नागरीप्रचार
चार किश्तों में	प्रांतीय सरकार	१०००)	पुस्तकालय
,, ,,	,, ,,	२०००)	हिंदी पुस्तकों की खोज

प्राप्ति तिथि	दाता का नाम	धन	प्रयोजन
५ भाद्रपद	श्री लाला बनवारी लाल, कोठी भानामल गुलजारीलाल, दिल्ली	५०)	नागरीप्रचार
६ ,,	सेठ नंदलाल भुवालका, कलकत्ता	२००)	१००) स्थायी कोष १००) भवन-निर्माण
२३ ,,	श्री वैजनाथ वाग्रे, बी० ए०, एल० टी०, फैजाबाद	१००)	स्थायी कोष
३१ ,,	श्री रामभरोसे सेठ, काशी	१००)	,,
९ आश्विन	श्री गयाप्रसाद ट्रस्ट, कानपुर	३६)	फुटकर
२१ ,,	श्री डा० हीरानंद शास्त्री, बड़ौदा	१००)	स्थायी कोष
३१ ,,	श्री अद्वैतप्रसाद शाह, काशी	१००)	नागरीप्रचार
७ कार्तिक	श्री अमरनाथ झा, इलाहाबाद	१००)	कलाभवन
१० ,,	श्री मालचंद शर्मा, बीकानेर	१०१)	स्थायी कोष
२६ ,,	श्री श्रीधर पंत शास्त्री, एम०ए०, बरेली	१००)	,,
२६ ,,	श्री कृष्णचंद्र, सिविल जज, इलाहाबाद	१००)	,,
१ मार्गशीर्ष १८ ,,	श्री मंत्री, रामविलास पोद्दार स्मारक समिति, बंबई	४००)	रामविलास पोद्दार ग्रंथमाला
४ ,,	श्री रामनाथ आनंदीलाल पोद्दार, बंबई	१००)	स्थायी कोष
१९ ,,	श्री नारायणदास बाजोरिया, कलकत्ता	१०१)	,,
२० ,,	श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता	२००)	कलाभवन
२९ ,, २१ पौष ४ फाल्गुन	श्री राय कृष्णदास जी, काशी	९०)	,,
तीन किश्तों में	म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस	३६०)	पुस्तकालय

१ पौष — श्री तेजस्वीप्रसाद भल्ला, गाजीपुर — १००) — स्थायी कोष

७ ,, — श्री दशरथ ओझा, दिल्ली — १००) — ,,

२८ ,, — श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्री, कलकत्ता — ५२) — कलाभवन

२९ ,, / ९ माघ — श्री गोपीकृष्ण कामोडिया, कलकत्ता — ३२५) — ,,

३ ,, — श्री राय वहादुर श्रीनारायण, महथा, मुजफ्फरपुर — १००) — स्थायी कोष

२७ ,, — श्री यश जी, लाहौर — १००) — ,,

४ फाल्गुन — श्री कुँवर लाल रत्नाकर सिंह काशी — १००) — ,,

१२ ,, — श्री किशनलाल पोद्दार, काशी — ५१) — हिंदी

१८ ,, — श्री डा० रंजन जी, प्रयाग — २५) — कलाभवन

२२ ,, — श्री राव बहादुर सरदार माधवराव विनायकराव किवे, इंदौर — १००) — स्थायीकोष

२३ ,, — श्री बनारसीदास, केडिया कलकत्ता — ३१) — नागरी प्रचार

२५ ,, — श्रीमती रमादेवी जैन, डालमियानगर — ५००) — अर्द्ध शताब्दी प्रकाशन

३० ,, — वेदशास्त्र संरक्षक मेहता श्री मुरारीलाल, काशी — १०१) — कलाभवन

१३ चैत्र — श्री श्यामलाल बाठिया, बीकानेर — १०१) — स्थायी कोष

१६ ,, — श्री सीताराम खेमका, दिल्ली — १००) — ,,

१८ ,, — श्री ठाकुरदास वकील, बनारस — ६०) — फुटकर

२६ ,, — श्री रायबहादुर कौशलकिशोर, प्रयाग — १००) — स्थायी कोष

२८ ,, — सेठ सर बदरीदास गोयनका, कलकत्ता — ५००) — कलाभवन

परिशिष्ट ६

सं० १९९८ के आय व्यय का लेखा

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
गत वर्ष की बचत	७३६४।।।)				
हिंदी पुस्तकों की खोज, यू० पी०	२०००)		हिंदी पुस्तकों की खोज	२२१८।।–)=	
साहित्य परिषद्	५४।।=)		साहित्य परिषद्	१५।।।–)।।	
पदक तथा पुरस्कार	५२३।–)१		पदक तथा पुरस्कार	११।=)।।।	
देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		१२१६।।)।।।	देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		७६७।।)।।=
बालाबख्श रा० चा० पु० मा०		६२०)।।।	बालाबख्श राजपूत चा० पु०मा०		२७२।।=)
सूर्यकुमारी पुस्तक माला		१६६७।।=)	सूर्यकुमारी पुस्तक माला		१६७४)।।।
देव पुरस्कार ग्रंथावली		४४६।=)।।।	देव पुरस्कार ग्रंथावली		४६१।।)।।
रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला		१०००)	रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला		१।।=)
रामविलास पोद्दार स्मारक पु०मा०		४००)	रामविलास पोद्दार स्मारकपु०मा०		।=)

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रं०		२००)	महेंदुलाल गर्ग वि० ग्रंथावली		×
मालती माला		१६।-)।=	मालती माला		७॥)
पुस्तकालय	३२२१≡)।		पुस्तकालय	३३४६॥≡)॥।	
कलाभवन	४६४४।-)११	३०।=)४॥	कलाभवन	४३६४।≡)।=	
संकेत लिपि विद्यालय	२७॥)४		संकेत लिपि विद्यालय	४२॥=)।	
नागरीप्रचार	६२८॥।-)।		नागरीप्रचार	३६३≡)।	
सूरसागर		६२५=)।=	सूरसागर		४४२।=)॥=
रूपनिघंटु		१।=)॥	रूपनिघंटु		॥।=)॥
हरिश्चंद्र ग्रंथावली		१६२-)॥।	हरिश्चंद्र ग्रंथावली		॥=)॥।
फुटकर	२२३।-)॥		फुटकर	६४६=)५	
स्थायी कोप	४८३६॥≡)		स्थायी कोप	३८७६।≡)५	
भवन निर्माण	१०३)॥।		भवन निर्माण	५१७≡)॥	
कवियों के चित्र तथा परिचय	॥।)		कवियों के चित्र तथा परिचय	३)	
रामप्रसाद समादर कोप	३६)		रामप्रसाद समादर कोप	१०)	
अर्द्धशताब्दी	१३१८)		अर्द्धशताब्दी	२॥-)	
सभासदों का चंदा	२६१२॥।)।		पत्रिका तथा पुस्तकों का प्रकाशन		२११६॥।≡)८॥

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
पुस्तकों की बिक्री		१२७६३।)।	कार्यालय का वेतन	२६२७-)॥	
विशेष आय	६६४।)१॥		डाक व्यय	१०५०—)॥।	
जमानत	७२।=)		अमानत	४४६४॥≡)॥=	
प्राविडेंट फंड	९८२॥≡)११		पुस्तकालय-अमानत	६३)	
स्थायी ग्राहक		३)			
कार्यालय का वेतन	२०—)॥				
	२८५६०॥≡)१०॥	१६६५८।)१०॥		२४००३।≡)२॥	८७८२॥।–)५॥
				३२०८६।)८	
				बचत १५४३२॥।)१	
	४८२१६)॥।			४८२१६)॥।	

बचत का ब्योरा—

९५॥)॥ रोकड़ सभा में
१४९०।)१ इलाहाबाद बंक चलता खाता
१५०९=)१० ,, ,, सेविंग बंक प्रकाशन
९)॥ ,, ,, पुस्तकालय अमानत
८५) ,, ,, शिवलाल मेहरोत्रा निधि
२३२९।॥–)२ पोस्ट आफिस सेविंग बंक एंडाउमेंट ट्रस्ट फंड
२४०।॥=)॥ ,, ,, ,, ,, कलाभवन
२॥=)२ ,, ,, ,, ,, पुस्तकालय
१०६९।–)१ ,, ,, ,, ,, प्राविडेंट फंड
५००) ,, ,, ,, ,, महेंदुलाल गर्ग वि० ग्रं०
६२॥।) ,, ,, ,, ,, कवियों के चित्र तथा परिचय
२॥।=)। ,, ,, ,, ,, भवन-निर्माण
१९९६) ,, ,, ,, ,, रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला
३२२॥–)११ ,, ,, ,, ,, सभा
१४०७।–)५ ,, ,, ,, ,, स्थायी कोप
१३३१) ,, ,, ,, ,, अर्द्धशताब्दी
२॥=)७ ,, ,, ,, ,, संकेत लिपि विद्यालय
४००) ,, ,, ,, ,, पोद्दार ग्रंथमाला
४०८–)१ बनारस बंक ,, ,, जमानत
६५५।=) ,, ,, ,, ,, स्थायी कोप
७८१।॥–)। सेंट्रल ,, ,, ,, देव पुरस्कार ग्रंथावली
२८९।॥=) ,, ,, ,, ,, जमानत
४४०॥=)॥ ,, ,, चलता खाता

१५४३२॥।)१

...के भोगों का लेखा

	संवत् १९९८ का व्यय
	१५॥।–)॥
॥	१॥=)॥।
≡)॥	७६७॥।)॥=
२	२७२॥≡)
१॥	१६७४)॥
)॥	४९१॥)॥
	१॥।=)
	×
	।≡)
१०	३८७६।≡)५
	३)
=	४३६४।≡)।=
	×
	१०)
४	२२१८॥–)=
	४२॥=)
०॥	५१७≡)॥।
	२॥–)
	९३)
)॥	४४९४॥–)॥=
	×
=	×
२॥	१३९३७॥।)।
	२२७८६=)=
	१५४३२॥।)१
५)॥।	४८२१८॥=

बचत का ब्योरा—

९५॥)॥ रोकड़ सभा में

परिशिष्ट ११

ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, यू० पी० के पास जमा किया हुआ सभा का धन

प्रयोजन		धन
(१) पुरस्कार और पदक	—	१२९००)
(२) साहित्य गोष्ठी	—	१३००)
(३) बारहट बालाबख्श प्रकाशन निधि	—	१२०००)
(४) स्थायी कोश	—	१६०००)
	योग	४२२००)

परिशिष्ट १२

इंपीरियल बैंक के हिस्से

संख्या	लगा हुआ धन
बंबई पी० ५२०—१८०९७५ से १८०९८८	१७५०)
बंबई ९२९—५२९८८ से ५२९९४	३५००)
योग	५२५०)

परिशिष्ट १३

स्थायी कोष में जमा धन

गवर्नमेंट स्टाक सार्टिफिकेट	१७०००)
बनारस बैंक में	६५५।=)
पोस्ट आफिस सेविंग बैंक में	१४०७।—)५
योग	१९०६२॥≡)५

परिशिष्ट—१४

समस्त सभासदों की प्रांतक्रम से नामावली

१—कश्मीर

(सभासदों की संख्या—२)

जम्मू

सर्वश्री

रायबहादुर हिम्मतसिंह के० माहेश्वरी, माल मंत्री, कश्मीर राज्य

श्रीनगर

अमरनाथ काक, बी० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट

२—दिल्ली

(सभासदों की संख्या—२३)

दिल्ली

स्थायी-लाला बनवारीलाल, कोठी भानामल गुलजारीमल, चावड़ी बाजार

" लाला रघुबीरसिंह, बी० ए०, कश्मीरी गेट

" रामधन शर्मा, शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०, साहित्याचार्य, ४१८ कटरा नील

शिवदत्त शर्मा, रेलवे क्लियरिंग अकाउंट्स आफिस, बी० बी० ऐंड सी० आई० सेक्शन, रोशनआरा

निःशुल्क-श्रीराम शर्मा, ६३१ कूचा सेठ

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', पोस्ट बक्स ६२

स्थायी-सीताराम खेमका, पो० बिड़ला लाइंस

सुंदरलाल भार्गव, बी० ए०, गली समोसा

सुधाकर, एम० ए०, शारदा मंदिर लि०, नई सड़क

डा० हरदत्त शर्मा, एम० ए०, पी एच० डी०, हिंदू कालेज

नई दिल्ली

सर्वश्री

मान्य-एन० सी० मेहता, आई० सी० एस०, गवर्नमेंट अव इंडिया

रावबहादुर काशीनाथ दीक्षित, एम० ए०, डायरेक्टर जनरल अव आर्केयालॉजी इन इंडिया

स्थायी-कृष्णादेवी झालानी, बी० ए०, ४ औरंगजेब रोड

" ज्ञानचंद आर्य, १७ बाराखंभा रोड

" दशरथ ओझा, माडर्न स्कूल

" लाला देशबंधु गुप्त, एम० एल० ए०, ५ कीलिंग रोड

" नारायणदत्त, १३ बाराखंभा रोड

" भरतराम, २२ कर्जन रोड

राजेंद्रलाल हाँडा, २ टोडरमल रोड

प्रोफेसर रामदेव, एम० ए०, टोडरमल रोड

विमलप्रसाद जैन, माडर्न स्कूल, बाराखंभा रोड

स्थायी-हंसराज गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, २० बाराखंभा रोड

पानीपत

जैभगवान जैन, बी० ए०, एल-एल० बी०, प्लीडर

३—पंजाब

(सभासदों की संख्या ४१)

अबोहर

निःशुल्क-स्वामी केशवानंद, साहित्य सदन,

अमृतसर

इंद्रसिंह चक्रवर्ती, प्रीतनगर

डाक्टर पैड़ामल, एम० डी०, ढाब खटीकाँ

महामहाध्यापक, पंचाबुभूषण, पंडितराज बुलाकीराम शास्त्री, विद्यासागर-रत्नाकर-वाचस्पति, गली भट्ठीवाली, चौक लूणमंडी,

निःशुल्क-रामप्यारी खन्ना, ठि० श्री गुराँदित्ता खन्ना, चौक लोहगढ़

" विद्यासागर निराला, साहित्यरत्न, ठि० बाबू सोहनलाल, रण-जीतपुरा, खालसा कालेज

सर्वश्री

सेठ संतूलाल, कोठी जौहरीमल गणेशदास, कटरा आलूवालेया

स्वामी हरिशरणानंद वैद्य, पजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी

कुलू

मान्य-प्रोफेसर निकोलस रोरिक, नग्गर

गुजरात

स्वामी वेदानंद तीर्थ आर्यसमाज मदिर, डिंगा, जिला

गुजरानवाला

अनतराम जैन, बी० ए०, एल-एल० बी०, आत्मानंद जैन गुरुकुल

जालंधर

लज्जावती देवी, प्रिंसिपल, कन्या महाविद्यालय

रावलपिंडी

रेवतीरमण शर्मा, गवर्नमेंट टेलिग्राफ आफिस,

लायलपुर

जगद्धर शर्मा गुलेरी, एम० ए०, एल-एल०, बी०, कृषि महाविद्यालय

लाहौर

ऋषिराम आचार्य, बी० ए०, आचार्य, दयानंद ब्रह्मविद्यालय

स्थायी-महाशय कृष्णजी, बी० ए०, कृष्ण भवन, ४१ निस्वेट रोड

प्रो० कैलाशनाथ भटनागर, एम० ए०, मेलाराम रोड

मान्य—गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, मत्री, सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा

तुलसीदत्त शैदा, कृष्णनगर

दशरथलाल श्रीवास्तव, युनिवर्सिटी केमिकल लेबोरेटरीज,

निःशुल्क-देवराज सेठी, एम० एल० ए०, लाजपतराय भवन

धर्मचंद नारंग, बी० ए०, विशारद, संचालक, हिंदी भवन, अनारकली, अस्पताल रोड

नरसिंहलाल शर्मा, एम० ए०, बी० टी०, सनातनधर्म हाई स्कूल

सर्वश्री

निरंजननाथजी श्रीमानजी, ४ कोर्ट स्ट्रीट

मान्य–भगवद्दत्तजी, वैदिक अनुसंधान संस्था, ९ सी, माडल टाउन

स्थायी–'यश' जी, मिलाप कार्यालय, गनपत रोड

मान्य–डाक्टर रघुवीर, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०, एट्० फिल०, फाउंडर-डायरेक्टर, इंटरनैशनल एकेडेमी

स्थायी–रायबहादुर रामशरण दास

" लाला लालचंद, असिस्टेंट सेक्रेटरी फाइनेंस, गुरु तेगबहादुर रोड, कृष्णनगर, (ग्रीष्म का पता–शिमला ईस्ट)

वितस्ताप्रसाद फिदा, बी० ए०, सेकेंड मास्टर, दयालसिंह हाई स्कूल

श्यामसुंदर मेहरोत्रा, ठि० श्री कृष्णगोपाल मेहरोत्रा, ओंकार रोड, अशोक स्ट्रीट, कृष्णनगर

सीताराम गुप्त (प्रो० गवर्नमेंट कालेज), कृष्णनगर

लुधियाना

मुनि वीर विजय, श्री आत्मानंद जैन सभा, रायकोट जैनमंदिर

निःशुल्क–वैद्यनाथ मिश्र, साहित्याचार्य, श्री गूज़रमल बलवंतराय जैन, चौड़ा बाजार

शहादरा मिल

मान्य–ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, विरजानंद आश्रम

शिमला

गंगादत्त पांडे, प्रधान मंत्री हिंदी प्रचारिणी सभा

रामगोपाल रस्तोगी, हिंदी प्रचारिणी सभा

शेखूपुरा

रायबहादुर वजीरचंद चोपड़ा, रिटायर्ड सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर पंजाब इरिंगेशन

सर्वश्री

नाभा राज्य

निरंजनलाल गुप्त, जैतोमंडी

पटियाला राज्य

मुन्नालाल पाठक, रतनचंद इंजीनियर के घर के पास,
नाला जदीद

बिलासपुर राज्य (शिमला)

मियाँ अक्षरसिंह, द्वितीय श्रेणी के मैजिस्ट्रेट

४—बंगाल

(सभासदों की संख्या—७९)

कर्सियांग (डी० एच० आर०)

रेवरेंड एस० जे० सी० बुल्के, संत मेरिस कालेज

कलकत्ता

रेव० अयोध्याप्रसाद, बी० ए०, उपदेश क सम्राट, आर्यसमाज,
८५ बहूबाजार स्ट्रीट, सूट न० १०

पांडे आनंदलाल 'अटल', ४५/१ आद्यश्राद्धघाट रोड

स्थायी—इंद्रचंद्र केजड़ीवाल, कोठी कनीराम हजारीमल

" कमलाप्रसाद सिंह, श्यामपोखर स्ट्रीट

" कालीप्रसाद खेतान, बार-ऐट्-लॉ, ३ मॉडले विला गार्डेन्स,
पो० बालीगंज

" कृष्णकुमार बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस

" केदारनाथ सेठ शास्त्री, १ गौरदास बसाक स्ट्रीट, बड़ा बाजार

" गांगेय नरोत्तम शास्त्री, गांगेय भवन, १२ आशुतोष दे लेन
(वर्तमान—त्रिपुरा भैरवी, काशी)

सर्वश्री

गिरधरदास अग्रवाल, ३१ पाइक पारा रोड, पो० वेलागचिया

स्थायी–गिरधारीलाल नागर, कोठी वलदेवराम विहारीलाल, ५ कालीकृष्ट टैगोर स्ट्रीट

" गुलजारीलाल कानोडिया, ठि० सेठ भगीरथ कानोडिया, ४३ जकरिया स्ट्रीट

" गोपीकृष्ण कानोडिया, २९ विवेकानंद रोड

विशिष्ट–सेठ घनश्यामदास विड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस

स्थायी–सेठ छोटेलाल कानोडिया, ५७-बड़तल्ला स्ट्रीट

" जगन्नाथप्रसाद गुप्त, १२६ चित्तरंजन ऐवेन्यू

जयनारायण सिह, ३/४ टर्नर रोड

विशिष्ट–सेठ जुगुलकिशोर विड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस

तारकनाथ अग्रवाल, ८० साउथ रोड, इंटाली

स्थायी–दामोदरदास खन्ना, १७ वाराणसी घोष स्ट्रीट

दुर्गादत्त जोशी, सेठ सूरजमल जालान स्मृति भवन, १८६ चित्तरंजन ऐवेन्यू

स्थायी–नंदकिशोर लोहिया, ११२ चित्तरंजन ऐवेन्यू

" नंदलाल कानोडिया, ४२ जकरिया स्ट्रीट

" नंदलाल भुवालका, ठि० दौलतराम रावतमल, १७८ हरिसन रोड

" नर्मदादेवी, ठि० वावू प्रभुदयाल हिम्मतसिहका, ६ ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट

" नारायणदास वर्मन, ५५ क्लाइव स्ट्रीट

विशिष्ट–पुरुषोत्तमदास हलवासिया, ४७ मुक्तारा‌म वावू स्ट्रीट

स्थायी–पूरनचंद वर्मन, कोठी डाक्टर एम० के० वर्मन, रासविहारी ऐवेन्यू

विशिष्ट–सेठ सर बद्रीदास गोयनका, मुक्ताराम वावू स्ट्रीट

सर्वश्री

स्थायी–बालकृष्णलाल पोद्दार, ४१/१ ताराचंद दत्त स्ट्रीट

विमलाचरण दे, ऐडवोकेट, ७८ मंमाताला लेन, खिदिरपुर

विशिष्ट–सेठ व्रजमोहन बिडला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस

स्थायी–व्रजरत्नदास डागा, ठि० रायबहादुर वंशीलाल अबीरचंद, ४०१ अपर चितपुर रोड

भानामल खेमका, २९ विवेकानंद रोड

भुवनेश्वर मिश्र 'भुवन', एम० ए०, विशारद, १ फ्री स्कूल स्ट्रीट

स्थायी–मगतूराम जयपुरिया, २३ विवेकानंद रोड

मधुसूदनदास बर्मन, ५५ क्लाइव स्ट्रीट

महावीरप्रसाद अग्रवाल, मंत्री, बड़ा बाजार लायब्रेरी, १०।१।१ सैयदसाली लेन

मुकुंदनायक विशारद [पो० दलसिंगसराय (दरभंगा)] वर्तमान—६० लेक रोड, बालीगंज

स्थायी–मूलचंद अग्रवाल, विश्वमित्र कार्यालय, १४/१ ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, पो० बहूबाजार स्ट्रीट

" म्हालीराम सोनथलिया, कोठी राधाकृष्ण सोनथलिया कं०, ६५ पथरियाघट्टा स्ट्रीट

राधाकृष्ण नेवटिया, मंत्री, बड़ा बाजार कुमार सभा, १५६ हरिसन रोड

स्थायी–रामकुमार गोयनका, ५ वसाक स्ट्रीट, बड़ा बाजार

" रामकुमार जालान, कोठी रामचंद्र हनुमानबख्श, ५१/२ स्ट्रैंड रोड

" रामकुमार भुवालका, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, फर्स्ट फ्लोर

" रायबहादुर रामदेव चोखानी, कोठी दौलतराम रामदेव, वाराणसी घोष स्ट्रीट (वर्तमान—के ४/१७ लालघाट, काशी)

" रामनाथ कानोडिया, कोठी लक्ष्मीनारायण कानोडिया कं०, क्लाइव स्ट्रीट

सर्वश्री

रामनारायण सिंह, एम ए०, बी० एल०, एम० आर० ए० एस० (लंदन), साहित्यरत्न, रिपन कालेज

स्थायी–रामसुंदर कानोडिया, २९ बॅसतल्ला स्ट्रीट

" रामेश्वर नोपाणी, श्री दौलतरामजी रावतमलजी, १७८ हरिसन रोड

लक्ष्मीनारायण पोद्दार, १६१/१ हरिसन रोड, बागड़ बिल्डिंग (वर्तमान–ठि० श्री मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन, काशी)

विशिष्ट–लक्ष्मीनिवास बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस

लक्ष्मीपति मिश्र, ८/३ वर्द्धवान रोड

ललिताप्रसाद शुक्ल, एम० ए०, अध्यापक, हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

विशिष्ट–वंशीधर जालान, कोठी सूरजमल नागरमल, ६१ हरिसन रोड

स्थायी–विनयकृष्ण रोहतगी, बी० एस-सी०, कोठी कल्लूबाबू लालचंद, ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट

विश्वनाथ सिंह, १२ हरी सरकार लेन, बड़ा बाजार

विष्णुदत्त पांडेय, ७ रायल एक्सचेंज प्लेस

स्थायी–विष्णुदास वासिल, ४३ पद्मोपुकर रोड, पो० एलगिन रोड

शिवरत्न कपूर, ७ लायंस रेंज

सत्यपाल धवले, बिड़ला बिल्डिंग, ८ मंदिर स्ट्रीट

स्थायी–सीताराम सेकसरिया, शुद्ध खादी भंडार, १३२/१ हरिसन रोड

मान्य–डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या 'सुधर्मा', १६ हिंदुस्तान पार्क, बालीगंज

कुमिल्ला

राजमोहन चक्रवर्ती, सुपरिंटेंडेंट राममाला छात्रावास

सर्वश्री

खुलना

मूलचंद मूँधड़ा

चौबीस परगना

देवबली सिंह, कागज कल का लाइन, पो० टीटागढ़

डाक्टर नारायणसिंह, बहूबाजार, टीटागढ़

निःशुल्क–रघुनंदनप्रसाद गुप्त, पो० टीटागढ़

रघुनाथसाह गुप्त, पो० टीटागढ़

राजरोशनराय शर्मा, कीनीसन जूट मिल्स, टीटागढ़

विंध्येश्वरीप्रसाद शास्त्री, रसायन आश्रम, जगदल (कचहरी रोड)

दार्जिलिंग

सदानंद प्रसाद, जलपाईगुड़ी

हरनंदन सिंह, ठि० हिमाचल हिंदी भवन

नदिया

नलिनीमोहन सान्याल, एम० ए०, शांतिपुर

मालदा

छगनलाल सारडा

मुर्शिदाबाद

रामस्वरूप पांडे, विशारद, प्रधान मंत्री, श्री बटुकनाथ, ग्रंथालय, पो० अजीमगंज

रामपुर हाट

एच० सी० गुप्त, आई० सी० एस०, सबडिविजनल अफसर

सर्वश्री

हवड़ा

स्थायी–मिहरचंद धीमानजी, ११५ बनारस रोड, सलकिया

श्रीनारायण चोखानी, ८ न्यू घुसुड़ी रोड, श्री हनुमान पुस्तकालय, सलकिया

५—बंबई

(सभासदों की संख्या—५७)

अहमदाबाद

चैतन्यप्रसाद एम० दीवानजी, पैराडाइज, शाहीबाग

मुनि जिन विजय, अनेकांत विहार, शांतिनगर, पो० साबरमती

जेठालाल जोशी, खाडिया अमृतलाल की पोल

मणिभाई गुलाबभाई वहीवंचा, स्वामीनारायण मंदिर, टीबापोल

रामनारायण विश्वनाथ पाठक, सेठ लालभाई दलपतभाई कालेज

काठियावाड़

एन० वी० भारद्वाज, नवलनिवास, पो० जोड़िया

चतुरभाई, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल सोनगढ़

गुजरात

मुनि पुण्य विजय, सागर का उपाश्रय, मनिआती पाड़ा, पाटण

मुनि रमणीक विजय सागर का उपाश्रय, मनिआती पाड़ा, पाटण

नडियाद (बी० बी० आर०)

छोटूभाई सुथार, बी० एस सी० विशारद, भारती विद्यामंदिर

सर्वश्री

पूना

दत्तोवामन पोद्दार, १०८ शनिवार पेठ

शं० दा० चितले, राष्ट्रभाषा विशारद, एम० ए०, बी० टी०, हिंदी प्रचार संघ

स्थायी—सी० के० देसाई, अवसरप्राप्त आई० सी० एस०, कैवल्यधाम, लोंड़ावला, बंबई प्रेसीडेंसी, जी० आई० पी० आर०

बंबई

आर० जी० ज्ञानी, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, क्युरेटर, आर्केयालॉजिकल सेक्शन, प्रिंस अव वेल्स म्यूजियम

निःशुल्क—प्रोफेसर एस० एच० होरीवाला, २७ कान्वेंट ऐवेन्यू, गोधनदास रोड, शांताक्रुज, बंबई सबर्बन डिस्ट्रिक्ट्स

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, २६ रिज रोड

कुंदनलाल जैन, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगॉव

कृष्णलाल वर्मा, ग्रंथ भंडार, माटुंगा

निःशुल्क—बाबा गणेश सावरकर, सावरकर सदन, चेलुस्कर रोड, दादर

स्थायी—गोस्वामी महाराज गोकुलनाथ, बड़ा मंदिर, ३ रा भोई वाड़ा

” घनश्यामदास पोद्दार, कृष्ण भवन, वालकेश्वर

आचार्य जादवजी त्रिकमजी वैद्य, कालबादेवी रोड

प्रोफेसर जे० सी० जैन, ठि० प्रिंसिपल, रामनारायण रुइया कालेज, माटुंगा

ठाकरसीदास जैन, मंत्री, श्री ए० पी० दि० जैन सरस्वती भवन, सुखानंद धर्मशाला

नागरमल पोद्दार, पुलगॉव काटन मिल्स, पुलगॉव

सर्वश्री

नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव

नारायणलाल वंशीलाल, मलाबार हिल

प्रेमचंद केडिया, ६१४ द् काटन एक्सचेंज

वेगराज गुप्त, ठि० वेगराज रामस्वरूप, कालबादेवी रोड

भानुकुमार जैन, मंत्री, बंबई हिंदी विद्यापीठ, हीराबाग

डाक्टर मोतीचंद्र चौधरी, एम० ए०, पी-एच० डी०, क्युरेटर, आर्ट सेक्शन, प्रिंस अव वेल्स म्यूज़ियम

मोहनलाल दुलीचंद देसाई, बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील, हाई कोर्ट, तवावाला बिल्डिंग, लोहार चाल

स्थायी-रामनाथ आनंदीलाल पोद्दार, पोद्दार चैंबर्स, फोर्ट

रामप्रताप शुक्ल, विद्यालय प्रेस, विद्याभवन, फणसवाणी

शार्ङ्गधर शामजी पहिलवान, श्री गंगाराम छबीलदास, १३१/१३३ मोती बाजार

शीला माथुर, ठि० प्रोफेसर माताप्रसाद, डी० एस-सी०, रायल इंस्टिट्यूट अव सायंस

स्थायी-शुकदेवशरण केदारनाथ भार्गव, कृष्णकुंज, बीसेंट स्ट्रीट, शांताक्रूज

शूरजी वल्लभदास वर्मा, कच्छ कैसल, सैंढर्स्ट रोड

श्यामबहादुर सिंह, मारवाड़ी सम्मेलन, कालबादेवी

सोहनलाल अग्रवाल, व्यवस्थापक, मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय, कालबादेवी रोड

स्थायी-हीरालाल अमृतलाल शाह, बी० ए०, नं० ६९ मेरीन ड्राइव, ४ था फ्लोर, ब्लाक नं० १०

शोलापुर

एच० एल० औलक, डी० ए० वी० कालेज

सर्वश्री

सूरत

गंगाशंकर पांड्या, बी० ए० आनर्स (लंदन), प्रोफेसर, एम० टी० बी० कालेज

परमेष्ठीदास जैन, न्यायतीर्थ, मंत्री, हिंदी प्रचारक मंडल, गांधी चौक

शंकरदेव विद्यालंकार, गुरुकुल विद्यामंदिर, सूपा, वाया नवसारी

हुबली

बी० जी० सराफ, सरस्वती विद्यारण्य फ्री लायब्रेरी

बड़ोदा राज्य

अमृतलाल मोहनलाल भोजक, मुकाम पाटण, उत्तर गुजरात

आर० बी० महंत, श्री महंत पुस्तकालय, रामगलोलावाला, नं० ६० अलकापुरी

ठाकुर खेतसिंह नारायणजी मिश्रण (गढ़वी), मुकाम मोढेरा, पो० वडावली, तालुका चाणस्मा, उत्तर गुजरात

जयशंकर उमाशंकर पाठक, मुकाम व डाकघर अगलोड, जिला बीजापुर, उत्तर गुजरात

पुरुषोत्तमदास बहेचरदास ब्रह्मभट्ट, शिक्षक, मंडाला तालुका डभोई स्कूल, वाया मीयागाम, गुजरात

शांतिप्रिय आत्माराम जी, आत्माराम रोड

हरगोविंददास लालजीभाई, वकील, पो० सावली

स्थायी–डाक्टर हीरानंद शास्त्री, एम० ए०, डी० लिट्०, डायरेक्टर अव आर्कैयालॉजी

भावनगर (काठियावाड़)

पिंगलशी परबत जी पायक, बी० ए०, एल-एल० बी०, गृहपति, श्री कृष्णकुमार चारण विद्यालय

सर्वश्री

वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी, मंत्री, श्री जैन आत्मानंद सभा

निःशुल्क-विजय इंद्र सूरि, ठि० यशोविजय ग्रंथमाला

६—बिहारोत्कल

(सभासदों की संख्या—५५)

कटक

निःशुल्क-सत्यनारायण शर्मा, साहित्य विशारद, पो० खड़गप्रसाद

गया

बलेश्वरनाथ मिश्र, पो० तरावाँ

स्थायी-राय वागीश्वरीप्रसाद, किरानीघाट

सूर्यप्रसाद महाजन, मन्नूलाल लायब्रेरी

चंपारन

मान्य-चंद्रशेखरधर मिश्र, ग्राम रतनमाला, पो० बगहा

डा० मुं० दयाचंद जालान, साहित्यभूषण, एम० एच० बी०, मोतिहारी

छपरा

मनोरंजनप्रसाद, एम० ए०, प्रिंसिपल, राजेंद्र कालेज

देवघर

शिवनारायणलाल, एम० ए०, एल-एल० बी०, गोवर्द्धन साहित्य महाविद्यालय, हिंदी विद्यापीठ, पो० वैद्यनाथधाम

पटना

कृष्णाकुमारी पचले विशारद, नालन्दा विद्यापीठ पो० नालन्दा

सर्वश्री

केदारनाथ चतुर्वेदी, ११५ ए एक्जिविशन रोड

स्थायी–सर गणेशदत्त सिंह के-टी०, भूतपूर्व शिक्षामंत्री, विहार सरकार

धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, शास्त्री, जैक्सन होस्टल, पटना कालेज

महेशलाल आर्य, पो० विहार शरीफ

यदुनंदनप्रसाद पांडे, एम० ए०, बी० एड्०, शिक्षक, पटना ट्रेनिंग स्कूल, पो० महेंद्रु

मान्य–देशरत्न डाक्टर राजेंद्रप्रसाद, सदाकत आश्रम

रामदहिन मिश्र, ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर

रायसाहब रामशरण उपाध्याय, प्रधानाध्यापक, पटना ट्रेनिंग कालेज, पो० महेंद्रु

लक्ष्मीनारायण गुप्त, जेवेलर, बाकरगंज, पो० बाँकीपुर

वंशीधर याज्ञिक, बेतिया हाउस रोड, पो० गुलजारबाग

प्रो० वेणीमाधव अग्रवाल, सेक्रेटरी, कामन रूम, नालंदा कालेज, पो० विहार शरीफ

श्रीराम, बी० ए०, रिपोर्टर, क्वार्टर नं० २०, रोड नं० २९, गर्दनीबाग, पो० अनीसाबाद

स्थायी–डाक्टर सच्चिदानंद सिनहा, बार-ऐट्-लॉ, एल-एल० डी०

,, हरिप्रसाद वर्मा, मोकामाघाट

पूर्णियाँ

रूपलाल साहित्यरत्न, अध्यापक, पो० धमदाहा

लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु', एम० ए०, ग्राम रूपसपुर, पो० धमदाहा

सूर्यनारायण चौधरी, एम० ए०, कठौतिया, पो० काझा

भागलपुर

रामनारायण शर्मा, संस्कृताध्यक्ष, टी० एन० जे० कालेज

सर्वश्री

वंशोधर ढाढणिया, शुजागंज

श्यामाप्रसाद सिह, ड्योढ़ी मधुसूदन नगर, पो० बौंसी

हरलालदास गुप्त, प्रिंसिपल, टी० एन० जे० कालेज

मानभूम

स्थायी–रामजस अग्रवाल, झरिया

महाराजकुमार शंकरीप्रसाद सिह देव, पंचकोट

मुजफ्फरपुर

स्थायी–माननीय श्रीनारायण महथा, कन्होली

राँची

गंगाप्रसाद बुकिया, सभापति, संतूलाल पुस्तकालय

नथुनी मिश्र, संतूलाल पुस्तकालय

फादर पी० शांति नवरंगी, साहित्यरत्न, सत जांस स्कूल

रासविहारी शर्मा, एम० ए०, साहित्यरत्न, सेक्रेटरी, ट्रेनिंग कालेज

वेणीमाधव मिश्र, राँची जिला स्कूल

रानीगंज (ई० आई० आर०)

स्थायी–जगन्नाथप्रसाद झुंझनूवाले, आनरेरी मैजिस्ट्रेट

विभूतिप्रसाद शर्मा, साहित्य विशारद, मारवाड़ी सनातन विद्यालय

शाहाबाद

उमराव तिवारी, हरनन्दन धाम, पो० दुर्गावती

द्वारकाप्रसाद इंजीनियर डालमियानगर

निर्मलकुमार जैन मंत्री, जैन सिद्धान्त भवन

सर्वश्री

मणिराम शर्मा, हेडमास्टर, दयानंद स्कूल

विशिष्ट–रमादेवी जैन, डालमियानगर

स्थायी–सेठ रामकृष्ण डालमिया, डालमियानगर

रामसुंदर सिंह, ग्राम बनेछा, पो० दुर्गावती

शंकरबख्श सिंह, पो० केमट

स्थायी–सत्यनारायण आर्य, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, अँगरेजी स्कूल, केमट

सिंहभूम

धनीराम बख्शी, हितैषी कार्यालय, पो० चाईबासा

हजारीबाग

रायबहादुर गुरुसेवक उपाध्याय, रामगढ़ राज्य

डाक्टर जगन्नाथप्रसाद, एम० डी० एच०

बद्रीदत्त शास्त्री, साहित्यरत्न, सेंट स्टेनिसलास कालेज, सीतागढ़

मान्य–महापंडित राहुल सांकृत्यायन, त्रिपिटकाचार्य, सेंट्रल जेल के जेलर द्वारा

बालनगीर

स्थायी–रायसाहब मदनमोहन सेठ, एम० ए०, एल-एल० बी० (अवसर प्राप्त जिला एवं दौरा जज, संयुक्त प्रांत), चीफ जज, पटना स्टेट

७—मद्रास

(सभासदों की संख्या—७)

मंगलौर

विश्वेश्वर नारायण बिजूर, बी० एस-सी०, एल० टी०, गणपति हाई स्कूल

सर्वश्री

मद्रास

पी० वी० आचार्य, ऑल इंडिया रेडियो

प्यारेलाल मल्होत्रा, नं० १ मलानी रोड, त्यागरायनगर

रंगलाल जाजोरिया, भारत बिल्डिंग्स, माउंट रोड

मान्य-सत्यनारायण, प्रधान मंत्री, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, त्यागरायनगर

कोचीन

ए० चंद्रहासन, एम० ए०, हिंदी लेक्चरर, महाराजा कालेज, इर्नाकुलम

ट्रावनकोर

ई० वी० रामन् नंपृथिरी, हाई स्कूल पंडित, ब्रह्मविलास मठ, पेरूरकाडा, ट्रिवेंड्रम

८—मध्यप्रदेश-वरार

(सभासदों की संख्या—२९)

अमरावती

हीरालाल जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०, किंग एडवर्ड कालेज

खंडवा

मान्य-माखनलाल चतुर्वेदी, संपादक, 'कर्मवीर' कर्मवीर प्रेस

जबलपुर

व्याकरणाचार्य कामताप्रसाद गुरु बड़ा फाटक

रमेशदत्त पाठक, एम० ए०, एल-एल० बी०, जार्ज टाउन

ब्योहार राजेंद्र सिंह, एम० एल० ए० साठिया कुआँ

सर्वश्री

रामनाथ सिह, ३२ गोरखपुर

रामप्रसाद नायक, एम० ए०, नायक निवास, दीक्षितपुरा

मान्य—रायबहादुर लज्जाशंकर झा, एम० ए०, अवसरप्राप्त आई० ई० एस०, शांतिकुटीर, गोलाबाजार

छिंदवाड़ा

जुगुनू बाई, स्वामिनी, सेंट्रल लॉ प्रेस

रामाधार शुक्ल 'आशुकवि', डी० सी० आफिस

रामप्रसाद सिंह राठौर, एम० ए०, एल-एल० बी०

नरसिंहपुर

नीतिराज सिह, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

नागपुर

करुणाशंकर न० दवे, मेयो रोड

रामनारायण मिश्र, लेक्चरर ऐग्रिकल्चरल कालेज, धर्म पेठ

विलायतीराय कौशल, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, इंस्पेक्टर फोन और टेलिग्राफ

सरस्वतीप्रसाद चतुर्वेदी, एम० ए०, व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ, संस्कृत प्रोफेसर, मारिस कालेज

बेतूल

भगवानदीन शुक्ल, तालुकेदार, पो० शाहपुर

रायपुर

रायबहादुर डाक्टर बलदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, डी० लिट्०, बैजनाथपाड़ा

रामगोपाल अग्रवाल, ठि० गंगाप्रसाद साव अग्रवाल, पो० आरंग

सर्वश्री

वर्धा

मान्य—काका साहब कालेलकर

" साहित्यवाचस्पति डाक्टर महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी

" यू० मार्तंडराव, शिक्षक, राबर्टसन हाई स्कूल, हींगणघाट

विजयराघवगढ़ (वाया कैमोर)

ठाकुर ब्रजमोहन सिंह, बी० ए०, बैरिस्टर-ऐट-लॉ

बिलासपुर

मान्य—रायबहादुर जगन्नाथप्रसाद 'भानु', ठि० जगन्नाथ प्रेस

ब्रजभूषण मिश्र, एम० ए०, म्युनिसिपल हाई स्कूल

सतना (जबलपुर लाइन)

शारदाप्रसाद

सागर

एम० एन० तिवारी, बी० ए०, एल० टी०, मास्टर, गवर्नमेंट हाई स्कूल, बालाघाट

सिवनी

मुनि कांतिसागर, श्री जैन श्वेतांबर मंदिर

होशंगाबाद

वासुदेवप्रसाद मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील

९—मध्य भारत

(सभासदों की संख्या—२०)

इंदौर राज्य

कमलाशंकर बालकृष्ण मिश्र, एम० ए०, २८ अहल्यापुरा

गुलाबचंद पूनमचंद जैन, जवेरी बाग

[illegible], [illegible] तुकोगंज

सर्वश्री

स्थायी—रावबहादुर सरदार माधवराव विनायकराव साहब किबे, सी० आई० ई०, सरस्वती निकेतन

,, रामभरोसे तिवाड़ी, १२ तुकोगंज साउथ

लक्ष्मण गोविंद लखोटे, सरस्वती निकेतन

शंकरराव जोशी, तहसीलदार, पो० मावेर

रेवरंड सी० डब्ल्यू० डेविड, प्रोफेसर, क्रिश्चियन कालेज

उज्जैन

व्याकरणाचार्य गोपीकृष्ण शास्त्री, सराफा बाजार

जुगुलकिशोर वैश्य, अवसरप्राप्त डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर, पी० डब्ल्यू० डी०, ग्वालियर स्टेट, हाल स्टेट इंजीनियर, दतिया स्टेट, माधोनगर

मान्य—डाक्टर दुर्गाशंकर नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय

मंगलदेव शर्मा, गणेश भवन, मगरमुहाँ

स्थायी—रायबहादुर लालचंद सेठी, वाणिज्यभूषण, विनोद भवन

श्रीधर शर्मा, शास्त्री, साहित्यरत्न, संस्कृताध्यापक, कार्तिक चौक

स्थायी—सूर्यनारायण व्यास, भारती भवन, बड़े गणेश

,, साहित्याचार्य डा० हरि रामचंद्र दिवेकर, एम० ए०, डी० लिट्०

ग्वालियर

एन० बी० गोडबोले, विक्टोरिया कालेज, लश्कर

एम० बी० गर्द्रे, डायरेक्टर अव आर्केयालॉजी

स्थायी—राजा खलक सिंह जू देव, खनियाँधाना स्टेट

गुरुप्रसाद टंडन, एम० ए०, एल-एल० बी०, विक्टोरिया कालेज

त्रिवेणीप्रसाद बाजपेयी, एम० ए०, एल० टी०, साहित्यरत्न, व्याख्याता, हिंदी और अँगरेजी साहित्य, विक्टोरिया कालेज

रईसुद्दौला बहादुर पंचमसिंह साहब, पहाड़गढ़ कोठी, लक्ष्मीगंज

सर्वश्री

कुँवर पृथ्वी सिंह, मैजिस्ट्रेट, खनियाँधाना स्टेट

भास्कर रामचंद्र भालेराव, नायब सूबा, पो० भिंड

राजराजेंद्र श्रीमंत सरदार कर्नल मालोजी नरसिंहराव साहब शितोले, नरसिंह निवास

राधाकृष्ण जायसवाल, विशारद, जैंद्रगंज, लश्कर

रामचंद्र श्रीवास्तव 'चंद्र', एम० ए०, एल एल० बी०, लश्कर

रामनाथ शर्मा, रिटायर्ड इंस्पेक्टिंग अफसर, फारेस्ट्स

रामप्रसाद सिंह 'शैलेंद्र', आदर्श साहित्य समिति, पौहरी

सरोजनी रोहतगी, स्टेशन रोड

हरिहरनिवास त्रिवेदी, विद्यामंदिर, मुरार

ओड़छा राज्य

ब्र० ब्र० फूलचंद सोगाणी, व्यवस्थापक, श्री वीर दि० जैन-विद्यालय, मुकाम पपौरा, पो० टीकमगढ़

मान्य—बनारसीदास चतुर्वेदी, टीकमगढ़

लक्ष्मीनाथ मिश्र, एम० ए०, एल० टी०, एल-एल० बी०, डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, टीकमगढ़

धार राज्य

स्थायी—महाराज आनंदराव पँवार

काशीप्रसाद दुबे, धारेश्वर दरवाजा

स्थायी—कृष्णराव पूर्णचंद्र साडलीकर, चीफ इंस्पेक्टर, ग्रामोद्धार

गोपालचंद्र मुनशी, एम० ए०, डिप्टी इंस्पेक्टर, लाड़लेन

चिंतामणि बल्वन्त लेले, इतिहास कचहरी

पुरुषोत्तम डबराल, एम० ए०, रासमंडल

नरेन्द्र भटोरे, अध्यापक, बनियाँ वाड़ी

सर्वश्री

नागौद स्टेट (वाया सतना, जी० आई० पी०)

महाराजकुमार लाल भार्गवेंद्र सिंह जू देव, दीवान

बड़वानी (वाया महू)

महेंद्रनाथ नागर, बी० ए०, साहित्यरत्न, रानीपुर

भूपाल

ईशनारायण जोशी, शास्त्री, चौक

मुल्थान (मालवा)

स्थायी–महाराज भरत सिंह साहब

रतलाम राज्य

नाथूलाल शर्मा, बी० ए०, असिस्टेंट सेक्रेटरी, स्टेट काउंसिल

रीवाँ राज्य

ठाकुर साहब गोपालशरण सिंह, नई गढ़ी, पो० मऊगंज

महावीरप्रसाद अग्रवाल, एम० ए०, एल-एल० बी०, दरबार इंटर० कालेज

समथर स्टेट (झाँसी)

कुँवर विश्वनाथ सिंह, फूलबाग, पो० मोठ

सीतामऊ

विशिष्ट–महाराजकुमार डाक्टर रघुवीर सिंह, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०, रघुवीर निवास

१०—मैसूर

(सभासदों की संख्या—३)

मैसूर

जी० सच्चिदानंद, १०५५ नजराज, अग्रहर

सर्वश्री

ना० नागप्पा, एम० ए०, ९४४ चामुंडी बढ़ावण

हिरण्यमयजी, ठि० हिंदी प्रचार सभा

११—राजपूताना

(सभासदों की संख्या—२७०)

अजमेर

स्थायी-राजा कल्याण सिंह, भिनाय स्टेट, मेरवाड़ा

किशनलाल दुबे, अध्यापक, हर्बैंड मेमोरियल हाई स्कूल

मान्य-महामहोपाध्याय रायबहादुर डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा

स्थायी-माननीय महाशय घीसूलाल, एम० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट, प्रतापभवन

कुँवर नाहर सिंह, बी० ए०, एल-एल० बी०, मेयो कालेज

पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, सहित्याचार्य, मेयो कालेज

रायबहादुर मदनमोहन वर्मा, एम० ए०, सेक्रेटरी, बोर्ड अव हाई स्कूल ऐंड इंटरमिडियट एजुकेशन, अजमेर-मेरवाड़ा

यज्ञदत्त उपाध्याय, वकील ऐंड कंपनी

स्थायी-रामचंद्र शर्मा वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय

विशिष्ट-रामदुलारी दुबे, गणेशगंज

स्थायी-रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम० ए०, कड़क्का चौक

वंशगोपाल झिंगरन, एम० एस-सी० बी० एड्०, प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज

सुशीला भार्गव, फूलनिवास, कचहरी रोड

दीवान बहादुर हरबिलास शारदा, हरनिवास, सिविल लाइंस

(माउंट) आबू

रोशनलाल झा, राजपूताना एजेंसी आफिस

सर्वश्री

उदयपुर (मेवाड़)

स्थायी–अंबालाल देरासरी, नागरवाड़ी
उमाशंकर द्विवेदी 'विरही', विरही सदन
करनीदानजी दधवाड़िया, खेमपुर की हवेली
ठाकुर चंद्रनाथ माथुर, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, भीलवाड़ा
ठाकुर साहब चतुरसिंह, राजस्थान बड़ी रूपाहेली
स्थायी–कुँवर तेजसिंह मेहता, भूतपूर्व मिनिस्टर
दयाशंकर श्रोत्रिय, संचालक, महिला मंडल
स्थायी–पुरोहित देवनाथ, पुरोहितजी की हवेली
भट्ट पुरुषोत्तम शर्मा तैलग, विद्याविभाग, नाथद्वारा
विशिष्ट–फतहलाल महता, राय पन्नालाल भवन
स्थायी–श्री १०८ गोस्वामी व्रजभूषण शर्मा, महाराज, कॉकरोली
मोतीलाल मेनारिया, एम० ए०, मगनोर घाट
रणबहादुर सिंह, एम० ए०, एल० टी०, भूपाल नोबुल्स हाई स्कूल
रविशंकर देरासरी, बार-ऐट लॉ बनेड़ा
रावबहादुर ठाकुर राजसिंह बेदला

करौली

भँवरलाल शर्मा, साहित्यरत्न, नाज की मंडी

किशनगढ़ स्टेट

बाबूलाल श्रीवास्तव 'प्रेमी'

कोटा राज्य

अवधबिहारी सिंह, हेडमास्टर, सिटी हाई स्कूल
गोपीनाथ अग्रवाल, बी० ए०, शिक्षक, श्री महाराजकुमार

सर्वश्री

कविराजा दुर्गादानजी, कोटड़ी

डाक्टर मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०, वाइस प्रिंसिपल, हर्बर्ट कालेज

मोतीलाल जैन, पो० मंगरोल

चिड़ावा

रामचंद्र शर्मा 'प्रफुल्ल', श्रीकृष्ण वाचनालय

जयपुर

गणेशनारायण सोमाणी, वकील

महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, पान का दरवाजा

मंगलदास स्वामी, मैनेजर श्री दादू महाविद्यालय

मुकुंद शास्त्री पर्वणीकर, हवामहल के सामने

मान्य–मोतीलाल शर्मा, बालचंद्र प्रेस,

रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख', एम० ए०, महाराजा कालेज

लूड़मल शर्मा, बी० ए०, बी० टी०, छज्जूलाल की टोंटी, चोपड़ी तोपखाना, देश

राजश्री ठाकुर साहब शिवनाथ सिंह, मलसीसर भवन

स्थायी–शुकदेव पांडे, प्रिंसिपल, बिड़ला इंटर० कालेज, पिलानी

सुनहरीलाल शर्मा, श्री नवलगढ़ विद्यालय, नवलगढ़

हरनाथ सिंह, डुंडलोद, पो० नवलगढ़

हर्षचंद्र छाजेड़ ओसवाल, बी० ए०, बी० एल०, विशारद, कुंदीगरों के भैरों का रास्ता

मान्य–पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए० तहसीलदार का रास्ता

जैसलमेर राज्य

डाक्टर दामोदरलाल शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०, एजुकेशन सुपरिंटेंडेंट

सवश्री

जोधपुर राज्य (मारवाड़)

अनूपचंद झावख, झावख की गवाड, फलोदी

उदैराज उज्ज्वल, सरदारपुरा

मुनि ज्ञानसुंदर, ठि० रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्टमाला, फलोदी

स्थायी–दीवानवहादुर धर्मनारायण काक, सी० आई० ई०, डिप्टी चीफ मिनिस्टर

पुरुषोत्तम दास पुरोहित, बी० ए०, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, वलोत्रा

महावीर सिंह गहलौत, बी० ए०, मेरती दरवाजा

रामकर्णजी, मोती चौक

विनय सिंह देवड़ा, एम० ए०, गलथनी, ऐरनपुरा रोड

साहित्याचार्य विश्वेश्वरनाथ रेऊ, अफसर इनचार्ज, आर्कैयालॉजिकल डिपार्टमेंट

शुभकरण वदरीदान कविया, एम० ए०, एल-एल० बी०, रायपुर की हवेली

सोमनाथ गुप्त, एम० ए०, काली गुमटी, सरदारपुरा

झालरापाटन

नवरत्न गिरधर शर्मा, झालावाड़ राजगुरु

रायवहादुर सेठ मानिकचद सेठी, विनोद भवन

डूँगरपुर स्टेट

राठोर सूरजमल वागड़िया, पुरातत्त्व विभाग

प्रतापगढ़

स्थायी–हिज हाइनेस महारावत साहव सर रामसिह, के० सी० एस० आई०

सर्वश्री

बीकानेर

अगरचंद भँवरलाल नाहटा, ठि० श्री शंकरदान नाहटा, नाहटों की गवाड़

अगरचंद भैरोदान सेठिया, महल्ला मरोठियों का

अयोध्याप्रसाद तिवारी, विशारद, एजुकेशनल बुकडिपो

डॉक्टर अरुणकुमार मजुमदार, एल० एम० एफ०, प्रिंस विजय सिंहजी मेमोरियल जेनरल हास्पिटल फार विमेन ऐंड चिल्ड्रेन

डॉ० अविनाशचंद्र, एल० एस० एम० एफ०, गंगाशहर

आईदान बारठ, ठि० कुँवर दीप सिंह, बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील, हाई कोर्ट

आयाराम, बी० ए०, इंस्पेक्टर, पोस्ट आफिस

डॉक्टर आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, पी एच० डी०, डी० लिट्०, प्रोफेसर, डूँगर कालेज

इंद्रचंद्र शास्त्री, बी० ए०, शास्त्राचार्य, बीकानेर ऊन प्रेस

मुंशी इब्राहीम खाँ समेजा, पेशकार, श्री गंगाशहर रोड

ईश्वरदयाल, वकील, हाई कोर्ट

ऊधोदास, हिंदी प्रभाकर, रेलवे स्टोर

एम० एन० तोलानी, प्रिंसिपल, डूँगर कालेज

ओमप्रकाश, ठि० बा० बनारसीदास, गुड्स क्लार्क, बी० के० एस० रेलवे

ओमप्रकाश शर्मा, हेड क्लार्क, लोको आफिस

कन्हैयालाल कोचर, बी० ए०, एल-एल० बी० अध्यापक, कोचरों का चौक

कन्हैयालाल कोठारी, ओसवाल कोठारियों की गुवाड़

कन्हैयालाल स्वामी, भीनासर

सर्वश्री

क० मोहनलाल बोहरा, सहायक अध्यापक, फोर्ट मिडिल स्कूल
कस्तूरचंद व्यास, माधव निवास, चूनगर चौक
लाला कामताप्रसाद गुप्त, बी० ए०, एल-एल० बी०, फॉरेन ऐंड पोलिटिकल सेक्रेटरी, चौतीना कुआँ
काशीनाथ पांडेय, चंद्रमौलि, कविरत्नम्, व्याकरणाचार्य, काव्यरत्न, प्रिंसिपल, श्री शार्दूल ब्रह्मचर्याश्रम
ठाकुर किशन सिंह, क्लार्क, दफ्तर प्राइम मिनिस्टर साहब
किशोरीलाल, बी० ए०, स्टोर्स सुपरिंटेंडेंट, बी० के० एस० रेलवे
ठा० कुमेर सिंह राष्ट्रकूट, बी० ए०, अव भादरा, भादरा हाउस
केवलचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील, हाईकोर्ट, आचार्यों का चौक
केशवप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, डिस्ट्रिक्ट जज
केशवानंद शर्मा, बी० एस-सी०, बी० सी० ई०, महकमा तामीरात
खुशहालचंद डागा, ठि० श्री राजा विश्वेश्वरदयाल डागा, सी० आई० ई०
गंगादान बारठ, अध्यापक, स्टेट स्कूल, नोरवा मंडी
गंगाबिशन पुरोहित, आरोग्यकर औषधालय, श्री लक्ष्मीनाथ जी की घाटी
गजराज ओझा, विद्याभूषण, एम० ए०, एल-एल० बी०, तहसीलदार, नोहर
गुरुप्रकाश गुप्त 'मुकुल', एम० ए०, एल-एल० बी०, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, हाईकोर्ट
गुरुप्रसाद सक्सेना, सी० जी० डब्ल्यू० बी०, स्टेट स्काउट्स आर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी
गुलाब सिंह वर्मा, क्लार्क, रेलवे स्टोर्स

सर्वश्री

डॉ० गोपाल सिंह, एल० एम० एस० एच०, गंगाशहर

गोपीचंद कछवाहा, क्लार्क, लोको आफिस

गोपीनाथ तिवारी, एम० ए०, अध्यापक, एम० एम० हाई स्कूल

गोवर्द्धनलाल पांडे, रामनिवास, असिस्टैंट कोर्ट अव वार्ड्स

गौरीशंकर आचार्य, बी० ए०, एक्जिक्युटिव अफसर

गौरीसहाय सक्सेना, अध्यापक, श्री शार्दूल हाई स्कूल

चंद्रदेव शर्मा, ठि० श्री लालाराम शर्मा, सब-पोस्टमास्टर, सरदार शहर

चंद्रधर इस्सर, एम० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट

चंद्रशेखर शर्मा, सी० ई०, म्युनिसिपल इंजीनियर

चंद्रशेखर शास्त्री वैद्यराज, चंद्रशेखर फार्मेसी

चंद्रसिंह विशारद, डेरा रामनगर

स्थायी–सेठ चंपालाल बॉठिया, भीनासर

चेतनदास खत्री, भीनासर

चेतनदास मूँधड़ा (माहेश्वरी), वकील, हाईकोर्ट

छगनलाल गुलगुलिया, देशनोक

डॉक्टर छगनलाल मोहता, तेलीवाड़ा

छोटाबाई, प्रधानाध्यापिका, स्वर्गीय हमीरमल बॉठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

छोटूलाल सुराना, पुरानी लाइन, गंगाशहर

जगन्नाथ ओझा सारस्वत, वैद्यभूषण, गंगाशहर

जगन्नाथजी रामदेव विश्वकर्मा, पुरानी लाइन, गंगाशहर

जतनलाल वैद, भीनासर

जनार्दन शर्मा, पोस्टमास्टर, उदयराम सर

जयप्रकाश गुप्त, क्लार्क रेलवे दफ्तर

सर्वश्री

मुंशी जलाल खॉ कल्लर, सर्किल पुलिस इंस्पेक्टर, धोबी तलाई, गंगाशहर रोड

जालिमचंद सेठिया, ठि० श्री ठाकुरसीदास रेखचंद सेठिया, भीनासर

जीवनमल जोशी, वकील, सुजानगढ़

जेसराज वैद, लोहावाजार

ज्ञानपाल सेठिया, वीकानेर ऊन प्रेस

ज्ञानस्वरूप गुप्त, एम० ए०, अध्यापक, रामपुरिया हाई स्कूल

तोलाराम चोपड़ा, ठि० श्री भैरूँदान ईश्वरचंद चोपडा, गंगाशहर

तोलाराम वॉठिया, ठि० श्री सेठ वहादुरमल तोलाराम वॉठिया, भीनासर

कुँवर दर्शन सिंह सेंगर, महकमा खास

दुर्गादत्त क्राड्डू, वी० ए०, एल-एल० वी०, वकील, हाईकोर्ट

दुर्गादास अग्रवाल, ठि० दुर्गादास धर्मपाल

दूलीचंद गीया, वड़ोपल ठि० हजारीमल लूनकरण, पोस्ट आफिस पीलीवंगा

देवदमन गोस्वामी, आवकारी विभाग

धननारायण कपूर, रेलवे ऑडिट ऑफिस

डॉक्टर धनपतराय, इंचार्ज, चैरिटेवल एलोपेथिक डिस्पेसरी, मेहता चौक

धनराज पुरोहित, वी० ए०, अध्यापक, श्री शार्दूल हाई स्कूल

नथमल्ल वणोट, ठि० उदयचंद नथमल्ल वणोट, गंगाशहर

नथमल वॉठिया, ठि० मैनरूपजी फतेहचद वॉठिया, भीनासर

स्वामी नरोत्तमदास, एम० ए०, शांति आश्रम

नाथूराम खड़गावत, खड़गावतो की गवाड़

सर्वश्री

नाथूराम पालीवाल, क्लार्क, शिक्षा विभाग

कुँवर नारायण सिह वैद, ठि० श्री राव गोपालसिह जी मेहता

नेमचंद चोपडा, ठि०° सेठ भैरूँदान ईश्वरचंद चोपड़ा, गंगाशहर

परमात्मा शरण ऐरन, परमात्मा ऐंड संस

पन्नालाल खत्री, भीनासर

पीतांवर सिह, वकील, हाई कोर्ट

पुरुषोत्तमदास स्वामी, एम० एस-सी०, विशारद, पुस्तकाध्यक्ष, श्री गुणप्रकाश सज्जनालय

पूर्णचंद्र गर्ग, रामपुरिया मुहल्ला

ठाकुर पूर्णसिह, बी० ए०, असिस्टेंट इंस्पेक्टर अव स्कूल्स,

कुँवर प्रतापसिह सेंगर, वड़े पोस्ट आफिस के पास

प्रयागदत्त कट्टा, गिरानी, सोनारों की गवाड़

प्रसन्नचंद कोचर, प्रसन्न भवन

प्रेमसिह, ठि० पं० छत्रसिंह जी की कोटड़ी

फतहचंद गुलगुलिया, देशनोक

फाल्गुन गोस्वामी, गोस्वामी चौक

वनवारी अग्रवाल, ठि० वनवारी ऐंड संस

वलवंत सिंह खिड़िया, हेडमास्टर, सी० ई० स्कूल

मेजर कुँवर वाग सिंह, दाऊद सर हाउस

वालकृष्ण, एम० ए०, अध्यापक, श्री शार्दूल हाई स्कूल

भँवरलाल खत्री, देशनोक

भँवरलाल वैद, हेड क्लार्क, कस्टम्स डिपार्टमेंट

भँवरलाल मोदी (खत्री), क्लार्क, पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट

भँवरलाल सुराना, वैद्य, देशनोक

डॉ० भगतराम, आई० एम० डी०, मेडिकल प्रैक्टिशनर

सर्वश्री

भगवानदत्त शर्मा, बी० ए०, हेडमास्टर, स्टेट स्कूल, मोमासर

त्रिवेदी भीकमचंद शर्मा, रेलवे गार्ड, बी० के० एस० रेलवे

भीखमचंद वैद, ठि० जतनमल विजयचंद, के० ई० एम० रोड

भीष्मदेव शर्मा, अध्यापक, चोपड़ा स्टेट स्कूल, गंगाशहर

पुरोहित भूरारामजी, राजगुरु, रेवेन्यू कमिश्नर, श्री गंगानगर

भैरवदान खत्री, बी० ए०, डिप्टी इंस्पेक्टर अव स्कूल्स

सेठ भैरूँदानजी कोठारी, ठि० रावतमल भैरूँदान कोठरी, ओसवाल कोठारियों की गुवाड

मंगलचंद चोपड़ा, ठि० सेठ भैरूँदान ईश्वरचंद चोपड़ा, गंगाशहर

मथुराबाई, सहायक अध्यापिका, स्वर्गीय सेठ हमीरमल बाँठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

मदनस्वरूप बी० कॉम०, एल-एल० बी०, असिस्टेंट गवर्नमेंट ऐडवोकेट, हाई कोर्ट

महंत मनोहरदास, कबीर मंदिर, देशनोक

मनोहरलाल, फार्मेसी इंचार्ज, जनाना अस्पताल

महालचंद वैद, भीनासर

महावीरप्रसाद गुप्त, वकील, रामपुरियों की गुवाड़

कुँ० मानमल कोठारी, ठि० सेठ जतनमल मानमल कोठारी

स्थायी—मालचंद्र शर्मा, द्वितीयाध्यापक, जैन श्वेतांबर पाठशाला

मीनाराम रंगा, एम० ए०, विशारद, राजरंगों की गली

मुरलीधर, वकील, हाईकोर्ट

मेघजी भत्तूराम विश्वकर्मा, भीनासर

मेघराज सुखानी,

मेहरचंद, अध्यापक, स्टेट स्कूल, राजलदेसर

वैद्यभूषण मोहनलाल कोठारी, देशनोक

सर्वश्री

मोहन सिंह ठीकेदार, स्टेशन रोड

यशराज कट्टा, सराफा वाजार

यशोदा देवी, धर्मपत्नी, पं० लालचंद्र भादानी, गोगा दरवाजा

युगल सिंह खीची, एम० ए०, एल-एल० वी०, वार-ऐट-लॉ, डिप० एड्० (लंदन), रोशनीघर के पास

रक्षपाल शर्मा, इंडस्ट्रियल एरिया

रघुवरदयाल गोयल, वकील, हाईकोर्ट, मुहल्ला गोलछान

रतनलाल रामपुरिया, ठि० सेठ हीरालाल सौभाग्यमल रामपुरिया

रतनलाल वैश्य, एम० ए०, प्रोफेसर, श्री डूँगर कालेज

रवेलचंद्र सूरी, एस० डी० ओ०, महकमा तामीरात

राधाकृष्ण चतुर्वेदी, डिप्टी सुपरिंटेंडेंट, सेंट्रल जेल

रामकृष्ण आचार्य (कलकती), म्युनिसिपल कमिश्नर, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट ऐंड मुंसिफ, सदर, आचार्यों का चौक,

रामकृष्ण मलिक, वी० ए०, पर्सनल असिस्टैंट टु चीफ इंजीनियर, पी० डव्ल्यू० डी०

सेठ रामगोपाल मेहता,

रामचंद्र डागा, ठि० श्री रामलौटन प्रसाद वर्मा, अध्यापक, श्री शार्दूल हाई स्कूल

रामचंद्र रघुवंशी अखंडानंद, लोको दफ्तर

रामदेव आचार्य, वकील

रामनारायण शर्मा, रानी वाजार, गुरुद्वारे के सामने

रामनिवास हारीत, लाइब्रेरियन, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, फोर्ट

रामप्रताप भैरूँदान मेढ़, पुरानी लाइन, गंगाशहर

रामवख्श मूँधड़ा, देशनोक

रामलौटन प्रसाद वर्मा, विशारद, श्री शार्दूल हाई स्कूल

सर्वश्री

ठा० रामसिंह, एम० ए०, डायरेक्टर जनरल अव एजुकेशन

रावतमल कोचर, वकील, कोचरों की गुवाड़,

रूपचंद्र सुराना, सुरानों का मोहल्ला

राजवी रूप सिंह, बी० ए०, एल-एल० बी०, मुंसिफ

लक्ष्मीनारायण पुरोहित, बी० ए०, एल-एल० बी०, गवर्नमेंट एडवोकेट

लक्ष्मीनारायण मूँधड़ा, बी० ए०. देशनोक

लक्ष्मीनारायण शर्मा, बी० ए०, क्लार्क, इंपीरियल पोस्ट आफिस

लॉगीदान बारठ, देशनोक

लाड़वती देवी, ठि० श्री शंभूदयाल जी, रेलवे स्कूल, हनुमानगढ

लालचंद कोठारी, ठि० नेमीचंद जी पूनमचंद जी कोठारी, ओसवाल कोठारियों की गुवाड़

वल्लभलाल गोस्वामी, गोस्वामी चौक

वसंता बाई, हमीरमल बॉठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

विजय सिंह कोठारी, श्री सरदार विद्यालय, चूरु

विद्याधर शास्त्री, एम० ए०, प्रोफेसर, डूँगर कालेज

वैद्य शंकरदत्त शर्मा, मेहता धर्मार्थ चिकित्सालय

शंभूदयाल सक्सेना, साहित्यरत्न, नवयुग ग्रंथ कुटीर

कुँ० शिवचंद झावक, वेगानियों की गुवाड़

शिवलाल शर्मा, गवर्नमेंट कंट्रैक्टर, पी० डब्ल्यू० डी०

मेहता शिवबक्ष कोचर, कोचरों का चौक

शिवशंकरलाल शर्मा, अध्यापक, स्टेट स्कूल, भीनासर

शेरसिंह, एम० ए०, एल-एल० बी०, जज, हाईकोर्ट

शोरीलाल मलहोत्रा, बी० एस-सी०, श्री शार्दूल हाई स्कूल

स्थायी—श्यामलाल बॉठिया, भीनासर

डॉक्टर श्रीकृष्ण, एम० डी०, जेल कुआँ

र्वश्री

श्रीनारायण जी वैद्य, शास्त्री,

श्रीराम यादव, हेडमास्टर, स्टेट स्कूल, नापासर

श्रीराम शर्मा, बी० ए० (इलाहाबाद), बा० नो० हाई स्कूल

सत्यनारायण द्विवेदी, बी० ए०,चोपड़ा स्टेट स्कूल, गंगाशहर

सत्यनारायण प्रसाद, स्टेनोग्राफर, नोहरा श्री महाराज कँवराणी जी साहबा

सत्यनारायण व्यास, विशारद, राँघडी का चौक

सरस्वती देवी जैन, गंगाशहर रोड

सरस्वती देवी शर्मा, विद्याविनोदिनी, धर्मपत्नी, डॉक्टर जयशंकर जी वैद्य विशारद, मेहता अस्पताल, मेहता चौक

सुंदरलाल शर्मा, बी० ए०, पर्सनल असिस्टेंट टु दि प्रिंसिपल जनाना मेडिकल ऑफिसर

सुखवीर सिंह, वार्ड कीपर, रेलवे जेनरल स्टोर्स

सुनाम राय, पोस्टल क्लार्क, इंपीरियल पोस्ट आफिस

सूबेदार सिंह शर्मा, हेड क्लार्क, जनाना अस्पताल

सूरजमल शर्मा, प्रधानाध्यापक, स्टेट स्कूल, उदयराम सर

सूर्यकरण आचार्य, एम० ए०, आचार्यों का चौक

डॉ० सूर्यनारायण आसोपा, एम० बी०, बी० एस०, स्टेशन रोड

सूर्यप्रसाद शर्मा, बी० ए०, ठि० श्री हरप्रसाद ऐंड संस के० ई० एम० रोड

सूर्यमल माठोलिया, हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़

सोहनलाल मल्ल, मंत्री, बाल पुस्तकालय, उदयराम सर

हनुमानदत्त शर्मा, वकील, पो० सुजानगढ़

हरनारायण, चीफ गुड्स क्लार्क, बी० के० एस० रेलवे

डॉक्टर हरवंशलाल शर्मा, कृष्ण मेडिकल हॉल, कोट गेट

सर्वश्री

हरिरत्न वर्मा, बी० ए०, ठि० बा० अजब सिंह, क्लार्क, रेलवे मैनेजर आफ़िस

महंत हरिहर गिर, डेरा रामनगर

ठाकुर हरिसिंह, सॉखू भवन

लाला हेतराम गुप्त, एम० ए०, जाट स्कूल, संगरिया

हेमलता पांडेय, विशारद, धर्मपत्नी, प० महेंद्रशंकर पांडेय, एम० ए०, बी० टी०, अध्यापक, श्री शार्दूल हाई स्कूल

बूँदी

कृष्णगोपाल शर्मा, नैनवाँ

राणावत महेंद्र सिंह, चीफ रेवेन्यू अफ़सर

राजकवि राव शत्रुसाल जी

ब्यावर

दीपचंद्र अग्रवाल, दि० जैन सरस्वती भवन, नाशियाँ

रामेश्वरप्रसाद गुप्त, एम० ए०, चंग गेट

भरतपुर राज्य

प्रभुलाल गुप्त, अध्यापक, वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल, भुसावर

प्रेमनाथ चतुर्वेदी, बी० ए०, ब्राह्मणों का मुहल्ला

साँभर

स्थायी—कृष्णकुमार पुरोहित, एम० ए०, एल-एल० बी०, वकील

१२—संयुक्त प्रांत

(सभासदों की संख्या—५७०)

अलमोड़ा

चिंतामणि तिवारी, मुहल्ला कनौली,

सर्वश्री

नारायणदत्त जोशी, गवर्नमेंट इंटर० कालेज

विश्वंभरदत्त भट्ट, एम० ए०, गवर्नमेंट इंटर० कालेज

वी० एन० सेन, एम० ए०, एल० टी०, गवर्नमेंट इंटर कालेज

हीरावल्लभ तिवारी, गवर्नमेंट इंटर० कालेज

अलीगढ़

गोकुलचंद शर्मा, एम० ए०, साहित्य-सदन

मान्य-राजगुरु धूरेंद्र शास्त्री, न्यायभूषण, साधु आश्रम, हरदुआगंज

मुरलीमनोहर गुप्तारा, एम० ए०, धर्मसमाज कालेज

आगरा

अंविकाचरण शर्मा, एम० ए०, संत जांस कालेज

अमूल्यरत्न प्रभाकर, प्रभाकर भवन, राजामंडी

स्थायी–कैप्टेन राव कृष्णपाल सिह, कैसल ग्रांट

गुलाबराय, एम० ए० (आगरा), गोमती भवन

चिरंजीलाल शर्मा पालीवाल, भैरव बाजार

जीवनचंद ताल्लुकेदार, एम० ए०, संत जांस कालेज

टीकम सिह तोमर, लेक्चरर, बलवंत राजपूत कालेज

स्थायी–निहालकरण सेठी, सिविल लाइन

प्रकाशचंद गुप्त, एम० ए०, प्रोफेसर, संत जांस कालेज

महेंद्र जैन, मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा

मोहनवल्लभ पंत, एम० ए०, बी० टी०, आगरा इंटर० कालेज

ठा० रामसिंह, बी० ए०, असिस्टैंट इनकमटैक्स कमिश्नर, टूंडला

ठा० वेणीमाधव सिंह, एम० एस-सी०, असिस्टैंट इंस्पेक्टर अव स्कूल्स

स्थायी–प्रो० हरिहरनाथ टंडन एम० ए०, संत जांस कालेज

सर्वश्री

आजमगढ़

मान्य—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सदावर्ती

निःशुल्क—अलगूराय शास्त्री, एम० एल० ए०, डाकघर अमिला

चंद्रभूषण ओझा, बाजार पाँडेय

त्रिवेणीप्रसाद साहु, महल्ला मातवरगंज

परमेश्वरीलाल गुप्त, विशारद, गोपाल निकेतन

प्यारेलाल 'आजिज', एम० ए०, एल० टी०, अजमतगढ़ पैलेस

मंगला पांडेय, अध्यापक, सेंट्रल ट्रेनिंग स्कूल

मधुसूदन दास अग्रवाल, चौक

रघुनाथ पांडेय, बी० एस-सी०, एल एल० बी०, वकील

राजकुमार सिंह, सूरजपुर

स्थायी—सेठ रामगोपाल आर्य, मऊनाथभंजन

रामप्रताप सिंह, सब-डिप्टी इंस्पेक्टर अव स्कूल्स

रामसुंदर सिंह, मुख्तार, बाजार पांडे

रामावतार मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०, ग्राम बस्ती, पो० रामपुर

रामाश्रयलाल, मुख्तार,

राय रासविहारी लाल, गुरुटोला

रायसाहब विंध्येश्वरीप्रसाद सिंह, डिप्टी कलक्टर

वीर सिंह, बार-ऐट-लॉ, मुंसिफ

शशिभूषण गुप्त, मुकुंद निवास, अजमतगढ़

सकलदीप सिंह, हेडमास्टर, श्रीकृष्ण पाठशाला हाई स्कूल

निःशुल्क—स्वामी सत्यानंद, हरिजन गुरुकुल, दोहरी घाट

हरकृष्णदास सर्राफ, आसिफगंज

हीरालाल आर्य, चौक

सर्वश्री

इटावा

कालीदत्त मिश्र, सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड
चौधरी कृष्णगोपाल, एम० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट
महादेवप्रसाद, ऐडवोकेट
नि.शुल्क–रघुवरदयाल मिश्र 'मान', हेडमास्टर मिडिल स्कूल, बिधूना
राजाराम, मुख्तार
रामनारायण चतुर्वेदी, एम० ए०, गवर्नमेंट इंटर कालेज
रायबहादुर विश्वंभरनाथ, रघुनाथ भवन, छिपैटी
शारदाप्रसाद, जसवंतनगर
सूरजनारायण अग्रवाल, ठि० तुलाराम सर्राफ, कटरा शमशेर खाँ
सूरजप्रसाद, भर्थना

इलाहाबाद

अमरनाथ झा, एम० ए०, वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय
इंदुमती तिवारी, एम० ए०, ४ बी बैंक रोड
कमलाप्रसाद सिंह, सब-इंस्पेक्टर पुलीस, थाना दारागंज
कुँवरकृष्ण सुखिया, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल
स्थायी–कृष्णचंद्र, एम० ए०, एल-एल० बी०, सिविल जज
" कृष्णाराम मेहता, बी० ए०, एल-एल० बी०, लीडर प्रेस
" रायबहादुर कौशलकिशोर, बी० ए०, ३ लाउथर रोड
गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०, कला प्रेस
चंद्रावती त्रिपाठी, एम० ए०, १६ बैंक रोड
जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, आयुर्वेदपंचानन, ३ सम्मेलन मार्ग
ठाकुरनारायण सिंह, बी० ए०, २/१ लाउथर रोड
तारकेश्वरनाथ वर्मा, मुख्तार, हंडिया

सर्वश्री

विशिष्ट–महामानीय डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, एम० ए०, एल-एल० डी०, के टी०, डी० सी० एल, १८ अलबर्ट रोड

चौधरी धर्मसिंह, बी० ए०, एल० टी०, नं० १ बेली रोड

डा० धीरेंद्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट०, विश्वविद्यालय

नंदकिशोर अरोरा, सार्वी आश्रम, २० ए बेली रोड, न्यू कटरा

स्थायी–ठा० नेहपाल सिंह, आई० ई० एस०, २१ स्योर रोड

मान्य–पुरुषोत्तमदास टंडन, एम० ए०, एल एल० बी०, १० क्रास्थवेट रोड

बाबूराम अवस्थी, एम० ए०, बी० एस सी०, एल एल० बी०, १५ हैमिल्टन रोड, जार्ज टाउन

बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट०, २४ चैथम लाइन

व्रजभूषण शर्मा, एम० ए०, ६६ एलन गंज, कुंडू गार्डेन

मान्य–रायबहादुर व्रजमोहन व्यास, एक्जिक्यूटिव अफसर

स्थायी–रायबहादुर भगवतीशरण सिंह, चंद्रभवन, आउटरम रोड

" मनोहरलाल जुत्शी, एम० ए०, १ बेली रोड

मान्य–महादेवी वर्मा, एम० ए०, महिला विद्यापीठ

डा० रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, विश्वविद्यालय

राय रामचरण अग्रवाल, एम० ए०, बड़ी कोठी, दारागंज

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, एम० ए०, डी० एस-सी०, हेस्टिंग्स रोड

लक्ष्मीधर वाजपेयी, तरुण भारत ग्रंथावली, दारागंज

विष्णुदत्त भार्गव, १६ कैनिंग रोड

मान्य–वेंकटेशनारायण तिवारी, एम० ए०, एम० एल० ए०, कीडगंज

शक्तिधर गुलेरी, एम० ए०, संस्कृत विभाग, विश्वविद्यालय

नि:शुल्क–शालिग्राम पेशकार, ७६६ कटरा

शिवदयाल जायसवाल, नं० ११५ नखास कोना

मान्य–रायबहादुर श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए०, दारागंज

नि:शुल्क–श्रीराम भारतीय, अखिल भारतीय सेवा समिति

सर्वश्री

मान्य-श्रीराम वाजपेयी, १ चैथम लाइंस

स्थायी-सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०, हिंदुस्तानी एकेडेमी

सत्याचरण, एम० ए०, बी० टी०, डी० ए० वी० हाई स्कूल

डॉ० सद्गोपाल, एम० एस-सी०, डी० एस-सी०, १० बैंक रोड

सुरेंद्रनाथ तिवारी, आफिस अव असिस्टेंट इंस्पेक्टर जनरल, रेलवे पुलिस

सुशीलकुमारी वर्मा, नं० ४२ केनिंग रोड

विशिष्ट-हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस लि०

हरिराम अग्निहोत्री, इनकमटैक्स अफसर

उन्नाव

कृष्णदत्त त्रिपाठी, ठि० श्री हजारीमल आश्रम, मौरावाँ

जयनारायण कपूर, बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील, मौरावाँ

शिवदुलारे त्रिपाठी, मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, मौरावाँ

एटा

रामदत्त भारद्वाज, एम० ए०, एल-एल० बी०, एल० टी०, ए० वी० पी० हाई स्कूल, कासगंज

वासुदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, गवर्नमेंट हाई स्कूल

कानपुर

अयोध्यानाथ शर्मा, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज

एल० के० त्रिपाठी, क्राइस्ट चर्च कालेज

ठाकुर कन्हैया सिंह, बी० ए०, इनकमटैक्स अफसर

कालिकाप्रसाद धावन, सेक्रेटरी, गयाप्रसाद पुस्तकालय

कुंजविहारी लाल श्रीवास्तव, बी० ए०, म्युनिसिपल हाई स्कूल

केशवचंद्र शुक्ल, डिप्टी कलक्टर

सर्वश्री

चंद्रशेखर पांडे, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज, नवाबगंज

ठा० जमनाप्रसाद सिंह, इनकमटैक्स अफसर

दुर्गाप्रसाद, डिप्टी कलक्टर

स्थायी–नारायणदास बाजोरिया, गंगा आयल मिल्स

(वर्तमान–ठि० पं० वस्तीराम की पाठशाला, पो० कनखल)

" सेठ पदमपत सिंहानिया, कमला टावर

परमेश्वरदीन मिश्र, एम० ए०, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

कछियाना मुहाल, मोती मुहाल सड़क

परिपूर्णानंद वर्मा, शास्त्री, कमला टावर

विशिष्ट–प्यारेलाल गर्ग, ऐग्रिकल्चर कालेज

ब्रजलाल शर्मा, बी० ए०, एल० टी०, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट, परेड

मन्नीलाल नेवटिया, काहू कोठी

माधवप्रसाद पांडे, एस० सी०, प्रेमनगर

मुंशीराम शर्मा, आर्यनगर

स्थायी–रतनचंद कालिया, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट

" लाला रामरतन गुप्त, बिहारी निवास

लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, एम० ए०, पटकापुर

विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु', विद्याविभाग, नवाबगंज

श्यामसुंदरलाल शुक्ल, सीसामऊ (हाल, वृंदावन, मथुरा)

सत्यनारायण पांडेय, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज

सद्गुरुशरण अवस्थी, एम० ए०, प्रेममंदिर

स्थायी–हरीचंद खन्ना, १६/५२ गैंजीज बंक, सिविल लाइन

हीरालाल खन्ना, एम० एस-सी०, बी० एन० एस० डी० कालेज

खीरी

अनमोलकराम अवस्थी, एम० ए०, लखीमपुर

सर्वश्री

स्थायी–आदित्य प्रकाश मिश्र, डिप्टी कलक्टर

" आनरेब्ल राजा युवराजदत्त सिंह साहब एम० सी० एस०
अच ओयल ऐंड कैमारा इस्टेट, पो० ओयल

संकठाप्रसाद वाजपेयी, लखीमपुर

सूरजनारायण दीक्षित, एम० ए०, एल-एल० बी०, लखीमपुर

गढ़वाल

कृपाल सिंह रावत, विशारद, ग्राम कनेरा, डाकघर वैजिरो

चेतराम शर्मा, ग्राम वंगर, पो० वैजरो

दौलतराम जुयाल, ग्राम झवाणासार, पो० दोगड्डा

हरिदत्त डेवरानी, गॉव नवसीन, पो० डॉडामंडी,

गाजीपुर

रायबहादुर घनश्याम दास, रिटायर्ड कलक्टर

चंद्रशेखर पांडेय, सब-पी० डब्ल्यू० इंस्पेक्टर, नंदगंज

भागवत मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट

भोलानाथ सिंह, सकलदीप आश्रम, बरहपुर, नंदगंज

रामेश्वरलाल मारवाड़ी, नंदगंज बाजार

गोंडा

स्थायी–पूर्णिमा चॉदमल, ठि० श्री चॉदमल, आई० सी० एस०

गोरखपुर

अत्रिमुनि मल्ल, एम० ए०, एल-एल० बी०, वकील

रायसाहब आद्याप्रसाद, बी० ए०, एल-एल० बी०, बसंतपुर

एस० एल० पांडेय, हेडमास्टर, किंग एडवर्ड हाई स्कूल, देवरिया

कामेश्वरीप्रसाद नारायण सिंह, पो० सलेमगढ़

कुँवरबहादुर, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० बी० कालेज

सर्वश्री

रायबहादुर केदारनाथ खेतान, एम० एल० सी०, पड़रौना

कैलाशपति त्रिपाठी, एस० पी० एम०, गगहा

ठा० गिरिजाशंकर सिनहा, ऐडवोकेट, देवरिया

चिंतामणि, डिप्टी कलेक्टर

स्थायी–जगन्नाथ प्रसाद, एम० ए०, एल-एल० बी०, देवरिया

डी० एन० मणि त्रिपाठी, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर बुद्ध ए० वी० स्कूल, कुशीनगर

त्रिगुणानंद मिश्र, ग्राम, बकुचो, पो० सतराँव

स्थायी–ठा० त्रिभुवनप्रसाद शिवगोविंद, बार-ऐट-लॉ, ग्राम महालबारी, पो० निचलौल

देवीप्रसाद मालवीय, अलीनगर

नंदकिशोर सिंह, पडरौना राज

परमहंसमल्ल सिंह, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, वकील

पुरुषोत्तमदास, रईस

प्रागध्वज सिंह, वकील, एम० एल० ए०, देवरिया

बालमुकुंद गुप्त, एम० ए०, साहित्यरत्न, बालमुकुंद इंटर कालेज

विशिष्ट–रा० ब० राजा ब्रजनारायण सिंह, पड़रौना राज, पो० पड़रौना

ब्रजलाल अष्ठाना, फार्म मैनेजर, जगदीश इस्टेट, पड़रौना

भारतभूषण गुप्त, असिस्टेंट ऐग्रिकल्चरल इंजीनियर

रायबहादुर मधुसूदनदास

महातमराव बुकसेलर, रेती चौक

मान्य–बाबा राघवदास परमहंस, परमहंसाश्रम, बरहज

ठाकुर राजकुमार सिंह, पो० गगहा

राजनाथ पांडेय, एम० ए०, संत ऐंड्रूज कालेज

रायसाहब राजेश्वरीप्रसाद, एम० ए०, एल-एल० बी०,

सर्वश्री

रामचंद्र राय, ठि० कृष्ण शुगर वर्क्स लि०, पड़रौना
रामनारायण तिवारी, अलीनगर
सेठ रामप्रसाद भालोठिया, पो० सिसवा बाजार
रामरक्षपाल संघी, डायमंड शुगर मिल्स, पिपराइच
रामराज ओझा, डिप्टी केन डेवलपमेंट अफसर
विंध्येश्वरीनारायण चंद्र, एम० ए०, एल-एल० बी०, बसंतपुर
विश्वनाथप्रसाद श्रीवास्तव, सिगनलर, चौरी चौरा
सद्‌गुरु प्रसाद, चौधरी बलदेवप्रसाद रोड
सूर्यप्रसाद सिंह, एम० ए०, क्षत्रिय हाई स्कूल, पड़रौना
कुँ० सूर्यप्रतापनारायण सिंह, जगदीशगढ़ इस्टेट, पड़रौना
हरिहरप्रसाद दुबे, एम० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट
हीरानंद पाठक, रीडर, कलेक्टरेट
होतीलाल, इंजीनियर, देवरिया

जालौन

महाराज वीरेंद्र शाह जू देव बहादुर, पो० जगम्मनपुर

जौनपुर

द्वारकानाथ तिवारी, मछरहट्टा
बनवारी सिंह, क्षत्रिय इंटर० कालेज
भोलानाथ मिश्र, एम० ए०, डिप० एड० (वेल्स), मछरहट्टा
मैनबहादुर सिंह, बी० ए०, एल एल० बी०, क्षत्रिय इंटर० कालेज
रायबहादुर राजनारायण मिश्र, बी० ए०, इस्टेट मैनेजर
राजाराम पांडेय, बी० ए०, एल० टी०, क्षत्रिय कालेज
रामचंद्र पांडेय, डिप्टी इंस्पेक्टर अव स्कूल्स
रामचरण शर्मा, राजा हरपाल सिंह हाई स्कूल, सिंगरामऊ
रामनाथ सिंह, क्षत्रिय इंटर० कालेज

सर्वश्री

राममूर्ति सिंह, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, वकील

विट्ठलनाथ कपूर, मछरहट्टा

कुँवर श्रीपाल सिंह, सिगरामऊ राज्य

श्रीराम उपाध्याय, ऐडवोकेट

स्थायी–सुंदरीप्रसाद, रईस, स्पेशल मैजिस्ट्रेट, चौक

हृदयनारायण सिंह, एम० ए०, क्षत्रिय इंटर० कालेज

झाँसी

कालिकाप्रसाद अग्रवाल, ऐडवोकेट, मानिक चौक

मान्य–मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव

श्यामविहारी शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, ५९ लक्ष्मणगंज

होरीलाल शास्त्री, मैकडानेल हाई स्कूल

देहरादून

अमरनाथ वैद्य, शास्त्री, वनस्पति औषधालय

आनंदस्वरूप सिन्हा, एम० ए०, डी० ए० वी०, कालेज

ए० डी० बनर्जी, डी० ए० वी०, कालेज

कृष्णदेव शर्मा, डी० ए० वी०, कालेज

गुरुप्रसाद शर्मा, श्री महात्मा खुशीराम पब्लिक लायब्रेरी

चंद्रावती लखनपाल, एम० ए०, महादेवी कन्या पाठशाला

जयदेवी घिल्डियाल, बी० ए०, १४ डफरिन रोड

धनवती देवी (श्रीमती फूलचंद), २ हरद्वार रोड

निःशुल्क–संत निहाल सिंह, जर्नलिस्ट

सेठ रामकिशोर, मोहिनी भवन

रामचंद्र जी, धीराज भवन, लक्ष्मण चौक

लक्ष्मणदेव, ठि० लाला झब्बालाल सर्राफ, धामावाला बाजार

लीलावती झँवर, एम० ए०, बी० टी०, कानपुर रोड

सर्वश्री

विद्यावती सेठ, कन्या गुरुकुल, राजपुर रोड

साधूराम महेंद्र, साधूराम हाई स्कूल

सावित्री गुप्ता, एम० ए०, महादेवी कन्या पाठशाला

हरनारायण मिश्र, विद्यामंदिर

लाला हुकुमचंद पुरी, ई० ए० सी० फारेस्ट, १ हरद्वार रोड

हेमंतकुमारी चौधरानी, ८ चंद्र रोड, डालनवाला

नैनीताल

तुलाराम वर्मा, २० बड़ा बाजार

नारायण स्वामी, रामगढ़

स्थायी–रायसाहब डा० भवानीशंकर याज्ञिक, पटवाडाँगर

राजनारायण सिंह, आई० एफ० एस०, डि० फारेस्ट अफसर

प्रतापगढ़ (अवध)

लाल कुमार सिंह, कालाकाँकर

मान्य–सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशगृह, कालाकाँकर

स्थायी–कुँ० सुरेश सिंह, कालाकाँकर

फतहपुर

नानकराम जी, एक्साइज इंस्पेक्टर, खागा

फर्रुखाबाद

महेश्वर, बी० ए०, भारतीय पाठशाला

रामनाथ शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी०, मुंसिफ, कायमगंज

फैजाबाद

मान्य–आचार्य नरेंद्रदेव, एम० ए०, एम० एल० ए०,

स्थायी–बैजनाथ वाजे, बी० ए०, एल० टी०, नार्मल स्कूल

सर्वश्री

राधारमण पांडेय, व्याकरणाचार्य, गवर्नमेंट इंटर कालेज
रायबहादुर रामशरण मिश्र, एम० ए०, सिविल लाइंस
रामस्वरूप, एम० ए०, बी० टी०, होवर्ट हाई स्कूल, टॉडा
रामेश्वरदयाल, डिप्टी कलेक्टर

बदायूँ

मालतीदेवी, ठि० शिवकुमार डिडन, एम० ए०, एल एल० बी०, उझानी

बनारस

अंबिकादत्त उपाध्याय, एम० ए०, अस्सी
अंबिकाप्रसाद श्रीवास्तव, बी० ए०, भारती बीमा कंपनी
डॉ० अचलबिहारी सेठ, कमच्छा
अमरनाथ जेतली, शास्त्री, ब्रह्मनाल
अमरनाथ मेहरोत्रा, नीची ब्रह्मपुरी
अमरेशप्रसाद सिंह, संकटमोचन
रायसाहब डाक्टर, कैप्टेन अयोध्याप्रसाद मिश्र, भदैनी
अवधबिहारीलाल, बी० ए०, एल-एल० बी०, बड़ी पियरी
अशोकजी, एम० ए०, २१ बुलानाला
आमोदकुमार वर्मा, चौखंभा
इकबालनारायण गुर्टू, एम० ए०, एल-एल० बी०, प्रो-वाइस चांसलर, हिंदू विश्वविद्यालय
उदित मिश्र, ग्राम कूँडी, पो० बड़ागाँव
कन्हैयालाल, ब्रह्मपुरी फुलवाई, चौखंभा
कमलनाथ अग्रवाल, काशी पेपर स्टोर्स, बुलानाला
स्थायी-रायबहादुर कमलाकर दुबे, एम० ए०, खजुरी
कमलाकुमारी, सी ५/५ चेतगंज

सर्वश्री

कमलापति तिवारी, शास्त्री, एम० एल० ए०, औरंगाबाद
कांतानाथ पांडेय, एम० ए०, हरिश्चंद्र कालेज
कालिकाप्रसाद पांडे, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज
कालीचरण सिंह, ग्राम फुलवरिया, काली पलटन
कालीप्रसाद मिश्र, १७/१० दशाश्वमेध

नि.शुल्क–काशीप्रसाद मिश्र, विश्वनाथ फार्मेसी, सुंदरदास बाग
काशीराम, एम० ए०, मीरघाट
काश्यपकृष्ण शर्मा, एम० ए०, डिप्टी कलक्टर

स्थायी–किशोरीरमण प्रसाद, मामूरगंज

विशिष्ट–राय कृष्ण जी, पांडेपुर

मान्य–राय कृष्णदास, रामघाट
कृष्णदास अग्रवाल, सुड़िया

स्थायी–कृष्णदेवप्रसाद गौड़, एम० ए०, एल० टी०, बड़ी पियरी
कृष्णलाल जालान, सुखलाल साहु गेट
कृष्णानंद, एम० ए०, बी० टी०, ३/१७८ अर्दली बाजार
के० एन० वांचू, आई० सी० एस०, जिला एवं दौरा जज।
केशवप्रसाद मिश्र, भदैनी
गंगाप्रसाद सिंह अखौरी, दारानगर
गंगाशंकर मिश्र, एम० ए०, नगवा
गरीबदास, ठीकेदार, काशी स्टेशन
डा० गिरवर सिंह, जी० पी० वी० सी०, वेटेरिनरी सर्जन
गिरिजाशंकर गौड़, विशारद, २०८ बड़ी पियरी
गुप्तेश्वर सिंह, बी० ए०, एल-एल० बी०, कबीर चौरा
गुरुशरणलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, एल एल० बी०, मुंसिफ

विशिष्ट–राय गोविंदचंद्र, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, कुशस्थली

स्थायी–गोविंद मालवीय, एम० ए०, एल-एल० बी०, न्यू इंश्योरेंस कं०

सर्वश्री

गौरीनंदन उपाध्याय, बी० ए०, एल-एल० बी०, बाँसफाटक

स्थायी–सेठ गौरीशंकर गोयनका, अस्सी

मान्य–चंद्रबली पांडेय, एम० ए०, ठि० मुंशी महेशप्रसाद, नगवा

चंद्रभाल, बी० एस-सी०, एम० एल० सी०, सिगरा

चंद्रमौलि सुकुल, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज

चाँदबिहारी कपूर, एम० ए०, एल-एल० बी०, मुंसिफ

छेदीप्रसाद, आयुर्वेदाचार्य, वैद्य शास्त्री, मुगलसराय

जंगीर सिंह, एम० ए०, छोटी गैबी

जगतनारायणलाल, हेड ट्रेन एक्जामिनर, मुगलसराय

जगदीशप्रसाद सिंह, एम० ए०, उदय प्रताप क्षत्रिय कालेज

स्थायी–जगन्नाथप्रसाद खत्री, गोलागली

रा० ब० जगन्नाथप्रसाद मेहता, चेयरमैन, म्युनिसिपल बोर्ड

जगन्नाथप्रसाद शर्मा, एम० ए०, औरंगाबाद

जनक कौल, राजघाट स्कूल

जयकृष्णदास, कालभैरव

मान्य–जयचंद्र नारंग, विद्यालंकार, भदैनी

जीवनदास अग्रवाल, अग्रवाल महाजनी पाठशाला

जैशंकर दुबे, खजुरी

ज्ञानवती त्रिवेदी, गुप्ता गार्डेन, लंका

स्थायी–ठाकुरदास, ऐडवोकेट, राजा दरवाजा

ठाकुरप्रसाद शर्मा, एम० ए०, एक्जि० अफसर, म्युनिसिपल बोर्ड

त्रिभुवनप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०, छोटी पियरी

त्रिवेणीदत्त द्विवेदी, बेनिया बाग

स्थायी–दामोदरदास खंडेलवाल, छोटी गैबी

गोस्वामी दामोदरलाल, बुलानाला

सर्वश्री

ठाकुर दिलीपनारायण सिह, एम० ए०, १२० छोटी पियरी

दीनानाथ निगम, बी० ए०, एल-एल० बी०, तेलिया बाग

देवीनारायण, एम० ए०, एल-एल० बी०, साक्षी विनायक

द्वारिकादास, म्युनिसिपल कमिश्नर, २६ गोविंद जी नायक

धनराज सुदन, नोरा कंपनी, राजा कटरा, चौक

नंददुलारे वाजपेयी, एम० ए०, हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय

नरोत्तमदास, बी० एस-सी०, डी० ए० बी० कालेज

नवरंग सिह, दूकान, इडियन प्रेस, चौक

नागेश उपाध्याय, एम० ए०, भदैनी

निष्कामेश्वर मिश्र, बी० ए०, एल० टी०, लाहौरी टोला

पद्मनारायण आचार्य, एम० ए०, अस्सी

पद्माकर द्विवेदी, खजुरी

पद्मिनीदेवी कलमकर, महिला विद्यालय, हिंदू विश्वविद्यालय

पन्नालाल माहेश्वरी, ठि० अभयराम चुन्नीलाल, सुड़िया

डॉ० परमात्माशरण, इतिहास विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, २०/१२७ ब्रह्माघाट

डॉ० प्रतापनारायण राजदान, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज

स्थायी–प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिंह, हिंदू विश्वविद्यालय

कुँवर प्रियानंदप्रसाद सिह, एम० ए०, भुतही इमली

वजरंगवली गुप्त, जालिपादेवी

वटुकनाथ शर्मा, एम० ए०, कालभैरव

स्थायी–बनारसीप्रसाद, सारस्वत

वलदेव वैद्य, ग्राम व डाकघर वड़ागावँ

विशिष्ट–राजा वलदेवदास बिड़ला, डी० लिट्०, लालघाट

वलदेवप्रसाद मिश्र, १५ शकरकंद की गली

वलराम उपाध्याय, ऐडवोकेट, वड़ी पियरी

सर्वश्री

ब्रजमोहन केजरीवाल, नंदनसाहु लेन

स्थायी–ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल-एल० बी०, बुलानाला

ब्रजलाल सब्बरवाल, पोस्टमास्टर

बाँकेबिहारी, बी० एस-सी०, एल० टी०, सिद्धमाता की गली

बाबूराव विष्णु पराड़कर, प्रधान संपादक, आज'

बिहारीलाल विश्वकर्मा, हमतीर्थ तालाब

बिहारीशरण मिश्र

बैजनाथ केडिया, अध्यक्ष, हिंदी पुस्तक एजेंसी, चौक

स्थायी–भगवतीप्रसाद सिंह, एम० ए०, ए० आर० पी० अफसर

मान्य–डॉक्टर भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट्०, सिगरा

भगवानप्रसाद, ग्राम भड़िलाई, पो० शिवपुर

डॉ० भोलानाथ सिंह, डी० एस-सी०, कृषि-विभाग, विश्वविद्यालय

डॉ० मंगलदेव शास्त्री, डी० फिल्०, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज

मंगलाप्रसाद सिंह, जमींदार, भेलूपुर

मान्य–साहित्यवाचस्पति महामना मदनमोहन मालवीय, विश्वविद्यालय

मदनमोहन शास्त्री, शकरकंद गली

महादेवलाल श्राफ, फार्मेसी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

माधोप्रसाद खन्ना, थियासॉफिकल सोसायटी

रायबहादुर माधोराम संड, जतनबर

ठा० मार्कंडेय सिंह, एम० ए०, उदयप्रताप क्षत्रिय कालेज

विशिष्ट–मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन

मौलवी मुहम्मद हिमायतुलहसन, बी० ए०, अर्दली बाजार

मोतीलाल, प्राइमरी स्कूल, मुगलसराय

रतनचंद जैन, एम० ए०, न्यू ई/२ हिंदू विश्वविद्यालय

स्थायी–लाल रत्नाकर सिंह, डिप्टी कलक्टर

सर्वश्री

रमापति शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, वसंत स्कूल, राजघाट

स्थायी–रमेशदत्त पांडेय, बी० ए०, वरना पुल

डॉक्टर राजेंद्रनारायण शर्मा, सराय गोवर्द्धन

राजेश्वरीदयाल सिनहा, बी० ए०, २१/६६ कमच्छा

रायसाहब राजेश्वरीप्रसाद, गवर्नमेंट प्लीडर

विशिष्ट–राधेकृष्णदास, शिवालाघाट

रामचंद्र वर्मा, ३ सरस्वती फाटक

रामचरन पांडेय, क्वींस कालेज

विशिष्ट–रामनारायण मिश्र, बी० ए०, कालभैरव

रामनारायण मेहरोत्रा, लाहौरी टोला

रामन्योछावर लाल, ईश्वरगंगी

रामप्रसाद जौहरी, ४०/५२ भुतही इमली

रामबहोरी शुक्ल, एम० ए०, साहित्यरत्न, क्वींस कालेज

रामबालक शास्त्री, जयनारायण हाई स्कूल

स्थायी–रामभरोसे सेठ, डी० ए० बी० कालेज

रामशंकरलाल नैपाली, चौखंभा

रामशरणलाल मुख्तार, तेलिया बाग

रामाधार सिंह, वकील, विश्वेश्वरगंज

स्थायी–रामेश्वरसहाय सिनहा, बी० ए०, ६४/१०० हीरापुरा

नि शुल्क–लक्ष्मणनारायण गर्दे, पत्थरगली, रतनफाटक

चौधरी लक्ष्मीचंद्र, चौखंभा

लक्ष्मीदास, सत्ती चबूतरा

नि शुल्क–लक्ष्मीनारायण मिश्र 'संचय', १/१८२ अस्सी

लक्ष्मीप्रसाद पांडेय, इंडियन प्रेस लि०

लालचंद खत्री, कोठी पूरनचंद हरनारायण, रानीकुआँ

स्थायी–लालजी राम शुक्ल, एम० ए०, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज

सर्वश्री

ठाकुर लोटूसिंह गौतम, एम० ए०, उदयप्रताप क्षत्रिय कालेज
वाचस्पति उपाध्याय, एम० ए०, भदैनी
विजयकृष्ण, ११० खजुरी
विद्याभूषण मिश्र, एम० ए०, एल-एल० बी०, मामूरगंज
रायबहादुर कुँवर विनयानंद पाठक, सुपरिंटेंडेंट पुलिस
विमलानंदनप्रसाद, ऑनरेरी मुंसिफ, दारानगर
स्थायी–विश्वनाथप्रसाद, बुलानाला
विश्वेश्वरनाथ जेतली, २१/१०३ कमच्छा
वेणीप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल० टी० हरिश्चंद्र कालेज
स्थायी–वेणीप्रसाद, रानीकुआँ
राय शंभुप्रसाद, ग्राम जगतपुर, पो० रोहनियाँ
शशिशेखरानंद गैरोला, इंजीनियरिंग कालेज, विश्वविद्यालय
निःशुल्क–शांतिप्रिय द्विवेदी, भदैनी
मान्य–रायसाहब ठाकुर शिवकुमार सिंह, बैजनत्था
शिवनाथ झारखंडी, एम० एस-सी०, पटनी टोला
मान्य–शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन
शिवमंगल सिंह 'सुमन', एम० ए०, ठि० श्री डाक्टर दुबे
ग्लास टेकनालॉजी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय
शिवरानी देवी प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस
शिवानंद तिवारी, बी० ए०, एल० टी०, गुर्जर पाठशाला
ठा० श्यामनारायण सिंह, बी० ए०, एल-एल० बी०, मध्यमेश्वर
स्थायी–रायबहादुर डाक्टर श्यामसुंदरदास, बी० ए०, हौजकटोरा
पी० वी० श्रीकंठराव, एम० एस-सी०, वसंत कालेज
विशिष्ट–राय श्रीकृष्णजी, पांडेपुर
श्रीकृष्ण पंत, ललिताघाट
श्रीकृष्ण व्यंकटेश पुणतांबेकर, एम० ए०, हिंदू विश्वविद्यालय

सर्वश्री

श्रीनाथ शाह, दुर्गाकुंड

श्रीनिवास शाह, दुर्गाकुंड

स्थायी–श्रीशचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०, बी० टी०, कालभैरव

संकठाप्रसाद गुप्त, कोठी छोटेलाल वामनदास, सुड़िया

मान्य–संपूर्णानंद, बी० एस-सी०, एल० टी०, जालपादेवी

सच्चिदानंद भारतीय, एम० ए०, सेंट्रल हिंदू स्कूल, कमच्छा

राय सत्यव्रत, लहरतारा

सहदेव सिंह, ऐडवोकेट, बड़ी पियरी

सॉवलजी नागर, सेंट्रल हिंदू स्कूल

सीताराम मिश्र, बी० ए०, बी० टी०, डी० ए० बी० कालेज

सीताराम सिंह, बी० ए०, डिप्टी कलक्टर

स्थायी–रायबहादुर सूर्यप्रसाद, ऐडवोकेट, दुलहिनजी की कोठी

हरदेव पांडेय, कानूनगो, पो० मुगलसराय

राय हरेकृष्ण, सिगरा

हीराकुमारी जैन, न्यू ई/२ हिंदू विश्वविद्यालय

बरेली

ओश्मप्रकाश मित्तल, गंगापुर

कृष्णकुमार लाल सक्सेना, ठि० हकीम रामदास विश्वंभरनाथ, आयुर्वेदाचार्य, पो० फरीदपुर

गुणानंद जयाल, बरेली कालेज

दिनेशचंद्र, एम० ए०, ११२ ख्वाजा कुतुब

स्थायी–बलराम शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी०, ठि० कथावाचस्पति श्री राधेश्याम शर्मा, वानप्रस्थी

भोलानाथ शर्मा, एम० ए०, बरेली कालेज

मनमोहनलाल, बी० ए०, एल-एल० बी०, जकाती महल्ला

ठाकुर रामकिंकर सिंह, पी० सी० एस०, केन इंस्पेक्टर

स्थायी—साहु रामनारायण लाल, बाँसों की मंडी

साहित्याचार्य विद्येंद्र शास्त्री, पंचतीर्थ, ३२४ कुँवरपुर

शंकरसहाय सक्सेना, बरेली कालेज

स्थायी—श्रीधर पंत, शास्त्री, एम० ए०, एल० टी०, साहूकारा

बलिया

काशीप्रसाद सिंह, बी० ए०, सोनबानी

गणेशप्रसाद, एम० ए०, गवर्नमेंट हाई स्कूल

परशुराम चतुर्वेदी, वकील

राजासिंह, तहसीलदार, राज्य बड़ागढ़, पो० रेवती

शिवप्रसाद सिंह, बी० टी० सी०, मिडिल स्कूल, रेवती

श्यामसुंदर उपाध्याय, सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड

सीताराम पांडेय, मिडिल स्कूल, भीमपुरा, पो० औराई कलाँ

हरिकृष्ण राय, साहित्यरत्न, ग्राम वाजिदपुर, पो० दलनछपरा

बस्ती

राजेंद्रसिंह दुबे, असिस्टेंट केन डेवलपमेंट अफसर, बभनान

बाँदा

निःशुल्क—कन्हैयालाल मिश्र, आर्योपदेशक, ठि० श्री महावीरप्रसाद, ठीकेदार, अर्दलीबाजार

मूलचंद जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०, करवी

बुलंदशहर

केशवराम, अनूपशहर

घमंडीलाल शर्मा, एम० ए०, विशारद, पद्मसिंह गेट, खुर्जा

नि:शुल्क—जगनलाल गुप्त, मुख्तार

सर्वश्री

सरजीवन लाल चौबे, खजांची, इंपीरियल बैंक

त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी, जे० ए० एस० स्कूल, खुर्जा

महेशचंद्र गर्ग, एम० ए०, ग्राम एवं डाकघर पहासू

मथुरा

गोपालदत्त शर्मा, श्री गोवर्द्धनलाल हिंदी विद्यापीठ

जवाहरलाल चतुर्वेदी, कूवावाली गली

दानविहारी लाल शर्मा, संपादक, नाममाहात्म्य, वृंदावन

मदनमोहन नागर, कर्जन म्यूजियम

रामचंद्र भार्गव, किशोरीरमण इंटर० कालेज

रामनिवास पोद्दार

रामप्यारी देवी, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल

रामसिंह पाठक, गोवर्द्धन

विश्वेश्वर जी, दर्शनाचार्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृंदावन

शकुंतला भार्गव, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल

सत्येंद्र, एम० ए०, गली कानूनगोयान, रामदास की मंडी

लाला हीरालाल, श्यामकाशी प्रेस

मिर्जापुर

ताराचंद राय, एम० एस-सी०, आबकारी इंस्पेक्टर, रावर्ट्सगंज

महंत परमानंद गिरि, गोसाईं टोला

प्रभुनंदन शर्मा 'कुंदन', सुपरवाइजर कानूनगो, पो० दुद्धी

प्रमथनाथ भट्टाचार्य, वेलेज्लीगंज

स्थायी—रामप्रतापजी, मालिक दूकान भैरवमल फतहचंद, बुंदेलखंडी

वासुदेव उपाध्याय, गाँव वजहा, पो० कछवा

स्थायी—राजा शारदामहेशप्रसाद सिंह शाह, बड़हर, पो० राजपुर

सर्वश्री

मुजफ्फरनगर

गोविंदबिहारी शोरावाल, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज

स्थायी—जगदीशप्रसाद सिंह, रईस

मुरादाबाद

केदारनाथ 'बेकल', एम० ए०, गवर्नमेंट हाई स्कूल, अमरोहा

केशवचंद्र, ठि० लाला लछमनदास जी मथुरादास जी गंज

गंगाशरण शर्मा 'शील', एम० ए०, एस० एम० इंटर कालेज, चंदौसी

तोताराम गुप्त, कॉठ

मक्खनलाल, एम० एस सी०, गवर्नमेंट इंटर० कालेज

विश्वंभरदयाल शांडिल्य 'मानव', एम० ए०, ठि० श्री शंकरदत्त जी, एम० एल० ए०

मेरठ

आनंदप्रकाश दीक्षित, विशेषज्ञ, विशारद, प्रभाकर, १०० खंदक

आनंदस्वरूप डुबलिश, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, वकील

कमलादेवी भटनागर, ठि० बा० चंद्रस्वरूप भटनागर, सब-रजिस्ट्रार

कृष्णानंद पंत, एम० ए०, साहित्यरत्न, मेरठ कालेज

पृथ्वीनाथ सेठ, शांति निकेतन

बालमुकुंद शास्त्री, देवनागरी इंटर० कालेज

बुद्धप्रकाश, लाल भगतराम बिल्डिंग, सरस्वती प्रेस

मदनमोहन सेठ, एम० ए०, मेरठ कालेज

मुरारीलाल शर्मा, सेवामंदिर, देवनागरी इंटर कालेज

चौधरी रघुवीरनारायण सिंह, असोड़ा, पो० हापुड़

सर्वश्री

शांतिस्वरूप अग्रवाल, कमर्शल ऐंड इंडस्ट्रियल हाई स्कूल, हापुड़

स्थायी–रायबहादुर प्रो० हरिप्रसाद

मैनपुरी

पातीराम ज्ञानीराम, सिरसागंज

बाबूराम बिलथरिया, साहित्यरत्न, सिरसागंज

ब्रजमोहनलाल मदनलाल, सिरसागंज

रघुराज सिंह, ग्राम उखेरंड, पो० भदान

राधामोहन फरसैया, सर्राफ ऐंड ब्रास मर्चेंट, सिरसागंज

रुस्तम सिंह रघुवीर सिंह, सिरसागंज

सुनहरीलाल शर्मा, एम० ए०, डी० ए० वी० स्कूल, सिरसागंज

सूरजभान, सिरसागंज

रायबरेली

राजा जगन्नाथबख्श सिंह, एम० एल० ए०, रहवाँ

जुगुलकिशोर नारायण सिंह, राजभवन

कुँवर राजेंद्र सिंह, मैनेजर, कुर्री सुदौली राज

शिवनारायणलाल, बैजनाथाश्रम, ग्राम और पो० बछरावाँ

लखनऊ

अमोलकराम साहनी, एम० ए०, सेंट्रल बंक अव इंडिया लि०

मान्य–ए० जी० शिरफ, आई० सी० एस०,

रायसाहब एस० एल० आर० खेर, इनकमटैक्स कमिश्नर

कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी०, कालीचरण हाई स्कूल

जगदीशचंद्र जोशी, हैवलक रोड

त्रिभुवननारायण सिंह, नैशनल हेरल्ड आफिस

दीनदयाल गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, विश्वविद्यालय

सर्वश्री

मान्य–डा० पन्नालाल, सी० आई० ई०, आई० सी० एस०,
डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय
बालकृष्ण पांडेय, कान्यकुब्ज इंटर कालेज
बालकृष्ण राव, आई० सी० एस०, इन्फर्मेशन डिपार्टमेंट
बैजनाथ सिंह, एम० ए०, बी० टी०, नैशनल हाई स्कूल
ब्रह्मदेव बाजपेयी, ३९ मेजर बैंक्स रोड

विशिष्ट–मनीबाई शाह, युनिटी लाज

निःशुल्क–माधवशरण, ५१२ नरही
रणवीरविहारी सेठ, रिसालदार बाग
डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल, प्राविंशल म्यूजियम
विद्यासागर भटनागर, मौसमबाग, सीतापुर रोड
रायबहादुर शुकदेव बिहारी मिश्र, गोलागंज

मान्य–रावराजा रायबहादुर डा० श्यामबिहारी मिश्र, १०५ गोलागंज
श्रीधर सिंह, एम० ए०, गवर्नमेंट जुबिली इंटर० कालेज
रायसाहब डाक्टर सूरजप्रसाद श्रीवास्तव, असिस्टेंट डायरेक्टर, पब्लिक हेल्थ, युक्त प्रांत

मान्य–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', हाथी खाना, भूसामंडी

स्थायी–हरिश्चंद्र, आई० सी० एस०, शिक्षा विभाग, सेक्रेटेरियट

शाहजहाँपुर

स्थायी–तेजस्वीप्रसाद भल्ला, एम० ए०, एल-एल० बी०, सुप० पुलिस
विष्णु शर्मा भारतीय, मुकाम बक्सरियो
संग्रामप्रसाद, सब-डिप्टी इंस्पेक्टर अव स्कूल्स

सहारनपुर

स्थायी–रा० ब० गंगाप्रसाद, एम० ए०, वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

सर्वश्री

जुगुलकिशोर, मुख्तार, संपादक 'अनेकांत', पो० सरसावा

वागीश्वर विद्यालंकार, उपाध्याय, गुरुकुल कॉगड़ी

वागीश्वर, पुस्तकालयाध्यक्ष, गुरुकुल कॉगड़ी

विष्णुदत्त वैद्य, कनखल

वेदव्रत, आर्यसमाज, गुरुकुल कॉगड़ी

महंत शांतानंदनाथ, श्री श्रवणनाथ ज्ञानमंदिर, हरद्वार

सोमदत्त मिश्र पुरीय, कनखल

हरप्रसाद मिश्र, भागीरथी पुस्तकालय, हरद्वार

सीतापुर

अनिरुद्ध सिंह, नीलगाँव

कृष्णविहारी मिश्र, गधोली सिधोली

गजाधरप्रसाद मेहरोत्रा, कोठी, पो० बिसवाँ

ठाकुरप्रसाद शर्मा, हिंदी साहित्य सभा, लालबाग

स्थायी—ठाकुर रामसिंह, ताल्लुकेदार

" राजा डा० सूरजबख्श सिंह, कस्मांडा, पो० कमालपुर

" सोमेश्वरदत्त शुक्ल

सुल्तानपुर

चंद्रभान जी रायजादा, वकील, अमेठी

दिनकरप्रसाद जोशी, कुड़वार

महेशप्रसाद, गवर्नमेंट हाई स्कूल

स्थायी—कुमार रणंजय सिंह, अमेठी

रामनरेश त्रिपाठी, वसंतनिवास

शेषमणि त्रिपाठी, एम० ए०, सब-डिप्टी इंस्पेक्टर अव स्कूल्स

हरेकृष्ण चतुर्वेदी हेडमास्टर, अमेठी

सर्वश्री

हरदोई

ठा० अर्जुनसिंह, जमींदार, मौजा तुर्तीपुर

गोपालचंद्र सिंह, एम० ए०, ऐडिशनल सिविल जज

रायसाहब जिनेश्वरदास, स्पेशल मैनेजर, कोर्ट अव वार्ड्स

सेठ विट्ठलदास, डिप्टी कलक्टर

स्थायी–व्रजभूषण शरण जेतली, आई० पी० एस०, सुपरिंटेंडेंट पुलीस

" सेठ वंशीधर, शुगर ऐंड आयल मिल्स

हाथरस

स्थायी–रायबहादुर चिरंजीलाल बागला, रईस, म्युनिसिपल कमिश्नर

फूलचंद मिश्र, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट

भगवानदास हालना, सासनी दरवाजा

बनारस राज्य, रामनगर

खान बहादुर सैयदअली जामिन, चीफ सेक्रेटरी

कल्पनाथ सहाय, मेस्टन हाई स्कूल

सरदार झारखंडीप्रसाद नारायण सिंह, किला

व्रजनाथ, बी० काम०, बनारस स्टेट बैंक

विनोदबिहारी सेन राय, मेस्टन हाई स्कूल

सूर्यप्रसाद शुक्ल (हजारी साहब)

१३—सिंध

(सभासदों की संख्या—२)

हैदराबाद

कृष्ण टोपणलाल शर्मा, वैद्य विशारद, मुखी की गली

सक्खर

स्वामी हरिनामदास उदासीन, श्री साधुबेला तीर्थ

सर्वश्री

१४—हैदराबाद (दक्षिण)

(सभासदों की संख्या—११)

उस्मानाबाद

मोतीलाल हीराचंद गांधी

सिकंदराबाद

चि० म० वीरभद्र शास्त्री तैलंग, ४२६८ सजनलाल स्ट्रीट

हैदराबाद

राजा नरसिंहराज बहादुर, बारागली, हुसैनी आलम

विशिष्ट—राजा पन्नालाल बंशीलाल पीती, बेगम बाजार

रामगोपाल संघी, रेड हिल्स, नामपल्ली

लक्ष्मीनारायण गुप्त, हैदराबाद सिविल सर्विस, बशीरबाग रोड

बंशीधर विद्यालंकार, वेस्टर्न टाकी के पीछे, काचीगुड़ा

विनायकराव विद्यालंकार, बैरिस्टर, जायबाग

स्थायी—राजा बहादुर विश्वेश्वरनाथ, मेम्बर, जुडिशल कमेटी

सत्यनारायण लोया, वकील हाईकोर्ट, रेजिडेंसी रोड

सूर्यप्रताप, आशाकुंज

१५—विदेश

(सभासदों की संख्या—१५)

अफ्रिका

मारिशस

के० एम० भगत, हिंदी प्रचारिणी सभा, मोताई लॉग

सर्वश्री

केनिया कालोनी (वृटिश ईस्ट अफ्रिका)

रणधीर विद्यालंकार, पोस्टबक्स २४३, नैरोबी

रमनभाई जे० पटेल, ठि० एक्सप्रेस ट्रांसपोर्ट कं० लि०, पोस्टबक्स ४३३, नैरोबी

सत्यपाल, पोस्टबक्स २४३, नैरोबी

युगांडा

दयालजी भीमभाई देसाई, पोस्ट नं० ७१, जिंजा

अमेरिका

बोस्टन

डा० आनंद के० कुमारस्वामी, डी० एस-सी० (लंदन), इंडियन सेक्शन, म्यूजियम अव फाइन आर्ट्स

एशिया

मस्केट

विश्राम जे० पटेल, मस्केट, अरेबिया, परशियन गल्फ

बर्मा

डॉ० ओ३म्प्रकाश, ओकीन, पो० कामायुत, रंगून

गोपालदास, डी० ए० वी० स्कूल, ९५ विगनडेट स्ट्रीट, रंगून

रामजीदास शर्मा, हेड क्लार्क, रेवेन्यू फारेस्ट ऑफिस, कत्था

यूरप

इंगलैंड

मान्य-रेवरेंड ई० ग्रीव्ज, नं० १ द लाइंस हार्निओल्ड रोड, मालवर्न

सर्वश्री

नि शुल्क–जे० चैडविक जैक्सन, वीथल २, आइलैंड क्लोज, हेलशम रोड, पोलगेट, ससेक्स

” टी० ग्राहम वेली, २३६ निदर स्ट्रीट, लंदन नं० ३

पोलैंड

स्तेफन स्तैशियक, प्रोफेसर ऐट द युनिवर्सिटी, एल वोव

रूस

प्रोफेसर ए० वारानिकफ, व्लाचिना स्ट्रीट, १ एफ लाग ६, लेनिनग्राड, यू० एस० एस० आर०

फार्म स० १२, १३, १४, १५ श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, काशी द्वारा मुद्रित

सभा की नवीन पुस्तकें

संस्कृत साहित्य का इतिहास

(लेखक—श्री सेठ कन्हैयालाल पोद्दार)

प्रथम भाग—इस ग्रंथ में काव्यशास्त्र के सुप्रसिद्ध रीति-ग्रंथों एवं उनके प्रणेताओं के परिचय तथा काल-निर्णय के संबंध में ऐतिहासिक निरूपण किया गया है। पृष्ठसंख्या ३३४। सजिल्द प्रति का मूल्य सवा रुपया मात्र।

द्वितीय भाग—इसमें काव्यग्रंथों के विषय, काव्य के प्रयोजन और हेतु एवं काव्य के लक्षण आदि पर विभिन्न आचार्यों के मतों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और काव्य के पंच सिद्धांत-रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और ध्वनि-का स्पष्टीकरण तथा इनके पाँचों संप्रदायों का आलोचनात्मक विवेचन कर उनका रहस्योद्घाटन किया गया है। पृष्ठसंख्या २१४, सजिल्द पुस्तक का दाम केवल सवा रुपया।

रघुनाथरूपक गीताँ रो

(संपादक—श्री महताबचंद खारैड़, विशारद)

डिंगल भाषा के महाकवि मंछ (मनसाराम) का यह प्रसिद्ध ग्रंथ १८८३ वि० में लिखा गया था। इसमें रामचंद्रजी की कथा का बड़ा कवित्वपूर्ण वर्णन है, साथ ही डिंगल-भाषा का यह अत्यंत प्रामाणिक रीतिग्रंथ भी है। छंदों का हिंदी में शब्दार्थ और भावार्थ भी दिया गया है। आरंभ में पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण की लिखी हुई महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पृष्ठ-संख्या ३६०, सजिल्द मू० २)।

मोहें जो दड़ो

(लेखक—श्री सतीशचंद्र काला, एम० ए०)

मोहें जो दड़ो अर्थात् 'मुर्दों का टीला' सिंधु प्रांत में एक बहुत प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ की खोदाई में मिली हुई वस्तुओं से भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है जिसका वर्णन इस पुस्तक में है। पृष्ठसंख्या २००, मू० २)।

हिंदी साहित्य का इतिहास—लेखक स्व० पं० रामचंद्र शुक्ल, संशोधित और प्रवर्द्धित संस्करण, पृष्ठ संख्या लगभग ९००; मूल्य ५)

हिंदू राज्य-तंत्र, दूसरा खंड—अनुवादक बाबू रामचंद्र वर्मा। यह पुस्तक सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ स्व० डा० काशीप्रसाद जायसवाल कृत 'हिंदू पालिटी' का अनुवाद है। विद्वान् लेखक ने भारतीय शासन-तंत्रों के संबंध में परिश्रमपूर्वक जो शोध किया है उससे भारत की गौरव-गरिमा पर नवीन प्रकाश पड़ता है। दूसरे भाग की पृष्ठ-संख्या ४२२; आकर्षक सजधज, मूल्य २); सजिल्द २।)।

राजरूपक - संपादक पंडित रामकर्ण। रतनू चारण वीरभाण कृत राजरूपक डिंगल भाषा का वीररस प्रधान प्रसिद्ध ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ है। पादटिप्पणी में प्रत्येक छंद के कठिन शब्दों का अर्थ दे दिया गया है, जिससे डिंगल भाषा से अनभिज्ञ हिंदी पाठकों के लिये भी यह सुबोध हो गया है। आरंभ में ६० पृष्ठों में ग्रंथ का सारांश भी है। पृष्ठ संख्या ६०+८२३; मूल्य ५)।

रत्नाकर (सस्ता संस्करण) पहला भाग—स्वर्गीय बाबू जगन्नाथ-दास 'रत्नाकर' की समस्त प्रकाशित अप्रकाशित कविताओं का संग्रह 'रत्नाकर' के नाम से सभा ने प्रकाशित किया था। अब दो भागों में इस ग्रंथ का एक सस्ता संस्करण प्रकाशित किया जायगा। पहला भाग छप गया है, जिसकी पृष्ठ-संख्या लगभग ३२५ और मूल्य १) है।

नई कहानियाँ—संपादक श्री राय कृष्णदास तथा श्री पद्म नारायण आचार्य, एम० ए०। हिंदी के कहानी-साहित्य के नवीनतम विकास का सबसे सुंदर उदाहरण यह पुस्तक है। इसमें १२ चुनी हुई नई कहानियाँ संगृहीत हैं। आरंभ में विद्वत्तापूर्ण 'प्रस्तावना' और अंत में 'नई कहानियों का अनुशीलन' अध्ययन के लिये बहुत उप-योगी है। पृष्ठ संख्या १८४; मू० १।)।



रामसरणसिंह यादव द्वारा वणिक प्रेस साक्षीविनायक काशी में मुद्रित